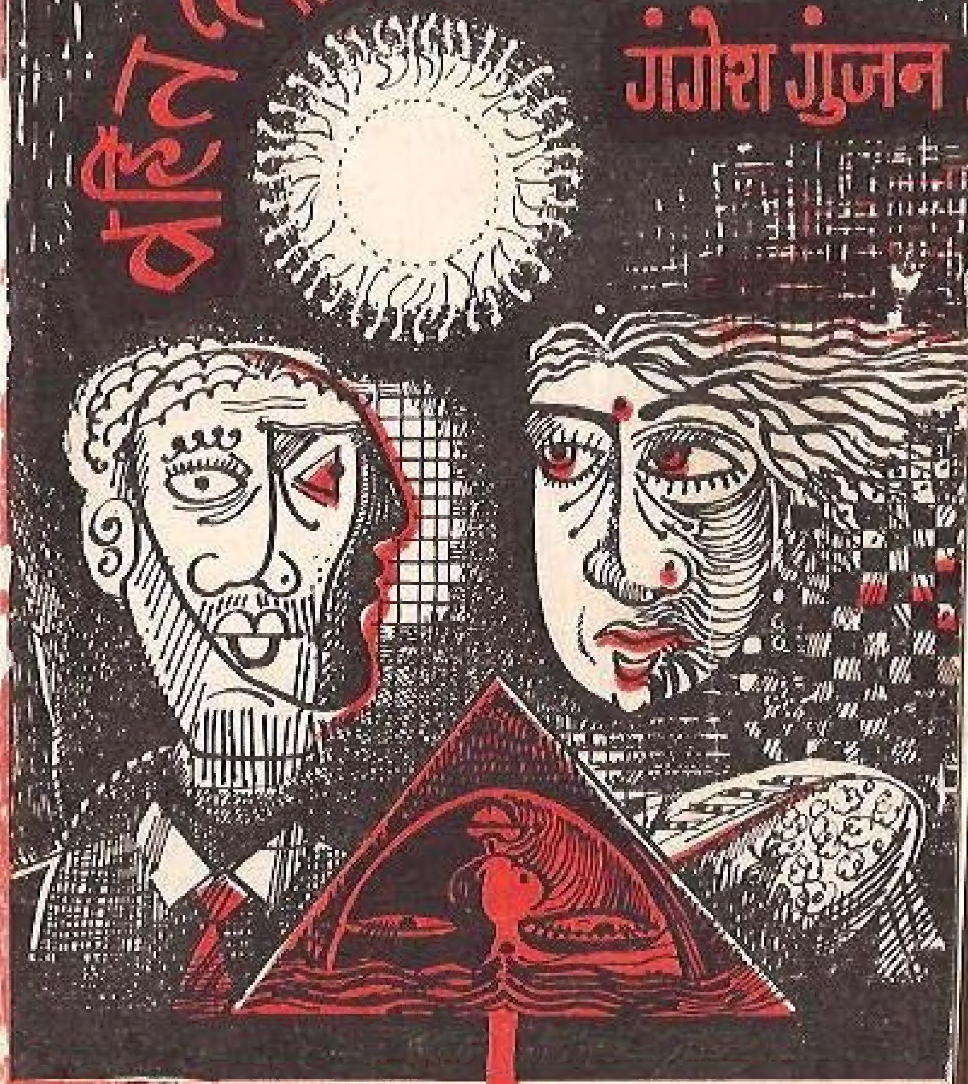

पहिल लोक.
पहिल लोक.
गंगेश गुंजन

लेखकक दिसँ

□ पहिल लोक हमर दोसर उपन्यास । पहिल 'माहुर वन' मि०मि० मैथिली साप्ताहिकक कार्यालयमे चोरी भ' गेल । हेराय गेल । मूलो पाण्डुलिपि हेराय गेला सँ स्वाभाविके जे ओ प्रकाशित नहि भ' सकल ।

□ अपन कोनहु रचनाक विषयमे मनमे कोनो प्रकारक पूर्वाग्रह रोपबा केँ हम अपन कथा, चरित्र आ विचारकेँ बोध बनाएब तथा बोधक स्तर पर पाठकवर्गकेँ आनलाँ न्यून बुझब मानैत छी । पहिल बात अपन असमता, दोसर पाठकमे अनास्था – ई दुनू बात अनुचित । तेँ कोनो लेखकीय वक्तव्यक नेतसँ नहि लेल जाय एकरा, प्रत्युत एक टा रचनाकारक स्वाभाविक उत्साहक निष्कपट उद्देश्यसँ ई उद्गार राखि रहल छी जे ई उपन्यास थिक । एकर अध्याय सभ शीर्षकबद्ध छैक ।

□ कोनहु कृति प्राप्त इतिहासक्रमक ज्ञान आ सामाजिक चेतनाक सार्वजनिक विकासक संदर्भहिमे मूल्यांकित होइत छैक । तेँ हमरा जनैत कृतिकार हरदम कोनो लोकक अदालतिमे ठाढ़ रहैत अछि । हमहूँ छी । हमर पात्र सब सेहो । लेखकक व्यक्ति-अनुभव, महत्वाकांक्षा आ दृष्टिकोण तथा पात्रक चरित्र-विकासक जटिलता एहि कृतिक अनिवार्य परिस्थितिक छैक । तेँ एकर ढाँचा किछु पाठककेँ अनभरिक लेल अनगढ़-अनचिन्हार जकाँ लागि सकैत छनि । पहिल लोक हमर दस वर्ष पुरान उपन्यास ।

□ व्यापक सामाजिक संगतिमे अपनाकेँ ई प्रासंगिक बना सकय से चेष्टा-आकांक्षा हमरो अछि । तखन पाठकवर्गसँ हमर एकटा निवेदन अवश्ये जे 'गुंजन' जी बड़ कठिन आ दुरूह वस्तु लिखैत छथि ताहि धारणामे नहि पड़ि क' कृपया पोथी पढ़िये क' कोनो धारणा बनाबी ।

□ अपना आर्थिक साधन रहैत तँ ई पोथी कएक वर्ष पहिने छपि चुकैत जे कि एहि कथाक उद्देश्य छलैक । आब हमर एहि उपन्यासक सभटा चरित्रक वयस प्रायः दस वर्ष आर बेशी भ' गेल होयतैक । संभव छैक, किछुकेर समझदारी सेहो विकसित भ' गेल होइक, संभव छैक किछु केर समझदारी कुंठित भ' क' थाकि-ठेहिया गेल होइक । तेँ सामाजिक न्यायक एतेक पुरान

युद्ध मे ई सब बनब-बिगड़ब चलितहि रहैत छैक। लेखक आ पाठकक दृष्टिकोण परिष्कारक चलबाक चाही आगाँ-आगाँक संघर्षक लेल; ताही उद्देश्यक लेल लेखक संकल्पित रहैत अछि।

☐ श्री श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार जी, व्यास जी, योगा बाबू, गोविन्द बाबू तथा श्री मदनेश्वर मिश्रजीक प्रति हमरा मनमे अशेष कृतज्ञता अछि।

☐ प्रभास जी एहि पाण्डुलिपिक प्रथम पाठक आ मोहन भारद्वाज मित्र। तेँ एहि दुनू गोटेक वास्ते आभारी एकदम्मे नहि छी हम।

☐ हमहूँ अनेक मध्यवर्गीय परिवारक भारतीय बेटा जकाँ अपना माँ-पिताकेँ जीवित रहथि तखन किछु नहि द' सकलहुँ आब आइ एक टा साहित्य-पोथी लिखि क' उऋण होयबाक अति सीमित चेष्टा करैत मन-मस्तिष्क मुक्त करबाक एकटा लेखकीय उपक्रम करैत छी।

ई उपन्यास माँ-बाबूक स्मृतिमे, ओहि अमृत-विचार-वाक्यकेँ समर्पित :

—''ककरो अनिष्ट नहि सोची, नै करी। धैर्य राखी, साहस करी। ताहिसँ बाट बनैत छैक, डराक' परास्त भेलासँ नहि।'' बाबू बुझबथि हमरा लोकनिकेँ।

—बड़ी-बड़ी काल माँकेँ हाथ जोड़ने भगवती-भगवानक आगाँ देखैत अकच्छ होइत पुछियैक—माँ गै, तोँ भगवानकेँ गोड़ लागि क' की-की कहैत रहैत छहुन ?

—''इष्टदेवताकेँ कलजोड़ि क' इएह कहैत छियैन जे हे इष्टदेवता संसारमे सभक लोकवेदकेँ कुशल-क्षेमसँ रखियौ, ताहि संगे-संगे हमरो धिया-पुताकेँ।''

कहब

हम एकटा सम्पूर्ण कथा कहब से कहि रहल छी। कथा माने खिस्सा, कहिनी नहि। शब्दकें एना अर्थ-विस्तारक' कहब अहाँ कें अधलाह लागि जायत, सेहो अन्देशा भेलए। तैयो हम कहब आ चाहब जे जत' धरि हमरा ई खिस्सा सम्पूर्ण बूझल अछि ओत' धरि यथावत सुनी। अहाँ कें हमर एहि बातमे अहंकार बुझायत, मुदा ताहू हेतु माफी दिअ। हम 'यथावत्' खाली घटनाक सम्बन्धमे कहलहुँ अछि। घटना, चरित्र आ व्यवहार सभकें मन पाड़ि-पाड़िक' कहि देबाक इच्छा भेलए। आ ई आवश्यकता बुझा रहलए जे एहि प्रसंगकें अहाँलोकनि पढ़ि ली, सुनि ली। एहिमे भाषा लागत कतहु अँटका रखैबाली, कोनो ठाम मनगोढ़ंत बुझा जाय सेहो सम्भव, कि चरित्रे सँ कथी एहन बुझा जाय जकरा पर अहाँकें ने तामस उठय ने आवेशो होअय। से सब सभटा सम्भव अछि। तकर कारण किछु नहि छैक। मानी तँ मात्र इएह आ एतबे कारण जे लेखक आ चरित्र-रचनाक प्रक्रियामे एकटा एहन स्थल भ' जाइत छैक जे आगू धरि पाठक आ लेखक आ पुस्तक मध्य एकटा टूटल पुल जकाँ ठाढ़ रहैत छैक। हम एहि टूटल पुलकें स्पष्ट बुझा देबाक अपन उत्तरदायित्व बुझा रहलहुँए। कोनो आन उद्देश्य वा भाव नहि अछि मनमे। संवाद-सम्प्रेषणक टूटल पुलक विषय।

आब जेना देखियौ जे हम सुस्मिताकें ओ सभ नहि कर' कहलियैक जे ओ राजूबा'क संग कयलक—अर्थात् नितांत अप्रत्याशित आ कय तरहें तेहन घटना जकरा समाज आइयो नहि स्वीकारैत छैक, परन्तु ओ नहि मानलक। स्वयं राज,—हमरा आश्चर्य होइत अछि जे ई एहन 'कुपात्र' कोना भ' गेल ? कुपात्र एहि दुआरे कहि रहल छी जे ई अपन तरहक एहन धर्म-भीरु संकोची आ नैतिकता पसिन्द डरबुक युवक अपन सभटा संस्कारकें फाटल अंगा जेकां देह परसँ उतारिक' गूर-गोबरौड़क' देलक। हम बीच-बीचमे कयबेर ओकरा चेतौलियैक—सोझां-सोझी भने नहि कहलियैक, परन्तु जेना बालिग नेना के लोक कहि सकैये—तेना भ' क' कय-कय बेर मोड़' चाहलियैक—"ई तँ करार नहि छलौक, तौं ई बात बड़ गलती केलैं। तौं करार केलें तुरंत घुरि जयबाक, से रहि गेलें कय-कय दिन। आ ठहरबाक बात जहाँ धरि कयलें ताहिमे सुस्मिताक घर निश्चित नहि रहौक, से नाटक क' क' स्टेशनसँ ओकरा कत' ठहरि गेलें। खैर, ठहरबो कलें तँ नहि क्षति, परन्तु अपन सम्बन्धकें तौं एहन नव स्तर किएक देब' गेलें ? आ तौं जे एकटा घोंघा से तोरा बुते एतेक कोना पार लगलौक— ई एहन-एहन व्यवहार, आचार क' लेब ? हमरा पूर्ण क्रोध भेल। ओ चुप रहल। कहलक जे हम किछु नहि जनैत छी। हम सत्ये अहाँकें जे सभ गछने रही तकरा नै पालन क' सकलहुँ। तें हमरा खेद अवश्य अछि। मुदा हम ओना, आ ओतेक रास ओ सब, किएक क' गेलौं से, भगता ईश्वर, हमरो नहि बूझल अछि। ओ मूड़ी झुका लेलक। हम की करितियैक ओकरा। ओ अपन करार पर नहि रहि सकल कायम, तँ हम की दंड दितियैक। हम स्वयं बन्हा गेल छी ओकर एहि चरित्र-परिवर्त्तन सँ। तें चुप्पे छी। ई बात नहि जे राजूक चरित्रक ओ सभ बात नहि आयल छैक ओकर व्यवहार मे। परन्तु, किछु रूपान्तरक संग आ से किछु नवो भ' क' जे कि हम एखनहि अपने कहि देलौंहें। अहाँ कहब — कहि देने तँ नहि भ' गेल समाधान ? एकर की निराकरण होअय ? हमरा बूझल रहय अहाँ इएह सवाल करब। तें हम एहू विषय पर राजू के कय बेर पुछलियैक। ओ सब बेर ओएह मूक राजू भ' क' व्यवहार कयलक। आ अहाँकें विश्वास नहि होयत, ओकर आकृति नहायल-धोआयल लोकक आकृति सन टटका आ अम्लान छलैक। ओकर चेहरा पर कोनो अनैतिक आचरणक प्रायश्चित-छाया तक नहि छलैक। ओ बिल्कुल दुरुस्त छल। हमरा अपने आश्चर्य भेल जे एहन-एहन ऊटपटांग बातक आयल से केहन गाय बनल ठाढ़ अछि ? परन्तु ओकर आकृति पर सत्ये कोनो अपराध नहि रहैक। हम मनोविज्ञ'

रहि गेलौं। कारण, कयबेर एहन नहि होइत अछि अहूँ लौकिक जीवनमे जे बुझैत रहैत छियैक फल्लाँ बात असम्भव भेलैये, नहि होयबाक चाही। परन्तु ओकरो हृदयैमे कोनो सवाल-तर्क नहि भेटैत रहैए आ हाथ पयर एकटा अनदेखल बन्हनसँ जकड़ल रहि जाइए। अहाँकें किछु कयने नै किछु बनैए।

इला छलैक राजूक कविता। तँ ई इलो हमरा उलहन देब' आयलि। बड़ स्वाभाविक छलैक। एकटा ई चरित्र छल जे बड़ सटीक आ संक्षिप्ते आक्रमण सँ मुदा ठाँव पर ठाँव कह' वाली। हमरा कनीक घबड़ाहटि भेल। से हम अपने गछै छी। आ जे हमरा भय छल सएह भेल। ओ अपन एकहिटा प्रश्न मे हमरा निरुत्तर क' देलक आ जेना हमरा आगू राजू मूड़ी निहुरा लेने छल तहिना हम इलाक सोझाँ मूड़ी निहुरा लेलौं। ओकर आँखिक उज्जर पानि हठात् लाल भ' गेलैक, कुंदाबोर लाल। ओकर प्रश्न छलैक —हमरा अहाँ एना भ' क' धोख किएक क' देलौं ? हमर विवशता पर राजूकें जे फुरलैक से कहि अयलैक सुस्मिता दी कें। हमरा सुस्मिता दी सँ कोनो शिकायति नहि अछि। हमरा सभ दिन बूझल छल जे ओ हमर मनकें देखि गेल अछि आर-पार। तें हम ओकरा अपन पैघ बहीन आ शुभेच्छु मानैत छियैक। तैयो राजूक मुँहें अपना सम्बन्धक ई खिस्सा-पिहानीवला गप्प हमरा बड़ तकलीफ पहुँचौलक। आखिर ओ एना भ' क' हमर जीवनकें ठट्ठा किएक बना देलक ? हम तँ राजूकें मुँह खोलिक' किछुटा तेहन नहि कहलियैक, बल्कि ककरो नहि—एत' धरि जे अपन अम्मा तन सखिकें पर्यन्त नहि। तेकरा राजू एहन भ' क' विज्ञापन कयलक से हमरा आत्मासँ अप्रिय लागलए। हम राजूकें एहन नहि बुझैत छलियैक। ओकर स्नेहमे हमरा बड़ सागति लगैत छल आ त्याग। मुदा ओ तँ एना बदलि गेल जे हम ने तँ कानि सकैत छी, ने हँसि सकैत छी। ओ केहन दुःखी भ' गेलए ! ओकरा हृदयमे बहुत क्लेश छैक। हम एहि बात लय मानैत छी जे हमहूँ किछु दोषी। परन्तु हमर दोषक जेहन चित्रण भने बड़ बुद्धिमानी आ शिष्टाचारे सँ राजू कयलकए से एकके बेर अहाँकें कहल नहि भेलए, ने ओकरा। दुनियामे ओएहटा तँ दुःख नहि उठा रहलए। संसार बदलि गेलैए। लोको बदलि गेलैए। हमहूँ लोके छी। एही संसारमे जीबैत छी। तें हम एहीमे छी। किन्तु सभटा सत्य कि एहिना सहजहि हाथमे धरा सकैत छैक ? एतेक जे एहन-एहन परिस्थिति छैक तेकरा जखिकें कोनो उत्तेजना आ असंयम किंवा तुच्छ भावुकता सँ देखल जा सकैत छैक ? तथापि, हमरा जे बहुत बुझलों जे राजू

बुझलक था जे सुस्मिता दी—सभ अहीँ लोकनि ठीक रहलौँ। तखन एतबा क्लेश अवश्ये होइए जे एतेक मास जे हमर खेरहा पसारल गेलए ताहिमे हमर दोष कतहु किछु नहि अछि—जे अछि आ जतबा से एहन नहि जे एतेक विस्तार सँ ओकर निन्दा कयल जाय। राजुएकेँ अहाँ पुछियौक ओ एतेक बात अपन कष्टकेँ आओर गँहीर बनयबाक चेष्टामे हमरा विरोधमे बाजलए नहि हमरे ओकर अपने विश्वास छैक? ओकरा ई विश्वास छैक जे हमरा दुनू गोटेक एहि टुटलाह सम्बन्धमे एकसरे हमहीँ वा ओएह अछि, किंवा एतेक किछु ई वातावरण भेलैए से तेकरा एकसरे बनाओल गेलैए? कि ई वातावरण एकेे दिनमे बनलैए? ई बात राजूक अपने मनमे स्पष्ट नहि छैक। अपने ओ हमर सम्बोधन बदलैत रहल—कखनो पंछी तँ कखनो महुनाई, कखनो मित्र तँ कखनो इला। ई सभटा सम्बोधन ओकरे कयल छियैक कि नहि, कनी ओकरा पुछबै तँ। आ ओकरा इहो पुछि लेबै कनी जे हम ओकरा आइ पर्यन्त राजूक अतिरिक्त कोनो दोसरो सम्बोधन देलियैक?

अहाँकेँ ई बात नहि बूझल अछि। अहाँ कहब—बताहिए अछि ई छौँड़ी। तँ से तँ राजुओ कहय स्नेह सँ। तहिया तँ लागय जे सिनेह सँ बताहि कहय—नाक पकड़ि क' डोला दिअय तँ लागय जे स्वर्गक स्पर्श भ' गेलए परन्तु आब बुझाइए जे ओ हमरा सत्ते बताहि कहैत-कहैत एहि बातमे विश्वास कर' लागल। नहि तँ हमर मामूली एकटा व्यवहारकेँ एहन भयावह बनाक' एकटा निर्णय किएक ल' लैत, सेहो एकटा गलत आ भ्रामक निर्णय? ओ हमरा सँ विवाह नहि करैत—साफ-साफ कहि दैत। नुकौनक किएक? हम ई बात अवश्ये कहने रहियैक जे—प्रेम मतलब विवाह मानैत छी हम। तथापि हमरा एहि कहबाक मतलब ई त' नहि भेलैक जे ओकर मन, मनक सीमाक, लाचारी हम नहि बुझि सकितियैक? ओ हमरा एतेक कम आ संकुचित किएक बुझि लेलक? हमरा तेकर अचलाह लागलए। आ विवाह नहि होयबामे ओ हमर कमजोरी कहि रहल छैक सभकेँ। ई अन्याय नहि छैक—मिथ्या अभियोग?

—एएह बात तँ राजुओ कहलक हमरा कय बेर जे इलाक निर्णय निश्चित नहि छैक। कहि लेलओ कहैए जे विवाह करब, परन्तु ओकरा घर छोड़बाक साहस नहि छैक। तखन हमरो घर छोड़बाक साहस किएक नहि अछि? तँ हमरा एहि दुआरे नहि अछि जे हम जँ ई बात मानी तँ की हयत फलाफल? कोन पूजा पर शंख बाजत? हम ओकर इच्छा-शक्तिक अभावमे एहि सम्बन्धकेँ कच डेग पोचि क' ल' जा सकब? हम तँ अपने भारी झंझटि मे पड़ि गेलौँ। ओकर ई अभियोग, ओकर ओ अभियोग!

तखन खाली एकटा एहन भेल एहि सम्पूर्ण घटना-प्रवाहमे जे कोनो शिकायत नहि कयलक। यद्यपि गहीँर भ' सोची तँ अन्ततः ओहो सुनाइये देलक: हम जेँ कि अहाँक 'शोव' मे बिन नोतल ओक थकी टपकि गेलौं तेँ बरनी की करितहुँ तँ हमरो अभ्यागतक सम्मान देलौँ। अहाँ हमर ओठाओल पात पर परसि देलौँ, तथापि आभारे मानब भरि जन्म। हमरा तँ कथो जनितो ने छलय। राजा भाय सेहो ने। हमहूँ कि राजा भायकेँ कनियो जनियनि पहिने! खाली पढुआ बाबू आ शौक। आ से तेहन शौक निकलला जे...।

ई बात शिकाइत मे नहि। बल्कि ओ कनी मुसकियाइते कहलक जे हम यदि हुनकर लिखल डायरीक दुनू रित्ती-रित्ती फटलाहा पात नै पढ़ि लितियनि तँ भरि जन्म बुझलो रहैत? सुस्मिता सँ बड़ स्नेह छनि, परन्तु हिनका लोकनिक स्नेह एहन छनि से कोना बुझितौँ! हम पुछलियै—की? ओ संकुचित भेल। फेर एकटा फराक कागत पर एक ठाम सटल सँ साटल फटलाहा डायरीक पुर्जी सभ सोझामे राखि देलक: अपन एहि खसबाक विषयमे किछु कहाँ बूझल छल। एकरा बात' बेकार कहलौं। माथमे आगि धधकैये।

ओ किएक नै रोकलक? ओ किएक खिहुँसि क' अलगा गेल? दुनू तर-हत्थी सँ गरदनि किएक दबलक आ ओतेक रास ओहन तिनेह कयलक...? दोष तँ हमरे। पुरुष तँ हमहीँ...... मुदा देहमे जे सन-सन बसात बहय लागल......!

करुणा संतुष्ट आ निर्विकार भाव सँ कहलक: 'हमरा लेल एतबे बहुत जे हिनका मनक सोह सुखायल नहि छनि। हमर ई अपन छथि। कहियो बैसिक' अपने सबटा खिस्सा कहताह। हम सुनबनि।'

हम एतबे कह' चाहब। ई खिस्सा अनचोखहि खतम क' देलौं तकर कारण हमरो अपना नहि बूझल। सभ पात्र जेना हमरा पर खौँझायल अछि। तहिना हमअहाँ लोकनि पर खौँआइत छी जे हमरा किएक नहि बूझल अछि से। अहाँ लोकनिक दुआरे नै बूझल अछि। □

अन्हार पलायन

हमरा होब' लागल जे हम एकटा विस्तृत खलाओन अन्हारमे पैसि रहल छी। गामक सिमान पोठ पाछाँक सब्ध जकाँ अनाकर्षक आ बेकार लाग' लागल। क्यो ककरो सोर पाड़ैत छैक, सेहो भ्रम खतम भ' चुकल छल। एकटा बैलगाड़ीक पाछाँ-पाछाँ मेहीं धूरा उड़ियाइत आबत छलैक आ तकरा पाछाँ हम। बड़ी दूर पैदल चलबाक छल। गाड़ीक हड़बड़ीमे सटकारैत हमर डेगमे खाली सन्हिया गेल छल बीड़ब। आ नाकमे कने-मने सुरसुरी। सौंसे बाटक दुनू कात पसरल बाध रहैक। बाधमे एक-आध लोक सभ। अनाग कोन-कोन लागल, से झलफल। उएह् परिचित स्वरमे लोकक हाक। बेर-बेर भय होअय। कतहु माँ बजबा ने लेअय। कतहु ओकरा हमर शहर जायब व्यर्थ ने बुझाय लगैक, आ ओ ककरो पाछाँ सँ दौड़ाक' हमरा घूरि ने आब' कहय। हमर पयरमे तेँ चिन्तासँ आरो बेसी फुर्ती आबि गेल।

कान्हपरक झोरी कागत जकाँ हल्लुक बुझाय लागल आ सभ किछु बीच बाटपरक बन-बैरीक ठुट्ठ झोखुर, पैघ-पैघ पातबला बैंगनी डारि, उजरा रंग-कना आक। आकपर टहलैत हेँजक-हेँज सुगा कीड़ा। ई सभ किछु मिथ्या छैक।

हम आ हमर एकटा मित्र शहरमे एक दिन कत'-कत' ने बौआ अयलहुँ। एही बड़का पातबला आकक गाछ ताक', जकर बैंगनी उज्जर फूलक माला बनैत छैक। महादेवकेँ बड़ प्रिय छनि। कपिलेश्वर कि विदेश्वर सभतरि एहि मालाक ढेरी भेटत। हुनका पूजामे जेना आक-धथूरक फूल विहित, तहिना ई माला! हमरा हँसी लागल। सैह, एही आक लेँ हमरालोकनि दू गोटे कत'-कत' ने बौअयलहुँ, कतहु भेटय? एकटा सन्तोषे भेल रहय। जे-से, एखनो गाम फेर गामे। एकटा मामूलियो वस्तु शहरमे नहि भेटत। यद्यपि एहि आकक फूलक नहि भेटब, सेहो ओहन पैघ शहर मे, कोनो अर्थ नहि

रखैत छैक, तथापि सन्तोष भेल रहय। से एखन मन पड़ल। आ ओ मित्र खगेन्द्र! पाछाँ जखन झूर-झमान भ' क' हम दुनू गोटे चाहक अपन प्रिय रेस्तराँ मे बैसल रही तँ कहने रहय—"बाज अयलहुँ बाबू! तोहर विचित्र-विचित्र धंधा छौक। ई सौंसे मोहल्ला-मोहल्ला आ कालोनी-कालोनी बौआ देलें हे, अछिञ्जलाहु! आ कथी ले, तँ आकक गाछ ले'! तोँ बताही नहि छेँ—बताह!"

—'बरनी चुपचाप चाह पी! हमरा कहाँ लागल ई बौआयब एको रत्ती व्यर्थ! सत्ये कहैत छियौक! कोनो मनक बात ले' सौंसे-सौंसे घरती बौआ आइए लोक। तखन शान्ति भेटैत छैक।' ओ हमर विस्तृत भाषणसँ उबिया गेल आ बाजल—सुन, बन्द कर! परीक्षा तोरा ले' बैसल नहि रहतौक, आ ओहिमे हुसलेँ तँ बुझि लिहेँ-पूरा हुसि गेलें बौआ! हमरा बूझल रहय। अपना संभक थकनी आ निराशाकेँ ओ हँसी-ठट्ठा मे खतम करबाक मेनपन क' रहल छल। हम चाहक घोँट लेब' लगलहुँ। एक क्षण लेँ ओकरा मुँहमे सापुट लगलैक। हम कनडेरिये ओकरा देखलियैक। ओ बाहर सड़कपरक भीड़-भाड़ देखि रहल छल। ताबत ओकरा सोझहि सँ एकटा रिक्सा-पर पिण्डश्याम वर्णक एकटा छौंड़ी गेलैक। हम ध्यान देलियैक, ओकर आकृति जेना फेर निश्चल गेलैक। हमरा बिस तकलक ओ। एह्, आइयो मन अछि। फोटो जकाँ ओ दृश्य। बगबियार। ओकरा ई बात बुझा गेलैक जे हम ओकरा ओहि छौंड़ी केँ देखैत देखि लेलियैक। कने लजा जकाँ गेल। हम दोसर दिस ताक' लगलहुँ। ओकर मूड़ी निहुरि गेलैक।

—'की भेलौ? एना मन किए हुस भ' गेलौ?'—हमर स्वर मे मुलायम ममता छल।

—'हँ, तोरा ई आकक गाछ तकबाक कोन बतहपनी बयलौ माथमे आइ!' ओ हमर प्रश्न केँ धकिया क' कात क' देलक। हम ओकरा तौलबाक यत्न कयलहुँ। मुदा ओ खूब सतर्क रहय। ओ छुट्टा जवाब नहि देत, से हम ओकर तसनुक चेहरेसँ बुझि गेलियैक। हमरा चुप होब' पड़ल।

जानि नहि, हमर पयर किएक नहि चलि रहल अछि खूब जोर-जोर सँ। गाड़ी अयबा मे आब देरियो कतबा छैक? मुदा जतबो दूर हमरा आब जयबाक छल तकरा खगेन्द्रबला प्रसंगक अतीत हमरा खूब सुभितगर क' देलक। हमरा बुझाइये नहि रहल छल, परंच असबा कालमे जतेक बाट चलि चुकल रही से बुझा देलक जे हम अपन डेग अटकारि क' नहि बढ़ि रहल

छी । तैं बड़ स्थिर भलि रहल छी । ई सन्देह हमर निराधार छल । से बात हम सोचलहुँ । तखने खगेन्द्रक बात मन पड़' लागल—'मनमे जहाँ कोनो सन्देह पैसलो कि सत्यानाश ! गेलें ।' ओ बड़ प्रबुद्ध हँसी हँसल रहथ। हम ओकर गम्भीरताकेँ आर गहीँर करैत कहलियैक—''तोरामे सत्य छौक, परंच अनुभव नहि । अनुभव क' लेब बड़ पैघ बात होयतौक तोरा लेल ।' हमरा बात पर ओ किछु उत्तेजित भेल । से ओकरा चेहरासँ लागल । मुदा शांत रहल । एक क्षण हमरा तौललक । फेर चाहक पेनी सोख' लागल । —''तोरा बुझल छौक, कोनो अनुभव कोना होइत छैक ? परच छोड़, जाय दहीक ई तर्क-वितर्क । एकटा बात सत्ये लगैए हमरो आब, जे मैथिल बिना तर्कें पानि नहि पीबि सकैए । पहिने ई विशुद्ध गप्प लागय ।'

—'आब नहि लगैत छौक तकर आधार ? किंवा कह—अनुभव ?' फेर एत' अनुभवक प्रश्न उठौलक ।

—'आय, जेना देखैं । आइ हमरा लोकनि एकटा अर्थहीन वस्तुक पाछाँ एगारह बजे सँ बौआ रहल छी । लोको बुझनौ तँ बताह नहि, बूड़ि कहतौ । परंच हमरा दुनू गोटे बलबा बौआ-ढहना अयलौहँ ताहिमे कतेक जीवनी रहय ? एहन धुनि सँ आक लागि रहल छलौं जेना कोनो मेबपर अवबाक तात्विक बात लागि रहल होइ ।'

—'तोहर बात बेसी ओझरा गेलौ, साफ कर ।' हम बीचमे टोक देलियैक ।

—'साफ को ? मानि ले व्यर्थ । एकटा निर्गीह भावनासँ भले, मुदा आक तकैत तँ रहलौं दुनू गोटे ! से किएक तकलौंहे ?' ओ एक क्षण चुप रहि क' फेर संयत तमसाह स्वरे बाजल —''मुदा तोँ ई प्रश्न अरवधि क' क' रहल छें । तों हमर अर्थ बुझि रहल छें । अनठा रहल छें । असल बात ई जे हमरा दुनू गोटेक ई अनुभव, भले विश्वक कोनो महान आविष्कारक प्रक्रियाक अनुभव नहि भ' पाओत, परंच अपना आन्तरिक संसारक एकटा अविस्मरणीय आ ऊँच अनुभव भ' क' नहि फड़ैत-फुलाइत रहत भरि जीवन ? तों सत्त-सत्त कह राजू ?' ओ उदास भ' गेल । फेर बाजल—'तों कह, फेर पुछै छियौक— ई आक तोरा कोना मन पड़लौ ? आ ताहि आकके तों एहि महान शहरक गलीमे किएक ताक' विदा भेलें ? भरि दिन कोन भावनाक दबावमे तों एना कयलें ? तोरा कोन बात बाध्य कयलकौ ?''

—'गाम मन पड़ल ! तकरा बाद सम्भव छैक, दलानपरक आकक गाछ

मन पड़ल । से गाछ एकटा बड़का होममे काटि-काटि क' स्वाहा क' देल गेलैक ।' —'फेर एक टा अन्तर आ कह जे लाथ लगा क' बाजि रहल छें । निश्चिते सोझ-सोझ तोरा कोनो 'बात' गड़लौ आ से आकक सन्दर्भसँ गड़लौ । तों व्यग्र भ' क' घुमलेंहें । हमरो घोर कयलें । यद्यपि कोनो अभियोग नहि तोरा पर । हम कम सँ कम तोहर भावनाक लग-पास घूमि-फिरि गेलियौ । जे तोहूँ बुझने होयबें । ओना बात टारै छें । हमरा से' विशेष अन्तर नहि पड़ैए । हम तँ वैह बुझबै जे हमर अनुभवक पाँच बैटरीवला लाइट देखाओत ।'

—'अनुभवक बड़ जोर छौक मनमे—बल्कि कह जे गौरव ! सम्भव छैक निराधार होउक ।' हम कने किचकिचाइत कहलियैक । ओ क्षण भरि हतप्रभ रहल । फेर सम्हरल— आय दहीक बात । चाहक पाइ दहीक आ चलक । कय गोटेकेँ मैथिलीमे गपसप मोनगर लागि रहल छनि !' हम ओकर एकांगी टिप्पणी केँ कटलियैक ।

—'सम्भव छैक, जीवनक प्रतिवादी परिस्थिति हमरा बेसी लागि जाइत अछि । तोहर स्वभावमे काफी माधुर्य छौक । चुट्टी जकाँ जीवैत रह, बताशामे घर बनबैत रह ।' ओकर ई व्यंग्य हमरा चुभ-द' लागल । मुदा तेहन नुकायल आघात कयने रहय जे हम किछु बाजि नहि सकैत रही । जेना अपने लोकसँ नुकाक' राखल, नुकायल कोनो वस्तुक चोरी भ' गेल हो तँ जहाँ बाजि नहि सकबैक । हम जखन ओकरा दिस तकलियैक तँ निश्चिते हम बड़ निरीह लागल होयबैक ओकरा । कारण, ओकर उत्साह फेर ठंढा भ' गेल रहैक आ ओ हमर हाथ धरैत कहने रहय—'चल जल्दी । बाप रे बाप, दसो मिनट कोनो होटलमे बैसब पराभव-पराभव । हमर तँ प्राण औनाय लगैए । आ तोरा लगै छौक नीक ।'

—'फेर वैह एकतरफी बात । नीक की कोनो हमरा वासा कि मन्दिर लगैए होटल ?' हम किछु तुनकल स्वरमे कहि देलियैक से ओकरा लागि गेलैक ।

—'से हम नहि कहैत छियौक । मुदा, मने चाहैक लेल, तों आबिक' बैसैत तँ छें । आ कि सेहो नै ?'

हम चुपचाप ओकरा देखैत रहलिऐक ।

'हँ । नीक लगैए । चाहो नीक लगैए आ होटलमे बैसबो । कखनो-कखनो सोचैत छियैक तँ मन धिक्कारैए—ट्यूशनक कमाइ सँ पेट चलबनि से एहामे

नहि छनि आ एतेक-एतेक बेर होटलमे चाह पीब' अबैत करताह। मुदा, तोरा तँ बूझल छौक—मात्र चाह। थिकै अधलाह बात। मुदा मनुक्खके कए बेर अधलाहे बात सभ महाआत्मीय बन्धु भ' क' सहायक भ' जाइत छैक। ई बात हम अपन अनुभवसँ कहैत छियौक।' हमर बात समाप्त होइतहि ओ उत्साहित भ' उठल।

—'अनुभव ! तैं तँ कहलियौक। आब तोरा चाहसँ, कि होटलसँ की लगैत छौक—की जानी ? हम तोरा सङ्गे विशुद्ध भावनात्मक मने बैसैत छियौक। यद्यपि सत कहैत छियौ, बेसी काल हम अपने विषयमे सोचैत रहैत छी। तोरा बातमे हुँकारी दैतो, हम सोचैत रहैत छियौक अपन बात सभ। कारण, तोरा लगैत रहौ जे हम तोरा सङ्गे छियौ, सेहो जरूरी लगैये आ जे कि हमरा चाह-फाह ओतेक पवित्र नहि पड़ैए आ तथापि पीबहि पड़ैए तैं अपन आने बातमे मन बहटारने रहैत छी'।

—'एहन कोनो बात नहि छै। हमरालोकनि कोनो वैचारिक बात नहि करै छी ?'

—'कोन 'वैचारिक' बात रौ ? कते एतेक दिनक होटल बैसकी आ चाहक दौड़ा-दौड़ीक एकोटा दिन मन पड़ै ये, जहिया वैचारिक' बात कएने होइ हमरालोकनि ? बेसीसँ बेसी क्लासक छौंड़ा-छौंड़ी सभक चरित्र-चित्रण कि भविष्यक विषयमे कार्यक्रमक चिन्ता। सेहो एहनियें ओहुनीमे। कोनो गम्भीर दायित्वबोध सँ नहि ! तखन ई नहि बूझ जे तोरे टा छौक ई बात ! हमरालोकनि सभ क्यो एहिना करैत छी। प्रायः एहिना करहु पड़ैछैक। की करबें ? भोरका अखबार देखलहीक ?'

—'कोनो विशेष समाचार छैक की ?'

—'कतेक दन इंजीनियर बेकार, आ कतेक दन डाक्टर ! अपनालोकनिक भविष्य बूझि ले ! 'कुत्र गच्छो गणेशः !'—हमरालोकनिक वार्ता एही चिन्ता-वाक्यसँ खतम भेल रहय।

हमरा आगाँ एकटा आर बैलगाड़ी लग भेल जाइत रहय। यद्यपि ओकर हुनू बड़दकें बहलमान बड़ ललकारा द'-द' क' हाँकि रहल छलैक तथापि भरिसक ओकर पयर थाकि गेल होइक। पता नहि, कोन गाममे थाकि रहल छलैक। साँझ आब अपन रङ ध' लेने रहैक। गाछ-पात आ खग-पात बुर्ज जकाँ चतरल। हमरा बुझायल जे प्रायः आब गाड़ी औतैक। यद्यपि एखनो

हमरा पाव भरि जमीन चलबाक छलै। बुझाय हेंजक-हेंज चिड़ै, छोट-पैघ सभ अपना खोंता दिस जा रहल-ए। चिड़ैवला प्रसंगपर मन एकाएक एकटा अनजानी उदासीसँ बोझा गेल। पयर बस वेग बड़ शिथिल पड़ल। पेर झटकारलहुँ।

—'साँझ होइत बेरी घर घूमि आबी।' इला कहने रहय एक बेर। माय मरलौं ओकर ई मातृत्व नीक लागल रहय। प्रायः तैं मन पड़ि गेल एहि घर छूटैत एकसर साँझमे।

— 'कोन घर ? अपन की अनकर घर ?' हम कने तीख भ' व्यंग्य क' देने रहियैक। ओकरा लागि गेल रहैक। हमरा अपन करनी पर स्वयं बड़ क्लेश भेल। ओकरा एकसँ एक कटाह कथा कहि जायमे हमरा कहियो सोचहु नहि पड़ल। मुदा, पाछाँ फेर ओही कटाह कथाक लेल पश्चात्तापक कतेक घोर यन्त्रणा उठौने छी से हमर हृदय साक्षी अछि। ई बात इलाकें बूझल छैक। भरिसक ओकरा हमर ई मन बूझल छैक। तामसमे ओहो रूसि रहल कतेक बेर। खिसिआहि अछिए, दिनक दिन गुमकी लधने रहि गेल-ए। मुदा ओ जे अछि से हमर भविष्य अछि।

—"घर पहिने मान' पड़ैत छैक। अपन आ अनकरक बात पाछाँ उठैत छैक। घर बनब' पड़ैत छैक। रहबाक स्थिति बाधक छैक। अहाँकें कहू बजबाक आदति भेल जाइत अछि। अधलाह बात। अहाँकें की शिकायत अछि ? शिकाइतकें विषाह नहि बनाबी रंजू, प्लीज।' से ओकर प्लीज एहि बातमे कोना गूँज' लागल से हमहुँ नहि बुझलिऐक। खाली एतबा भरि लागल जे हम ओहि अनुगुंजनक आर लग भ' रहल छी, जे हमर अभीष्ट अछि।

—'बेसी उपदेश नहि ने छाँटी, देबौ दू चाट। कोठलीमे जाक' कनबें अढ़ाइ घंटा।'

—'यथार्थ कहू तँ ठट्ठामे उड़ा देबै। अहाँक ई स्वभाव अधलाह अछि। की तँ चाट' दौड़लौं, की ठट्ठामे उड़ा देलौं। अपने नहि सोचै छिऐक बातकें ?'

—'हमर सती तोंही सोचै छें ने ? परीक्षामे जे पैसठि प्रतिशत अंक अबैये से तोरे लिखलाहा। लगतौ चाट, तखन सुझतौ उपदेश !'

—'छोड़ू। परीक्षाकें हम मोजरे दैत छिऐक ? कतहुसँ क्यो उतारि

देलक आ आबि लेलक प्रथम श्रेणी ! अनुको प्रथम श्रेणीक कोनो मोजर ? आ, जहाँ धरि अहाँक बात, तँ से अध्यापकलोकनिक परीक्षाक बुद्धिकेँ कोना बनरा नाच नचाओल जा सकैये से अँटकर अपना लागि गेलए; तेँ ऊपि लैत छी पँसठि कि सत्तरि प्रतिशत अंक ! ई अंक आनब नहि, ठकब छैक ! गुरुजी काव्यशास्त्री, चेलाजी कवि ! बात पटि जाइते, तँ बजबाक मौका आबि जाइये—एतेक प्रतिशत ! मुदा एतेक प्रतिशतक मोल की ? साम गूडब,—साम ! तैयो प्रोफेसर बनत ओएह सभ जकरा ईहो प्रतिशत नहि छैक—ओकरे समाजमे प्रतिष्ठो रहतैक आ जीवन, जीवनक सुभीतो रहतैक। अहाँकेँ रहत काव्य-शास्त्री अध्यापक लोकनिक छुच्छ स्नेह आ अपन बाँझ कविता।'

हुनाक स्वर नियंत्रित नहि छलैक। ओकर कहबामे बहुत किछु अहुरिया काटि रहल छलैक। ओ स्वयं संयत भावेँ बेश कटुतापूर्ण बात कहि रहल रहय। तैयो जानि नहि किएक क्रोध नहि उठल। हम खाली ओकर नेना जकाँ हाथ भाँजिक' गप्प करब देखैत-सुनैत रहलहुँ आ ओकर मुखाकृतिक उतार-चढ़ाव। ओकरा अपन प्रगाढ़तासँ देखैत, हमरा बुरदम यैह अनुभव भेल जे हम स्वयं अपना आगाँमे अपनेकेँ देखि रहल छी आ अपनाकेँ अपने देखिक' काफी संतोषक अनुभव भ' रहल अछि—एकटा अद्भुत सुखक अनुभव। से सुख बहुत कम भेटल अछि जीवनमे, मुदा किछु तेहन स्वाद जकाँ जे आदमी कहियो बिसरि नहि पबैए जीवन भरि ! हम मुस्किआइत देखैत ओकरा सिनेहसँ कहने रहिऐक —"बड़ बजन्ता भेल जाइछेँ। आब बमेठो नहि, धुधुक्का लगतौ। चुप रह। आ जल्दीसँ चाह पिया। आब एको मिनट देरी करबेँ कि हम कहि देबै रमेशकेँ जे तोरा नहि रहलापर हमरा क्यो मोजर नहि दैत अछि।"

'आ हा हा ! डर अछि की ? काजमे काज यैह चाह। कहि देबनि, नहि मोजर दैए क्यो। हमरा डर नहि अछि। अपने बजार जयबाक अछि। टूटा-टूटा पोथी नहि अछि आ परीक्षा रोज दिन लगे भेल जाइए। अहाँपो कहने रही अहाँ कय बजेक नाम ? छौ बजे ?'

'हम तँ ठीके समयपर अयलौहेँ ? देखही !'

—छौ बजे। जेहन छी ने, से छीहे अहाँ। अहाँ छौ बजे कहने रही ? की तँ बिसराइ छी, कि भारी लुट्ठा। कहने रही कि नहि जे क्लास खतम क' क' सोझे डेरे आयब आ पढ़ा देब। क्लास खतम भेल तीन बीसपर। जे-से, रहलान मारैत संभव छैक जे विश्वविद्यालयसँ डेढ़ो मील आब' मे लोककेँ डेढ़ घटा लागि जाय, तैयो तँ बेसीसँ बेसी पाँच बजे धरि अबितौँ......।"

—'ओ ! तँ अपने तमरा क' किताबे कीन' दोकान दिस भ' रहल छलहुँ ? गेल जाओ। रिक्शा बजा दिय' ?"

—'रह' दिय'। बीक नहि छी हम। रिक्शा बजा लेब।' ओ सत्ते तमसायलि रहय। आब जाक' हमर ध्यान गेल। ओ बाहर जाय लेँ तैयार रहय। अपन प्रिय पोशाक सलवार कुर्त्ती आ ओढ़नी चप्पलमे। कुर्त्ती मद्धिम नील, उज्जर सलवार आ उजरे ओढ़नी ! ओ सीढ़ी उतर' लागलि ! हम अपेक्षाकृत बेसी चंचलता देखबैत चट द' ओकरा पाछाँसँ ओकर जुट्टी पकड़ि क' घिचलिऐक। प्रायः ओकरा हमर एहि व्यवहारक आशा छलैक। एकरत्ती बनावटी 'इस्स्' कयलाक बाद ओ ठमकि गेलि। फेर कहलक—'छोड़ जुट्टी।'

—'पहिने हमरा चाह बनाक' पिया दे। तखन जो !'

ओ एकाएक नेना हँसलि जेना चढ़ल तारक मधुर बाजाकेँ कोनो नेना जल्दी-जल्दी अङ्गुरीसँ बजा देने होइक। हमरा खूब नीक लागल। ओ घूरिक' एक बेर देखलक आ फेर जेना गंभीर होइत आ चेतबैत कहलक—ई धीपा-धूता जकाँ जे करैत रहैत छी से नीक बात छैक ? एकदमसँ बुड़्हु छी अहाँ, बुड़्हु ! एक रत्ती ज्ञान नहि अछि अहाँकेँ। हम मात्र चाह उसाहलिऐक तावत दौड़िक' चल गेलि। किछु सेकेण्डमे हमरा कानमे केटली खड़्-हारबाक आ प्याली-तस्तरी सरिअयबाक ध्वनि पड़ल तँ मनमे तेहनाहि सन आश्वास पड़ल जेना चारि दिन बोखारसँ उठलाक बाद लोककेँ पथ्यक तैयारीसँ होइत छैक। हमरा हँसी लागि गेल। हमरा मनमे कोनो तामस वा उलहन आ कि अभियोग नहि छल। हमरा लेल तखन सभ परिस्थिति काम्य छल। कोनो परिस्थितिसँ प्रतिवाद वा आपत्ति नहि। हम तँ ओहि मानसिक स्वच्छन्दता आ मुक्तामे चल गेलहुँ जे यदि आइ स्वयं इन्द्रा कहय जे आइए एखने ओ कतहु जा रहलि अछि—हरदमक वास्ते जा रहलि अछि तकरो निराशा नहि होयत—किछु नहि। हम खाली निश्चिन्त आ उत्साहित आ सन्तुष्ट लोक छी मनमे सभ परिस्थितिकेँ वरदान मानिक' जीब'वला विशुद्ध लोक ! हम एहिना, यैह रह' चाहैत छी। आश्चर्यो नहि होइत अछि जे हमरा एहन-एहन अलौकिक गुणसँ भरि देनिहार कारण कतेक नगण्य, छोट ? ई इन्द्रा ! एकरे मैनमहि व्यक्तित्व ? ओकर ओहि खिलखिलीक अनुगुंजन हमरा घरमे लेपटा क' अपना दिस घीच' लागल। हम जोर-जोरसँ

चल' लगलहुँ। आब स्टेशन पर ठाढ़ किछु मालगाड़ीक डिब्बाक अन्हार आभास देखाइ पड़' लागल।

स्टेशनक पहिल गुमतीपर चढ़ैत काल गामक एकटा हे'जे भेटल। हम चाहलहुँ जे बाँचि जाइ। संभवे नहि भेल। एक गोटे घेरि लेलक—"की बच्चा, बिदा भ' गेलिऐक? गामसँ जा रहल छिऐ?" हम मूड़ी डोला देलिऐक। भरिसक ओ सभ अपनामे हमरा मादे गप्प करैत बढ़ि गेल रहथ। "बड़े आयल छलाह गाम बस'! अंगरेजिया बाबू सभके' कतहु गाममे नीक लगैक। रे, ई सभ तँ लोकेँ दोसर भ' जाइत छै ने? ने कोदारि धर' जोग ने खुर्पी। बेसीसँ बेसी होल्डरसँ मोसियानीमे डुबा-डुबा कागजपर लिख' जोग। बस्स। एहिसँ फाजिल नहि।" स्वयं हम बढ़ि तँ गेलहुँ, मुदा सोचैत रहलहुँ जे किएक हम गामक लोकसँ बचिक' एना जाय चाहि रहल छी? की हम हारल व्यक्ति छी कि चोरि क' क' जा रहल छी? हम किएक नुकायल जकाँ जा रहल छी? हमर कुंठाक कारण की अछि? ताहूमे एकर? खास क' जखन ओ बेचारा एतेक अपनैतीसँ पुछलक जे गामसँ जा रहल छी, तकरो हम नीक जकाँ स्वाभाविकतासँ किएक नहि कहलिऐक उत्तर, जे कोनहुना मूड़ी डोला क' एम्हर चल अयलौं? हमरा अपने मन अपराधी कह' लागल। कय गोटे गाम आयल छथि पढ़ि लिखिक', फेर समय अयलापर अपने घूरिक' चलो गेल छथि। तखन शहर घुमलासँ कुंठित होयबाक हमरे की कारण? किएक हम चुपचाप जा रहल छी? किएक हमर ई शहर घुमब अपनेकेँ बड़ अधलाह लागि रहल अछि? जत'सँ गाम घुरि आयल रही—अर्थात् ओ शहर सेहो हमर पराजित पौरुषक युद्ध-क्षेत्र छल। फेर ओतहु जायब तँ वैह बात भेल। तथापि ओत' जयबामे कोनो स्वाभिक बोझ मनपर नहि अछि। यदि किछु अछि तँ गामे छोड़बाक विवशताक बोध। तेँ हम बिदा होयबासँ ल' क' स्टेशन पहुँचबा धरि बिलकुल निःशब्द रह' चाहलहुँ जे लोक बुझय नहि। हमरा गाममे रहल पार नहि लागल आ हम हारि-दारि क' फेर शहर घूरि गेलहुँ। ओहुना आइ कालिह ई प्रवृत्ति बेस बढ़लैक अछि जे कोनो भद्र लोक यदि दू टा खहिये क' रहि जाइत छथि तँ पड़ोसी ओकरा धकियबैत धकियबैत ठेका देबे धारक कात! भलमानुस लोकके' आइ येह प्रतिष्ठा! जहाँ कि गामवला बुझलक जे ई कोनो मदमे चुप्पा छथि वा झगड़ा झंझटिसँ फराक रहनिहार लोक छथि कि अहाँपर, अहाँके' जे चारि कट्ठा भूमि अछि ताहिपर, अत्याचार शुरू भ' जायत। मतलब जे अहाँ जहिना परदेसिया लोक जकाँ कयलौं कि अहाँक घरक कोढ़ीसँ लोक सहजे अपना घरक दालि बड़काओत। अहाँके' बह' पड़त। कारण, अहाँ तँ गामक रहितो गौंआँ लोक नहि, प्रवासी थिकहुँ। तखन माँ द' चिन्ता भेल। एकसरि रहैये। ताहूपर हरदम दुखिताहि। जानि नहि, एहि डीह परक टूटल-फाटल ऐ घरसँ एकरा कोन धार्मिक माया छैक? कतबो बुझाक' माँके' एत'सँ फराक नहि कयल आ सकलैक। एत' एकसरि रहैये। कयो देखनिहारो नहि। सभ अपना-अपनी क' व्यस्त आ मस्त अछि। आब कहाँ छैक ककरो फिकिर आनके'? सभ अपन कर्त्तव्योके' बड़ सीमित क' लेने अछि। ई बात नहि जे गामक सामाजिकता बड़ निस्वार्थ छैक। एतबा दिन रहिक' जे हाथ लागल रहय से एकटा सर्वथा नवे अछि। लोक एत्तहु आत्म केन्द्रित शहरे जकाँ भ' गेलय। खाली किछु आचरण एखनो भावना आ सौहार्दक बाँचि गेल छैक, सेहो पुरनका लोक सभमे, जे भरि-भरि दिन बोसि सुड़कैत खथि खाक' आ तमाकू खाक' बितलाहा दिनक बातपर खेरैत छथि। बेटा-पुतोहुक दुर्व्यवहारके' संपचामे सामाजिक आन बेटा-पुतोहुवला लग किछु-किछु बजैत छथि। ओ लोकनि सभ व्यवहारक जड़िमे धर्मक सिचन द' क' औचित्य रखबाक अभ्यस्त छथि। मुदा सेहो ओएह पुरने लोक। माने पाकल केश आ थुरकुट आकृति-स्वभाववला!

नवका लोक सभ तँ घूर-धूर लें' साकांक्ष आ आक्रामक। भाला-गड़ाँसक गर्मा-गर्मी सप्ताहमे दू बेर तँ अवश्ये होइत छैक। कखनो डोलक नामपर, कखनो आरि-धूरक लगडाँगे। मुदा, से होइत रहैत छैक। सुनल अछि, हाल-हालधरि गाममे कोनो झगड़ादन नहि। लोक खूब सौमनस्यसँ रहैत छल। एक दोसराक काज-प्रयोजनमे देह तोड़ि क' मेहनति करैत छल आ निमाहि दैत छलैक। कयो होथि, समाजे हुनका उत्तीर्ण करैत छलनि। आब तँ लोक मानबो नहि करैत छैक। सर्वस्व माननिहार 'छौंड़ाक' भीड़ गाममे अनेरे भेटत। चोरिये नहि बढ़ल छैक, घरफँसियो। आ लोक फुसियेटा नहि बजैयै, फूसिक गवाहियो देबाक कय गोटे पेशा धयने अछि। ई परिस्थिति छैक अपन गामक! सोचि क' मन दुःखी भ' जाइत अछि। परंच, जे समाजक प्रमाव छैक से दिन-दिन पसरले जा रहल छैक! आब हम प्लेटफार्मपर ठेकि गेल रही। जकरा हम माल गाड़ीक डिब्बाक आभास मानैत रही सैह छल गाड़ी। आ से घुकी द' चुकल छल! गार्ड साहेब सेहो सीटी भरिसक देबऽवला छलथिन! हम कोनहुना दे दरबरिया टिकट घरमे पैसलहुँ। संयोगे छल जे टिकटो भेटि गेल। कोनहुना प्लेटफार्म पर पहुँचलहुँ तँ गाड़ी हमर प्रतीक्षा करैत ससरि चुकल

छल। कहुना दौड़िक' हम पछिला डिब्बा धयलहुँ। भीतर पैसैत-पैसैत पैसलहुँ। ओहिना साँस फुलैत रहय। हकमैत रही। ताहिपरसँ ई कोंचमकोंच लोक। मथदुखी ध' लेलक। कतहु गड़र बैसाब' चाहलहुँ, सौंसे आँखि दौड़ौलहुँ। कोनो गुंजाइश नहि। सभ लोक अपन-अपन स्थानपर फिट। हम एक कात एकटा डंटा ध' क' ठाढ़ होयबाक प्रयत्न कर' लगलहुँ। गाड़ी रेस भ' रहल छलैक। कोनो दोग-दागसँ एक रत्ती बसात सेहो आब' लगलैक। कैयपर लागल तँ सौंसे देह पैसि गेल। बड़ सुख लागल। हमरा ककरो आकृति चिन्हार नहि लागि रहल छल। ओतेक रास अनचिन्हार लोकक बीच हम ठाढ़ शरीर हिलबैत-डोलबैत गाड़ी पर जाइत रही। अपना रोजीक भविष्य दिस। से एकदम अनिश्चित भविष्य आ अनिश्चित रोजी। गाड़ी छक-छक करैत जा रहल छल। बाहर दुनू कात अन्हरिया ठाढ़ रहल होयतैक, हम सोचलहुँ आ ओतेक कालक बाद पहिल बेर अनुभव भेल जे हमरा ठाढ़ होयबामे आनो कोनो असुविधा अछि, जगहक कमीक अतिरिक्त जे हम नहि बूझि पाबि रहल छी। भेल जे सम्भवतः लोक सभक ई धोल-फचक्का आ खिड़का, तमाकुल चुनयबाक चाट'''ईह सभ। मुदा सेहो हम स्थिर नहि क' सकलहुँ। अपन पयर स्थिर करबाक प्रयास कर' लगलहुँ तखनहि पहिल बेर बुझायल, ओत' हमर घुट्ठी बड़ जोरसँ दुखा रहल अछि। एकहि ठाम एतेक कालसँ ठाढ़ रहलाक कारणेँ आब जाक' पता लागल जे सौंसे देह ओतेक नहि जतेक खाली घुट्ठी दुखा रहल अछि। हम कनेक उदास भ' गेलहुँ। गाड़ीक गति हमरा मनमे तीव्र भ' गेल। हम अपन मनक उदासीसँ पड़ाय चाहैत छलहुँ। हमरा भरि राति प्रायः एही स्थितिमे यात्रा करबाक अछि। काल्हि कय बजे धरि जाक' पहुँचबन' ? जानि नहि, लोक हो एखन वा नहि। जकरा चिट्ठियो लिखने छिऐक, सेहो वा नहि—सुस्मिता। वा महेन्द्र ! बजौलक अछि उएह। आ बहुत सम्भव, उएह नहि हो। तखन ? हुनाक होयबाक विषयमे अनुमान करैत हमर आँखि भरिसक अनायासे मुना गेल आ हम एक हाथ सामान राख'बला बर्थक कोरपर टिका, ओहि बाँहिपर दाढ़ी टेकि गाड़ीक गतिपर झिल'-डोल' लगलहुँ।

जे अनुभव हमरा गामक सिमान छोड़ैत काल भेल रहय ताहिमे हम फेर घुरिआय लगलहुँ। खाली ओहि लाल अन्हारमे किछु ठोस आ आकर्षक लोक सभ मिलि गेल रहय, जे लोक सभ हमर व्यक्तित्वक निर्माता अछि।

□

शरणार्थी उमेदवार

उतरैत देरी सभसँ पहिल बात हमरा माथमे अएह उठल—घर। 'घर पहिने मान' पड़ैत छैक।' ओना मनमे आबि जरूर गेल, परन्तु स्वीकार नहि भेल। एकाक विषयमे हम एखन कोनो तरहेँ व्यस्त नहि होब' चाहैत छलहुँ। किएक नहि चाहैत छलहुँ, से हम स्वयं नहि जानि सकलहुँ। खाली एक रत्ती मन उदास भ' गेल। एहो अधलाहि लागल। बजैत होयतैक मोटिकलसँ रातुक आठ। ओना स्टेशन, प्लैटफार्मे किछु नव नहि रहय, तथापि कनेक अनचिन्हार जकाँ लागल। बेंच-तेंच, खम्भा आ घड़ी, कल आ स्टॉल अपना जगहेपर रहैक आ अपने ढंगसँ नेयो किछु कराक लागल। कैकटा नव सिनेमा सभक पोस्टर सभ सजाबबाक' राखल रहैक। हमरा मन द' देना ध्यान आबय। एएह। मात्र ई नवका पोस्टर पर्यन्त समयक अन्तर बुझा दैत छैक।

पोस्टरमे एकटा अभिनेत्री बहुत पैघ कारी पृष्ठभूमिपर एकसरि ठाढ़ि रहैक। ओकरा आँखिमे बेस पसार आ उदास हेरायल मन। पाछाँमे उज्जर छोट सन एकटा पुरुष छोसर दिस चल जाइत। बाँकी कारी-कारी। माने अन्हार। लागल, जेना ई पोस्टर कोनो अत्यन्त पुरान फिल्मक छैक। वा भ' सकैत अछि, उतारब बिसरि गेल होइक पोस्टरबला। नहि तँ एना कतहु रहितैक !

हम प्लैटफार्मसँ झटकारि क' बहराय चाहलहुँ। ई अभिनेत्री खगेन्द्राकेँ बड़ प्रिय रहैक।

पत्नी खगेन्द्रेक ओत'। गेटसँ बाहर होइत ओरी सम्हारैत हम एक क्षण ठमकि क' सोचलहुँ। आ ठाढ़ भ' गेलहुँ। फेर लगले विचार बदल' पड़ल। एक तँ खगेन्द्र होयत नहि। होयबो करत तँ अपन पित्तीक संग रहैत अछि। रिलिफाइन छैक महा अधलाहि। हमरा हेतु ओकरा कोनो असौकर्य भ' जाइक सेहो अनुचित। अडक' तँ कतहु अस्तहि पड़त।

स्टेशनक हातामे रिक्शा-फिटिन गाड़ीक हुल्ला गुल्ला आ व्यस्तता कम भ' रहल छलैक। लोक सेहो पतरा गेल रहैक। हम आगाँक मुक्त आ नियन लाइटक चकमाउर देखैत रहलहुँ एकटा नेनाक कुतूहलक संग। बुझायल, ईहो हमरा देखल नहि छल। जानि नहि, आगाँ आर की सभ परिवर्तन भेल होइक जे हमर पहिलुका देखल नहि हो। परन्तु एहु चिन्तासँ हमर पयरमे गति नहि आयल। ठाढ़ रहलहुँ। आखिर कत' जायब आ कोन रूपमे जायब !

एकर निर्णय होयब जरूरी छल। एक विरसँ सभ दोस्त, परिचितक नाम भजिया अयलहुँ। कतहु मन प्रसन्न नहि भेल। तखन हारिक' छोटी लटका पहिने एक प्याली चाह पीबिक' निर्णय करबाक विचारे टुघर' लगलहुँ।

ओहि दोकानपर उएहे पुरना भीड़। चुकड़ीक चाह। सोन्हायल गंध आ मनपसिन्न रंग। दू चारि घोंट ठोठसँ उतरल तँ कनेक स्फूर्त्ति भेल—हर्ज नहि आब। तुरन्त कोनो निश्चय क' रिक्शा धरब आ पहुँचब। बड़ थाकल लगैत अछि मन।

सुस्मिताकेँ चिट्ठी भेटि गेल होइक संभवतः। भेटलि होयतैक। आ ईहो उमेद जे ओ बेरामे प्रतीक्षो क' रहलि हो। ताहि हिसाबेँ आब विलम्ब भ' रहल अछि। अनेरे बेचारीकेँ असुविधा होयतैक। हम जल्दी-जल्दी रिक्शा ठीक क' विदा भेलहुँ खजांची रोड। आब रिक्शेक चालि मिरहिसी बुझाय। अगुताइत कहलियैक—'कने फुर्तियेसँ चल' हौ भाइ।' ओ पाँच-सात पायडिल तँ बेस फुर्तीसँ चलौलक, मुदा फेर उएह चालि। तामसो उठल। होअय जे अपने चलब' लागी रिक्शा आ एकरे कहिऐक 'बैस' आरामसँ तोँहीं। नालायक नहि तन!" परन्तु से कथल कहाँ भेल! इजोतसँ नायल सड़क नियंत्रित महीँस जकाँ रिक्शाक पाछाँ-पाछाँ चलैत रहल। हमर मन सड़क आ चौबट्टीक एहि भीड़मे फेर उदास भ' गेल आ निर्णयहीन सेहो। कनेक चिन्तित! अपन परिस्थितिकेँ हम एको क्षण बिसरि क' नहि रहि सकैत छलहुँ। सभटा वातावरण उएह रहितो हमरा हेतु ओहने लागय जेना अन-चिन्हार समाजमे होइ। सभसँ पहिने तँ स्टेशनक 'चौराहा' देखिक' अकचक ने फुरल रहय। हठात् भेल, कोनो आने स्टेशन तँ नहि उतरि गेलहुँ! परन्तु से भ्रम बेसी काल नहि रहल। स्टेशन ठीके रहैक। खाली ई चौराहेटा परिवर्तित भ' गेल रहैक। कोनो दुब्बर-पातर बाल संगीकेँ जेना कतोक वर्षक बाद क्यो देखय आ बहुत मोटा गेलाक कारणेँ, ओकरा ओखि फूटि अयबाक कारणेँ चीन्हि नहि सकय। हमरा सैह लागल ओहि चौबट्टीकेँ देखि। आ मने-मन संवादो तहिना भेल ओकरा संग—हुर परवा, तोरा तँ चिन्हले ने भेल! ततेक ने 'जबर्दस्त' मोटा गेलेहेँ जे …। रिक्शापर हमरा हँसी लागि गेल। फेर मन अनेरे गंभीरो भ' गेल। हम ताहि दिन जाहि होटलमे नियमित चाह पीबी तकरा आगाँ द' क' रिक्शा [illegible] रहल छल। हम किछु स्टूडेन्ट देखलियैक। लागल, जेना ओ जगजियार नहि होइक।

सभटा जेना मनहूसीये आ विपन्नता दिस बढ़ि रहल छैक। आ ई समय? एहिमे कोनो मित्र भेटायत कतसँ? सभ जुआनीएमे बुढ़ारी जीब' लागल अछि। दिन कटबाक मुद्रामे। जतबा मित्र मन पड़ैत अछि, सभक चेहराक छोकड़ी ओकाचि गेल छैक। शहर भरि जेना ओकचि गेलैक अछि। दू मकानक बीचक खाली गली गर्दनामे मकान सभ ठाढ़ भ' गेलैक अछि। शहर आब कतहुसँ फैल नहि लगैत अछि। एक घरक ठीक पाछाँ पहुँचमे ओकरेँ आधा मीलक चक्कर काट' पड़ैत छैक।

अन्हार-इजोत सड़कपर हमर रिक्शा कखनो एकसर नहि अछि। आगाँ लागल पचीस रिक्शा आ पाछाँ सेहो चालीससँ कम नहि। बेस पैघ पतियानीक बीचमे हमर रिक्शा? ट्राफिक पुलिस अपन तरहत्थीसँ पूरा पतिनीकेँ रोकने ठाढ़ अछि। ओकरा मुँहमे लटकल सीटी लगैत छैक, जेना चूनक ढेप लटकल हो! हमरा हँसी लागि आइत अछि।

मनुक्ख कोनो व्यक्ति किंवा व्यवस्थाक प्रति अपन कोनो तरहक घृणाकेँ आब खोल-खोल व्यक्त नहि क' पबैत अछि। कोनो उपमामे घृणा व्यक्त करैत अछि। 'मुँह चून सन लगैत छैक' पुलिसक से भाव 'ठोढ़मे लटकल चून' गढ़िक' सन्तुष्ट भेल। जेना चौकी दैत बड़द हरवाहक डिटकारीपर खूब तेजीसँ आगाँ तँ बढ़' लागल हो, मुदा चौकीक एक कातक बड़द्दी घुसि गेल होइक। पाछाँ-पाछाँ चौकी व्यर्थ घिसिआयल जा रहल हो। रिक्शावला सभ फुर्तीसँ उचकि-उचकि क' हाँकब शुरु कयलक। हमर साँसा छूटल। हः! ई शहरक चौबट्टी सेहो बेस होइत अछि। उत्साहमे, जल्दीमे, हड़बड़ीमे अहाँ प्राण हुतने भागल आउ। चौबट्टीपर पुलिसक तरहत्थीक चारु ठाढ़ रहल! माने एकटा जबर्दस्त अर्द्ध विराम! नगरक अर्द्धविराम। ई सोचब हमर पूरा रिक्शा-यात्रा कोना तय करबा देलक से हमरा ठेकान नहि। खाली खजाँची रोड दिस जखन मुख्य सड़कसँ रिक्शा पैस' लागल तँ पुस्तकक दोकानक प्रकाशकक साइन बोर्ड देखि क' चौंकलहुँ। हमरा मन घकि गेल। आ घृणा आयल। फेर तामस उठल—ई प्रकाशक आधा पोथीसँ ऊपर, माने छ-आठ फर्मा शुरु पढ़बा क' पाइ नहि देलक—यद्यपि से शुरु हम बी० ए० परीक्षाक समयमे रातिमे जागि-जागि क' देखने रही पाइक अभावमे। रोज दौड़बैत रहल। स्वाभिमानकेँ नीक नहि बुझायल। मने-मन ओकरे प्रतिपक्ष-स्वाच्छन्न क' देलियैक। ताहि दिन बड़ शान्तिवादी आ आदर्शवादी रही। अनको अपराधमे अपने कोनो दोष बुझाय, ई रहल

मानसिक उदासता ! जाय दे ···। पातरोमे पातर गलीक मुँहे पर, फल छुर-छुर-छुर-छुर ओहिना बहैत— अगली धाँड़ाक मुतब छवी । इएह एकटा वस्तु तँ पारचित पुरान भेटल !

हम रिक्शासँ उतरलहुँ । भर्ँपा देलियैक आ अन्हारमे पैस' लगलहुँ । हमरा बुझायल, हम धरतीक एहि घन-घोर अन्हरियामे पहिल बेर उतरि रहल छी ।

हमरा किछु नहि सूझल अछि— कत' की छैक ? कोन वस्तु किएक छैक आ ककरा हेतु ? लैम्प पोस्टपर सेहो अन्हरिया लटकल । हमर डेग थक-भकायल भावेँ बड़ स्थिरेँ बढ़ि रहल छल । ओत' पहुँचिक' मनमे आबि रहल छल जे बेकार अयलहुँ—एत' । घूरि जयबाक चाही···किंवा कोनो होटलेमे भरि राति··· ।

तीन सीढ़ी चढ़लापर बरंडामे आबि सकैत छी । बरंडाक बल्ब ओहिना नहि रहि पबैत छैक तीन दिनसँ फ्यूज । जेना खुजल बरंडा हो तँ अहूँक बल्ब नहि रहि पबैत होयत, कारण क्यो खोलि क' ल' जाइत होयत । तेँ दोसर सीढ़ीक अन्हार तर हम ठाढ़ गुनधुनिमे घरक वर्त्तमान वातावरण पानि लेबाक हिसाबेँ कान लगौने रहलहुँ । भीतरसँ खाली कपसँ भरल जाइत बाथरूमिक स्वर आबि रहल छल । हमरा भेल अनुपयोगी । आ कोनो गिलास खसबाक झन्नाहटि । तकर तुरन्ते बाद बामा दिसक कोठलीसँ पुरुष स्वर उठल— 'विचित्र हालत छैक घरक । के रखने छल गिलास एहि रैक पर ?' फेर स्त्री स्वर ! हम धड़धड़ायले चढ़ि गेलहुँ बरंडापर । लागल, केबाड़केँ जेना थपथपौलियैक जेना हम अपन परिचितक घर नहि, कोनो होटलाक केबाड़ लग ठाढ़ होइ । मात्र तीन टेकैपक । सन्तोष भेल । केबाड़ बाहरवला कोठलीक खोलल गेल । इजोत बारल गेलैक । हम बीच चौखटिक प्रकाशमे ठाढ़ रही ।—'अरे, अहाँऽ ?' सुस्मिता दू डेग हमर दिस बढ़ि आयलि । देखलक । ओ खूब सुन्नर साड़ी हल्लुक गुलाबी छींटक पहिरने रहय । गुलाबी आडो । ठोढ़ोपर भरिसक गुलाबी लिपिस्टिक आ सबका जुड़ी, ई जूड़ा ओकर विशेष बात छैक । सुस्मिता बेस चुस्त आ आकर्षक लागि रहय । हमर मुँह केहन लगैत होयत से हम नहि कहि सकैत छी । हँ, एतबा बुझायल जे ओ कतहु बाहर जयबा लेल तैयार अछि । फेर जेना ओकरा किछु फुराइ । ओतहिसँ चिचिआयलि—'सुनै छी, एम्हर आउ देखियौ । के ?'

—इएह कनेक 'नोट' ठीक करैत छी । अयलहुँ । के ?' ओम्हरसँ पुरुष स्वर ।

—''आउ ने । ठाढ़ किएक छी । ओहि कुर्सी पर बै, नेनाक-भुटकाक पानि हेरा देने छैक । एम्हरका पर बैसू ।'' हम नवागंतुक पाहुन जकाँ बैसि गेलहुँ । सुस्मिता खाली देखिक' बिहुँसि दैत छलि । हमहुँ जबाबमे बिहुँसि दियैक । ओ ठाढ़िये रहय । हम कोठलीक परिवर्त्तन-परिवर्द्धन देखबामे आँखि खिरा रहल रही । एकटा खूब सुन्दर नव फोटो चिन्हाओल गेलैं अछि—एम्हर । ओहि रैकमे राखल छैक । हमर आँखि टिकि गेल ।

—'माँ कोना छथि ?' सुस्मिता पुछलक । हम ओकरा दिस देखलियैक —'ठीके छैक । तोरा लोकनि ? आ तोहर बाल गोपाल सभ ? देखैत नै छियैक ?' हम पुछलियैक ।

—'साँझे सूतल ।' ओ किंचित लजायलि जकाँ बाजलि । तकर हमरा अर्थ नहि लागल ।—'कैंटा छौक ?' हम पुछलियैक ।

—'अरे अरे, वाह वाह ! कोम्हरसँ औ । ई अचानक ?' हमरा संतोष भेल । चिट्ठी नै भेटलैक सुस्मिताकेँ । ठीक भेल । हम चुपचाप हँसैत बैसल रहलहुँ । साथी हुनक अभिवादनक प्रतिअभिवादन क' देलियनि ।

—'दू वर्षसँ कम नहि भेल भेंट भेना हमरा लोकनिक, नै ? ओ पुछलनि । हम मूड़ी डोला देलियनि । सुस्मिता अपन बरक एहि बातपर हँस' लागलि । जे-से । ओकर ई मौलिक हँसी कतहुँसँ कुंठित नहि भेल छैक आइयो । ईहो हमरा संतोषक विषय लागल । एकटा उत्साहवर्द्धक समाचार ।

—'अखन कोना की ? की कार्यक्रम ?' ओ पुछलनि अर्थात् श्री विष्णुचन्द्रजी —सुस्मिताक पति । हम अपन कन्हाक झोरी कातमे राखि देलियैक । सुस्मिता कुर्सीसँ उठलि आ ओकरा दोसर घरमे राख' ठाढ़ि आयलि होयति । ओहू घरमे टंगनी छैक प्रायः ओही देवाल पर । ओना कोठलीमे काफी नवो नव वस्तु, वातावरण सभ बदलियत छलैक । हमरा एकरत्ती अपरिचित जकाँ अनुभव भेल । तकरा रेवाड़िक' मनसँ भगौलहुँ ।

—'मुँह हाथ धो लिय' ने । गाड़ीयेसँ उतरलौहेँ ने ?' सुस्मिता पुछलक । नीक लागल ।

—'उठै छी । कोनो हरबड़ी अछि ? पहिने एक प्याली चाह पिया सुस्मिता । भरि बाट कतहु ठेकनगर चाह नै भेटल-ए । मन विकल अछि ।' ओ फेर खूब जोरसँ हँसलि । वरो हँसलथिन । ओ हमर 'विकल' शब्द पर भभाक' हँसलि । फेर भनसा दिस गेलि । हमरा नीक लागल ।

एके मिनटमे ओ घूरि आयलि । कातमे बैसि गेलि । हम आश्चर्यत भावेँ उम्हर दिस देखलहुँ । विष्णुचन्द्रजी घड़ी देखलनि, फेर अपन कनियाँ दिस देखलनि । ओहो देखलकनि । ओकरा आँखिमे किछु विवशताक भाव रहैक । हमरा किछु अनुमान भ' गेल । हम अपन आँखि अनमनायल रखबाक यत्न कयलहुँ—जेना हम किछु देखिये नहि रहल होइ । किछु क्षण नितान्त चुप्पी रहलैक ।

—'कतेक बजलै ?' हम अनठियबैत पुछलियनि ।

—'पाँच मिनट छै बाँकी नौ बाजै मे ।' हुनकर जेना साँसा मुक्त भेलनि ।

'तखन आर की कार्यक्रम अछि !' हमरा मनेमन हँसी लागि गेल । बाहरसँ बेस गंभीर रहलहुँ । विष्णुजीक आदति ।

—'अहाँलोकनिकेँ विलम्ब तँ नहि होइत अछि ? जेना कोनो कार्यक्रम हो ?'

—'हँ ! हमरालोकनि बस निकलिये रहल छलहुँ । तुरन्त । सिनेमाक टिकट मङबा लेने छी । चलब अहूँ ?' ओ बेस हुलुक भेलाह अपन कार्यक्रमक सूचना द' क' ।

—'नै नै । हमरा इच्छा नहि अछि । मन बड़ भारी लगैए ।' हम हुनका मुक्त कयलहुँ ।

—'सत्ये, राजूदा कथी ले अयताह । थाकल ठेहिआयल होयताह । आराम करताह । घुरनाकेँ हम बुझा देलिऐक अछि । जल्दी खोआ देतनि । चाह चढ़ा आयल छिऐक । जे घड़ी मे आबि जाइए । राजूदा···'सुस्मिता हमरा दिस बड़ असमंजस भावेँ देखलक । हम बुझलिऐक ओकर मन । कनेक हँसी लागल, कने दुःख भेल । मुदा ओकरा मुक्त करैत हम कहलिऐक—'हँ-हँ तोँ चिन्ता नहि कर । हम कोनो पाहुन नहि छी एहि घरक । अपन सुभीता हम बना लेब । जाइ जो । आब तँ छूटि जयतौ ।' हम उत्साहित कयलिऐक ।

—'हँ-हँ चलू । फेर रिक्शो-तिक्शो भेटै मे समये लागत ।' विष्णुजी हड़बड़ा क' उठि गेलाह ।

—'ठीक छै ठीक । कनेक चाह पीबि ली, राजूदा संग । एतेक बिलगर अयलाहे···'

—'अहूँ की औपचारिकतामे लागि गेलौं' ? विष्णुजी कनेक तीत होइत बजलाह पत्नीकेँ ।

—'ठीके छै । जो ने तोँ । हम पीबि लेब ।' मुदा ओ मुँह खसौने बैसलि रहलि । ओकर ई जिद हमरा बड़ पैघ संतोषो देलक । ओकर इएह बात छैक जे हमरालोकनिक सम्बन्धबोधक सेतु अछि । कहियासँ ने । बहुत दिनसँ । हम फेर गुम भ' गेलहुँ ।

छौँड़ा नव अयलैक अछि घुरना । बेस गमैया । चुपचाप आबिक' चाह धरा गेल । हम पीब' लगलहुँ । विष्णुजी आदतिक विरुद्ध प्लेटमे ढारि क' पीब' लगलाह । सुस्मिता एक बेर तँ हुनका देखलकनि, फेर अपने भावेँ पीब' लागलि । जेना ओकरा कोनो हड़बड़ी नहि होइक । हमरालोकनि आधे पीने होयब चाह तावत विष्णुजी प्याली-तश्तरी टेबुल पर ससारि क' राखि देलथिन आ रुमालसँ ठोढ़ पोछलनि । हमहूँ जल्दी-जल्दी पीब' लगलहुँ—तश्तरीमे ढारिक' । सुस्मिताकेँ आधार देबा लेल अपन ई व्यवहार हमरा नीक लागल ।

स्त्रीगणक हालति एखनो सैह छैक समाजमे, पुरुषमे । विष्णुजी उठलाह । सुस्मितो उठि गेल । कोठलीसँ बहराइत विष्णुजी सूचना देलनि—'बेस तँ फेर भोर गप्प होयत ।' हम हँसलहुँ । तीन चारि डेग बरंडामे चल गेलाक बाद सुस्मिता घुरि आयलि । बाजलि—'नहयबाक मन हो तँ साबुन छैक स्नान-घरमे । नहा लेब । आ खाइक इच्छा हो तँ दोकान क' नहि पठायब, घुरनाकेँ कहबै, बना देत । ठीक ?' ओकर खिहँसी आ 'दोकान नहि पठायब'क ध्वंग्यसँ हमरो हँसी लागल । ओ चल गेलि । ओकर ई सभ कहबाक समर्थनमे बरंडेसँ विष्णुजी सेहो बजलाह—'हँ' से दोकान नहि पठायब राजूदा ।' हमरा हँसी लागल । ओ लोकनि तीन सीढ़ी उतरि गेल होथि संभव । हम कुर्सीसँ उठिक' पाछाँ-पाछाँ चारि डेग गेलहुँ । गलीमे ओ लोकनि जा रहल रहथि । हम घुरिक' आबि फेर कुर्सीपर बैसि गेलहुँ । फेर बच्चा सभकेँ देखबाक स्मरण भेल । हम टहलि क' भीतरबला कोठलीमे गेलहुँ । दुनू बच्चाक मुँह उघार रहैक—दुनू निश्चिन्त सूतल । हम निहुँरिक' देखलिऐक । बेटी पैघ छैक । चारि वर्षक, पिडश्याम । एकर जन्म भ' गेल रहैक । बेटा छैक दू वर्षक, गोर-नार, नीक छवि-छटामे । हम नाम मात्रक इजोतमे सूतल दुनू बच्चाकेँ बेरा-बेरी छूक' अनुभव कयलिऐक । फेर नहि रहल गेल तँ बेटीकेँ चुम्मा लेलिऐक । कनेक तृप्त भेल मन । फेर कनेक उदास भ' गेल । चारूकात देखलिऐक—विशेष किछु परिवर्तन नहि । पत्रिका सभ, अखबार, कपड़ा-लत्ता, पलंग आ शृंगार-मेज । सभटा सैह सभ रहैक । टेबुलपर एकटा फाइल-चीठल क्लाउड टाइम रहैक । सुस्मिताक । देखिक' हमरा कचोट भेल । अद्भुत अछि ईहो । एकरा

एना टकने अछि जेना दर्शनीय वस्तु होइक। हम ओहि कोठलीसँ बहराक' बाहरवला बरंडापर टहल' लगलहुँ।

घरमा भरिसक रोटी पका रहल छलैक। हमरा भेल जे एक बेर मनसा घरमे हुलकी दिऐक। मुदा से कयलहुँ नहि। टहलिक' स्नान-घरमे बैसि गेलहुँ। बत्ती बारलियैक तँ आमा दिसक लस्तापर साबुनक टटका डिब्बा। हम प्रसन्न भ' उठलहुँ। भेल जे नहा ली। सेहन्तगर बुझायल नहाएब। मुदा फेर आसकति भ' गेल। अनठा देलिऐक आ घुरि अयलहुँ। बाहरवला कोठलीमे एकटा कुर्सीपर बैसि गेलहुँ। कातमे ट्रांजिस्टर राखल रहैक। नवे लेलक अछि भरिसक। लगौलिऐक। फेर एक्के मिनटमे बन्दो क' देलिऐक। हम फेर टहल' लगलहुँ। कोठलीभरिमे एक चक्कर। मन तुरन्ते उबिया गेल। इच्छा भेल जे आँखि-मुँह पर ठंढा पानि छीटी। संभव जे मन किछु हल्लुक हो। उठलहुँ आ स्नानघरमे जा आँजुरे-आँजुर पानि छीटलिऐक मुँहपर। कनेक श्वास पड़ल। ओरपरक तौलियासँ मुँह पोछैत अयना लग ठाढ़ भेलहुँ। ई अयना एहन पैघ आ सुन्दर नहि रहैक एहि घरमे। आब तँ पूरा एकटा आदमी एहिमे ठाढ़ देखा जाइत छैक। हम केश फेरैत शीशाक प्रशंसा कर' लगलहुँ। ओतसँ उठिक' गेलहुँ पत्रिका सभ दिस। फिल्मी, गैर फिल्मी, व्यावसायिक पत्रिका छनकनायल छैक। बहुत दिनसँ प्राय: खोलल नहि गेलैक अछि। ईहो सभ जे खोलल जाइत छैक तकरो कारण अद्भुते रहैत छैक। बेसी काल तँ सिनेमा देखबाक इच्छा आ पाइक अभावमे सनेंट क' खोलल जाइत छैक। सिनेमाक बड़ चाट छैक दुनू व्यक्तिकेँ। कोन आश्चर्य बच्चो सभके "एहने भ' जाइक। हमरा अनेरे हँसी लागि गेल। ई सभ चिन्ता बेकार थिक। निष्प्रयोजन थिक ई सभ। हमरा नहि किछु करय। एकटा पुरान धर्मयुग उनटाक' देखलिऐक। सभटा नवा —पाठकीय पत्रसँ ल' क' बाल जगत आ ताहूसँ आगाँ परीक्षा। पुस्तकालयक विज्ञापन धरि। सभटा बैह बासि-तेबासि। मन उबिया गेल। अपन ओरी ताकिक' अनलहुँ। कागतपत्रक फाइल बहार कयलहुँ। एक दिनक नूड़ बाजिक' अपयाक चयक-गनीपर ग्लानिपूर्ण हँसी हँसलहुँ। फेर साँझ मुँह मन पड़ि गेल तँ उदास भ' गेलहुँ। इन्टरभ्यू छैक काल्हि बारह बजे। आइ नहि। गामसँ अगुता क' पठयबा लेल एक तारीख पहिने काढ़िक' हम माँकेँ हड़बड़ा देने रहियैक। हमरा शहर अयबाक ओतेक उपह करति, तेँ से कहने रहियैक।

□

अमूर्त यथार्थक स्पर्श

'ओकरा मनमे बड़ मनोरथ छैक जे बेटा 'पोरफेसर' होइक। लोक 'पोरफेसरक' मायक कतेक मान-दान करैत छैक। बेटा बड़ कष्टसँ पढ़लकैक तेँ नीक दरमाहावला ई 'पोरफेसरी' अवश्य होइक, जीवनमे आबो सुख भेटैक। बियाह-दान करओ, अपन खूब नीक डेरामे रहओ सभ।'— एतबा मात्रो सोचैत माँकेँ उकासीक घरोहि धर' लगैत छैक। ओकर कुर-कुड़ भ' गेल स्याहाक आकृतिमे उनटबा-उनटबा पर दुनू आँखि, जेना बिकृत भ' क' लटकल रहि जाइत छैक आ तीसे शरीरक जे दू-चारि बुन्द शोणित, से चेहरेपर आबिक' जमा भ' जाइत छैक। हमरा ओकर एहन आकृति देखबाक साहस कहियो नहि भ' सकल। हम, जखन ओकरा उकासी उठैत छैक, तँ आन दिस मुँह कयने खाली ओकर खों-खों-खोंकेँ सहैत रहैत छी। सहिते चल जाइत छी कान-कपारपर ठक-ठक। ओकर साँस फुलैत रहैत छैक

आ हमरो दम घोंटाइत रहैत अछि, कि सँ चुपचाप पसलि क' ढलानपर चल जाइत छी, आ टहल' लेल लम्बोदर ओत'। ओहो कोखन क' भाड़क ओरियाओनमे नहि रहिक' कुसियारक पतोहि किंवा पोस लेल बाध गेल रहैत अछि तें घुरिक' टुटलाहा बलानक ओहि चौकीपर ओलड़ि रहैत छी जकर एकटा तख्ती बीचो-बीच बहरा गेल छैक। दुनू कातसँ पीठ दू दिस बँटायल रहैछ आ बीचवला पीठ ओहि खलियाहा जगहमे गड़ल रहैत अछि। अनमन तहिने जकाँ। बड़ीकाल पड़ल-पड़ल आँखि लागि जाइत अछि आ खिदन कहाँदन सभ देख' लगैत छी। एकटा बड़का विशाल पहाड़। वन-झाबूरवला रोइयाँक तरमे विशाल पहाड़ बड़ी दूर धरि पसरल जाइत छैक। जेम्हरे कनेक एक-बट्टी जकाँ इजोत बुझाइ पड़ैत अछि कि लंक ल' क' ओम्हरे पड़ाइत छी। परन्तु पहुँचिक' पबैत छी बड़का दुर्गम पहाड़क एकसर भयाओन वातावरण। अन्हारक ठहक्का। आ जंगली जानवर सभक गुम्हरब-बाजब। देह भुतकि जाइत अछि। आ होइत अछि जे पड़ाइ कतहु लंक ल' क'। मुदा सभ दिस तें घेरले अछि। एकटा मोलायम गाछक ठाढ़ि जकाँ अरड़ा क' खसि पड़ैत छी ओहि जंगल झाड़क महारोग तरहुक खरहोड़िमे नपता जकाँ। अचेत भ' जाइत छी। तखन ओहुने विस्तृत पहाड़परक एकटा चोटीपर उज्जर दप दप टोपीवला पहाड़ भगवान जकाँ विहुँसैत अछि आ आशीर्वाद देब' चाहैत अछि। हमर आँखि खुजि जाइत अछि। सोझामे एक मिनटक भीतर हजारसँ बेसी लोक। सभक माथपर टोपी। सभ टोपीपर किछु ने किछु लिखल। हमरा ओ भगवान जकाँ पहिल टोपीवला लोक कहैत अछि—लग आब' आ सभ टोपीपर लिखलाहा बात पढ़'। हमर आँखि चोन्हिया जाइत अछि। हम किछुहुँ नहि पढ़ि पबैत छी। ओ जाहि लिपिमे लिखल छैक से हमरा पढ़' नहि अबैत अछि। हम फेर पढ़लाहा लिपिक सभ सूत्र मिझबैत छिऐक। मुदा तैयो नहि।

ओ हमरा विहुँसिक' पुछैत अछि—'नै पढ़ल हैत'? बुड़ि नहि तन! एम० ए० पास छ'। जा डूबिक' मरि जा।' ओ हमरा एकटा हहाइत-फुफियाइत बड़का समुद्र देखा दैत अछि आ हम ओहि दिस जादूसँ ठेलायल चल जाइत छी। हम बहुत दुःखी आ पराजित भावेँ बढ़ल जाइत छी। हमरा पीठ पाछाँ कएटा टोपीवला जेना भक्ष पुनर्भ्यास करैत हो एहि बातक, तहिना खूब चिक्कन लैमे संवाद दोहरा रहल अछि—हुँह, एम० ए० पास। जकरा टोपी पढ़ल नहि होयतैक सेहो पढ़ले लोक भेल?

हम जखन ओहि समुद्र लग पहुँचैत छी तँ एकटा पहाड़ ओहि विस्तृत पानिपर बत्तकक झाँक जकाँ प्रेमसँ हेल' लगैत छैक आ हमरा कातमे आबिक' एकटा अनच्छ नढ़िया ठाढ़ भ' जाइत अछि। ओ नढ़िया जाहि ढेंबकापर ठाढ़ हमरा दिस मनुष्य जकाँ देखि रहल अछि से ढेरी साँस-साँस कतोक मनुष्यक अस्थिपंजर छैक। हमर देह सिहरि जाइत अछि। आतंके हम आँखि मूनि लैत छी। तखन हमरा खूब विकराल, चुनौतीसँ भरल हँसी सुनाइ पड़ैत अछि आ ओहि आवाजमे—''धिक्कार! तों नढ़ियोक भाषा नहि पढ़ि सकैत छ' आ पढ़ल-लिखल छ'?' हम साहस क' क' आँखि खोलैत छी। नढ़िया टोपी पहिरने अछि उज्जर धप-धप। हमरा आश्चर्य प्राण जाय लगैत अछि। नढ़ियाक पाछाँ हजारो नढ़िया। दाँत खिसोटने, टोपी पहिरने। ओकर एहि सामूहिक उपस्थितिमे हम तेना घेरायल लगैत छी जे कोनो बाट नहि देखाइत अछि। हमरा अपन पीठ आ कन्हापर प्रतिपल दबाव बेसी पड़ल जाइत अछि आ हमरा ओहि आतंक आ विवशताकेँ सहबासँ नीक रस्ता लगैत अछि डूबिक' आत्महत्या क' लेब। हमर पीठपर धक्का लागि रहल अछि। मुदा ई नढ़िया-समूह हमर शेष जिजीविषापर व्यंग्यसँ दाँत बबैत अछि आ जेना एके संग सैकड़ो बाँसक फट्ठी बजाओल जाय अनमन तहिना आवाज करैत अछि। आ फेर खिखिक' कह' लगैत अछि—एहि समुद्रमे कतेक मूर्ख मरि गेल अछि, नहि बुझल छ'? हमहूँ सभ मरिये गेल रही। मरहि लेल ठेलि क' पठाओल गेल रही। मुदा संयोग कह' जे बाँचि गेलहुँ। रच्छ रहल भगवानक, साक बाँचि गेलहुँ। नढ़िया बनि गेलहुँ। फेर विकायल हँसी।

हमरा बुझहिमे नहि आबल जे मारल जायवला लोक नढ़िया बनि गेने बाँचि कोना जाइत अछि। मनुष्य नढ़िया कोना बनि सकैत अछि? आ एके जन्ममे मनुष्यके नढ़िया बना कें सकैत छैक? हमर ओहन हताश आ त्राससँ भरल मनमे ई प्रश्न बड़ तेजीसँ फुरायल। मुदा बाजल नहि भेल। दयनीय भावेँ एक बेर आँखि उठाक' देखबाक दुस्साहस कयलहुँ। समस्त नढ़ियाक आकृतिपर मेंही-मेंही सोनाक तारक जाली लपेटल रहैक आ सभक भाव बड़ आत्मीय भ' गेल रहैक। सभ स्थिरेसँ मूड़ि डोला रहल छल आ ठाढ़ छल। ओकरालोकनिक एहि शान्तिजुलूसमे अपनाकेँ एक क्षण आश्वस्त पयबाक अनुभव भेल आ ताहि उत्साहमे हम बड़ चिकरिक' बजलहुँ—'मनुष्य कोना नढ़िया बनि सकैत छैक? मनुष्यकेँ के नढ़िया बना दैत छैक? मनुष्यके नढ़िया के बनबैत छैक?' हमरे प्रश्नकेँ दोहराक' समवेत स्वरमे ओ सभ

तेना भभाक' हँसल जेना हम कोनो भारी मूर्खता क' देने होइऐक ओकरा-लोकनिक आगाँमे। ओ सभ बड़ी काल हँसैत रहल। फेर ओकरा सभक पाँखि-सँ कारी-पीयर धुआँक बसात उठ' लगलैक आ आँखि कड़ुआय लागल। मुदा हम ततेक भयभीत भ' गेल रही जे हमरा अपन आँखि मीड़ल पर्यन्त पार नहि लागल। मूनियो नहि सकैत छलहुँ।

—'सोँ तँ जथान छ'। नेना नहि छ'। मनुष्यकेँ नड़िया मनुष्य बनबैत छैक। आइ-काल्हि मनुष्यक स्मगलिंग बड़ चलि रहल छैक। तेँ नड़ियाक आबादी जंगलमे नहि अँटलैक तँ ओ शहरोमे आब' रह' लगलैक अछि। भगवान बेचारेकेँ पते नहि छनि। ओ तँ अपना कोटासँ ओतबे नड़िया बनबैत छथि आ पठबैत छथि। मुदा मनुष्यकेँ ओतबे नड़ियासँ काज-प्रयोजन चलि नहि पबैत छैक, तेँ आब बाध-बन, जंगल-झाड़सँ नड़ियाक तस्करी कयल जाइत छैक। गामो-घरमे तैयार कयल जाइत छैक। हमरोलोकनि कौलिक रूपसँ नड़िया नहि छी। बनल छी। बड़ सुभीतामे छी। खड़ो नहि उसकाब' पड़ैत अछि। खाली नाङड़ि डोलाब' पड़ैत अछि। आ दाँत चियार' पड़ैत अछि। बस।' सभ निर्लज्जतासँ विहुँसल।

हमर माथमे चक्कर देब' लागल। अद्भुत छैक। चारूकात धुआँसँ मेघ घड़ल आयल रहैक। से देखिक' अन्हार आर गाढ़ भेल जाइक।

—'की सोचल'? एकटा पुछलक। हम मूर्ख जकाँ ओकरा देखिते रहलिऐक। हमर चुप्पीकेँ अनुकूल बूझि ओ सभ हमरा चारूकातसँ घेरि लेलक आ हू-हू-ऊँ-ऊँ कर' लागल। हमर देह सिहरि गेल। दुर्गन्धे नाक फाट' लागल। उत्साहमे ओ सभ हमरा भम्होर' लागल। साँसे कुर्ता फाटि गेल होयत आ बाँहिपर, पीठमे, नछोर लागि गेल होयत। थुथुनक थूकसँ भरि देह लस-लस कर' लागल। भय आ घृणासँ दाँत कटकटाय लागल। ओतेक रास नड़ियाक बीचमे हम स्वयं एकटा नड़िया भ' गेल रही। एतेक लगसँ पहिल बेर अनुभव भेल जे सभ नड़िया सभ तरहक छैक। ककरो गर्दनिमे कंठी लगाओल, ककरो कपारपर भस्म ठोप, ककरो रामनामी टीका, ककरो किछु। ककरो देहमे उज्जर दक-दक जनौ! हमरा आश्चर्यो नहि भेल ठीकसँ, खाली ओतेक रास टोपीवला नड़ियाक बीच हमहूँ नड़िया बनल नछोर खाइत दुर्गन्धि घोँटैत, घसैत-पड़ैत जीवित रही। धुआँक कड़ुआहटि आब आँखि, नाक, कान, मुँह बाटे भीतर छातीमे पसरि रहल छल। हमरा तेजगर भाङ

जकाँ असरि होब' लागल। हम आब असहाय भ' गेल रही। हमर सम्पूर्ण चेतना मात्र नड़ियाक बोली, हँसी, स्पर्श आ आक्रमणेसँ घेरा गेल रहय। हमरा लगातार कय मिनट धरि लागल जे हम नड़िया छी—आब हमहूँ नड़िया भ' गेल छी। कि तावते एकटा नड़िया बड़ी जोरसँ कूदिक' गर्दनिपर एक हबक्का देलक आ सभ हुआँ-हुआँ कर' लागल। हम चिन्ता आ आतंकसँ प्रायः अचेत भ' गेल होयब।

हमरा कन्हापर ठीक गर्दनि लग एकटा बड़ मोलायम पाँखिक चिड़ै आबिक' बैसल। ई अनुभव हमरा ओहि मनःस्थितिमे एकदम नव आ अलौकिक छल। आँखि खोलि क' देखबाक साहस नहि भेल हमरा। मात्र अनुभव करैत रहलहुँ। ओ चिड़ै अपन लोलसँ हमर गालकेँ छूलक। हमरा बड़ प्यार पड़ल। बुझायल, जेना हम नीकेँ भ' रहल छी। ओ चिड़ै कय क्षण धरि स्नेहसँ अपन लोल हमर गर्दनि, गाल आ माथपर सोहरबैत रहल आ दुलार करैत रहल, जेना हम नेना होइ। ओकर लोल जेना मखमलक बनल रहैक। ओकर एहि स्नेहसँ हमरा भीतर किछु शक्ति आयल आ हम आँखि खोलि क' देखबाक चेष्टा करैत रहलहुँ, करीब दू मिनट धरि। जेना बिजली टूटटा फूटल बासन जकाँ रेसि देल गेल रहय। खुजल आँखि आ हम अपन बाम कन्हापर बैसल चिड़ैकेँ देखलिऐक। लाल टेस। शबनम। हमरा सहसा बुझायल जेना ई चिड़ै नहि, लोक थिक कोनो। हम मूड़ी निहुरा लेलहुँ चिन्तामे। तावत फेर उएह हुआँ-हुआँक अन्हर-बिहाड़ि! हम गड़ले नजरिएँ चारूकात देखलिऐक। कतहु समुद्र नहि। मात्र नड़ियाक संसार! कोम्हर जायब, कोना जायब?

हमर एहि चिन्ताकेँ ओ चिड़ै जेना हमर गर्दनिक नसक धुकधुकीमे पढ़ि गेल हो। अपन लोल हमरा कान लग सटा देलक आ चुन-चुन क' किछु बाजल। हमरा बुझायल किछु नहि। खाली ओकर बोलीक ममत्वसँ जबर्दस्त भरोस भेल जे आब किछु होयतैक। किछु अवश्ये होयतैक। की, से नहि कहि। ओ चिड़ै अपन रोइयाँसँ, पाँखिसँ हमरा कन्हाकेँ थपथपौलक आ फेर लोलकेँ खोललक तँ हमरा बुझायल जेना ओ विहुँसल हो। लोल हमर कुर्ताकेँ कन्हा लगसँ ध' लेलकैक आ दू बेर पाँखि फड़फड़ाक' फुर्र द' उड़' लागल। हमरा एके क्षणमे बुझायल जेना माटिपरसँ उठि गेल छी। आ उठले जा रहल छी। बेस ऊँच दिस। नड़िया सभक कोहराम बढ़ले जाइत छैक। सभ एक-दोसराक देहपर ठनमनायल हमरा दिस दौड़' चाहैत अछि। हुआऽऽक आसमर्दसँ मेघ

फटकबापर बित्तै छैक । परन्तु हमरा कानमे ओ सभ आवाज क्रमशः कम होइत-होइत बिला जाइत अछि । हम हेरायल छी जे एकटा चिड़ैक खोलमे एकटा सौंसे मनुष्य एतेक ऊँच आकाशमे लटकल छी । कोनो क्षण खसि सकैत छी आ किछु पता नहि चलत । परन्तु से चिन्ता हमरा छेरा नहि सकल । हम ओकर मखमल सन लोमक बीच अपनाकेँ सुरक्षित आ सार्थक बूझि रहल छलहुँ । हम डरेँ आँखि मुनने रही । खाली हमरा शरीरपर सिमसिम डोलयवाला हवा लागि रहल छल भरिसक, जे चिड़ै पाँखि मारैत छलैक तेँ । ओ अनुभव हमरा मनकेँ बड़ भरोस देलक । शक्ति देलक । सुरक्षा देलक । हम आँखि खोलिक' देखलिऐक नीचाँ । अथाह । बाप रौ, स्पष्ट नहि की, मुदा बुझायल जेना नीचाँ अन्हारक समुद्र हिलकोरैत हो ! हमर आँखि फेर मुना गेल ।

हमरा बुझायल अन्हारक नहि, जनक महासमुद्रपर उड़ि रहल छी मात्र एकटा चिड़ैक मोलायम लोमक भरोसे, ओकरे सामर्थ्यपर नहि जानि, भविष्यक । एतबा सोचैत लागले बुझायल जेना चिड़ै खूब तेज हवोसँ बेसी गतिमे पाँखि चलाब' लागल । खूब तेज । आरो तेज । ओकर एहि तेजीसँ प्रभावित हमहूँ अपन दुनू हाथसँ ठेल' लगलहुँ । हमरा सन्तोष भेल चिड़ैक संग हमहूँ उड़ि रहल छी। किछुए कालमे चिड़ै नीचाँ दिस उतर' लागल । ओ एकटा बड़का झीलक कातमे उतरि गेल । हमरा तेहन हिलाबर्त माटिपर रखलक जेना हम चलितो फलक अशिला ठेस पयने होइ, बस ।

ओ हमरा कुर्ता छोड़ि, उतरि क' झीलमे पानि पीलक । हमरो बड़ पियास लागल रहय । खास । हमहूँ आँजुरे-आँजुरे पानि पीलहुँ । बड़ मधुर आ शीतल पानि । कनेक कालमे रहैक बेश पैघ कमल फूलक पतिपानी सभ । आब हम अपनाकेँ अपना जीवनमे पाबि रहल रही । चिड़ै आयल । हमरा फेर लोलमे दबलक आ फुर्र भ' गेल । हमरा चुपचाप किछु नहि फुराय, एहि बेर ओ बड़ नीचाँ उड़ि रहल छल । एतेक जे इजोरिया रातिमे नीचाँक विस्तृत जल-संसार हमरा साफ-साफ देखा रहल छल । ओ रहैक दूर धरि पसरल अथाह समुद्र । एक बेर फेर हमरा डपट्ठ भय भेल आ रोइयाँ सिहरि गेल । मुदा बड़ी काल ई मृत्यु-भय सहलाक बाद एकटा कतबहि भेटलैक । समुद्रक पार भ' गेल रही । मुदा दूर-दूर धरि किछु कतहु नहि । चिड़ै फेर ऊँचे दिस उड़ल चल जाइत रहय । आरो ऊँच । हमर छातीक साँस जेना बाहर भ' क' छातीकेँ फाँक कयने जा रहल छल । हम ओकरा ओतेक तेजीसँ नहि उड़' देल

आग्रह कर' चाहैत छलिऐक । मुदा बोहि कंठमे सटि गेल रहय । नहियेँ कहल भेल । ओ उड़ले गेल । बड़ी दूरपर आ जाक' लागल जे आब संसार शुरू भ' गेल छैक । आब गाम-घर आबि गेल छैक । चिड़ै धुरझार अपन मुलायम पाँखि मारि रहल छल । हमरा एतेक कालमे पहिल बेर चिड़ैपर गारसर्थ भेल—अहा, हम एतेक भारी लड़ास तकरा एतेक दूर उघने आबि रहल अछि । एकर पाँखि मारि ऐँठि गेल होइतैक, लोल दुखा गेल होयतैक आ रोइयोँ ने कहीं एहन तीव्र प्रतिकूल बसातमे झरि गेल होइक । ओहि लाल चिड़ैपर हमरा ततबा मारसर्थ भेल जे मनमे आयल, एहन सुन्दर पक्षिक एहि कष्ट यात्रासँ नीक हमरे मृत्यु ! हम देखलिऐक, हमरा नीचाँ घर आङनक स्पष्ट संसार ! यद्यपि रतुका चुप्पी आ सन्नाटा । एकटा भयाओन वातावरण । किछु रहस्यो । चिड़ैक उड़ब किछु स्थिर भ' गेल रहैक । हमरा भेल जे ओ थाकि गेल अछि । फेर ममता भेल ।

—'कतहु सुस्ता ले । दू क्षण सुस्ता ले । तोँ थाकि गेल होयबेँ भाइ ।' ओ उत्तरल नहि कतहु । खाली हमरा बुझायल जेना ओही भावेँ बेसी तत्पर भ' क' उड़ैत रहल हो । हम अपना नीचाँ साफ-साफ देखलिऐक बड़ीटा बस्ती । खड़-फूसक घर सभ । पछुआरमे लताम आ अरड़नेबाक गाछ । गाछी सभ । आ एकटा विषम उबड़ल-उपटल आङन । चारि खसल घर । ताहि खसलाह चारसँ देखायल जे एकटा बुढ़िया माटिपर ओङ्गिा पड़लि अछि लुरखुट बूढ़ि । हम नहि चिन्हैत छिऐक । मरनासन छैक भरिसक । हमर हृदय भरि जाइत अछि । हम सोचैत छी, एहि बुढ़ियाकेँ लगसँ चिन्हैत छिऐक, कनेक लगसँ । हम माटिसँ करीब दू बाँस ऊपर होयब कि हमरा बुझायल जेना हम लाल चिड़ैक लोलसँ छूटि गेल छी । आ नीचाँ खसल जाइत छी—हमर हाथ-पयर सुन्न भ' जाइत अछि । आ करेज फाँक भ' जाइत अछि । आतंक पैसि जाइत अछि । आ चिन्ता भ' जाइत अछि, कतहु ओहि बुढ़ियेक देहपर नहि खसि पड़िऐक आ हमरे देहक भारेँ-आघातेँ ओ मरि ने जाइक ! हेऽऽ' खसलहुँऽऽऽ'…

हमर निन्न टूटि जाइत अछि । घामे-पसेने देह तरबतर । चेहरा-मोहरा सभो तत्काल देखय तँ डरक एक-एक रेखकेँ साफ-साफ चीन्हि जाय ।

दलानपर उतरैत दिनक उदासी लेढ़ा रहल छैक । हम चौकीक खाली तख्तामे चित फोनहुना करोट बदलैत छी आ बामा दिसक बड़का मुलायम पोखरिक करमीमे ओलरा जाइत छी । औनाय लगैत छी । एतेक राति करमीक लत्ती के काटय—पोखरिक पानिकेँ मुक्त करय ! हमरा ततेक बबूह

लाग' लगैत अछि जेना हमरे तकर भारा हो—हमरे कटबाक हो करमीक गहुमाल। फेर हम आँखि मूनि लैत छी। हमरा माथ ध' लेलक अछि। हमर आँखिमे औ लाल चिड़ै उदास भ' गेल अछि। ओ कौन चिड़ै थिक ! केहन चिड़ै थिक ? ई स्वप्न की थिक ?

आङनसँ माँक तावड़तोड़ उकासी आब' लगैत अछि तँ उठैत छी चौकी-परसँ आ आङन दिस बढ़ैत छी। माँक उकासीक लग पहुँचैत छी। भय होइत अछि, यद्यपि एकदम लग आ रहल छी। ओ खोंखी करैत निर्हुरि जाइत अछि। हम लगमे जाक' ठाढ़ भ' जाइत छिऐक। ओ ओहू उकासीक बीचमे हमरा किछु पूछ' चाहैत अछि—भरिसक ई जे कत' छल' ? मुदा खोंखी नहि पूछ' दैत छैक। हम असोराक फाटल बाँसक खम्हेली ध' क' व्यर्थ ठाढ़ भ' जाइत छी आ दोसर दिस तकैत माँक उकासीक छोड़ लेब बन्द होयबाक प्रतीक्षा कर' लगैत छी। दोसर ड्योढ़ीक टाट लग बूढ़ा कूकूर कटाउस कर' लगैत छैक। ओलती लग टहलैत कौआ उड़िक' महुबाक गाछ पर चढ़ि जाइत अछि आ दलान दिससँ चर्रमर्र करैत कोनो बैलगाड़ी जाय लगैत छैक। ई सभटा फराक-फराक घटित भ' रहल छैक। आ धीरे-धीरे जेना सभटा 'फेड आउट' भ' जाइत छैक। ओकरा ऊपर भ' जाइत छैक माँक खोंखी। हम अपनाकेँ अत्यन्त टूटल आ विखिन्न लोक मान' लगैत छी। माँक खोंखी छोड़ लैत छैक। ओ किछु क्षण स्थिर होयबामे लगबैत अछि। ओकर आँखिसँ नोर बहि रहल छैक आ आँखिक शिरा सभ भीजल पात जकाँ लगैत छैक। पूरा चेहराक रंग लगैत छैक जेना कारी रंग फेंटल कोनो कम लाल दुखिताह मुरुत हो। ओ प्राणहीन एकटा मुरुत मात्र लगैत अछि। हम ठाढ़ रहैत छी। ओ अपन चौखटि लग लिबलाहा ठाढ़मे ओठङिक' आगाँ टाङ पसारि क' बैसलि अछि।

—'की बेरहुट करब' ?' ओ हकमैत पुछैत अछि। हम मूड़ी डोला क' किछु नहि कहैत छिऐक।

—'किए, एक भोर सेलह। भूख नहि लागल हैत' ?' ओ चुप भ' जाइत अछि। ओकर चेहरासँ साफ-साफ बुझाइत अछि जे एखन हमरा नहि खयबासँ ओकरा मनमे आश्वस्तिये भेलैक अछि। भरिसक छैक नहि कोनो इन्तिजाम घरमे तथापि पुछि रहलि अछि। जे किछु सामान्यतः भ' सकैत छैक ताहि सभसँ अपना खयबाक इच्छाकेँ ततेक बेर ठकि चुकल छिऐक जे आब विरक्ति

होइत अछि। आब तँ बेसी काल भूखे नहि बुझाइत रहैत अछि। कोनो मन अस्वस्थ हो सैं नहि, ओहिना। माँकेँ दू साँझ मानने करबाक से उद्योग कर' पड़ैत छैक ! आ हम मुक्ति चाहैत छी ओहि सभसँ। जल्दी त्राण भेटओ।

भागी कतहु। कारण, जाहि सेती-पथारीक संकल्प ल' क' गाम घूरल रही से सभ घोसड़ि गेल अछि। कतहु कोनो गुंजाइश नहि छैक। अपना इच्छेँ-तागतियेँ माटि धर' चाहलहुँ अछि एतेक दिन, मुदा कहाँ धरायल ? सभ दिन एकटा आन गामक लेहुलगा जकाँ मानैत रहल लोक, ई समाज। आ तेहन-तेहन पथर छान'बला स्नेही गप्प-सप्प, लगाब'-बझाब' करैत रहल जे बसले रहि गेलहुँ। दिन-दिन आर बन्हने पड़ल चलि गेल। कमलाक पाँकमे धँसलापर निकलबाक प्रयत्ने करैतमे आर धँसिते गेलहुँ तऽर आ खतम भ' गेलहुँ। आब नहियेँ उबरि सकलहुँ। कहियो उबरियो सकब कि नहि से नहि जानि। उबडल-बिपटल जकाँ आङनसँ दलान, दलानसँ बाध आ बाधसँ दलान आ फेर दलानसँ आङन करैत रहलहुँ। कोनो बात नहि बना सकलहुँ। ने कौनिहु सकलिऐक हरजोती आ चौकी देब कि बाग करब फलित समक बीया। नहि कौनिहु सकलिऐक एहि दुआरे जे तकर विशेष सार्थकते नहि लागल। मन लगाब' लेल कतबो गढ़ करैत गेलहुँ अपन भावनाकेँ भीतरे-भीतरे तैयो। जेना बाबाक दुःखमे कहो अदृश्य मनुष्य पानि मिज्झर करिते गेल। पूरा भावना पातरे भेल गेल आ मिथ्या। मन दिन-दिन अशुद्ध होइत गेल। सभ दिन आत्म मिज्झर भेल जाइत प्रकृतिगर ग्लानि बढ़ले गेल आ आत्मप्रवंचनाक जबर्दस्त शिकार होइत रहलहुँ। एहि मानसिक दुविधामे अपने सभकेँ, माँकेँ प्रवंचित कर' पड़ल। भाइकेँ, आन सम्बन्धीकेँ। संभव जे ओहोलोकनि हमरोसँ बेसी प्रवंचित भ' आ क' रहल होथि सम्बन्धकेँ। परन्तु हमर आत्मग्लानिक ई बड़ पैघ खोंच छल जे कोनो प्रकारक यात्रा आरम्भ कयलापर ओहि गरीब लोककेँ कष्ट पहुँचबैत छैक जकरा लग एकेटा अंगा-धोती आ सेहो आगाँमे फाटल रहैत छैक। ओकर मन खसि पड़ैत छैक। यद्यपि घरसँ बहरायब अनिवार्य रहैत छैक तैं ओ बहराइत अछि। जेना हमहूँ बहराइत छी। सभ क्यो कष्ट लेल बहराइत अछि।

ई बात हमर जननी खूब नीक जकाँ बुझि गेल अछि। ओकरा चारिटा पुत्र-रत्न छथिन। सभसँ छोट रत्न हम, से एखन धूरक छाउरपर पड़ल रहैत छी। बहुत दिनसँ पड़ल छी। परन्तु हमरा जननीकेँ ई भरोस हरदम बनल रहैत छनि जे चारूमे छोटके हुनकर सब होयतनि। ओना तँ सभ सन्ताने छनि

—एक रंग ममता आ चिन्ता आ मनोरथ, मुदा कोनो-ने-कोनो कारणेँ सभसँ मन फाटि गेल छनि। सभ अपना-अपनी क' नीके-ना रहैत छथिन। एकटा जेठ जन दिल्लीमे, माझिल जन पटनामे, ताहिसँ छोट टाटानगरमे। सभ परिवार डेबैत छनि। दू वर्ष, तीन वर्षपर दशमीमे गाम आबि जाइत छथिन। जाइत काल दसटा टाका हाथमे दैत छथिन कोनो पुतोहु—'राखि लेथु माय! की करबै, बँचबे नहि करैत छैक। सभ दिन किछु-ने-किछु लागले रहैत छनि। आमदनी तँ बैह मास भरिक बान्हल टाका। ओहीमे सभ कछ, हींगसँ हरदि धरि। मसल्ला सन पदार्थ सेहो तँ कीनिए क' आबओ तँ हो। तीमन-तरकारी तँ जे महग छैक ओत'। नेना भुटकाक स्कूलक दरमाहा सेहो ... बालिक भाव जकाँ कोनो-ने-कोनो लाथेँ बढ़बिते रहैत छैक ......।" इत्यादि।

हमर माँक मन होइत छ न एतेक विस्तृत भाषणक फलस्वरूप जे अपन प्रिय राजरानी बहुआसिनके दस टाका आर मिलाइये क' पूरा देथि। मुदा से नहि क' हथबेँ आ जेना होइत छनि, मर-मसल्लाक पोटरी धरि साँठिये दैत छथिन। आ ई भुमा फिराक' प्रायः सभ बेटा आ बहुआसिनक वार्त्ता चलिते छनि। खाली भाषाक अन्तरसँ शहरी खर्च-वर्च आ 'दिनकर' सीमित दरमाहा आ बढ़ैत महगीक करुण वृत्तान्त बैसे जाइत छैक। माँ धैर्यपूर्वक अपन छाती-फाड़ उकासीकेँ साधि-साधि क' सुनैत छथि आ बुझैत छथि। फेर हुनका सेल कोनो-ने-कोनो ओरियाओनमे लगैत छथि।

हम रही भीतर कोठलीमे सूतल जकाँ। बेक पहर माँक बहिनपा अयलथिन। होइत छथिन पैघ देयादिनी, लगैत छथिन बहिनपा। बड़ सिनेही छथिन। हुनकालोकनिक गपसपसँ पड़ले-पड़ल निन्न टूटि गेल। सून' लगलिऐक। माँ अपन दुखनामा सुना रहलि छलथिन। विषय ओना बेटे-पुतोहु रहनि।

हालेमे माझिल जन सपरिवार आबि क' किछु दिन रहल रहथिन। ताहि बीच जे सभ भेलैक से समाजसँ छपित नहिये रहि सकैत छैक। किछु गोटे बेटा-पुतोहुक निन्दा कयलनि, किछु गोटे लगायल-बझायल जकाँ भावेक आलोचना कयलनि। जेना-तेना जहवा जे अन्न-पानि बेचि-बिकिन क' किरायाक टाका जुमलनि आ मर-मसल्ला, प्रबन्धसँ 'महगीक सामना' कयल भ' सकलनि—से कहैत गेलथिन। परन्तु तकर चर्च धरि भ' गेलैक

भरि गाम। माँ पहिने तँ खूब कनलीह, फेर चुप भ' गेलीह। अपन एक-चुल्हिया जुमलनि आ हमरा लेल रिन्हका चढ़ौलनि। ई भोर हमरा बिसरल नहि अछि सेँ कहि रहल छी। ओना, हम अपने किछु पलायनवादी लोक, तेँ लाल भाइ आ लाल भौजीक शुभागमनक चारिम दिन गामसँ चल गेलहुँ मामिक। चल तँ जइतहुँ दोसर दिन, मुदा हुनकालोकनिक अयबाक दोसर दिन गाम छोड़ि क' चल जयबाक मतलब छलैक भारी खतरनाक। माँ ई बात बुझलक। यद्यपि ई बात नहि जे लाल भौजीकेँ हमर नानी-गाम जायब बड़ अधलाह लगलनि। लालो भाइकेँ। कारण, एखन नानी-गाम अयबाक कोनो विशेष उपलक्ष नहि रहैक। तकरा तँ जे-से, हम गइलहुँ अपन।

लाल भाइ अयलाह त' ताड़ा तँ भगवतीक थाइन ढ्योढ़ीटाट दिस चल गेल, खाली लाल भैया इष्टदेवताकेँ गोड़ लागि क' बथानपर अयलाह। गोड़ लगलियनि। बुन्नू काकाजीकेँ गोड़ लागि चौकीपर बैसलाह। एक मिनट चुप्पे, फेर काकाजीकेँ कुशल-क्षेम कहलथिन।

—'तोहर तँ कतहु नहि भेलहु किछु?' हमरासँ पुछलनि। जानि ने किएक, हुनर आँखि डबडबा गेल। हम मूड़ी डोला देलियनि।

—'रिजल्ट तँ बढ़ियाँ भेलह तोहर। हमरा नहि छल भरोस।'—हम चुपचाप ठाढ़ रहलहुँ, असोरासँ नीचा दाबा लग। सोचलहुँ 'भरोस रहबोक नहि चाहैत छल। से रहैत तँ उत्तरदायित्व सेहो अनुभव होइत ने जे भाइक लेल किछु करिऐक। तेँ नहिये भरोस रहब अहाँकेँ सुभितगर होयत।'

—'ओहिठाम टाटामे एकटा नब्बे कालेज खुजलै-ए। गप कयलौहेँ ओकर सेकरेटरीसँ। जाय लागब तँ एकटा आवेदन-पत्र लिखि क' द' दिह', मोन पाड़ि क'।'

अपना प्रति लाल भाइक एहि शुभचिन्तासँ हमर हृदय भरि गेल। भाइ, भाइये होइत छैक।

—'तोँ बड़ दुब्बर भ' गेलहुए। केहन सुन्दर देह छल' तोहर। किछु मन-तोन खराब रहैत छ' की?'—पुछलनि। हम मूड़ी गोँतने ठाढ़ रही। कारण, हमर आँखिमे पानि भरि गेल रहय। हम मुकायले रह' चाहैत रही। बड़का काका कहलथिन—'एहि गाममे तँ बुझले अछि। हेतनि की? एक तँ पढ़ि लिखि क' कय माससँ गाम ओगरने छथि। मनहतासे होयतनि! उचिते छैक। एते-एते पढ़ि-लिखि क' गाममे रहब, दुःख तँ हेबे करतनि। आ सभ

दुःखक अछि तँ चिन्ता ! अहाँलोकनि सेहो नहिये जकाँ देखलियनि । हमरा-क' एना जे माटि ध' क' रहब । से रहब तँ माटि ध' क' परन्तु आब माटियो की छैक ? 'हमरालोकनि गृहस्थीमे पैसलौं तँ असकरे मोकरीएसँ बर्ष भरिक उपजि आय । कमला माइ रहथि । पाँकपरक उपजा । आब तँ सेहो नहि । बर्षक बर्ष, बरखे नहि होइत छैक । माटि की बचतै ? आ की लोक उपजाओत !' फेर किछु हमरा दिस सहानुभूति देखबैत कहलथिन 'हिनकर दोष नहि । बेचारे लागल तँ छथि । से फेर बहादुरी हिनक कही । आन छौंडा अछि गाममे, मधुबनी हाइ स्कूल पास कयलक अछि आ हरबाहकेँ पनपियाइ धरि द' अथबामे लाबयता बुझाइत छैक । ताहिमे एम०ए० फस्ट क्लास पास । ई सेहक देब फोड़ैत छथि । देब फोड़लासँ तँ चाबसीयै ने ? उपह ओतबो कयलनि । कोन धरानिए बीया-बालिक ओरियाओन कयलनि । खेत तैयार कयलनि । जनमबे नहि कयलैक । आब एकर कोन जबाब ! अदृष्टेक दोष ने ! लोक की करओ ? की क' सकैये ? एकटा हर, एकटा बड़द लेल कोन-कोन ने लोककेँ पराभव उठाब' पड़लैये, पड़लैये की, आब दिन-दिन पड़तैक । आ, से ओहिना बेकार बहि जाइत छैक, अपन की साध्य ? हमरो जेठ जनक मन हरदम रहैत छनि उदासे । मुदा अपन हाथमे की ? हम कहलियनि – एना मन छोटे रखने की हेत' ? भगवान छथिन ! किछु-ने-किछु तँ उद्योग हैबे करतैक । यद्यपि हमहूँ बुझैत छियै ई बात, हमर ई विश्वास अहाँलोकनिकेँ तँ काज नहि देत । परन्तु हमरालोकनिकेँ तँ आइ धरि एहवे भरोस रहल-ए, यैह आधार ! हमरा तँ एखनो ई ईश्वरेक लीला लगैये बाबू । आखिर फेर सुग चलि रहल छैक की नै ? ओना, ई नहि कहब जे चिन्ता की दुःख नहि अछि मनमे । से बहुत अछि । पूजा पर बैसैत छी । नहि मन लगैये । कतबो मन लगबैत छिऐक, ध्यानमे ने अटकैत अछि । की करबै ? एक दिस जेठ जनकेँ दिन-राति गलैत देखैत छिऐक आ खरिहान देखैत छी सून, सँ मन व्योला भ' जाइत अछि । होइत अछि जे खेत-खेत बौआ आबी, खेतकेँ जगा आबी । मुदा से तँ कोनो रस्ता नहि भेल । सभ टोकियो तँ देए । आब बूढ़ो भेलौं । शरीर दुर्बल भेल । तँ यैह, पूजाक आसनपरसँ दलानपर आ दलानपरसँ भोजनक पीढ़ीपर आ फेर दलानपर आ दलानपरसँ पूजाक आसनपर । ताहिपरसँ कतहु मे कतहुसँ किछु-ने-किछु समाद अबिते रहत । कोनो मेमा दूरि होयबाक तँ किछु टनाक कोनो ठामसँ मदतिक हेतु । एहनामे मोन छोटे टा होअय । आर की उपाय ! बड़ खराब आ रहल छैक समय, धार-थोर छैक लोकक मन ! हा कृष्ण !'

ई 'हा कृष्ण !' अहूका ककाक एक मनःस्थितिक समाप्त होयबाक सूचना थिकनि । हम सोचलहुँ । कका आब बड़ी काल धरि चुप रहथिन आ नोसि सुड़कथिन । आइत-अबैत लोक राम बटोही सभ नमस्कार करतनि तकर जवाब देथिन । आ बेसीसँ बेसी कोनो ने कोनो बतटथिन कोनो बदमाशी करतनि तँ, बस । एहि रूपेँ ओ बड़ी काल आब चुप्पे रहताह । हम ओहि बातकेँ बिसरि नहि सकलहुँ जे ककाक मध्यसँ लाल भाइकेँ दुःख आ तामस व्यक्त होयतनि—ककाक एहि आरोपपर जे 'अहाँलोकनि बयो गोटे ठकलियनि नै ।' जे-से, ताहि लेल हम निश्चिन्त भेलहुँ । कोनो हम अपना मुँहेँ तँ नहि कहलियनि अछि, कि मौं नहि कहलकनि अछि । कका कहलथिन नहि । तँ समाजक मुँह तँ नहि बान्हि सकबैक । अबलाह सायो फि नीक । समाज तँ कहिते छैक सभकेँ । मुदा लालो भाइ चुप्पे-चाप सुनैत रहथिन । छोटका का' सेहो चुपचाप रहथिन । हम दुवरिक' भगवती घर दिस ताका लग गेलहुँ । बक्सा-पेटी उतरबाक आवश्यकता रहैक, मन पड़ल । सरवे, एखन धरि ताङाबला ठाढ़े रहैक । खाली घोड़ा धरिकेँ खोलि देने रहैक घासपर । हम पहुँचलहुँ तँ दुनू गोटे मिलिक' पहिने छोटका-छोटका वस्तु-जात अपना असोरापर राखि अयलहुँ । तकर बाद लाल भौजीक सन्दूकक बक्सा । माने, बड़का बक्सा । बेस भारी । नहि जानि, की सभ भरल होयतनि । ओना लाल भौजीक एकटा बड़का बक्सा सभ दिना छनि । एहने भारी-भड़कम जे तीनो गोटे मिलिक' उठायब तँ बुझाइते रहतैक जे बेस भारी छैक । जे-से । मिलि-जुलिक' उठाक' हुकबैत राखि तँ देलियैक, मुदा हमरा मनमे एकटा अनावश्यक प्रश्न उठल—'लाल भाइ हमरा किएक नहि कहलनि ई बात, समान उतारबा लेल ?' लाल भाइ हमरा ई बात नहि कहलनि से हमरा खराब लागल आ अपने पर सन्देह होअ' लागल जे कतहु ई सेहो हम लाल भाइ आ लाल भौजीक पैरवीमे ने तँ कयलहुँ अछि ? कोनो मदतिक आशामे ? हमर मन सून भ' गेल आ हम कालबला कोठलीमे जाक' बड़ी काल ठाढ़ रहलहुँ । यद्यपि हमरा एहू बातक प्रतीक्षा रहय जे भौजी ओहि बाकनसँ जल्दीये आबथि जे हम पयर छूबिक' गोड़ लागि लियनि । मे तँ कतहु चल गेलहुँ आ हुनका गोड़ लागमे देरी भ' गेल तँ तकर हुनका बड़ अधलाह लगैत छनि । परन्तु एखन तँ अपने काकीलोकनि हुनका भगवती असोरापर चटिया बिछाक' बैसौने छथिन आदर भावसँ आ मान-दान भ' रहल छनि । आ ई बात मोंकेँ अधलाह लगैत छैक । ओकरा बिचारेँ, कतहुसँ बयो

आबओ तँ भगवतीकेँ गोड़ लागि इष्ट देवताकेँ गोड़ लागओ तखन पतबा काल आ अत' मन होइक बैसिक' गप्प करओ। ओ कनेक रोआक' बाजलि। हम ओकर ई भाव बुझलियैक। तावत लाल-बुन्द बुशर्ट आ पैंट पहिरने एक पयरमे पीयर मोजा जुता आ एकटा पयर खालीए बौआ टहलैत आयल। अनचिन्हार जकाँ ठाढ़ भ' गेल। हमरा बड़ जोर हँसी लागि गेल। ओकरा हम कोरामे उठा लेलियैक, दुलार कयलियैक आ कहलियैक—'दादी माँ छथुन। गोड़ लगहुन।' ओकरा ल' क' हम निहुँरि गेलियैक माँक पयरपर। दुनू हाथ ओकरा जोड़बा क' जहाँ कि पयर छुआब' लगलियैक माँक, कि माँ हाँ-हाँ क' उठलि! पहिने इष्ट देवताकेँ गोड़ लगा अबहुक! माँक आवाज फाटि गेलैक। ओ कान' लागल छलि। आँखिमे नोर। हम बौआकेँ ल' क' इष्ट देवताकेँ गोड़ लगा अयलिऐक आ कन्हेपर लेने फेर दलान दिस अयलहुँ। कका सभकेँ गोड़ लगऔलिऐक। ओकर ई एक पयरमे जुता-पयतावा आ एक पयर ओछिगा देखिक' बड़को कका भभाक' हँसलथिन। फेर छोटको कका। सालो भाइकेँ एकटा संयमित मुस्की छुटलनि। बौआ एकटा अनचिन्हार बूढ़ लोकक एहि भभाक' हँसबापर हतप्रभ जकाँ छलाह। निस्तब्ध! हम कहलियनि—'बौआ, बड़का दादाजी छथिन, आ ई छोटका दादाजी छथिन!' तखन कनेक ओ सामान्य भ' सकलाह।

हमर कन्हापर चारि वर्षक बौआ छलाह। हुनिका विषयमे हमर बहुत-बहुत कल्पना सभ रहय। जखन हम पढ़ैत रही कालेजेमे तँ हुनकर होयबाक सूचना भेटल रहय। कय दिन धरि हर्षित रही ओहि साँझमे। हमरा अपन एहि भातिजक विषयमे तात्कालिक आ भविष्यक कयटा कार्यक्रम सभ रहय। जेना तत्काल हुनका लेल खूब बढ़ियाँ खेलौना आ पैरेम्बुलेटर कीनब आ भविष्यमे मोटर साइकिलपर मेडिकल कॉलेज विदा करब ...से आइ हम कन्हापर देखिते रहल रहियनि। सुनैत रहियनि जे बड़ तेज छथि। गंभीर छथि आ बुधियारो छथि। हमरा कन्हापर ओ हमरासँ परिचय करबाक धैर्य लेने बैसल रहथि आ हम मने-मन हुनका ल' क' भरि गाम टहलि अयलहुँ आ सतेक गोटे पुछलक जे—'ई बच्चा के?' सभकेँ हम कहैत गेलिऐक—हमर बड़का बेटा! सभ हँसि देअय। 'अच्छा, एखन धरि अहाँक बियाहुक ठेकाने नहि आ बेटो भ' गेल?' बड़का भाइ अयलाह अछि जनिकर बच्चा तँ नहि?' हम तकर जबाब नहि द' क' आगाँ बढ़ि जाइत छी।

□

——सुरझल सम्बन्ध-फूल
अर्थात्
मौलायल पारिजात——

आइ भाइ उठिक' आङन दिस गेलाह। पाछाँ-पाछाँ हमहूँ। माँ साजीमे फूल आ तुलसी पात ल' क' भगिसक जा रहलि छलि—भगवती आङन। आङन भाइकेँ देखिक' ठमकि गेलि। भाइ गोड़ लगलथिन। एक बेर खूब गाढ़ नजरिसँ देखलकनि। ओकर चेहराक भावसँ ई स्पष्ट बुझाइत छल जे भाइक स्वास्थ्यसँ ओ दुःखी भेलि अछि। आइ हम देखलियनि तँ पहिल बेर बुझायल जे भाइ ओहुना पार उमाह से कहिओ नहि भरल रहल छथि। माँ मुँहक किछु बाज पारल। चेहरा मुझायल। ओ बेस उदास छलि। माँ किछु बाजलि नहि, खाली ओकर आँखि नमरआ गेलैक। हम ई बात बुझलियैक। —'कनेक मोसार कि खड़-पात आनिक' बैनक्कीमे चाह चढ़ा ले बेटा। तू बुझिहया पर मैं। एक चुरिहुवा मीरक छैक।' माँ हमरा कहलक। 'भाइकेँ पियौन चाह

बना । हम बाबे अबैत छी भगवतीघरसँ ।' ओ असोरासँ उतरि गेलि । अहाँ कमसँ माय भेलि गेलैक हुनका कोठलीकेँ नीक जकाँ साफ-सुथ क' क' नीपि देब' कहलकैक जे थोड़ेक कालमे सुखा जाइक । हम बौआकेँ कन्हापरसँ उतारि दलान दिस गेलहुँ । दू-चारिटा खड़ - पात आ पुरान बत्ती - फट्ठी हथियौने पहुँचलहुँ । आ केतलीमे पानि भरि क' राखि, सलाइ ताकलहुँ तँ नहि भेटल । बातियो तँ नहि छैक ।

—'बौआ जाउ, दादी-माँ गेलीहें, हुनका पुछियौन, सलाइ कत' छैक ?' हमरा विश्वास नहि छल जे हमर ई असिस्टेंट एतेक चुस्त बहरयताह आ संगोयेँ डुबकल नहि रहताह । ओ फुर्र भ' गेलाह । आ दू मिनटक भीतर एकटा सलाइ सहित उपस्थित ।

—'वाह बेटा, कुलक नाम करबें !' ओ हँसलाह आ लगमे आबिक' ठाढ़ भ' गेलाह । हम सलाइ धरकिक' खड़ पजारलहुँ । आ बत्ती सभ जोड़ि देलियैक । आँच होब' लगलैक । बौआकेँ विश्वासे नहि भेलनि । बजलाह—'अहाँ कें चाह बनब' अबैये ?'

—'हँ औ । हमरा चाह बनब' अबैये । हमरा खिच्चड़ि बनब' अबैये, रान्हा बनब' अबैये अहलूक सन्ना ····

—'खिचड़ी हमरा नीक लगैये । 'बौआ उत्साहित भ' क' बजलाह ।

—'काल्हि हेतैक खिच्चड़िये ! औंय ?' हम पुछलियनि । ओ समर्थनमे हँसलाह । चुल्हासँ आँच उठिते रहैक । भौजी भरिसक पेरायतिये रहथि ।

चाहक पानि खौलि गेलैक । घरबला चौकीपर लाल भाइ भरिसक पड़ि गेल रहथि । अपन ओही मुद्रामे दुनू पंजा जोड़ि क' टीक लग राखि, तकियामे ओठंगि एकटा ठेहुनपर दोसर पयर जोड़ि क' ···

—'बौआ ओइ घरमे चौकी तरमे एकटा चङेरी छैक·····' हमर बात पूरो ने भेल छल कि फुर्र भ' गेला बौआ । हम सोर कयलियनि—पूरा सून ने, बात सुनबे ने कयलहुँ । परन्तु ओ बीस सेकन्डक भितरे पूरा चङेरी पेटपर उठौने अपस्यांत पहुँचि गेलाह । ओहिमे दू जोड़ी डंटी टुटलाहा प्यालियो तश्तरी रहैक आ चाहो चिन्नी । आनिक' बहुएँसँ हमरा कातमे राखि देल । —'आबें औ, अहाँ तँ भारी हड़बड़िया छी बौआ । अधे बात सुनिक' पड़ाइ छी ।' हमर एहि आरोपसँ हुनका कनेक लाज भ' गेलनि । मजा जकाँ गेलाह । लजायल नेनाक सुन्दरताक जोड़ नहि किछु ! छोटकी पीढ़ी देलियनि—'बैसू ऐपर ।' ओ

नहि बैसलाह । हम पत्ती चीनी मिलाक' फेर प्यालीमे छनलियैक । तावत माँ घुरि गेलि रहथ ।—'क' गेल' ? 'चाह छनैत देखिक' माँ पुछलक । 'चाह छानत मैयो देलाक बाद बौआ चुपचाप ठाढ़ रहथि । हम हुनका देखलियनि—बाबू-जीकेँ चाह द' आयब हुनत ने ?'

—'हुमला नै हैत । हम चाकि जाइ छी ।' ओ पराजित जकाँ कहलनि । माँ प्याली ल' क' भाइकेँ देब' गेलनि । बौआकेँ दोसर प्याली ल' क' कहलियनि —बौआ ई चाह ककर छी ?' एक क्षण सोचलनि । बजलाह—'दादी माँ के ।'

'आ केतली-महँक चाह ककर ?'

—'माँ के अहाँ के हमरा···।' हमरा हँसी लागि गेल । कहलियनि—जाउ तँ, दादी-माँकेँ बजा आनू । हमरा भेल जे ई हिचकिचयताह । मुदा नै, बजा अनलनि । माँ चाह लागलि—नहि पीअब हम । तों पीलैह, बहुआसिनकेँ बजाक' बहुत ।—'छैक चाह । तों लै ने ।' हम बड़ा देलियैक तैयो ।

—'बौआ औ, आउ तँ, अपन माँकेँ बजा अनियौन । की कहबनि ?' ओ चुप्प ! —'कहबनि जे चाह ठंढा होइये । जल्दी चलू ।' —'नै औ तँ चाह पीने छथिन ।'—बौआ बजलाह । हमरा कनेक ठेस जकाँ लागि गेल । बात तेहन अघलाह नहि रहैक, तैयो बड़ खराब बुझायल । —'ओहीठाम चाह पी लेलनि ! अहाँ देखलियनिहेँ ?' ओ मूड़ी हिलौलनि, हँ । हम एक क्षण चुपचाप रहलहुँ । फेर कहलियनि—बौआ, जाउ तँ, चौकी-तरमे एकटा गिलास हेतैक । दोसर क्षण बौआकेँ गिलास समेत चाह छानिक' देलियनि । ठोढ़ चाकि गेलनि । हमरा चाह पीबाक इच्छा नहि रहय । आइ तीन दिन भ' गेल रहय चाह पीना । माँकेँ तकर कलेश छैक । आइ ओ तेँ हमरे चाह बनब' लेल अड़ा देलक जे तैयो हम पीबी चाह । हमरा इच्छा नहि अछि । केतलीकेँ फेर मिझायल आँचक चुल्हापर राखि देत छियैक । आ उठिक' भाइबला कोठली दिस अबैत छी । आइसँ ई कोठली भाइबला कोठली कहौतैक । पूज भाइ अबैत छथिन तँ दुदह हुनकार कोठली कहाब' लगैत छथि । एकेटा टाड़ कोठली छैक, से जे रहैत छैक तकरे कोठली । हम ओत' आबिक' चुप्पे ठाढ़ भेलहुँ कि प्रायः माँ चाहेबला खिस्सा कहि रहल छलनि भाइकेँ । भाइ मात्र 'हुँ हाँ' क' रहल छलथिन । हम ठाढ़ भ' गेलहुँ तेहन मुद्रामे जेना ओहिना हम ठाढ़ होइ, कोनो उद्देश्यसँ नहि । बौआ अपन चाह पीबि क' गिलास राखि रहल छलाह ।

—'हुनि की कहियनि ? बहुत दुःखी रहैत छथि । परसूसँ चाह छोड़ने

छथि, कि तँ अनेरेक एकटा भ्रमल अछि ई। बेकारिमे पत्नी-चीनी पर खर्च। यद्यपि परसूसँ तेहन मन्हुएली अयने छनि जे छाती फाटि जाइए देखि क'। देखैत नै छहुन—हाड़-हाड़ उगल। तोरा सभ भाइमे सभसँ नीक देह छिनकि रहनि आ से आब देखि लहुन। हम की करियौन। जिद्दी छथि, से एक नम्बर! जैह बात सूर लागल सैह पकड़ने जान भी अरोगने छी। आब तोंही कह', कहियो गेलाह तोरा लोकनि खेतक आड़िपर? आ से की तँ गृहस्थी करब। खेती करबाक बिजोह छनि एखन। खेतीक जे हाल छैक से बैह। घरेक चिक्कस लोक गील करैये। एह, किछु उपजै छैक? सभटा खखरी भ' जाइत छैक।"

माँके खोंखी उठलनि। कोनहुना क' जतजनि—'किछु नहि फुराइये। तोरा लोकनिक भगवान जेहन-तेहन इन्तजाम करौलथुन! यैह छथि पड़ल। जे इष्ट देवताक इच्छा। सभ दिन गोड़ लगैत काल आइ-काल्हि हिनके द' कहैत छियनि। फेर लाज होइत अछि—धिक्कार मनकें; करै छी भक्ति आ मङै छी बेटाक नोकरी, बेटाक सुख! एहन कोन भक्ति! परन्तु की करू, नै रहल जाइत अछि। जखनेर हिनक उतरल, चिन्तित मुँह देखा जाइये तख बेर कोंढ़ चर्र द' फाटि जाइये। हिनके हेतु भगवान गाम चल गेल छथिन।" माँ भरिसक कान' लगलीह। भाइ चुपचाप सुनैत छलथिन—गंभीर। निरुत्तर।

—'तोरा सभ छुटे नै कतहु ऑफिसमे कोनो छोटोछिन काज लागि सकतनि?' माँ जेना अनुनयसँ पुछलकनि।

—'तोरा बुझाइ छौक हमरा छुटे छोड़नि तँ एहिठाम रहितथि? हमहूँ की करबै? एक ठाम कालेजमे गप्प कयनौहें, देखा चाही।' ओ कहलथिन। माँ एहि आश्वासन पर खूब निश्चिन्त आ प्रसन्न भेल होयतीह से हम अनुमान कयलहुँ। हमरा ठाढ़े-ठाढ़ हँसी लागि गेल। हमरा कानमे बौआ ठाढ़ छलाह। हुनकर भुल्ल-भुल्ल मोलायम केशमे आङुर सहिलाक' हम हुनका दुलार करैत अनुभव कयलहुँ जे हम कोनो फूलक चंगेरा छुबि रहल छी। आ हाथ बाटे ओकर सुगन्धि हमर देहमे पैसि रहल अछि। हम गहींर उत्साह अनुभव क' रहल छी।

दुपहरियामे ओहि दिन सभ बड़ो माल्हीक ज्ञनारल सूति रहलाह। बौआसँ तेहन मित्रता भ' गेल जे ओ हमर पक्का अनुयायियो भ' गेलाह आ जखन माँ हमर कोठलीसँ, (आइसँ आलमारीक) सतरंजी, कम्मल आ पटिया-गेड़ आ निकालि क' हमरा हाथमे देलक तँ मनमे एकटा नव दायित्वबोध भेल। माँ

बाजलि किछु नहि। खाली सभटा बेरावेरी धरा देलक। छोटका गेड़ुआ बौआ सम्हारलनि। हम अपन ओछाओन-बिछाओनक संग बिदा भेलहुँ दलानपर। उएह सखती चूकल चौकी। कतान तीन दिनसँ सुतल। खाली ओकर चारि तेहुन नीचाँ धरि धसल छैक जे अनेरे सोचायले लगैत रहैत छैक। हमरा आँखि ने किएक हँसी लागि गेल। चौकी लग जखन आबि क' ठाढ़ भेलहुँ तँ बौआकें हठात् विश्वासे नहि भेलनि। ओ हड़बड़ाक' बजलाह—'चौकी तँ टुटले छै'! हम हुनका देखिक' कहलियनि—'हँ बेटा, टुटल छैक। ठीक भ' जयतैक।'

—'के ठीक करतै?' ओ गेड़ुआ सम्हारने अनस्वात जकाँ पुछलनि।

—'हम ठीक करबै। रुपैया हेतैक तँ हम करबै ठीक।' हम ओहि पर पटिया खोलिक' पसारि देलियैक। पटिया देलासँ तखताक खधियाहा जगह कनेक भरा जाइत छैक।

—'हमरा लुरैया अछि।' बौआ कहलनि। हम हँसि देलियनि। ओ कनेक लजा गेलाह। हमरा ताहूपर हँसी लागि गेल। हम क्रमशः कम्मल, तकरा बाद सतरंजी बिछाक' गेड़ुआ ध' देलियैक आ पड़ि रहलहुँ। बौआकें दोसर कात रखलियनि—अपने टुटलाहा तखती दिस रहलहुँ। बड़ रौद रहैक। एखनो गाम-घरमे लूक झरकी बाहर जकाँ तँ नहियें लगैत छैक ने ओ अलकतराक गंधक हवाक छुरा जकाँ कोंके, तैयो गर्मी तँ लगिते छैक।

कतहु बसात नहि डोलि रहल छैक। दलानक सटले बाम दिस जिल्हाक बोर्डक कच्ची सड़कपर कोनो आबाजाही नहि छैक। खाली कतहु कोनो एकटा स्त्रीगण वा लोक माथपर डाबा, आ ताहिपर छबही रखने, अकस्मात, मधुबनीसँ घुरल जाइत अछि। किंवा कोनो लोक फाटल चेकड़ी ओढ़ल छत्ता ओढ़ने चल जाइत अछि। ई चेकड़ीवला छत्ता तखन हम बहुत देखने रहियैक, जखन गाम आयल रही तँ मनमे एक दिन, दू दिन, तीन दिनक बाद एकटा प्रश्न उठल रहय—सभटा छत्ता हम चेकड़ीयेवला किएक देखैत छियैक? सभ बटोही बौआ-अनर्गाआ अनेक अबैत जाइत छैक, सभक कमानी टेढ़ आ डंटी टुटलाह आ काड़ा चेकड़िवाह किएक रहैत छैक? सभटा छत्ता पुराने आ काज चलाउओ नहि, मात्र काज चलाउ होयबाक सन्तोष देब'वला छैक?

'से कतहु होइक? सभ लोकक छत्ता ओहने देखल अछि हमरा? सम्भव छैक, नव आ बढ़िया छत्ता सेहो होइक लोककें। अनेक बटोही जाइत-अबैत छैक, सभ पर तँ ध्यान नहि जाइत छइ ओहर। सभ लोक गरीबे नहि ने अछि—निश्चय।'

—'से ठीक छैक। मुदा छत्तावला अनुभव पर हम दृढ़ छी। लगातार कय-कय दिन धरि हम लोककें आइत-अबैत खाली रौद आ एहि छत्तेपर ध्यान गड़ाक' देखलियैक अछि—प्रायः सभक छत्ता दुब्बर-पातर आ बेकहीले लागल। आ बूझि पड़ैत अछि जेना व्यवहार कयलासँ पुरान भ' बुकनाक कारणें कारी नहि रहि क' उजराह-मटियाह वा एकटा तेसरे रंग भेल। नव छत्ताक चकमक कारी रंग देखल हमरा मोन नहि अछि। ई अनुभव मनेमन हमरा एकटा लचरल सामाजिक स्तरपर उदास क' देलक। हम सभ बटोहीकें नहि चिन्हैत छियैक, हम तँ अपन सभ गोआँकें पर्यन्त नहि चिन्हैत छियैक। तैयो एहि अनुभवसँ मन खिन्न भ' गेल। ई बात हम ककरो कहू' चाहैत रहियैक—कोनो मित्रकें। भेटितय, जेना हजा कि महेन्द्रा, कि ओ कि क्यो? से ओहि गाममे क्यो कतसँ भेटितय हुनर ई बात सून' लेल आ एहि पर किछु बाज' लेल? हम बसमोड़िक' पढ़ि रही आ आँखि मुनने कतहु कोनो गाममे चलल बसातक प्रतीक्षा करैत रही जे बसात कय-कय दिन नहि बहैक आ शरीरक पसेनामे बोथरि होइत-होइत हमरा शरीरपरक जहुरी गंजी पहिने पियराय लागल, फेर गाढ़ मटियाह पीयर भ' क' ठाम-ठाम कलात्मक रूपसँ फाट' लागल, फेर एकदम्मे फाटि गेल। माँ दुःखी भ' क' कहलक एक दिन—'की ओ गुदड़ी झुलकौने रहैत छ' ? लोको की कहैत हेत' ? आइ जा मधुबनी, आक' एकटा गंजी कीनि लैह। खोलह ओ गंजी।'

हम हँसैत कहलियैक—'की हेतैक ? या, ले, फेकि दैत छियैक। मुदा एहि रौदमे मधुबनी जायब ?' हम पुछलियैक।

—'कते बेर खस' दहक। छत्तो नहि छ', एहन रौदमे कोना जयब'—ओ बाजलि। हम चुपचाप दलानपर पसरि गेलहुँ। अखड़ा चौकी पर बैसलहुँ आ सड़कपर ओछाओल रौदकें देखैत कयटा बातक अनुभव कयलहुँ। एहि रौदक वर्ष जगह बदलि गेने, बदलि जाइत छैक, पुरान भ' जाइत छैक। नव भ' जाइत छैक, प्रसन्नता भ' जाइत छैक, उदासी भ' जाइत छैक, हर्ष विषाद किछु भ' जाइत छैक। मुदा सभ रौद चला जागल, रिक्त दुपहरियामे प्रधान बात रहैत छैक, कोनो अपन मनक पुनर्निर्माण। मनक सुखायल कियारी सभमे भावुक जल-सिंचन क' अतीतकें अंकुरायब आ प्रचंड रौदमे डाहि देब। एतबे नियति। आ एहिसँ फराक करबाक आधारो की छैक ? खासक' ओहन एकटा लोकक हेतु जे पराजित भावसँ अपन सभ सम्बन्ध, सम्बन्धीसँ, दोस्त-महिमसँ कहिक' एक कात आक' चुपचाप रहि रहल होअय। जकर मनमे हुगार-हुगार

सोचल, कल्पना कयल आ भोगल किछु दिव्य क्षण होइक आ आइ जकरा लोकमे ने कोनो रसता आ ने कोनो स्पष्ट लक्ष्य होइक। जे पूर्णतः स्वास्थ्य आ हाथ-पयर रखैत भवितव्यतापर लहास जकाँ पड़ायल आ रहल होअय परिचित समाजक आँखि आगाँ एकटा नितान्त अनचिन्हार लोक जकाँ। ई बात असह्य होइत छैक। हम कहि रहल छी ई बात, अत्यन्त कठिन बुझाइत छैक। लोक तँ आँखि मूनि लैत अछि आ लोक तँ अपना मनक अन्हारमे पैसि पंजा गाड़ि ताकि क' छैंतैत चल जाइत अछि आ अपना चारू कातक ऊँच-ऊँच अन्हार देवालमे अपन अव्वल घवाह नहुँसँ कोनो खिड़की, कोनो गवाक्ष काट' चाहैत अछि आ तोनिते-गोनिताय भ' क' अपन पंजा आ आङुर लहूक बिखाह चाथ लेने, जे दू वर्ष, चारि वर्ष जीवाक नामपर जीबैत अछि आ खतम भ' जाइत अछि। ओकर मनक अन्हार जखन भीतरमे अँटि नहि सकैत छैक तँ बाहर पसर' लगैत छैक। फेर पसरैत-पसरैत बेस दूर धरि पसरि जाइत छैक। आ लोक तकरा कह' लगैत छैक अपन-अपन ढंगसँ किछु-किछु।

बड़ी काल हमरा गुम्म पड़ल देखि बौआ उबिया गेलाह। हमरा दिसि झुकिक' पुछलनि—'कक्का यौ, अहाँकें कुछियाल कोय' अबैये ?'

बौआक ई प्रश्न नीक लागल।

—'हँ यौ। अहाँकें कुसियार नीक लगैत अछि ?' हमरा हँसैत देखि लजा गेलाह ओ।

—'हँ, बड़' छै।'

माथक केश छुबैत कहलियनि—'खेतमे छै। मुदा कुसियारवलाकें अहाँ अपन मौसीसँ बियाह करा देबै, तखने देत ओ।' हम गंभीर भ' क' कहलियनि।

'मौछीक तँ बियाह भ' गेलनि। हुनका मामाजी पीला बुच्चट देलनि। बुच्चट द' देबै ?' ओ चिन्तित भ' गेलाह। हमरा हँसी लागि गेल।

—'दै तँ, ओहिना कहलौं। हम अहाँकें चारि छड़ कुसियार आनि देब। खायल होयत ?'

'हँ, कुसियार खूब खायल होइए।' ओ सन्तुष्ट छलाह आ उत्साहित।

फेर कनेके कालमे हुनकासँ हम एकटा देहन प्रश्न कयलियनि जे ओ हमर मुँहे तकैत रहि गेलाह। हम पुछलियनि—बौआ यौ, अहाँकें नवका छाता नीक लगैये कि पुरना छाता ?

—'नवका छाता खूब सुन्नर होइ छै। ओहुलो ने पिचाद छै!'

हमरा अपने पर हँसी लागल। ई तँ सहज बाल-मनोविज्ञान छैक। कोनो नव वस्तु ओकरा प्रिय होइत छैक। नव अनुभवसँ ल' क' वस्तु धरि। फेर हम अपने प्रश्नपर अपने गंभीर भ' गेलहुँ। आ जहाँ धरि पहुँचि सकल, आँखि दौड़ौलियैक, एकटा परम बूढ़ि गुआरिन भरि ठेहुन गर्द लेने सड़क पर घुसकुनियाँ जकाँ काटि रहलि छलि। माथ पर एकटा मोटरी रहैक। साँसे देहसँ घाम छूटल! हमरा असह्य जकाँ होअ' लागल। के एहन अनच्छ दायित्वहीन मनुष्य अछि जे एहि बुढ़ियासँ एहन रौदमे मोटरी उघबा रहल अछि? काज ल' रहल अछि? मुदा से लोक, हमरा तामस भेलहुँ, नहि देखायल। कियो देखाइयो नहि सकैत छल। ई घटना अर्थात् ओहि बूढ़ि स्त्रीसँ काज लेबाक घटना हमरा अपनो मनक घटना भ' सकैत छल।—कोनो अन्तर नहि छैक। ओहि कष्टमे पड़लि सड़कपरक बुढ़ियामे आ तोहर माँक उकासीपर उकासी करितो धुआँमे बैसिक' भानस करबामे कोन अन्तर छैक? ओ मनुष्य तोहीं छिएक नहि, जे ओहि बुढ़ियाक सदृश्य कोनो सम्बन्धी लोक?

हमर अपने मुँहक ई बेतौनी जेना अपने मुँहपर सबले चमेटा देलक। ग्लानि भेल। इएह छैक ओ दूरी, सिद्धान्त आ आचरणक बीचक दूरी। जे बात मनकेँ अधलाह आ अनैतिक बुझाइत अछि—ताही बातकेँ आचरण आ व्यवहारमे स्वीकारि क' चलैत रहैत छी। चलितो रहैत छी आ बहुत दिन धरि एते ने चलैत अछि। अपन ई अन्तर्विरोध नहि देखाइत अछि। आ मानैत रहैत छी, भरिसँ जीवन चलि रहल छैक। फेर इएह सोचबो करैत छी जे सम्बन्धक शोषण नहि होयबाक चाही, शोषण नहि करबाक चाही। आ फेर वैह करैत छी, रोटी माउसँ भानस करबैत छी, थारीमे खाइत छी। दलानपर पड़ल सड़क पर जाइत बूढ़ि स्त्री लेल सहानुभूति रखैत छी, मुदा ओकर माथ परक मोटरी ओकरा घर धरि नहि द' आबि होइत अछि। धिक्कार! 'धिक्कार! हमरा हुनका रहलासँ एकटा तेसरे दायित्व बुझायल। हम एकसर एकान्तमे अपनाकेँ धिक्कार' चाहैत छलहुँ।

—'बौआ, आङनमे जाक' सूति रहू माँ लग।' हम देह डोलाक' कहलियनि। ओ मूड़ी डोलाक' आँखि मुननहि इनकार कयलनि। निन्न गाढ़ घन होयतनि भ' गेल। छोड़ि देलियनि। हमरा तेसरे तरहक दायित्व फेरसँ बुझाइ देलक। देहपर, पीठपर, तरहत्थीसँ सोहरयबाक इच्छा भेल। बौआ खूब गोर छथि। चुनमुनी विदश्याम छैक। चुनमुनी जानि नहि आबो इलेक करैत लागिक' सूतैत छैक कि माय लग सूतैत अछि आब। हमरा बहुत जोरसँ जेना अपन सम्पूर्ण चरित्र आ भावुकताक संग इला मन पड़लि। आ

हम अपनामे नितान्त असह्य भ' गेलहुँ। हम दहाय लगलहुँ। ओहि दहायबमे रही तीनू गोटे—हम, इला आ चुनमुनी। चुनमुनी हमरा दुनू गोटेक बीचमे रहनिहारि एहि दहयबामे कोनो दिस भसिया गेलि अकस्मात। हम दुनू गोटे हाथ-पयर फेकैत ओकरा तकैत रहलहुँ परन्तु ओ धारमे कतहु भसिया गेलि। चुनमुनीकेँ उड़ि नहि भेलैक। एखन पाँखि कहाँ भेल छलैक अछि। तेँ उड़ि नहि भेलैक। इला ठेहुनमे मूड़ी द' क' कान' लागलि हिचुकि-हिचुकि क'। हम ओकरा कातमे भीजल वस्त्र पहिरने ओकर कन्हापर हाथ रखलियैक तँ ओ आर जोरसँ कान' लागलि। हमरा कोरामे मूड़ी गाड़िक' जोरसँ हिचुकैत रहलि।

साँझ भ' गेलैक। हम ओकरा उठबैत आ ओकर मूड़ीपर अपन दाढ़ी टिकबैत बाँहि ध' क' कहने रहियैक—'इला, ई चुनमुनी, अपना दुनू गोटेक ई चुनमुनी, कतहु गेलीए नहि, देखिहही, जहाँ कि पाँखि भ' जयतैक कि उड़िक' आबि जयतौ। तोँ नै कान। 'ओ मूड़ी उठाक' देखलक हमरा दिस। भरिसक हमर स्वर आ आकृतिपरक भावसँ ओकरा हठात् विश्वास भ' गेलैक। ओकर विदश्याम चेहरापर दयरस गोर ललाओन भ' गेलैक, से साँसोमे चक द' उठलैक। हम ओकरा खूब स्नेहसँ बाँहिमे ल' क' चल' लगलहुँ। बड़ी दूर धरि चलैत-चलैत ……जानि नहि कोन देश रहैक, जत' एकटा एकसर मन्दिर जकाँ रहैक। मन्दिरमे कोनो पुजारी नै, ने कोनो देवते। हमरा दुनू गोटेकेँ आश्चर्य भेल। आर नीक जकाँ तकलियैक। फेर थाकल रहबे करी—एक कात सीढ़ी लग बैसिक' दुनू गोटे प्रतीक्षा कर' लगलहुँ। कनेक-कनेक बसात सिहक' लगलैक। इलाक पयरमे फोंका भ' गेल छलैक। ओकरा देखिक' हमर मन आर दुःखी भ' गेल। ओकर आँखि लागि गेलैक। हमरा जाँघपर मूड़ी ध' क' ओ पयर पसारने रहलि। जँ-जँ ओकर पयर ससरल जाइक तँ-तँ नहीँर चेन्ह भेल जाइक! आब जाक' हम अनुभव कयलियैक जे ई तँ बालु छैक बाहिपर हमरालोकनि छी। आ चारू कात बालुए छैक। हम कनेक विचलित भ' गेलहुँ। आब? एहि रेगिस्तानमे? हमरो आँखि मुना गेल। तावत जेना हमरा कोनो बात फुराय, आँखि खुजि गेल। देखलियैक जे एकटा खूब सुन्नर सिड़ै लाल धोती पहिरने अछि आ पातर जकाँ चानन कयने अछि। हमरा लग आबिक' बैसैत अछि। हमरा कोरामे माथ ध' क' सूतलि इलाकेँ देखिक' ओकरा आँखिसँ नोर बह' लगैत छैक। हमरा बड़ आश्चर्य होअ' लगैत अछि—ई किएक कानल? इलाकेँ देखिक' ई कानल किएक? तोँ एकरा चिन्हैत छहीक? तोँ एकरा देखिक'

किएक कान' लगले ? ओकर मुँह हमर चुनमुन्नीक मुँह भ' गेलैक। हम हर्षे रोमांचित भ' गेलहुँ। इलाकेँ झकझोरि रहल छलियैक तँ देखलियैक जे ठाढ़ बिहुँसि रहल अछि। चुनमुन्नी कहए लागलि जे—"हम अहाँ लोकनि लेल एहि मरुभूमिक मन्दिर बनि गेलौंहें।"

—'हमरालोकनि लेल माने ? तों मरुभूमिक मन्दिर किएक भ' गेलें ?', हम आश्चर्यसँ पुछलियैक।

'हम अहाँ दुनू गोटेक विवाहक पुरोहित भेलहुँ। अहाँ दुनू गोटेक।' जानि नहि, कोना इलाक निन्नो खुजि जाइत छैक। ओकरा चुनमुन्नी एकटा पटोर आनि क' देल छैक। पटोर पहिरक' जेना एकदम परी भ' जाइत अछि।

फेर चुनमुन्नी हड़बड़ा क' कहैत छैक—'शीघ्र होउ। शुभ लग्न कनेके काल छैक।' ओ मंत्रसँ वातावरण शुद्ध करैत अछि। ओ जेना-जेना कहैत अछि तेना-तेना दुनू गोटे पढ़ैत रहैत छी। आ जे-जे कहैत अछि से-से करैत रहैत छी। होमो होइत छैक आ फेरी सेहो देल जाइत छैक। फेर पुरहित हमरासभकेँ बैसाक' दु मिनट बाद अबैत अछि घूरिक'। अपना संग ल' जाइत अछि आ एकटा ओहार जकाँ घर छैक, ताहिपर ओछाओन छैक एकटा उपर इलाक फेरलाहा साड़ी। आ बालुक गद्दीपर हमरा दुनू गोटेकेँ बैसाक' चुनमुन्नी चल जाइत अछि। दोसर दिस हम आ इला एक दोसराकेँ मुँह देखैत रहि जाइत छी। हँसी लगैत अछि आ होइत अछि जे मनक हर्ष कोनो ठोस वस्तु रहितैक तँ दुनू ओहिमे पैसि जैतहुँ। मुदा हम दुनू गोटे एक दोसराकेँ बाँहिमे समेटने बालुक गद्दीपर बैसल छी। जत' बैसल छी तत' गह्वीर भेल जाइत छैक आ ओछाओन साड़ी चारू कातसँ समटायल जाइत छैक। एक दोसरकेँ स्नेहसँ चुमैत छी, फेर प्रगाढ़ होइत आर चुमैत छी आ फेर बालुपर सूति रहैत छी। हम इलाकेँ अपनामे, एकदमसँ अपनामे साटि लेब' चाहैत छी। हमरा लोकनिक साँस फुल' लगैत अछि आ हम इलाक साँससँ पहिलहि जाठि छूबाक विजय-परिश्रमसँ हकमि रहल छी आ हँसि रहल छी। सौंसे पोखरिमे एकटा विलक्षण हिलकोर उठि रहल छैक। सभ हिलकोर हमरे बाँहि आ पयरक आघातसँ उठल छैक। आ हेलैत काल जतेक बेर हम मुँहसँ पानिक कुड़ुर फेकलहुँ अछि से सैकड़ो रंग गुलाबी नील हरियर पीयर सभ रंगक हिलकोरसँ पोखरि दलमलित अछि। हम जाठि लग गुस्ताक' नहि, फेर हेल' लगैत छी। अपन बात आ इलाक हँसि-हँसिक' किछु कृत्रिम तामस, हमरा रोकि रहल अछि—"आब नै। थाकि गेल होयब। एतेक नै।"

ओ हमरा देह, मुँहपरक जलकेँ अपन पटोरसँ पोछ' लगैत अछि आ हकमैत रहैत अछि। हमरा आश्चर्य लगैत अछि जे इला किएक हकमि रहलि अछि ? ई तँ नहि हेलति अछि। मुदा तखने ओकर खूजल देहपर नजरि पड़ैत अछि। देखैत छी, ओकर सर्वाङ्ग भीजल छैक। सौंसे देहपर कतहु बाँस, कतहु बुकनी जकाँ मोती चकचक क' रहल छैक। ओ हमर शरीरकेँ पोछि रहलि अछि आ हकमि रहलि अछि। हम किछु उत्साहित भ' क' फेर कूदि जाइत छी। ओ फेर हँसिक' मना करैत अछि। कहैत अछि—"एतेक नहि हेलू।" हमर थकनीपर ओकरा मात्सर्य जकाँ होइत छैक। यद्यपि, ओकर हँसमुख आपत्तिसँ स्पष्ट बुझा रहल अछि जे हमर लगातार हेलबाक बहादुरी ओकरा बड़ नीक लागि रहल छैक। मुदा एहि बेर जेना हमरा हेल' सँ ततेक उत्साहित भ' जाइत अछि जे ओकर आँखि झँपा गेलैक अछि। ओ भिजलो देहेँ कोनो बच्चा जकाँ हमर जाँघपर पड़ि रहैत अछि। अपन जाँघ पर इलाक भीजल आ तीव्र श्वाससँ उठैत-खसैत देह हमरा नीक लगैत अछि। लगले हमरा बुझाइत अछि जेना कोनो चिक्कन माछ हमर भीजल देहपर छटकि रहल होअय। ओ माछ इलाक हाथ छैक—पाँच आङुरक एकटा परम आत्मीय आ सघन गति।

पोखरिमे उठल हमर बाँहि आ सम्पूर्ण शरीरक गतिक हिलकोर आब नहुँ-नहुँ शान्त भ' रहल अछि आ जतेक रंगक लहरि रहैक, ततेक रंगक गाछ सभ उगि अयलैक अछि। सभमे एकटा अपरिचित फल लागल छैक, अपरिचित फूल आ सुगन्ध लागल छैक। आब ओ पोखरि पोखरि नहि, फुलवाड़ी भ' जाइत छैक। फेर कनेक बसात डोल' लगैत छैक आ अपना संग एकटा इजोत लेने अबैत छैक।

ओहि बालुक घसमोड़ल तोसकपर जखन हमरा लोकनिक निन्न टुटैत अछि, तँ भोर भ' गेल रहैक छैक। ओहारक चौहद्दीक भीतर हमरालोकनि जत' सूतल रही, तत' सँ कने हाथ फराक पड़ल रही उभर-खाभर बालुपर। इलाक फेरलाहा ओघरायल-तोघरायल साड़ी दूरमे, ओहि ठाम पड़ल। हम खूब प्रगाढ़ भ' क' इलाकेँ बाँहि छूलियैक, कनेक दबा क' ओ बिहुँसैत आँखि फोललक आ तखन बुझलक जे हमरा दुनू गोटेक मध्य किछु पड़ल अछि। से जखन देखलियैक तँ लाज भ' गेल। हमरा दुनू गोटेक मध्य पड़ल रहए चुनमुन्नी निफिकर—हमरालोकनिक विवाह-पुरोहित। बहु सहमा गेलहुँ दुनू गोटे, चिन्ता भेल। कतहु पिचा-तिचा ने गेल होअए, मुदा ओ दुरुस्त रहय। यद्यपि

ईहो आश्चर्य जे हमरा आ इलाक शरीरक बीचमे कोनो रिक्त स्थान नहि छलैक, जाहिमे ओ रहि सकैत, तखन कत' रहल ? आ सेहो जीवित ! चुनमुन्नी अपन पाँखि फड़फड़ौलक आ इलाक गालपर अपन ठोर रगड़' लगलैक। इला ओकरा अपना हाथेँ सोहराब' लगलैक। हम आश्चर्यसँ देखैत रहलहुँ।

—"तोँ कत'सँ चल अयलें ?" हम पुछलियैक। ताहिपर इला बिहुँसलि, मूड़ी गाड़ि लेलक।

"हम माँक पेटमे सूतलि रही, एखन आबि गेलहुँ।" हम चुपचाप ओकर ई बात सूनि लेलहुँ। ओ खन हमरा दिस देखय, खन अपन माँ दिस आ कने गंभीर भ' जाय। फेर एक बेर उठलि आ मायकेँ ठोड़सँ दुलार कयलक। हमरो दुलार कयलक। बाजल—"हम एहि मरुभूमिक ई मन्दिर बनलहुँ अहीँ सभ लेल। आब हम धर्मशाला बनि जाइत छी। अहाँ सभ जखन चलैत-चलैत थाकि जाइ तँ हमरामे विश्राम करब आ जँ कतहु हेरा जाइ पयो, बाट भोतिया जाय तँ हमरे लग आबि जायब। फेर दुनू गोटेकेँ भेँट होयत, दुनू गोटे मिल-जुलि क' रहब। आब हम सभ ठाम धर्मशाला रहब। हम 'चुनमुन्नी धर्मशाला।'"

ओकर आँखि नोरा गेलैक। इला उदास भ' गेलि। हमहूँ बिचित्र भ' गेलहुँ। चुनमुन्नी कतहु चल गेल। ओकर लाल ओहारमे हम आ इला ओकर चल जयबाक घटनापर दुखी होइत रहलहुँ। इला फेर हिचुकि-हिचुकि क' कान' लागलि। हम ओकर कपारपरक लेभड़ल टुहटुह लाल ठोपपर अपन मुँह रखैत चुपचाप ओकर पीठ थथपबैत रहलियैक—बड़ी काल। ओ कनैत रहलि, पुछैत रहलि—चुनमुन्नी किएक भ' गेल धर्मशाला ?

ओकर एहि प्रश्नक कोनो जबाब नहि छल हमरा लग। तेँ हम खाली ओकर पीठे थथपा सकैत छलियैक। आ, ओ लगातार अपन ई प्रश्न पुछैत जा रहल छलि—"किएक चुनमुन्नी धर्मशाला भ' गेलि ? अहाँ किएक ओकरा होब' देलियैक से ? ओ आब सभ दिन धर्मशाले रहति ? अहाँ बजैत छी किएक नहि ? अहाँ जबाब ने किएक दैत छी ? हम अहीँकेँ पुछैत छी, कहू हमरा, चुनमुन्नी किएक भेलि धर्मशाला ?" ओ हमर छातीपर अपन कपार पटकि-पटकि क' पूछि रहल छलि। हमरा लग कोनो जबाब नहि छल। हम खाली ओकर उत्तेजना आ क्लेशकेँ समेटि क' राख' चाहैत छलहुँ। ओकरा शान्त आ सुखी कर' चाहैत छलहुँ, मुदा ओ अस्थिर छलि।

हम की करू ? अपना विषयमे हम सोचलहुँ आ गुम भ' गेलहुँ। फेर बड़ी जोर अन्हड़-बिहाड़ि उठि गेलैक—सौंसे अन्हार।

नील फूल

तिरमा लग प्याली-तश्तरीक टुनटुनीसँ आँखि खुजि गेल। आ, लाल पारदर्शी चूड़ी देखा गेल। हम मूड़ी घुमाक' देखलहुँ तँ माथ दिस सुस्मिता झुकलि रहय, प्याली राख' लेल। हम घड़फड़ा क' उठि गेलहुँ। सौँसे देह पहिने चद्दरि ओढ़ि लेलहुँ। ओकरा कने हँसी लगलैक। हमहूँ हँसलहुँ।

—'बैसै।' हम कहलिऐक। भोरे-भोर ओकरा कतेक दिनपर देखि रहल छलिऐक। हठात् विश्वासे ने हो जेना।

—'अबैत छी, कने अपनो चाह लेने।' ओ चल गेलि। फेर एक मिनटक भीतरे घुरि आयलि। बामा हाथमे प्याला-तश्तरी लेने आ चम्मचसँ टुनुर-टुनुर चीनी मिलबैत। आबिक' पयर दिसका कुर्सीपर बैसि मूड़ी झुका लेलक। आकृति कचमिनाहे उठल सन लागि रहल छलैक। वयस्था तँ कम नहि छैक। तेहन मेमाओन मुँह छैक जे एकरा देखि क' हमरा हरदम एकटा तेहने मोह उपजै-ए जे एक टा कोनो स्नेही मेनाकेँ देखि क' उपजि सकैत छैक।

—'विष्णुजी उठलथुन ? तोँ बड़ सबेरे ऊठि गेलें ? आइ-काल्हि बेस चुस्त भ' गेलेहें ? की बात ?"

—"एहिना निन टूटि गेल। चुस्त की कपार होयब ? दफ्तरमे किछु जल्दी जयबाक अछि, सेहो बात !" ओ चाह पीलक एक घोँट। हमहूँ पीलहुँ। हमरा दुःख भेल। ओकर सबेरे ऊठि जयबाक कारण हम स्वयंकेँ मानि रहल छलहुँ। हमरे दुआरे ओ सबेरे ऊठल-ए।

—'ओ गेलाह् अछि एकटा मित्रक ओत'। घंटा भरिक बादे घुरताह्। एखन तँ बाजबो कठिन-ए छ'बे ने ?''

—''की, छबे बजलैं-ए ? वाह् !'' फेर पुछलिऐक—''कोन मित्र छथिन, जनिकर हम नाम नहि जनैत छियनि ?''

—''सत्तें, नहि जनैत छियनि। नव मित्र छथिन। दुनू गोटे मिलि क' सहकारिताक आधारपर कोनो बिजनेस सोचि रहल छथि।'' ओ मात्र एक टा तटस्थ सूचना जकाँ द' क' हमरा दिस तकलक। फेर आँखि झुका लेलक। हम देखलिऐक, पहिने जकाँ मुस्मिता सुन्नरि नहि अछि आब। मरि गेलै-ए। कने आर सुन्नरि भ' गेल-ए। तथापि, ओकर आकृति परक ओ विशेष बात कतहु लुप्त भ' गेलै-ए। हम बड़ गम्भीर भ' क' ओकर आकृति, आँखि आ पातर ठोड़-परक रेखा सभ ताक' चाहलहुँ, जे किछु वर्ष पूर्व बड़ जीवन्त आ तीव्र छलैक ओकरामे। से सभ एकटा शान्त उदासीमे बदलि गेलैक। ओकरा संबन्धमे ई अनुभव क' आ सोचिक' बड़ क्लेश भेल।

—'चाह् पीबू ने राजू दा ! ठंढा भ' जायत। एक प्याली आर चढ़ा अयलहुँ हें'। हमरा मन पड़ि गेल। अहाँ तँ दू प्याली पीबैत छी एखन क'।'' ओ एक रत्ती बिहुँसलि। हमरा नीक लागल।

—'तोहर बाल-गोपाल सभ सुलभ्य रहैत छहु कि नहि ?'' हम पुछलिऐक।

—''कत्तार रहत ? किछु-ने-किछु होइते रहैत छैक। साहिपबसँ दफ्तरक चक्कर। ई अपन दफ्तर, हम अपन दफ्तर। दाइपर सभकेँ छोड़ि क' रह' पड़ैत अछि। सेहो जँ ठेकनगरि रहय तखन ने ! मुदा, उपाये की ? नोकरी छोड़ि नहि सकैत छी। छोड़ब तँ चलत कत' सँ ? कोना ? आब तँ एहि घरेक किराया डेढ़ सय टाका क' देलक अछि। कहाँसँ चलतैक ? ओ तँ दुनू गोटेक दरमाहा मिलाक' कोना ना घीचि-तीरि क' चलल जाइ-ए, सेह ! नोकरी तुआरे मन तीत रहै-ए। की कुसंयोग जीवनक ! आब तँ हम एकदमसँ परिवारक रुखी लगिते ने छी ! अनका तँ नहिएँ जे अपनोकेँ नहि लगैत छी। करबो। जखन लोकक आवश्यकता बढ़ि जाइत छैक तँ ओकरे पूर्ति करैत-करैत आफत आ तखन ओ बढ़ल आइथ्यो जुलाइ पड़ैत छैक अनिवार्य आवश्यकता। तँ की करी ? कहियो सोचलहुँ ने रही जे नोकरी कर' पड़त—सेहो एक टा कार्यालयमे। मुदा, आइ नोकरीयो करैत पाँचम वर्ष बीति रहल अछि। मन कोनादन भ' जाइ-ए। ऊबि गेल छी। होइत रहै-ए जे सभ दिन हम

अपनाकेँ किछु आर अनचिन्हार आ किछु आर अन्हार बनने जा रहलि छी। सभ दिन किछु आर भेल जा रहलि छी। सोचि क' घबड़ाहटियो होइत अछि आ जीबैत सेहो चल जा रहलि छी। बिकल्पने कि ने ?'' ओ कोमसँ लाचारीसँ बिहुँसलि।

—''दुनू टा नेना सेपेथ भ' रहल-ए। एकर पढ़ाइ-लिखाइ चाही। गाममे हिनकर परिवार, हमर माय-बाबूजी। ओ लोकनि पचास प्रतिशत निर्भर हमरेलोकनिपर। हुनकालोकनिक दबाव। फेर, एत' अपन सामाजिकता, तकर निर्वाह आ बात-विचार। होइ-ए कखनो-कखनो जे अपन गरदनि अपने हाथे कोंकि ली किंवा कतहु छोड़ि-छाड़ि क' पड़ा जाइ। मुदा, से कामो कहाँ होइ-ए ? किछु ने। फेर वैह दफ्तर जाइए पड़ैए आ सभ टा देख' पड़िते अछि। मन घोर रहै-ए। जखन दफ्तर जाइत काल दुनू नेना बरण्डापर ठाढ़ हमरा दिस टुगर जकाँ देखैत रहै-ए तँ आँखि मिलयबाक धैर्य नहि रहै-ए, राजू दा ! वैहो बंबचा एकसरे छैक संसारमे। मुदा, एहु यंत्रणाक सँ आब अभ्यसित भ' चुकल अछि मन। रोज-रोजक ई कचोट आब बड़ सामान्य भ' गेल-ए मनमे। मुदा, कतहु बड़ गहीँर, अदृश्य रूपेँ मनमे जेना तरहरा घूमि रहल-ए आ हम भयभीत बनलि रहैत छी। ओकरा सभसँ आँखि बचाक' दफ्तर जाइत छी। तैयो कहियो क' कोम्हरोसँ आबि क' कोनो नेना साड़ीक खूट ध' लेत आ कहत—''आइ नै जाउ मम्मी ! आइ रहि जाउ हमरे लग।' तँ ओकर अबोध आँखिक ई अपेक्षा मनकेँ चोटा दैऐ। हम ओकर एहि आग्रहक लेल इस्तीफा धरि द' देबाक संकल्प क' लैत छी। मुदा, से छैक सम्भव ? जेहो पानियेँ फेटल एक पाव दूध ओकरा भेटल जाइत छैक, कालिह् कत' सँ भेटि पौतैक ? तखन तँ ओहिना गलीक अवर्ग गरीब नेना सभ जकाँ अबंड भेल निवस्त्र बौआयल फिरत। फेर अपन संकल्प अपने तोड़ैत छी। कोनो वेदना आ तामसमे निरपराध नेनाकेँ सोहुथा दैत छियैक, फेर कोठलीमे बैसि क' कनैत छी। मन हल्लुक भ' जाइ-ए। हिनकर हाल तँ ओहुना अछि। दफ्तरक अतिरिक्त किछु टा कथल नहि ताकथि से फिरगे।'' ओकर आँखि डबडबा गेलैक। गरा सेहो भरि गेलैक। हमरा ओकर मुँह देखबाक इच्छा नहि भेल। ओकर हाथमे चाहक आधो प्याली ओहिना।

—''तोहर चाह् सेरा गेलौक सुस्मिता !''

ओ चाहक घोंट लेलक आ खिड़की दिस ताक' लागलि। हमर मन उदास भ' गेल। हम ओकरा पुछ' चाहैत रही जे एहि बीचमे की सभ

लिखलक-पढ़लक अछि ? कोनो नीक पोथी ? मुदा, ओकर एहि प्रसंगसँ मन भरिया गेल। ओकरा प्रति एक टा तुच्छ सहानुभूति सँ हम चुप रहि सकैत छलहुँ। ओ किछु कहि क' जेना भीतरे-भीतर अपनाकेँ सहज बनबैत चुपचाप बैसलि रहलि। हमहूँ भोरक प्रकाशमे कोठलीकेँ देखलिऐक। सभ किछु ओहिना बधेसल, अस्तव्यस्त आ विचित्र। हम तखन फेर सुस्मिताकेँ देखलिऐक। ओ हमरे दिस ताकि रहलि छलि। हमर आँखिसँ मिलिते ओकर आँखि झुकि गेलैक।

—"सभ टा समय छैक। तोँ बेकार चिन्ता करैत छेँ। अपन भरि नीक सोचि क' करैत जाइ, बस। आइ मनुक्ख एहिसँ बेसी कैयो की सकै-ए सुस्मिता ? हम तँ कहैत छियौक, क्यो की क' सकैत छैक ? सौँसे, चारू दिस, एकटा बात छूटि रहल छैक सभक सङ्गेँ। लोक एहि छुटलाहा बातक कारणेँ कैयो रहल-ए आ भोगियो रहल-ए। एक नहि, अनेक लोक। जतेक अछि, से सभ अपना-अपनी क' आत्मीय लोकक अस्तित्वक लेल एकटा विपरीत परिस्थितिसँ संघर्ष कर'मे लागल अछि। ओहो विपरीत परिस्थिति, कोनो बुझितहुँ जे महत्त्वक छैक, सेहो नहि। ओहने-सन जेना दिनमे कार्यालयक काज करू आ रातिमे डेरा आबि क' जारनि चीरू कुरहरि ल' क'। आब, ई जे, परिस्थिति छैक से तेहन अकच्छाह आ रचनाहीन छैक जे मनुष्यकेँ एकटा बेकार वर्ग लेल, प्रत्युत कहू जे मात्र रोटी-नोन जोड़' टामे, तोड़ि क' जर्जर क' दैत छैक आ से लोककेँ जर्जर होब' पड़ैत छैक। उपाय ? पेटमे अन्न नहि पड़ैक तँ संसारक लोको तँ नहि सुझतैक ? आखिर की करय लोक ? लोक रोटी-दालि मात्र लेल सौँसे सामर्थ्य अरोपि रहल-ए, तैयो पेट भरैत नहि छैक, ने ओकर, ने ओकर स्वजनक, ने समाजक अधिकांश लोकक। की गाम, की शहर, सभ ठरि।"

हमरो मनमे बहुत रास बात छल जे हम कहु' चाहैत रही। कोनो अभिज्ञकेँ कह' चाहैत रही—मुक्त होब' चाहैत रही। मुदा से भ' नहि सकैत छल। एखन भोरे छलैक। आ भोरे-भोर एहन समस्या-बातमे गम्भीर भ' जायब कने कठाइन लागल। तेँ विवेकसँ काज लैत चुप भ' गेलहुँ, एकाएक। सुस्मिताकेँ ई बात बुझा गेलैक। ओकर आकृतिपर व्यस्तताक रेखा देखार भ' गेलैक।

—"अहाँ चुप भ' गेलहुँ राजू दा ? हमहूँ भोरे-भोर बोर क' क' ध' देलहुँ अहाँकेँ, नहि ?

—"बोर की करबै ? से काज आइ-काल्हि हमरे भ' गेल अछि। हमहूँ तँ भायम दैए देखिऔक तोरा। छोड़, जाय बहौक। तोहर दोसर प्याली चाह तोले दार्जिलिङसँ आबि रहल छौक ?" हमर एहि व्यंग्य-जिज्ञासापर ओ हँसलि नहि, ने अपना स्वभावक अनुकूल खूब तेज कोनो जवाबे देलक। तहिसँ लागल जे ओ कतहु बहुत उदास अछि। हमरा कोनादन लागल। हमहूँ अपनाकेँ कनियो उत्साहित नहि क' पौलहुँ। ओ उठिक' गेलि आ एक प्याली चाह ल' क' आयलि। हम आधा प्याली ओकरामे ढारैत कहलिऐक जे आइ डेढ़ प्यालीसँ चलि जयतैक। दुनू गोटे चाह पीबैत चुप रहलहुँ।

—"अहाँ आइ दूक बदला डेढ़े प्यालीसँ तृप्त भ' जाइ आ हम एकक बदला डेढ़ प्यालीसँ तृप्त होइ !" एतेक कालमे एखने टा ओ विशिष्टताकेँ कनेक देखार होब' देलक। एक प्रकारसँ हमरा दुनू गोटेक सम्बन्धक बीच ओकर ई कहब एकटा अपेक्षा-आमंत्रण जकाँ लागल। हमरा उत्साहक अनुभव भेल।

—"एहि बीचमे की सभ लिखलि-पढ़लैँ, से कह।" हम पुछलियैक।

—"किछु नहि। किछु फटीचर तरहक उपन्यास, किछु जासूसी आ एखबार, फिल्मी पत्रिका।"

—"सत्तेँ-सत्त बाज। लिखलैहुँ किछु की नहि ?" हम अपनत्व व्यक्त करैत पुछलियैक।

—"अहाँक सप्पत राजू दा ! बस एतबे। मनो नहि करै-ए। होइत अछि, की होयतैक। लिखिये क' की होयत ? कैक ठामसँ चिट्ठी आयल। अहाँकेँ तँ बुझले अछि। पाँच-सात टा वस्तु जाबत छपल ताबत बड़ नीक लागल, तकर बाद बड़ महत्त्वहीन बुझाय लागल। ताहूपर दौ मास पहिने प्रकाशित कथाक प्रतिक्रियामे दू-दू चारि-चारि पन्नाक पाठकक पत्र। पहिने ताहूमे बड़ मन लागय। मुदा, लागल जे हमर ओहिनो रचनाक विषयमे कतेको प्रतिष्ठित आदमी आ स्थापित साहित्यकारलोकनिक तेना ने प्रशंसात्मक पत्र सभ आब' लागल जे बड़ बेजाय बुझना गेल। हमरा साफ-साफ बुझायल जे धाँधली छैक, शोषण। हम रचनाकार होयबाक कारणेँ जानि रहलि छी जे हमरा अमुक कथा लिखबामे किछु लागत नहि, ने समय, ने अनुभव। ताहूपर जँ प्रशंसा आ माङ हो तँ सन्देह स्वाभाविक छैक। तेँ आस्ते-आस्ते मन विरक्त होब' लागल। अहाँकेँ आश्चर्यो होयत जे अहाँक मणीशमी सेहो बड़ भावोच्छ्वसित पत्र लिखलनि, कथ टा।"

हम एहि नामपर सत्ते चौंकलहुँ। ओ व्यंग्यसँ हँसलि। हम अर्थ बुझलिऐक।

—'राजू दा, सत्य पुछी तँ मर्णासेवीक पत्र हमरा एकटा विजयक संतोष देनक आ एहि अनुभवक समर्थनमे एकटा सशक्त प्रमाण, जे अहाँक प्रश्नक उत्तर भ' सकत। हमरा इच्छा भेल रहय जे ओ पत्र यथावत् अहाँक पतापर पठा दी, मुदा नहि जानि किएक, अहाँसँ भेँट होयबाक प्रतीक्षामे रहलहुँ। ओ पत्र अहाँकेँ देखायब। मुदा, एखन रहऽ दियौक। एखन अहाँसँ गप्प करी, सैह इच्छा होइ-ए। तखन यैह बुझू जे आब डेढ़ वर्षसँ बेसी भ' गेल लिखना। भरिसक आब लिखबो नहि करब। की होयतैक लिखि क'? सभ सार हरामी होइ-ए। बालकेँ नहि चीन्हत, ने चिन्हबाक यत्ने करत। वयऽस्करकेँ चीन्हत आ स्कैंडल करत। देखत आकृति आ मांसु। से तेहन खराप आ बेमानीक बात लगै-ए जे साहित्य हमरा नजरिमे आब मात्र एकटा कँच 'अन्हार विलास गृह'मे जयबाक अव्वल सीढ़ी मात्र बुझाइ पड़ै-ए। एहिमे संघर्ष किछु नहि, आ लिखि क' कवि सभ संघर्ष, न:, संघर्षक नाटक करै-ए। बस। हम आब एहि विषयमे सोचि क' सौंशा जाइत छी। आ, हम पत्रिका सभ लेब बन्द क' देलहुँ। बेकार! एम्हरसँ ओम्हर पढ़ि जाउ, एकोटा रचना अहाँकेँ कतहुसँ नहि प्रभावित करत। फोटो सभ तँ सुन्दर रहत। लहक-चहक बेस। मुदा हमरा तँ एम्हर बुझायल अछि जे कोनोटा रचना अपन समयक सोझाँ ठाढ़ नहि भ' सकत। से किएक नहि हो? आखिर कवितासँ लोक की अपेक्षा करै-ए? कोनो कवि-सम्मेलन की? मासक मास नीक वस्तु एकोटा पढ़ब से नहि भेटि सकत, जखन कि एतेक-रास पत्रिका-पोथी सभ छपि रहल अछि, ओकर विमोचन भ' रहल अछि। धाकड़ साहित्यसेवीलोकनि अपन कर-कमल आ मुखारविन्दसँ वेतनक राशि प्राप्त करैत छथि आ काव्यक नव-नव 'वाद'मे महाग्रंथ लिखैत छथि, ताहूमे की छैक? समयपर छात्र नोटक सूदि-दर-सूदि, जे ओ अमुक लोकसँ ओसूल करैत ई तेहन दयनीय आ भ्रष्ट बात छैक? की करबैक? ई तँ अपन साध्य अछि ने जे ओहि बेमानीमे अपनाकेँ साझी नहि करी! खराप बात आ विपरीत वातावरणमे अपन व्यक्तित्वक, भलेँ नगण्ये, सहयोग नहि करी। अपना तरहेँ जे ठीक आ नीक हो, सैह करैत जाइ। आ, लिखब कोन महान बात छैक? लिखबो कयलहुँ आ सचिवालय दौड़ैत रहलहुँ—सरकारी प्रकाशनक लेल तँ की महत्त्वपूर्ण आ महान! ई त भारी क्षुद्रता थिकैक। एहि क्षुद्र मनुक्ख सागरमे हमरा नहि उतरबाक मन होइत अछि।'

ओ किछु उत्तेजित भ' गेलि रहय, किंचित् हकमियो गेलि रहय, वक्तवाक एकाग्रता आ उत्तेजनामे। हमरा ओकर सभ बात नीक लागल आ संतोषो भेल जे अपनाकेँ कतहु छोड़ि क' ने बढ़ि गेल-ए। एकर अनुभवक समूहकेँ एकर अपन चिन्ता आ दृष्टि एकटा बाट देखा चुकल छैक। ई पूरा समकालीन जीवनक सन्दर्भमे साहित्य आ कलाक औचित्य पर एकटा युगीन आ अनिवार्य प्रश्न लगा रहल-ए, सर्वथा ज्वलन्त आ चिन्तन-भरल। हमरा ओकर एहि रचनात्मक स्तरपर जीवित रहबाक अनुभवसँ तेहने हर्ष भेल जेना कोनो पिता अस्सी कोस बनारस जा देखय जे ओकर प्रवासी संतान कुशल-क्षेमसँ छैक। हम सुस्मिताकेँ देखलिऐक।

—"हम बड़ी काल उठलहुँ राजू दा! अहाँक ई बृहत् कापी पढ़ि लेलहुँ।" पहिने सुस्मिता कोनो एहन बात करय तँ दुष्टतासँ पहिने हँसय। आइ जखन एहू बातपर ओ गम्भीरे सूचना देलक तँ मन खिन्न जकाँ भ' गेल। हम कनडेरिये किछु तटस्थे जकाँ अपन कापी देखलहुँ। राति नहि मन लागल तँ भेल रहय जे किछु लिखी। से किछु संकोचो भेल। भेल जे अनेरे ओ हमर कापी पढ़लक।'

—"ई सभटा अहीं अपनेपर लिखि रहल छी ने?" ओ पुछलक। पुछलक नहि, कहऽ लागलि—हमरा होइत छल जे गाम जा क' अहाँ प्रसन्न छी। गामक लोक छी तँ गाम जा क' अहाँ प्रसन्न होयब। मुदा एतेक विवश आ मृतप्राय जीवन भ' गेल होयत अहाँक, से हमरा सोचलो ने पार लगै-ए। एना किएक भेल अहाँक संगे? अहाँ जखन एतऽसँ गेल रही तँ भेँटो नहि कयने रही। किछु कहलो नहि रही, तैयो लागल रहय—गाममे अहाँ खूब नीक जकाँ रहब, तेँ गेलीहेँ। एहि शहरी हर-हर-खट-खटसँ दूर! मुदा ई सभ पढ़ि क' दुःख भेल। अहाँ गाम जाऽक' एकटा भारी उदास आ निष्क्रिय जिनगीक बोझ पात जकाँ लगैत छी हमरा! एहन जखन जीवन अछि ओतऽ तखन किएक नहि ई शहरे? ट्यूशन किंवा मुफरीछरी? हमरा सत्ते कष्ट भेल सभटा पढ़ि क'।" ओ चुप भ' गेलि।

—'बेकार पढ़लेँ तोँ।' हम टारऽ चाहलिऐक हँसि क'। यद्यपि, ओकर सभटा वाक्य हमरा चारू दिससँ घेरि लेने रहय। निकलि नहि सकलहुँ हम। तेँ यत्नो नहि कयलिऐक। एक बेर ओकरा देखलिऐक, एक बेर अपन कापीकेँ। चुप रहलहुँ।

—"इला कोनो चिट्ठी लिखैत अछि ?" हमर माथ सन्न द' भ' उठल सुस्मिताक एहि प्रश्नपर । आँखि आ नाक कड़ुआ गेल । हम खिड़की दिस ताक' लगलहुँ । ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भेल । ई हमर सभसँ सुन्दर आ हारल अंश छल । हमरा लगैत छल जे हमरा आ इलाक अतिरिक्त क्यो नहि जनैत अछि । इला हमर कल्पित सम्बोधन थिक जे कोनो अत्यन्त पवित्र आ प्रगाढ़ क्षणमे हम एकटा कालेजिया लड़कीकें देने रहिऐक पहिले-पहिल, आ स्नेहसँ ओकर दुनू हाथकें अपन दुनू हाथमे खूब भावावेशमे दबैत ओकर आँखि देखने रहिऐक, जाहिमे हमर एहि नव नामकरणक अवसरपर लजायल गौरवसँ भरल एकटा धड़का मेला लागि गेल रहैक । ओ हरिण जकाँ चौंकि-चौंकि उठय । हमरालोकनिक ओहि एकान्तक कोनो साक्षी नहि अछि । मात्र हमर कल्पित नाम—इला । आ ओकरा मनमे जानि नहि की ? एकाएक हमरा लागल जे किछु बेसी काल धरि हम चुप रहि गेलहुँ । सोंप' चाहलहुँ स्थितिकें ।

—"तोहर ई दुर्गुण छौके सुस्मिता ! ई हमरासँ सम्बन्धित खिस्सा कोना मानि लेले-हें ? तोरा ई नीक जकाँ बुझल छौक जे हमर कोनो परिचितामे इला ककरो नाम नहि छैक । एकटा कल्पित कथापर, एतेक भरोस पाठक क' सकैत अछि, मुदा तों जे स्वयं रचना करैत छें, आ हमरा एतेक लगसँ जनैत छें, तकरा ई सन्देह कोना भेलैक ? बेकार आ निष्क्रिय बैसल-बैसल बैह सभ किछु-किछु लिखैत रहैत छी । दुपहरिया कटि जाइ-ए । सेते-सेते अनेरो बौआइत छी । समय ससरि जाइ-ए । बस । लेतक आरियोपर रहैत छी एही कागत आ कलमक मनःस्थितिमे, से धरि ठीके ।"

—'हम कोनो आन भावे नहि कहलहुँ-हें राजू दा ! अहाँक ई इला बैह थिक, चिपचश्माम चुप्पी छौंड़ी—कविता । अहाँक ताला लागल कोठली देखि क' अनगनित बेर उदास घूरि आयवाली कालेजिया छौंड़ी । अहाँ ओकरासँ विवाह कर' चाहैत छी । ओ नहि तँ ओकर स्वप्न अहाँकें बेहारि रहल-ए । अहाँ ओकरा बिसरि नहि सकलहुँ अछि ।" सुस्मिता कहैत गेलि । हमरा विरोध करबाक इच्छा नहि भेल । की करितिऐक ? मूड़ी लटकौने बैसि गेलहुँ । हमरो बूझल छल जे हमर इला के थिक, से सुस्मिताकें बूझल छैक—ठीक-ठीक बूझल छैक । तैयो झँपने रही बातकें । ओ ओकरा साफ क' देलक । हमरा एकटा संतोष भेल, हमर मनक एकटा नितान्त नहीँर अभाव

बिन कहने क्यो एकटा बन्धु जनै-ए आ मनेमन सिनेह रखै-ए । हम कृतज्ञ भावसँ सुस्मिताकें देखलिऐक ।

—'राजू दा ! अहाँ रहि जाउ एतहि । कोनो-ने-कोनो प्रबन्ध भैये जयतैक ।' हम हँसलहुँ ओकर एहि प्रस्तावपर । कोनो-ने-कोनो प्रबन्ध, से ओकरो ने बूझल छैक । ओकर एहि आग्रहमे भावनाक महत्त्व बहुत, परंच तत्त्वे ।

—'कोन प्रबन्ध ? आ ओना ई शहर आब हमरा रहबा योग्य लागय वा नहि, सन्देह होइ-ए ।"

—'किएक ? एहि शहरमे की भ' गेलै-ए ? शहर तँ केहन बढ़ियाँ बुझते भेल आ रहलै-ए ।"

—"से नहि । जकरा छोड़ि चुकल छी, तकरा फेरसँ अनुभव करबामे असौकर्य नहि होइत छैक ? आ पूरा व्यवस्था फेरसँ जमाबी, से साहस नहि होइत अछि ।"

—'किएक ? एहिमे साहसक कोन बात ? कोठलीक किराया आ खयबाक खर्च अहाँ कोनो उद्योगें नहि निकालि सकैत छी ?" ओ अविश्वाससँ पुछलक ।

—'कोन उद्योगसँ ? कोना ?'

—'एतेक अखबारे निकलैत छैक एत' सँ । किछु स्तम्भो लिखब तँ पाइ आबिये जायत ।" ई स्तम्भ लिखबावला प्रस्तावपर एकटा बात मन पड़ल । हमर आकृतिपर कोनो एहन भाव अवश्ये उतरि आयल होयत जे सुस्मिताकें देखबामे आबि गेलैक ।

—'किछु मन पड़ल-ए ने ?" ओ पुछलक ।

—"तोरा मन होयतौक, परीक्षाक बाद किछु दिन बेकारे पड़ल रही ने ! तँ एक बेर भोरे-भोर ओ आयलि रहय । ओकर केबाड़ खटखटयबाक अंदाजेसँ हम चीन्हि गेलिऐक—उएह थिक । सत्ये रहय उएह । कोठलीमे आबि क' पयर लग बैसि गेलि, ओछाओनक कोनपर । किछु टा नहि बाजलि । भोरे-भोर ओकर अयबासँ जतेक प्रसन्न भेल रही से बिसरा गेल ओकर आकृति देखिक' । एकदम उदास ओ कम्पा जकाँ । आँखि उतरल । कनेक चिन्तित भेलि । किछुटा नहि बाजलि । ताहिपर ओकरा हल्लुक कर' लेल किछु-किछु कह' लगलिऐक, तैयो ओ चुप्पे रहलि, एकोरत्ती हँसयो नहि कयलक । पाछाँ हमरो बेकार लागल अपन नाटक ।

—'तों तमसायलि छे । बूझल अछि । की होइतैक आबिक' ? कोन सुख ?'' ओकर आँखि डबडबा गेलैक । हम देखलिऐक । मुड़ी झुका लेलक । केहन खिखियाहि आ गुम्मा अछि, सेहो तें बूझने हेतौक । किछुटा नहि बाजलि । कोनो अभियोग नहि, कोनो बात नहि । यद्यपि, हमरा बूझल रहय । हम कते दिनसँ ओकर भेंट नहि कयने रहिऐक, तकर ओकरा दुःख रहैक । अपन स्वाभिमानमे ओ कय दिन धरि नहि आयलि । फेर ओहि दिन आयलि । दुःख आ भावनासँ टूटिक' आयलि रहय । ई बात प्रधान रहैक । ओकर आकृतिसँ ई बात देखाइत रहैक । ओहिना मन पड़ैए—ओ भरि राति सूतलि नहि छलि होयति । हम ओकरा लग चल गेलिऐक । ओकर कान्हपर तरहत्थी रखलिऐक । ओकर आँखिसँ ढब्ब द' नोर खसलैक । मुदा, शरीर कतहु हिलबो नहि कयलैक । सिसकी भरि ने ।

''की करिऔक ? तों'ही कहह ने ? हमरा किछु नहि सूझैए । एहि बेकारी आ एकरसक संघर्षमे भरिसक हमर सभटा बाते छूटि रहल-ए । हमरा किछु नहि भेटल एकरा पाछाँ, एत' धरि जे तों'हु नहि । हम ने चिन्ता करैत छी, से नहि । मुदा, हम की करू ? तोहर सोझाँ होयबाक साहस नहि होइत अछि । हीनताक बोध होब' लगैये । हम की करू ? हम जनैत रहैत छी ओहि समयकें । हम जनैत रहैत छी जे तों प्रतीक्षा करबें हमरा अयबाक । नहि जा होइत अछि । हम की करू ? आब कैक मास भ' गेलैक ? कैएक ठाम दौड़-धड़हा कयलहुँ, करिते रहैत छी । ई बेकारीक बोध आ एकरे हेतु लड़ाइ, हमरा जेना हृदयहीन बना रहल-ए, इला । हम तोरासँ नहि भेंट करी, एहिसँ बेसी दुःखक दोसर बात की भ' सकैत छैक ? कय-कय दिन देखना भ' जाइए । मन औनाइत-औनाइत तोरे कोठलीमे चल जाइए । कोठलीमे खुजल किताब वा कापीपर तोहर मूड़ी पड़ल छौक आ बड़ी-बड़ीटा आँखि बन्द छौक । हम उदास भ' क' घूमि अबैत छी । आब तें ओहुनो लोकसँ पाइ पैंच माङ' पड़ैत-ए जकरा आगाँ हाथ पसारब जीवनक सबसँ निन्दनीय बात लगैत रहय । आत्मरक्षा लेल सेहो करैत छी । यैह हालत रहल तें संभव छैक, शहर भरिक सम्पूर्ण परिचित लोकक नजरिमे एकटा उधारखोर, झूठी आ लुच्चा आदमी भ' क' रहि जाइ । एहिसँ बड़ भय होइ-ए । तें ने बाँच' चाहैत रहैत छी, सभसँ, तोरोसँ । तोरा की देखौक हम ? मुदा, तोरा किछु-ने-किछु देबाक मन होइत रहै-ए । से अछि किछु ने । तें तों दुःखी नहि हो ।''

'' अहाँकें पन्द्रहो मिनट फुरसति नहि भेटल ?''

ओकर इएह एकटा वाक्य मनैं-ए आइयो । ओहि दिन एतबे मात्र पुछने रहय । बस । हमरा किछु जबाब नहि फुरल । तें हम ओकरा खाली कान्ह धरा क' चुपचाप देखैत रहलिऐक । ओ उठलि आ अपन छोटका पर्ससँ एकटा कागतक टुकड़ी बाँहिक देलक—अखबारक कटिंग । राँचीमे कोनो अखबारक सम्पादकीय विभागमे सहायकक आवश्यकता छपल रहैक । भोरे-भोर ओ सैह देबे रहय आबिक' । ओहि दिन अनेक दिनपर बुझायल रहय जे अपन संघर्ष हम एकसरे नहि लड़ि रहल छी, इला हमरा कातमे अछि, ओहो लड़ि रहल-ए । एहि लड़ाइमे हम दुनू गोटे छी । ई सोचिक' मन फेर हरियर आ बलवन्त होब' लागल रहय । अपन सम्पूर्ण हारिकें आब हम एकटा जीतसँ बिसरि जाय चाहैत रही । तकरा हेतु हम अपनाकें तैयार कर' चाहैत रही । ओ स्थिरेसँ कोठलीसँ बाहर भ' गेलि । हम पाछाँ-पाछाँ बाहर धरि अयलहुँ । ओ चल गेलि । हमरा किछुओ टा बाजि नहि भेल । हम ठाढ़ भ' गेल रही ।

—''ओत' अहाँ कयने रहिऐक आवेदन ?'' सुस्मिता पुछलक ।

—'ह: । अरे, ओ सभ ओहिना नाटक रहैत छैक । आब कोनो नव बात छैक ? इन्टरव्यूओ मे ने बजौलक । मुदा, कयलो की जाय ? बेकार लोक कोनो आवेदन कर'पर तैयार रहै-ए, कतहु । हम तें अपन बेकारीमे गाम पड़ा गेलहुँ । गामोमे सेतमे उतरि गेलहुँ । यद्यपि ईहो नहि जनैत रहिऐक जे चास ककरा कहैत छैक । एखनो खेती-बारीक बहुत कम बात बूझल भेल-ए । ओना 'कृषि-कार्य' करैत छी ।'' 'कृषि-कार्य' हम जानि-बूझिक' कने उपहास रूपें कहलिऐक ।

—'अच्छा राजू दा, अहाँ ई सपना अपने देखलिऐक—मरुभूमि, मन्दिर, पोखरि आ धर्मशालायला ?' सुस्मिता अनमन बच्चा जकाँ पुछलक ।

—''तें हमर सपना आन के देखि देत ?'' हम हँसी कयलिऐक ।

—''अहाँ हँसी करैत छी । हमर आशय छल जे अहाँक सपना थिक ने ई ?''

—''हँ, हमरे । मुदा, ई सपना इलाक सेहो थिकैक, ताहि विषयमे नहि कहि सकैत छिऐक ।''

—''किएक ? विश्वास नहि रहल राजू दा ?'' ओ एना दुःखी किएक भ' गेलि से नहि बूझि पड़ल ।

—"नै । से बात नहि । सपनाक सोस सम्बन्ध आदमीक अपन इच्छाके कण्ठ मोकि-मोकिक' कब्रिस्तान बनौलासँ छैक । आब, से नहि बूझल अछि । नै भेंट भेल-ए, नै चिट्ठिये-पत्री । कोना बुझबैक ? आब तँ मोन कहैये जे सभटा बात एक कात भ' क' प्रवाहित भ' गेल होयतैक ।'

—"अहाँकेँ ओकर अभाव नहि खटकैत अछि ?" हमरा किछु नहि बाजि भेल ओकर प्रश्नपर । खाली खिड़की-बाटे अनका घरक खपड़ैल पार देखैत रहलहुँ ।

—"अहाँ विवाह किएक नहि क' लैत छी इलासँ ?" हमरा सटाक् द' जेना ओकर एहि प्रश्नसँ छौंकी जकाँ लागल । मन कछमछा गेल ।

—"की सोच' लगलहुँ ?"

—"विवाह कोना क' सकैत छी सुस्मिता ? ओकरा कत' रखबैक ? की खाय देबैक ? की पहिर' देबैक ?" हम बड़ संयत, किन्तु सिखाह भ' क' ओकरेसँ पुछलियैक ।

—"लोक की खाय पहिर' आ रह' दैत छैक ? सैह देबैक । सुखसँ तँ रहत ।"

—'बेकार थिकैक ई सभ सुस्मिता । ओ केहन सुखितगर परिवारक अछि, केहन बढ़िया जकाँ रहै-ए से तँ तोरा देखल बूझल छौक, तखन तँ आदर्श आ भावुकताक नामपर दू वर्ष हमरा सीमामे हमर दुःख-सुखकेँ भावि क' चलैत, तकरा बाद मन दुखिताह होइत जैतैक, काट' लगितैक मन आ फेर ओएह भरि मन माहुर होब' लगितैक । पूरा जीवनमे से माहुर पसरि जइतैक आ भोर-साँझ, दिन-राति ओएह बदहाबक्कर होइत । की तँ ओ मटियातेल छीटिक' आगि लगबैत कि हमहीँ रेल-तरमे सूति रहितहुँ । एहि सभमे आब की छैक नव, महत्त्वपूर्ण ? बेकार थिक सभ ।"

—"ओकरा विषयमे किछु चिन्ता नहि अछि अहाँकेँ राजू दा ?" ई प्रश्न टेढ़ रहैक ।

—"मात्र इएह जे ओ सुखी रहय आ अपन मुक्त मनसँ जीवन स्वीकारि क' जीवय । एतबे ।"

—"तखन ओतेक बात बजलहुँ, सभ मिथ्या थिक—नाटक ?" ओ बाजलि ।

—"से कोना कहि सकैत छी ?"

—"मने कहि सकैत छी । अहाँक ई चिन्ता सिद्ध क' दै-ए हमर बातकेँ ।"

—'देख सुस्मिता ! जहाँ धरि शिकाइत वा अभियोगक बात छैक से हमरा मनमे ओकरा प्रति किछु अछिये नहि । सत्य बात तँ ई जे ओ तेहन किछु नहि कयलक-ए । तेँ हम ओकरा विषयमे कतहुसँ छूटल नहि छी । जखन ओहि बेचारीक कोनो दोषे नहि छैक तखन ओकरासँ कोनो शिकाइत किएक हो हमरा ? हँ, ओकरा मनक बात तँ नहि कहबो । संभव छैक, हमरा प्रति ओकरा मनमे ई अभियोग सभ जीबिते होइक आ ओ हमरा प्रतियेँ कनेको अशान्ति उठा रहल होअय तँ ताहिसँ ओकरा शान्ति भेटैक सैह, इच्छा । तेँ कहलियौक जे ओ मुक्त मनेँ अपन जीवन जीब' लागय"'।

—"के मुक्त मने जीवन जीब' लागय राजू दा ?" हमरा ओकनि दुनू गोटे विष्णुजीक एहि आकस्मिक आगमन आ प्रश्नपर चौंकि गेलहुँ । मुदा, तत्काल कहलियनि—"मनुष्य मात्र । सभक मनपर दू-दू टनक पाथर राखल छैक । लोकक देह थकुचा-थकुचा भ' गेल छैक । से सभ लोकक मन मुक्त हो, जीवनक दुःख, संघर्ष आ कटुता खतम होइक, सैह । अहाँ नहि चाहैत छी विष्णुजी ?"

—"हम एहि युगक लोक नहि छी ? मुदा, ई अहाँक सभटा माङ हमरा जनैत मात्र एकटा बातपर आधारित अछि—'साधनक प्राप्ति, आर्थिक सुभीता ।' से तखनेटा संभव छैक, आवश्यकता भरि समान बटवारा । बिना रुपैया-पैसा, अनक ई सभ किछु कतहु नहि भ' सकैत छैक, बरो लाख चाहय । अपितु यैह टा सभ किछु, सैह मानबाक चाही ।"

सुस्मिताक आकृति हुनक एहि भाषासँ उतरि गेलैक । ओ मूड़ी निहुरा लेलक । हमरा हुनक ई गप्प ओतेक समीचीन नहि लागल, तथापि हम कोनो विरोध नहि क' सुनैत रहलियनि । तथ्य तँ छलैक जे मन पर दबाव द' रहल रहय ।

—"मनुक्ख अतबो चाहि रहल अछि, जेहो योग्यता आ शक्ति छैक, ओतबोकेँ खतयबाक गुंजाइश नहि छैक आ आस्ते-आस्ते लोक बेसी तीव्र आ आक्रामक स्तरपर उतरि रहल अछि । बहुत स्वाभाविको छैक । आइ नहि तँ काल्हि ई सभ फसाद उठबे करतैक । आ, उठबोक चाही । एहन बात तँ नहि जे पाइ किंवा साधनक अभाव छैक । परिस्थिति खाली यैह छैक जे सभ पाइ आ साधन किछु खास हाथ ओ तिजोरीमे बन्द छैक । तेँ ओहि

बन्द तिजोरीकें मुक्त करबाक छैक। से भ' रहल छैक कैक ठाम। तिजोरीबला लोक वा हुनके संरक्षक आ लगुआ-भगुआ जकरा बजैतो लोक, एकरा डकैती कहैत छथिन, लूटि-पाटि कहैत छथिन। मुदा, से जे मौन होइथि, कहैत रहथुन। ओहि व्यक्तिकें बाट कोन छैक दोसर? ओकर ओहिना बम रहनैक तँ ओ लेत। एके घरमे जँ चारि गोटे सुखसँ भोजन करय आ चारि गोटे भूखें व्याकुल देखैत रहय तँ सह्य होयतैक? कोनो मनुष्यकें सहल पार लगतैक? नहि लगतैक। तखन होयतैक जबर्दस्ती बँटबारा—भोजनक, वस्तुजातक, घरक। से बटबारे थिक ई छीना-झपटी। इच्छासँ बँटबारा नहि क' होइत छनि, आत्माक छोटे पूँजीबलालोकनिकें तँ छूरा, बम आ बन्दूकक बलें बँटबा लेत छनि। कोन बेजाय? ई तँ परिवारक सम्पतिक भँवारी-बँटवारा थिकैक। जे रोक-थाम करैत छथि डकैती कहि-कहि क', से करैत रहथु। ई चलतैक। ई तँ तावत् धरि चलबाक चाही, यावत् धरि आदमी एहि मोट-मोट परिस्थितिसँ मुक्त नहि भ' जाय, समस्या खाली बेकारियेक नहि छैक, एहि अन्याय आ शोषणोक छैक। से सभटा तुरन्त समाप्त होयबाक चाही। यावत् से नहि होइक कोनो प्रताड़ित आ जीबैत लोककें चैनसँ नहि रहबाक चाही। जे सभ नपुंसक छथि, हुनकर कथा नहि होअय। जकरामे कनेको आत्म-सम्मानक भाव आ अपन अधिकारक औचित्य बुझबाक, शोषित नहि होयबाक चिन्ता छैक, से सभ लड़ाइ करत सभकें करबाक चाहियैक। छुच्छे बैंकेक राष्ट्रियकरण तँ सभ किछु नहि ने छैक। जाहि वृहत् समाज-कल्याणक उद्देश्यें ई राष्ट्रियकरण कयल गेल-ए, से कत' फलित-कार्यान्वित भ' रहल-ए? देखियौक। जकरा लग पहिनेसँ दू-टूटा टैक्सीसँ मासिक दू-चारि हजारक बचत छैक तकरे पुनः बैंकसँ ऋण भेटि रहल छैक, तेसर-चारिम टैक्सी कीन' से। आ, जाहि रिक्सावला सें रुपैया देबाक योजना स्वीकृत भेलैक से सौंसे शहर छानि आउ तँ जे कोनो बैंकसँ कय टा रिक्सावालाकें कतबा टाका कर्ज भेटलैक-ए? बकवाद थिकैक ई सभ। आइयो सभ रिक्सावला बूढ़ आ लराठी रिक्सा कोनो-ने-कोनो खटालसँ लैत अछि। छाती तोड़ि-तोड़ि क' वर्षक वर्ष चलबै-ए, ओहिना अनाथ, रोगियाह भ' जाइ-ए। आइयो ओ जीवन भरि रिक्सावला भ' क' एकटा रिक्साक स्वामी नहि भ' पबै-ए। से बात अहाँ ककरा कहबैक? ई बात सत्य छैक जे कोनो देशक प्रधान मंत्री बड़ीसँ बड़ी नोन नहि द' सकैत छैक, मुदा, पूरा परिवेशे जखन एना भिनसर्गात, विघाइ आ चरित्रहीन भ' चुकल छैक, तेहनामे मात्र कोनो योजना पारित भ' जयबाक कोनो अर्थ नहि छैक। प्रचार-

कम बेह रहैत छैक। स्थानीय स्तरपर 'धाँगली' आ बेइमानी आर बढ़िये जाइत छैक। को करतौ आदमी? कहाँ धरि? सभ ठाम जे एकटा वातावरण भ' गेल छैक तकरा सहि लेबाक सामर्थ्य कहाँ? ककरा? सभ ठाम हीक मैनेजर आ एकाउन्टेन्ट कैशियर आ ओकर मातहत सभ।" विष्णुजी वर्णत-वर्जत जेना कोनो बातसँ चौंकि क' चुप भ' गेलाह। हुनका मनमे भीषण असन्तोष छनि एहि व्यवस्था आ वातावरणक विरुद्ध। हुनक मनमे बहुत रास कार्यक्रम छनि। हुनि ओ विशेष आक्रोशमे रहैत छथि। हमरा हुनक एकोटा बातसँ आपत्ति नहि छल। हम खाली चुप्पे रह' चाहैत छलहुँ।

—"अहाँ त' पुछबे नहि कयलहुँ, हम अपने एतेक रास बाज' लगलहुँ राजूदा।" ओ कने संकुचित जकाँ भ' गेलाह।

—"एकटा इंटरभ्यूमे आयल छी, कालेजक लेल।" हम कहलियनि। ओ सुभ्भ भ' क' हँसलाह। हम अपतिभ भ' गेलहुँ। हुनकर हँसब बड़ अधलाह लागि गेल। अर्थ नहि लागल, से नहि।

—"सेहो टा तँ छैक—मात्र इंटरभ्यू। होइत तँ छैक ओकरे, जकरा हेतु विज्ञापित कयल जाइत छैक कोनो खास स्थान। तथापि, कहू ने के सभ छथि विशेषज्ञ? संभव छैक गोटी बैसि जाय कतहु। सेवा-आयोगक चेयरमैन लग लगवा लागि सकैत अछि। विशेषज्ञ जँ नाम पता देअय तँ लिखि, अन्यथा......"

—"रातिये अयलहुँ-हें। हमरा कोनो पता नहि, किछु। एहि बीच एक अक्षर पढ़बो नहि कयलियै-ए। सभटा पछिले भरोस पर पढ़लाहा, परीक्षा देलहा। दोसर, ई सभ बेकार थिकैक। बात उएह छैक, अहाँ बला—विज्ञापन आ अन्तर्वीक्षा तँ एकटा नाटक छैक। व्यक्ति तँ पूर्व निश्चित छैक।"

—"आइ-काल्हि तँ आयोगमे तीनियेंटा आबिक बोलबाला। ताहूमे विशेष एक टाक.........

"बूझल अछि। हमर एकटा अत्यन्त अभिन्न दोस्त। अहाँ ओकरा चीन्हैत छियैक, एहि जातिवादी पालघर धारक विरुद्ध टघाओल लोक अछि। ओकरा स्वयं एहिपर बड़ भरोस छैक। यद्यपि हमरा, मात्र हमरा सन्दर्भमे ओ मुक्त अछि अपन ओहि जातिवादितासँ। मुदा बेचाराकें सामर्थ्य ने छैक तँ की हो? देहो जे आबि गेलहुँ-हें से ओकरे अनुकम्पासँ। वैह आवेदन क' देने रहैक। अपने तावत मोफस्सिल कालेजमे

पड़ा रहल-ए। हमरा हेतु चिन्तित रहै-ए। एहू लें वैह आवेदन कयने रहैक। ओकरे आवेदन कयलहापर ई अनाहूटिक नाटक थिक। ई बात ओ लिखनो छलथ जे—'आइ-काल्हि त' बुझते छीक। आयोगमे जमघट छैक ओकरा-लोकनिक। एक-दू टा व्यक्तिकें पयलहुँ अछि। मुदा हमरा भरोस नहि अछि ओकरा सभक जुबानपर। विश्वासो ने करी। ओ सभ कि कोनो हमरा-लोकनि छी जुबानपर प्राण देनिहार? तैयो भिड़ोमे तँ छिऐक दूटा पैरवी। भारी चालू लोक सभ अछि। कहलक-ए जे तोहर मदति करतीक। हम छुट्टे तोरा द' कहि देलिऐक-ए जे तों ओकरेलोकनिक जाति-भाइ थिकहीक! तोहर कौलिक उपाधिहीन नाम हमरा मदति कयलक-ए। देखिथी तमाशा। दू टा बोल। सभ कर' पड़ैत छैक राजू। तों बनल रह धर्मराज। सड़ि जयबें। समाज ओम्हरसँ आहत देखतो आ एक रत्ती चिन्तो नहि करतौक। बेसीसँ बेसी तोहर दयनीय हालतपर दयाभावसँ देखओतौ। अपना ऊपर आहत अबैत ई चालू रिसक दया-भाव तोरा देहपरक कोढ़ि जकाँ सहन कर' पड़तौक। सब नहि भिड़तौक। कराकेसँ दया आ कराकेसँ कृपा करतौक। मुदा फेर वैह। कोनो एकटा टोपीतर कि झंडातर आबि जो। सभक आँखिमे तों मिनटक भीतर बदलि जयबें। तोहर शरीरसँ पवित्रता आ ज्ञानक गंध उठ' लगतौक। लोकक आँखिमे तोरे लेल आगत-स्वागत होब' लगतैक। वैह थिकैक चलनि आजुक। प्रतिभाशाली आ विद्वान माने सलूआ आ सुधनी। विद्वान-फिद्वान किछु नहि, यदि फलना जाति नहि, फलना बड़का आदमीक 'सउर-सम्बन्धी' नहि। एहना हालतमे तों यदि झण्डा-टोपीक समाजसँ फराक रहबाक सिद्धान्त धयने रहबें तँ अनेरे उलाहल-पकाहल रहबें। भरि जन्म घसि-घसि क' मरि जयबें। मरैत काल अनुभव होयतौक, एके ठाम चलैत-चलैत तोरा पयरसँ एकटा बेत पैग खाधि बनि गेलौ-ए। भरि ठेहुन, भरि डाँड़ लेने तों चिचियौर काटि रहल छें। तोंसे गामक लोक ओत'सँ उबटि क' कतहु आन ठाम कोनो नीक जलवायुवाला भूमिपर जाक' बसि गेल। आनन्दसँ रहै-ए। तों ओगरने रहलें एकान्तकें एकसरे। तोहर अपनो लोक बेसी काल धरि तोरा लग नहि रहतौक। ओहो तोहर अनर्गल जिद् आ बतहपनीपर तोरा छोड़ि क' विदा भ' जयतौक। मुदा, ई सुभटा गमने नहि होयतौक जे तों, कि तँ कोनो झण्डाक छाहरिमे आबि जो कि टोपीक। वा नहि तँ कोनो पैन्हक छत्ता ध' ले—चुनावी चेन्हक छत्ता।

□

देश-धन्धा

अपन देश-समाजमे कतेक पार्टी छैक। रोजी-रोटीपर बात छैक। सुन्दर-समृद्ध भविष्यपर बात छैक। हैं ने! एकरा पार्टी सभ किएक सूर्तल छैक? एक प्रकारें पूँजीक लाभतिसँ बड़का उद्योग-धंधा छैक। अपन जीप गाड़ी, अपन लोक। मचल अछि दौड़-बरहा। टेलिफोन घनघना रहल-ए। कय टा बालक नव-नवकीया भ' रहल-ए। किछु एम.एल.ए., एम.एल.सी. बनिकल जा रहल-ए, किछु बेचल जा रहल-ए। तोरा बूझल नहि होयतौक। आब तें अपना येचक कय टा लोक भेटल-ए जे खादी पहिरै-ए, पान चबैए

आ जीपपर टहलैं-ए। कय टा भेटल-ए। कहलक—'बेकार छलहुँ, एहीमे आबि गेलहुँ'। रोजी तँ भेटल। सागल छी। समय छैक, काल्हि सरकार बनतैक तँ हुनकेलोकनिक ओर चलय। एत' तँ येह छैक—एक टा कोनो विभागक मंत्रीक पाछाँ सचिवालयक ओ सम्पूर्ण विभागक साधन, शक्ति सेवामे लागल रहैत छैक। तकर बाद सचिवालय। एहि सभमे कय टा विभाग छैक, कय टा नीक-नीक जगह सभ छैक। सभमे कय टा तेहन लोकके भरने अछि जकरा किछु तुरि-बुद्धि नहि। भरि दिन ओ सभ कैन्टिनमे टहलैं-ए, पान-सिकरेट करैं-ए आ टेबुलपर पयर पसारि क' निश्चिन्त भ' क' फोँफ कटै-ए। पाँच बजे अपन हुलि क' डेरा अबै-ए कि बजार घूमै-ए। किछु टा काज नहि होइत छैक। चपरासीसँ ल' क' अफसर धरि मन्त्रिगणक सेवामे जुटल रहै-ए। खाली फाइलपर फाइल गेंटायल जाइत छैक। मशानक मशान फाइल। हमरा तँ बुझाइ-ए जे पूरा सचिवालयक कागज-पत्तर यदि जारनि बनाओल जाय तँ भरि बिहारक लोकक कय वर्ष भानस-भात होइत रहतैक, चाहु अलगँ सभ। आ, अन्ततः सैह कर' पड़तैक। आगि लगा देब' पड़तैक सभ टाकेँ कि तँ अपन बइमानी झँपै ले' स्वयं ओ सभ लगाअय कि बइमानीक अन्त कार' लेल जनता लगा देतैक। सभ टा अंगरेजे कालसँ चल आबि रहल छैक। आब तँ सचिवालयक कुर्सी सभक टाङीहो सभ पच्चीस वर्षक भ' गेलै-ए। सभ टा सगालखालाकेँ बाढ़ि देब' पड़तैक। नहि जाइने, येह फेर चिप्पीपर चिप्पी साटल साइकिलक ट्यूब-टायर जकाँ दसे डगपर साइकिल पंक्चर होइत रहतैक। करबैत रहू मरम्मति, कटैत रहू दिन। सचिवालये नहि, सम्पूर्ण प्रशासकीय प्रबन्धक येह हालत छैक। सभ ठाम भूर-भार। से तेहन जे ओहि बाटे लोक तँ लोक, हाथी-घोड़ाक एक टा पूरा बरियाती चल जाय, आबि जाय, तेहन। तेँ से, यावत तकरा मूलमे नहि जयतैक ई 'घाखिली', ई षड्यन्त्र आ अव्यवस्था हटाओल नहि जा सकै-ए।''

ओ लगातार बजैत रहलैक। ओकरा मन पड़लैं तँ मन पड़ि जयतौक विमलेशवा! केहन तेजगर आ मुँहजोर छल से धुसलि छोक। एक पाती शुद्ध भ' क' लिख' नहि अबैक। आइ बड़का नेता जकाँ भाषण क' क' घोर क' देतौक कि सँ पूरा 'सेट अप' 'चेन्ज' क' देतौक। ओकरा देखि ले तँ किछुने फुरतौ। तेहन। खाका तँ नहि बदलि होयतैक बेचाराकेँ तखन एही खाकामे पैसि क' 'फिट' होयबाक संघर्ष क' रहल-ए। पैसि गेल तँ सुभीते-सुभीता

रहतैक बेचाराकेँ। जीवन रहत। आनन्द करत। बड़ बहुत तँ ऊँचका खिड़कीपरसँ भोर-साँझ बाहरक सड़क परक मुखापद-छटपटाइट लोकक समुद्रकेँ हहुआइत-फुफुआइत देखैत रहत। आ मने-मन बड़ दयालु बनैत रहत जे एतेक राश लोक बेकार अछि, अन्न-वस्त्रहीन, घरविहीन…अहा! सरकारकेँ किछु सोचबाक चाहिऐक। एहिमे लगभग सबपढ़ुल-लिखल छैक। एकरालोकनिक बेचारा सभक किछु भविष्य नहि छैक। अन्हार। नहि! एहि अन्हारकेँ ई व्यवस्था दूर करओ, नहि तँ गद्दी छोड़ि देअय। ई अन्याय थिक। जनताक प्रताड़ित आ समाधानहीन ई जुलूस आब बदलबाक चाही। आ, ओ बेचारे एहि व्यवस्थाकेँ उखाड़ि क' आन व्यवस्थाक इन्तिजाम करैत छथि। किछु अन्तर नहि। कोनो कागक शीर्षक बदलि क' ई लोकनि शुरु भ' जाइत छथि। कोनो मंत्रिपदक बात नहि। पहिले कार्य-शपथ-ग्रहण करबाक बाद तुरन्त राजभवनसँ पयरे विदा भ' जाइत छथि।—''राष्ट्रक पेट्रोल व्यर्थ खर्च नहि होयतैक। हम जनताक आदमी थिकहुँ। नब्बे प्रतिशत जनता पैदले चलै-ए।''

जनता भोरे-भोर अखबार सभमे अपन नव मंत्रीक एहि महाभावनाकेँ पढ़-ए आ माथा झुका लैं-ए—''धन्य! आइयो संसारमे महान् लोकक अभाव नहि छैक। स्वागत ने एहि पार्टीमे एहन त्यागी-कर्मठ लोक सभ अछि। तखन ने एतेक कम शक्तिमे रहितो डमाडोल कयने रहैत छलनिहँ पूरा इलाकाकेँ, सरकारकेँ।'' आ ओही त्यागी कर्मठ मंत्रीमहोदयक यात्रा-खर्चपर अपन कार-पेट्रोलक कतोक हजार रुपैयाक मासिक व्यय अबैत छनि तँ लोकक माथपर बजरि जाइत छैक किछु अदृश्य चोट। ओ झमान भ' क' खसै ए। ओकरा ढकमूड़ी लागि जाइत छैक। मुदा ओकर मोहभंग करबा लेल तावते कोनो नव पार्टीक गठन भ' जाइत छैक जे जनताक माङ आ ओकर जीवन-स्तर उठयबाक लेल संघर्ष आ क्रान्तिक उद्घोषणा तैयार करै-ए आ शहरक, गामक सड़कपर जुलूस निकालैए 'पछिला झुट्ठा' आ बेसक 'गद्दार नेता' लोकनिकेँ गारि-गंजन करै-ए जे पूर्वक मंत्रिमण्डलमे रहथि आ लाखक लाख हड़पि क' बड़का पूँजीपति भ' गेलाह। मौज करैत छथि आइ। हुनकापर, हुनक बइमानी आ घूसखोरीपर कमीशन बैसयबाक अखिल भारतीय स्तरपर आयोजन कयल जाइत छैक महासभा सभ, जाहिमे येह माङ राखल जाइत छैक जे कतेक एतेक धन बइमानीक धन थिकनि, गलत धन थिकनि, गलत

शक्ति आ साधनक उपयोगसँ आयल धन थिकनि ।—से सरकार हिनकासँ छीनैक । जनता सङ्ग ई हिनकालोकनिक विश्वासघात थिक । एकरा जनता सहन नहि करत । ओ आगि लगा देत ।

अरे आगि की लगाओत जनता ! जनताकेँ तँ अहाँ शतरंजक गोटी बनौने छी । घर जकाँ, माटि जकाँ ओकरा बिछा देने छिऐक आ अपन स्वार्थ, अपन अहंकार, अपन उपलब्धिसँ लड़ैत छी । हारैत छी, जीतैत छी जनता तँ ओछाओल शतरंजी थिक । अथवा, बेसीमे बेसी कोनो चित्र-प्रदर्शनीमे देखाओल गेल ओ चित्र, जाहिमे खाली रंग-बिरंगक रेखा सभ छैक, एम्हुरसँ ओम्हुर, एहि दिससँ ओहि दिस । काटल-कूटल । ओकर शीर्षक छैक— "गूँगी रेखाओं की बस्ती" (बौक रेखा सभक बस्ती) । तँ अहाँ तँ तकरे निर्माता छी । जनताक आकृतिकेँ काटि-कूटि क' अनचिन्हार बना देनिहार लोक । जकरा मौका हाथ अबैत अछि, से लूटैत किएक ने ओकरा । अरे, जनता तँ आब अहाँलोकनिसँ बहुत गोटेक नामो नहि जनै-ए । अहीँ लोकनिक चरित्र-हीनता आ 'धोखली'क चलते ओ आब अपन पूर्व पुरुष, राष्ट्रो नेताकेँ बिसरि रहल-ए । तखन कहू जे देशक दुर्भाग्य तेहन छैक जे तैयो अहीँलोकनि भाग्य-विधाता छी । अहीँमेसँ केओ दरभंगा जाक' भाषण क' अबैत छी, आकाश-वाणी-केन्द्र खोलबा देब ! केयो विश्वविद्यालय, केयो किछु । आ भाषा-मोहक माहुर मिलाओल गोली फेकि क' जनताकेँ राहुक मूस जकाँ मारि रहल छी । जनता आ अहाँक बीचक आङुरेपर गनल जाए योग्य परिवार आ लोक अहाँक सभा आयोजित करै-ए, शामियाना तनबै-ए, जुलूस निकलबै-ए आ लोक जुरबै-ए आ मंचपर प्रशस्ति-गान करै-ए । तकरापर प्रसन्न भ' क' अहाँ जे ओकरा मध्यस्थताक मोआबिजा देत छिऐक, ताहि सम्पत्ति आ अधिकारसँ ओ कोनो बड़का सरकार-संपोषित लगहरि संस्थाक प्रबन्धक बनि जाइ-ए । अपन कार्यालयमे अपन कुर्सीक माथपर अहाँक बड़का फोटो टाङि लै-ए आ खूब चैनसँ जीबै-ए । बाल-बच्चा सभ बड़का घरमे पैघ लोक जकाँ रहैत छैक । ओ समाजक ततेक पैघ आ प्रतिष्ठित लोक अछि जे रेडियो-स्टेशनसँ ल' क' गामक खादी-भंडार धरिमे ओकर रोआब रहैत छैक । ओकरे पैरवीसँ सभ होइत छैक । ओ सरकारमे नहियो रहै-ए तैयो सरकार ओकरा मुट्ठीमे रहैत छैक । कारण, ओ अहाँको चानन करै-ए, टीक रखै-ए आ सुतैत छी घटाक घंटा पूजा करै-ए । सरकार आ जनताक बीचक ई रमन-चमन, पाघ लोक सभ अहीँक, अहीँ द्वारा संरक्षित आ संपोषित अछि !

एहि अति विस्तृत पत्र-संदर्भसँ केओ उद्विग्न नहि । गम्भीर भ' गेल । एहिमे कोनो नव प्रसंग किछु नहि छलैक । समाजक बुझल सत्य छैक ई सभ । सभ केओ वैह सभ भोगि रहल-ए । सभकेँ अनुभव भ' रहल छैक जे ओकरा समटा सामर्थ्य छैक । मुदा, एक टा मुट्ठी डाक्टरी जाँच कराक' घोषित क' देल गेलैए जे ओकरा असाध्य बीमारी छैक, कोनो छूतहा रोग । समाजकेँ ओकरासँ फराक रहबाक चाही । मुदा से बात छैक से नहि । डाक्टरो तँ ओकरे लोकनिक छैक । समाजक निन्यानबे प्रतिशत लोक तँ एहने अछि । मुदा, तेहन धूर्त होइए ई सभ जे भाइये-भाइकेँ फोड़ने रहैए । सभ समाजसँ, गामसँ, दस टा मजगूत लोककेँ कीनि क' अपन जेबीमे ध' लैए । पाछाँ वैह ओकर कारप्रदाज रहि जाइत छैक । तकरा सभक मुइलाक बाद ओकरा लोकनिक बेटा-पोता । वैह लोकनि एकरा सभक हिस्सा गुण्डागर्दीसँ ल' क' पत्रिका मीटिंगक प्रबन्ध करैत छैक आ चुनाव-स्थल-बूथ पर बोगस भोट खसबाक बेलेँ खसपटामे भीममेसी सहयोग । ई कोनो एक गाम, शहर वा कस्बोचतुष्टोक खिस्सा नहि छैक । सम्पूर्ण देशक खिस्सा थिकैक । लोको बुझैत छैक । आहि रे बा, एतेक गोटे भोट देलिऐ फलनाकेँ आ जीति गेलैक ढलनाँ । ई की भेलैक ? मुदा, एहनो दुःख तकलीफ आ वातावरणमे लोक जीब' चाहैए । तेँ सभटा उठबैए, सभटा उठा लैए । जीवनसँ एकटा असमथ प्रेम छैक लोकक जे लोक कारी-करौंटे जीबैत चल जाइए । ओकरा अपन नुकायल जिनगीपर लाज नहि छैक, ने ग्लानि । कारण, आस्ते-आस्ते ओकरा निर्वीर्य बना देल गेलैए । ओ तँ अपना विषयमे आब बहुत कम जनैए । अथवो जनैए से ओकरा बुझा देल गेलैए जे ओ अमुक अछि । ओ ओकर निजी अनुभव नहि छैक ।

विष्णुजी ठहलाह । स्नान घरमे पैसि गेलाह । शुचिताक धार्मिक भावसँ आयल, ई बात ओकरा अकबकाह लगलैक । एक क्षण हमरो कठाइन लागल । फेर हँसी लागि गेल । विष्णुजीकेँ आब हम कय वर्षसँ चिन्हैत छियनि । वैह स्वभाव छनि, एहिना अप्रत्याशित रूपेँ व्यवहार करबाक । मुदा, हमरा हँसबाक कारण ई नहि छल, प्रत्युत ई जे लोक समकालीन समस्या सभ पर बौद्धिकतासँ गप्प करैत क' लैए ? बजबाक काल गम्भीरो कतेक लगैत रहैए—जेना भरि युगक दर्द ओकरे छातीमे होइक । मुदा, ईहो एकटा जबर्दस्त नाटक भ' गेलैए लोकक । बेसी लोक बौद्धिकता प्रदर्शित करैत गप्प करत । मुदा, ओही बातक ओकर अपने कहलाहाक अनुसार यदि आचरण

कर' कहियोक तँ बीत विषाहि देल। ठहरि नहि सकैए। पड़ायत। ई बात पुरना वा बीचक पीढ़ीक लोक कहियथ तखन ओतेक लाजक विषय नहि। से तँ करैए हमरोलोकनिक पीढ़ीक लोक, मने टटका नवतुरियागण, सेहो जे विश्वविद्यालयसँ पढ़ाइ खतम क' क' तुरन्त अवैत कयलए। ईहो सभ एहि आत्महत्या, आत्मप्रवंचनावाला नाटकक शिकार भ' गेल-ए। मनमे स्थिरता नामक छूति नहि छैक आ पूरा गाँधी-दर्शन आ मार्क्सपर गप्प करत। फटीचर सभ। ईहो सभ अपन विश्वास गमा चुकल अछि। तैयो अछिये। रहओ। मोहल्लामे कय गोटे कुकुर पोसने रहैए, बिलाड़ि पोसने रहैए, तकरो बोली-चालीसँ तँ लोक प्रभावित होइते रहैए। बेसी ध्याने नहि देबाक चाही एहि बातपर। आ से दितहुँ ने छिऐक। खाली एतबा चिन्ता तँ अवश्ये स्वाभाविक छैक जे बूढ़-पुरान तँ बेचारे पाकल आम भेलाह, परंच ई नवका छौंड़ा सभ सेहो जे ओही प्रकारक कमजोरी आ सन्त्रासक शिकार भेल जाइत अछि से ठरि अत्यन्त चिन्ता आ निराशाक विषय। हमर चिन्ता सेह अछि।

—"अहाँकेँ अवसाद तँ नहि लागल राजूदा हिनकर ई व्यवहार?" सुस्मिता पुछलक।

—"ऊः!" हम हँसलिऐक। "अवसाद की लागत? विष्णुजीकेँ हम चिन्हैत नहि छियनि की? दोसर, जे कोनो हिनके ई बात छनि? बहुत लोककेँ छैक। समस्या सभ पर गप्प करबाक 'हॉबी' छैक। मुदा, अखबारी गप्प पढ़ल आ सुनल गप्प, फेर देखल आ अनुभव कयल समस्या सभपर नहि। एहि युगक युवा पीढ़ीक ईहो त्रुटि छैक सुस्मिता। धैर्य नहि छैक, ध्यानो नहि रहैत छैक। मानैत छिऐक वातावरणमे विष रोपल छैक, सौंसे विषाक्त छैक, सभ किछु। आ, तेँ लोक व्याकुल, अवसाद दिस जा रहलए। मुदा, एकरा के करत निर्विष? आन देशक लोक? जाहि घरमे जे रहैए तकर सफैयति तँ ओकरे कर' पड़ैत छैक। टोलक लोक तँ आबिक' नहि क' दैत छैक? से, लोक सभ विषाह वातावरणकेँ हँटयबाक बदलामे आरो पोसनहि अछि। एक-एक रत्ती क' जेना मनुष्य लगातारक अपन लापरवाही आ आलस्यसँ एक दिन अकाल आ निष्क्रिय भ' जाइत अछि, तहिना विषो रहैत-रहैत एक दिन साँप भ' जायत।"

—"हमरा मन पड़ैए राजूदा, कोनो एक टा कविता रहय अहाँक 'मुझे भय है, मैं भी साँप होकर मरूँगा।'"

—"हँ, सन्दर्भसँ, अपनासँ छुटिक' आब अपन बाझ कातक, लग-पासक समाजसँ जुड़ि गेलए। मूल बात सैह छैक। सैह चिन्ता आइ अपनासँ निकलि क' बढ़ि गेलए। हमर ई बात तोँ जेना अर्थां नहि मान, एकटा स्वप्नद्रष्टाक मान, जे अपन जैनपनो एक वृद्ध लोक जकाँ बितौलक। मुदा भेल तँ गम्भीर सामाजिक लोक जकाँ मने व्यक्तिनिष्ठ। परंच, से सीमा एक दिन सभक चरित्रमे रहैत छैक। अपनाकेँ जखन लोक भीतरसँ निकालैए आ बाहर ठोस संसारक अविभाज्यक सम्पर्कमे अबैए तँ ओकर सम्पूर्ण अस्तित्वक अर्थे एक तरहेँ बदलि जाइत छैक। कठोर आवरणमे मुलायम डोका होइए लोक। जीवन ओतबे प्रबल रहैत छैक भीतरमे, परंच समाजक आँखिसँ कटल—अलगे। जेँ कि डोकाकेँ सन्देह भेलैक लोक होयबाक कि ठामे गरदमान ठमकि जाइत अछि अपन केबाड़ बन्न क' क'। अपनाकेँ भीतर समेटि क' गुड़कल रहैए यद्यपि ओकरा माटियोपर चलल भ' जाइत छैक। से मनुष्य जखन अपन डोका-देहक भीतर रहितो मनकेँ खोलिक' जीयब आरम्भ करैए तँ ओकर जीवनक कथटा यथार्थक रंगे बदलल अनुभव होअ' लगैत छैक। तखन ओकरा बोध होइत छैक—एना किएक लागि रहलए? जेना मनमे घृणा वा प्रेम लोककेँ रहिते छैक, तैयो जखन अपनाकेँ खोलिक' आदमी लोक, समाज दिस जाय देब' लगैत छैक तँ ओ अनुभवक, अपनत्वक एकटा नव तरहक वातावरणमे अपनाकेँ पबैए। किछुए दिन धरि ई बात नव लगैत छैक। फेर कोनो गहीँर आ वैचारिक क्षणमे लगैत छैक जे ई तँ मूलतः सैह बात थिकैक जे ओकरा मनमे बहुत दिनसँ जीवित छैक।"

हम एकाएक हड़बड़ा गेलहुँ—"अरे, आब तँ बहुत समय बीति गेल होयतैक। कतेक बजलैक? तोरो कार्यालय जयबाक होयतौ ने?" सुस्मिताकेँ पुछलिऐक। ओ जेना एहि प्रश्नकेँ महत्त्व नहि देलकैक। खाली अनमनस्क जकाँ अपने घरपछा दिस तकैत रहलि।

स्नान-घरसँ विष्णुजीक कोनो फिल्मी गीतक सस्वर पाठ आबि रहल छल। हमरा हँसी लागि गेल। सुस्मिताकेँ एकर अर्थ नहि लगलैक। एक बेर हमरा दिस तकलक आ फेर घरपछा दिस देख' लागलि।

—"ओहो तैयार नहि होयबाक छोक?" हम जेना ओकर चिन्ता करैत पुछलिऐक।

—"हुअबै तैयार। कोनो हड़बड़ी छैक? अहाँकेँ कय बजे धरि खेनाइ तैयार भ' जयबाक चाही?" ओ पुछलक।

—"अपने बर्थ छलेहुँ, कार्यालय जयबाक अछि !" हमरा विस्मय भेल ।

—"ओहिना कहलहुँ । आइ दफ्तर जयबाक मने नहि करैत अछि ।" ओ गंभीर भ' गेलि । हमरा फेर आश्चर्य भेल । ओकर ई गम्भीरता सेहो हमरा आन तरहक लागल । बीचमे ओ एक बेर हमरा दिस बेस अपेक्षासँ देखलक । हम ओकरे माथ पर उड़ियाइ रहल दुन्नारिटा केश देखैत रही । अपना दिस देखैत देखियो क' ओ कनियों संकुचित नहि भेलि । हमरा दिस कीछ सेकेण्ड धरि लगातार देखैत रहलि । हमहीं आँखि घुरा लेलहुँ । ओकर एना भ' क' अपना दिस देखब बड़ नव आ अपरिचित लागल ।

मने-मन कतोक प्रश्न, संवाद दोहरा-तेहरा गेलहुँ । हमरा ई सोचिक' घबड़ाहटि जकाँ होयब आयल जे सुस्मिता एखनो हमरे दिस ताकैत होयति । एक बेर जेना साहस क' क' देखलिऐक तँ सत्ये ओ हमरे दिस देखि रहलि छलि । मुदा, एहि बेर हमरासँ आँखि मिलैत देरी ओकर आकृति घूमि गेलैक । घूमैत आकृति पर ओकर ठोढ़क बामा भागक एकटा पातर मुस्कीक ललाओन लहरि बर्फ जकाँ हमरा आँखिकेँ छूबैत उतरि गेल । ई एकदम नव अनुभव छल । सुस्मिताक सम्बन्धक ई स्तर आइ धरि अनचिन्हार छल । हमरा विविध अनुभवसँ बीत' पड़ल । खाली एतबा धरि बुझायल, ओ हमरा आरो आगू आबि गेलए, छूबि सकैत छी ओकरा । कारण, ओकर आत्मीय दुनू तरहक्यो हमरा दुनू गालपर तेना पाड़ि गेलए जे हम ओकरा आगाँ तेना जकाँ लगैत छी । ओ हमरा निश्चिन्त राख'वाली अभिभावक जकाँ भ' गेलए । हमरा सुख भेल । फेर किछु ग्लानि । ग्लानिक लहरि मनमे लगातार उठैत डूबैत रहल । हम ओतबे कालमे तबाह भ' गेलहुँ ।

—"अहाँ कहलहुँ नै राजूदा, कय बजे धरि डेरा छोड़ब ? ई जे खौंड़ा अछि नकर हालत सेँ देखिते छिऐक । हमरा अपने पैर' पड़त जनसामे । नहूँ ।"

—"छोड़ ने, बाहरे कलहु खा लेब । आब ई खयबाक बेल तों भनसा घरमे पैसि जो, आ गप्प-सप्प नहि कर, ई तँ कोनो लाभ नहि । भने बैसलि छेँ । तों काज पर तँ नहि जयबे सखन ?" हम अनेरे उत्साहित भ' गेलहुँ । भरिसक हमरा एकर अर्थ बुझा गेल छल जे सुस्मिता कार्यालय किएक नहि जायत ? ओ किएक ओते राति क' सुतलाक बादो एतेक अरहुलोसे उठि गेलए ? हमरा हल्लुक सब किछु नीक लागल । फेर मनमे ग्लानि भेल । हम क्षुब्ध भ' मनकेँ डाँट-डपट कयलहुँ ।

—"अहाँक आदति नहि बदलल । आखिर एतेक जे सांसारिक चक्र छैक से भोजनेक समस्याले ने ? लोक नोकरी करै-ए, एतनी-एतनी टा अपने कोखिसँ जनमल सन्तानकेँ अनाथ जकाँ छोड़ि क' नोकरी कर' जाइत अछि । आ, बड़ी-बड़ी दूरसँ लोक इन्टरव्यू देब' अबैए से खाली भोजनेक समस्या बुझारे ने ? एकरा अहाँ एतेक महत्वहीन किएक बुझैत रहैत छी राजूदा ? अहाँ भूखे भुखले रहल भ' जायत बहुत दिन ?"

—"हमरा बुझाइ-ए सुस्मिता जे तोरा अपना नोकरी करबाक बड़ क्लेश छौक आ, विवशता बुझाइत छौक ?" ओकर मुँह उतरि गेलैक हमर एहि प्रश्न पर । हमरा साफ-साफ बुझायल जे हम ओकर मन टेघि गेल छिऐक । हमरो अधलाह लागल ।

—"अहाँ धरि भुखले रहबाक बात", हम कहलिऐक—"से कियो नहि रहि सकै-ए बहुत दिन धरि । तकर अर्थ ई नहि मानल होइत अछि जे भोजनेक प्रबन्धमे चौबीसो घंटा, भरि जीवन झोँकि दी । नहि उचित अछि । तों देखि नेहुँ । हमर जखन विवाह होयत तँ हम अपन कनियाँकेँ कहबैक जे भानस बढ़ एकके साँझ करय, बाँकी समयमे पढ़ाइ करय, पढ़य-लिखय । विश्वभरिक कलाकृति देखय-जानय, नीक पुस्तक, नव विचार आ आन्दोलन पर सोचय-बुझय आ लिखय । खाली कहलो-कहलो विना हमरा कहने एक थारी चाह बना क' देअय । भोजनमे कने विलम्बे भ' गेने हमरा कोनो हर्ज नहि ।" हम खूब मुक्त-भावेँ कहलिऐ ।

—"राजूदा ! पहिने विवाह तँ करू, तखन कनियाँकेँ बताहि बनायब । ई तँ बुझले अछि, अहाँक नर्सिंगमे जे सटति तकरा भरि जन्म कान' पड़तैक । हकन नोरे कनतीह ओ ।"

—"से किएक गय ? हम तोरा तेहन अलच्छधागहि लगैत छिऔक ?"

—"अलच्छ नहि, सनकी । अहाँक सनक-सनकमे कोनो स्त्री बहुत दिन धरि साबुत नहि रहि सकैए । बताहि कैये क' रहति । हम कोनो आइएसँ नहि जनैत छी अहाँकेँ ।"

—"तीन-चारि जन्मसँ जनैत छेँ हमरा, की सुस्मिता ?" हम ठट्ठा कयलिऐक । ओ गम्भीर भ' गेलि । तकर हमरा अर्थ नहि लागल ।

—"अहाँ विवाह किएक नहि क' लैत छी, राजूदा आब ?" ओकर स्वर भारी छलैक । हम चुप रहलहुँ । बजबाक इच्छा भेल, मुदा चुप्पे रहिक'

एम्हर-ओम्हर देखैत रहलहुं। ओ हमरा फेर पुछलक। हम एक बेर फेर देखलिऐक। हमरा हँसी लागि गेल। मुदा, ई हँसी बलहँसी छल, से हम दुनू गोटे बुझलिऐक।

—"बाजू ने।" ओ फेर पुछलक। एहि बेर हम गम्भीर भ' गेलहुँ, सद्यः।

—"कोना कहू? देखैत छें जे नोकरीक लेल बौआयल फिरैत छी। कत' रखबैक आ खोअबैक?"

—"हँ। हमरा अपन भोगल अछि। बेरोजगार लोकक संग बियाह भेलाक भोग हमरा अपना भोगल अछि। हम कहियो बिसरि नहि सकैत छी।" ओ बाजलि—

"मुदा राजूदा, ओहुनो अभाव आ अपूर्ण मनोरथवाला जीवनमे एक-दोसराक संग रहबाक आ मिलि-जुलिक' परिस्थितिसँ लड़बाक आत्मसंतोष बड़ पैघ होइत छैक। अहाँकेँ बूझल अछि, ओ स्पर्श—प्रतीक्षामे हेरायलि अपन स्त्रीक आतुरक ओ स्पर्श अहाँकेँ अछि बूझल जे थाकल ठेहिआयल घूमि क' अबलापर अहाँक बाँहि आ छातीपर पड़त? अहाँकेँ संसारमे एक टा अपन बेकारी छोड़ि क' सभ किछु बिसगर आ स्नेही लाग' लागत। एत' धरि जे अहाँकेँ कोनो मुद्दइ पर्यन्त नीक लाग' लागत। से स्पर्श, से संजीवनी-मजरि अहाँकेँ नहि बूझल अछि ने?" सुस्मिता हमरा तेना सुनबैत रहलि जेना ओ हमरा नहि कहि रहलि हो, अपनेमे बाजि रहलि हो।

—"की सभ बाजि रहलि छे तों? हमरा तँ नहि बूझल अछि। बियाहे ने भेलए तँ कोना बूझल रहत? हम कि कोनो विष्णुजी छी। हुनकासँ पूछि क' जानि लैत छी।" हम फेर हँसी कयलिऐ। मुदा, ओ गम्भीर रहि गेलि।

—"से तँ अनुभव नहि भेल। अनुभवक सूचना भेल। सूचना आ घटनामे बड़ अन्तर छैक। आब हम एहि बातकेँ बड़ मान' लागलहुँ। हमरालोकनि पढ़ि क', सुनि क' बहुत बात पता लैत छी। मुदा, राजूदा ई बात केहन गलत होइत छैक तकर अनुमान लोककेँ नहि छैक। सरासरि बेइमानी थिक ई। अपना नजरिसँ कोनो परिस्थितिकेँ हम अपने जकाँ देखबाक अभ्यासी भ' गेल छी। से देखब ओहि परिस्थितिक विषयमे कय बेर एक टा भ्रामक अनुभव द' दैत छैक। परिस्थिति तँ स्वयंमे अपने तरहक तथ्यसँ भरल रहैत छैक। हमरा-लोकनिकेँ जकरा जे फुरैए से ओकरा द' कहैत छिऐक-सुनैत छिऐक। मुदा, ई बात थिक बड़ निषिद्ध। हम मानैत छी जे लोक बड़ अभ्यासी भ' गेलए।

—"ई बात तोँ कोन सन्दर्भमे कहि रहलि छें? तोहर की अभिप्राय छौक?"

—"सन्दर्भ की? आब जेना आइ-काल्हि एक टा पत्रिकेँ भ' गेलैए, अपने मने गढ़ि क' ककरो विषयमे किछु स्कैंडल क' देलहुँ। चाहे ओ खास लोक कोनो प्रकारेँ दोषी हो वा नहि हो। मुदा, पुरुष कि स्त्रीगण, समाजकेँ एक टा स्कैंडल करबामे मजा अबैत छैक—सुनबामे मजा अबैत छैक, तेँ चालू क' दैत छैक। आब जकर स्कैंडल भ' रहल छैक तकर जीवन तबाह, जीवन नहियोँ तबाह तँ अशान्त तँ अवश्य। हमर दफ्तरक मिस नवीनीकेँ जनिते छिऐक। आइ-काल्हि ओकरेपर कृपा भजल जा रहल छैक लोकक। आ कथनिहार के? तँ सुनि क' हँसी लागत—मिस्टर बाहरी। की तँ 'एकर एहन सोसाइटी छैक, ओहेन गुण्डा आ तस्कर सभ एकर संगी छैक, राति-राति भरि पीबैए—मसूरी दार्जिलिंग करैए। अरे स्साले, जब यह बेचारी यही सब करती है तो बिना नागा दफ्तर कैसे करती है?" सुस्मिता उत्तेजनामे हिन्दी बाज' लागलि तँ चौंकि गेलहुँ। ओकरा देखलिऐक। खूब तमसायल आकृति।

—"ओ बेचारी एकसरे—पूरा समाजमे एकसरे संघर्ष क' रहलए तँ वेश्या अछि। आ ओ मिस्टर बाहरी आन नहि, अपन बहुएसँ वेश्यावृत्ति करबा रहलए, तैयो नीक लोक अछि, समाजक प्रतिष्ठित आ लोकप्रिय लोक। हमरालोकनि नहि जनैत छिऐक कि समाजे नहि जनैत छैक? मुदा, की विडम्बना, ओहने भ्रष्ट आ पापी लोक एहि तरहक स्कैंडलक जन्मदाता होइछ आ लोकक नजरिमे विश्वासपात्र भ' जाइछ।" सुस्मिता किछु क्षण चुप रहि क' जेना किछु सोचलक। हमहुँ चुप रहलहुँ।

—"ओ तँ तेहन समाज आ परिवारक लड़की अछि जे अपन अन्हरपनीमे ओकरा विषयमे किछुओ मनगढ़न्ती सोचल जा सकैए आ तकरापर विश्वास कयल जा सकैए। मुदा हम?"

"राजूदा, अहाँ सोचि सकैत छी जे हमरा विषयमे ई मोहल्लावाला लोक सभ—स्त्री-पुरुष—की सोचैए आ बजैए? से अछि बूझल। हम अपन आर्थिक कठिनतासँ लड़ि रहलि छी। थोड़ेक सुभीता आ दू टा नेनाक भविष्यक हेतु। एहि लड़ाइमे सभ सुख संसारकेँ अरपि देने छिऐक। पछिला चारि वर्षसँ स्त्री-स्वामीक सुख की होइत छैक हमरा नहि मन अछि। आ से एहन पैघ सुखकेँ त्यागि क' हमरा जेँ कि कोनो कार्यालयमे काज कर' जाय पड़ैए,

तेँ पड़ोस, लोकक ई अधिकार छैक जे ओ कोनो पुरुष सङ हमर प्रवाद जोड़य आ भरि दुपहरिया अदगोइ-बिदगोइ करय, से दैनिक रूपेँ। एक टा कठिन कार्य। जहाँ कि हम महल्लामे प्रवेश करैत छी कि कय टा स्त्रीगण ठोढ़ बिचकाओति-बिहुँसति'''। हम सभ टा बुझैत छिऐक। मनकेँ बुझा लैत छी, गमार स्त्रीगण सभ छैक। एकर वैह सीमा छैक। मुदा, कय टा पढ़ली-लिखलि स्त्री अछि, आश्चर्य जे ओहो सभ हमर जीवन ओहिने मानैए। हमरा तेँ तामसो क्रोध आ लज्जा होइए। हमरा तेँ बुझाइत अछि जे स्त्रीगण कहियो बुद्धिमती आ प्रगतिशील भैये नहि सकैए, कहियो नहि।'' ओ क्षुब्ध, चुप भेलेक। ''आ स्त्रीगणेकेँ की दोष देबैक ? पुरुष सभ ? अहाँकेँ विश्वास होयत जे हिनका अपने केहन केहन खराब आरोप सभ सुन' पड़ैत छनि, अपने सहयोगी-सहकर्मी कार्यालयक लोक सभसँ ? की-की ने व्यंग्य सभ—''जोरू की कमाई खाता है।'' की तँ, कहाँ। बजितो घृणा होइए। मुदा, की करबैक ? हमरा नहि लगैए जे एक टा पुरुषक लेल एहिसँ पैघ आक्रमण दोसर किछु होइत होयतैक। परंच, हुनको सह' पड़ैत छनि। कारण, मात्र बीए-धूलेक नहि दू टा पूरा परिवारक जीवन हमरे लोकनिपर निर्भर छैक। हम की करबैक ? की क' सकैत छिऐक ? आ क्रमशः ई तनाव आब हमरा दुनू गोटेक आपसी तनावमे बढ़ि गेलए। आब हमरा दुनू गोटेकेँ अपना-अपनी क' तनातनी होइत रहैए। प्रायः बकझक-मुँहा-ठुट्ठी। मुसा-फुल्ली। खेनाइ छोड़ब, चाह त्यागब। मुद्दैबिजली बन्द। से हप्ताक हप्ता। तकर असरि बच्चा सभपर पड़ैत छैक। हम की करबैक ? मायो-बाप एना रहतैक तँ एहि बालबोध सभक हृदय केहन तैयार होयतैक से सोचि सकैत छी। हम की करिऐक ? कय दिन बुझाक' कहुलियनिहेँ—'हमरालोकनिकेँ माय-बाप होयबाक कारणेँ कमसँ कम किछु सम्हरि क' व्यवहार करबाक चाही। नहि तँ ई नेना सभ बिगड़ि जायत। अपनालोकनि एकरा कोनो तरहक नहि बना सकब। नष्ट भ' जायत। मुदा, अपन तामस वा सन्देहमे के मानैए ? तखन वैह, नष्ट तँ भ' रहल अछि दुनू सन्तान। हम की करबैक ? कहाँ धरि करबैक ? तखन ई एक टा नबारी मनक विक जे एखनो मन ई नहि कबूल करैए जे नेना सभ 'आया' केँ माय बुझ' लागय। माय तँ हम थिकिऐक। हमरे कहब माय। ई अपनाकेँ माय मनबयबाक-कहबयबाक मनक मनोरथे सभ टा खरबा रहलए। ई से बुझैत नहि छथि। बड्ड मन भरि जाइत अछि तँ राति क' कनैत छी। फेर अपने चुप भ' जाइत छी। बस। उपाय ?'

—सात वेखानतर हरायल जलक धार—

सुस्मिताक बजैत चल जयबाक एहि प्रवाहसँ बुझायल—सत्ये, बहुत दिनसँ एकर ई सभ मनक भाव भीतरे-भीतर एकरा तंग करैत रहलैए। एकरा कोनो तेहन लोको ने भेटलैक अछि जकरा अपन दुख-दर्द ई कहि सकितैक। ओ लगातार बजैत चल जा रहलि अछि। हम चुप छी। हमरा, ओकर मनक ई हिस्सा बूझल नहि छल। विष्णुजीक स्नानघर-गायन चलिये रहल छनि। बच्चो सभ भरिसक सुतले छैक। समय आब नओसँ बेसिए भ' गेल होयतैक। हम एक रत्ती मने-मने हड़बड़यलहुँ। फेर मने-मन स्थिरो भ' गेलहुँ। बारह बजे छैक। कोन, एत' सँ अयबामे पन्द्रह मिनट ने बीस मिनट ग्राहकटसँ। हम स्थिर रही।

—''मुदा तोँ कहैत छेँ चारि वर्षसँ एहन जीवन छौक। हमरा कोना नहि बुझायल कहियो ? हमरो नहि बुझ' देलेँ तोँ ? एहि बातक हमरा बहुत विस्मय अछि अपितु बड़ क्षोभ ! अपन दुख-दर्द तोँ हमरो नहि कहलेँ।''

—'कोना कहितहुँ ? आ की होइत कहि क' ? बेसीसँ बेसी अहूँ हमर सहानुभूतिमे दुःखी होइतहुँ। मुदा, ताहिसँ तँ हमरा कोनो सुविधा नहि होइत। से चुप्पेचाप क' रखने नीक लागल। आइयो पता नहि कोना, अहाँकेँ एतेक रास ई सभ कहि गेलहुँ। मुदा आब सोचैत छी जे ई सभ

टा बात जाइ-ने-कालिह हम अहाँकेँ कहितहुँ । तेँ खास अन्तर नहि छैक, बादेमे कहि देलहुँ । मन तैयो बड़ हुलहुल लगैत अछि ।"

हम प्याली चाह ल' क' छौँड़ा अबलैक । हम प्रसन्न भ' गेलहुँ आ उत्साहित । हाथमे एकटा प्याली लेलहुँ तँ बुझायल जे मनेमन जेना एखन हमरा चाहक 'तलब' भ' रहल छल । ओ चुपचाप चाह पीब' लागलि । कोठलीक सभ किछु, पूरा वातावरण यथावत छलैक । हम अनेरे एक बेर चारू कात देखलिऐक ।

—"मुदा हमरा लगैत अछि, तोहर एहि सभ बातक जड़िमे कोनो एकटा आनो जबर्दस्त वेदना छौक । जरितक तोँ ओकरा नुका लेने छेँ । तोहर मनमे कोनो पैघ क्लेश छौक । तोँ कह' नहि चाहैत छेँ । कहि रहल छेँ ओहि कलेशाक बाहरी वातावरण ।" हम कहलिऐक । ओ जेना सशंकित आँखिये स्नान-घरक केबाड़ दिस देखलक । खुजल रहल छलैक । ओकर मुँह उदास भ' गेलैक । हम फेर ओकरा दिस तकलिऐक ।

—"राजूदा, एक टा बात पूछू ?" ओ हमरा तेना भ' क' पुछलक जेना ओहि प्रश्नक उत्तरसँ ओकर कोनो उपकार होइ, से उपकार निर्भर होइ हमरापर ।

—"पूछ ने । एहिमे एतेक संशंकित आ नम्र होयबाक कोन काज ?"

—"दुल्हा एतहि अछि कि एत'सँ चल गेलि ?"

—"से हमरा नहि बूझल अछि ।"

—"अहाँ ओकरासँ भेँट नहि करबैक की ?" हम ओकर एहि प्रश्नपर क्षण भरि चुप रहि गेलहुँ ।

—"एक बेर तकबैक तँ जा क' अवश्ये ।" हम कहलिऐक ।

—"कत' तकबैक ? एतेकटा शहरमे कोन-कोन ठाम तकबैक ? ओ अहाँकेँ अपन कोनो पता-ठेकाना नहि देलक एहि बीचमे ? ओ अहाँकेँ एको टा चिट्ठी नहि लिखलक ।"

—"तोरा कार्यालय नहि जयबाक छौक की ? अन्दाज कर तँ कतेक समय भ' गेल होयतैक ?"

—"कोनो बात नहि । नहि जयबैक आइ । छिनका हाथे दरखास्त पठबा देत छिऐक । यद्यपि एक बातपर दबल-दबल ठोका-ठोरी होयतैक । देखबैक अहाँ ।"

—"कखीदर ?"

—"एहीपर । हम काजपर किएक नहि जाइत छी आइ ? बड़ सन्देही भ' गेलथिन्हेँ आजमा ।" एहि बातकेँ ओ एकटा दबल क्षोभसँ बाजलि से हमरा बुझायल आ लागल जे ई अन्याय थिकनि विष्णुजीक, चाहे कोनो पतिक, पुरुषक ।

—"तेँ चल जो । मन नहि ने खराब छौक । भ' जयतहि । ओहुना तँ बैसले रहबेँ । पढ़नाइ-लिखनाइ सहजे कहैत छेँ जे बन्दे अछि कतेक दिनसँ । परंच, एक टा बात बुझि ले बुद्धिमता, तोहर अपन अंतक जे क्लेश छौक, अनका जगहार । हमरा धरि एहि बातक बड़ दुःख भेल जे तोँ एकदमसँ चुप छेँ—निष्क्रिय, सर्जनहीन । हमरा मनमे आइयो तोरा लेल ई अपेक्षा अछि आ विश्वास जे तोँ आगाँ एकटा-उचित पैघ लेखिका बनबेँ—खूब नव तरहक, एकटा फराक व्यक्तित्व, सभक चिन्हबा योग्य, मुदा सभक हेतु ईर्ष्या करबाक योग्य । तोँ कहियो बहुत रास, बहुत नीक लिखबेँ से आशा हमर छुटैत नहि ।"

—"से सभ खतम भ' गेलैक आब, राजूदा । मनमे उत्साहे नहि उठैत अछि । ने सक्रियते अबैत अछि । आदमीकेँ जखन सभ क्षण उपलब्धिहीनताक बोध होय' लगैत छैक तँ ओ कोनो महान् मूल्यक बातसँ जुड़िये ने सकैत अछि । तेहीसँ तेसी ओ जुटल दैनिक जीवनक रोटी आ घरक प्रबन्धक हेतु जरूरी संघर्षसँ । बस । हम तँ एम्हर खूब अनुभव कयलिऐक अछि जे, किछु नहि, हम क्रमशः खाली एकटा कार्यालयीय स्त्री भ' गेलि छी । हम आर कोनो रचना नहि क' सकैत छी । एत' धरि जे हम स्त्री छी, मुदा एकटा आर सन्तान नहि जन्मा सकैत छी ।" ओकर स्वर गंभीरतामे तुबलि गेलैक । हम हतप्रभ ओकर मुहेँ तकैत रहलिऐक । कने काल चुप्पी रहलैक ।

—"ई कोनो क्लेश नहि भेलैक । ठीक छौक, जतबे, तकरे उपयुक्त स्तर पर मनोनुकूल, मनोरथक अनुसार बना सकैत छेँ जे आगाँ संतानक कामना ? एतेक सीमित आमदनीमे एतेक-एतेक रास बच्चा……ई जखन राष्ट्रिय प्रश्न छैक तखन व्यक्ति………"

—"सभ पुरुषमे ई दकियानूसी पोंगापंथी रहैत छै । अहूँमे अछि, हम जनैत छी । हमरा अधलाह लगैत अछि । ई अपने अपरेशन किएक नहि करौ-लनि ? हमर ऑपरेशन किएक नहि करबौलनि ? अहाँ बुझि सकैत छी ई अपने ऑपरेशन किएक करौलनि ?" हमरा ई बड़ पैघ अपमान बुझायल । ई बात हमरा जीवन भरिक लेल अशान्ति आ चिन्तामे झोंकि देलक ।

"एहिमे की बात भेलैक ? संभव छैक, तोहर दुख-दर्द बचयबाक लेल —"

—"आह, कलेश बचयबाक लेल ने तें ! द्दू टा ज जनमल छैक से हमरा बुते कि हुनका बुते ? ई बात नहि छैक राजूदा । साफ बात तं ई छैक जे हमर ऑपरेशन भेलापर ओ निश्चिन्त कोना रहितथि ? अपन ऑपरेशन करा क' निश्चिन्त रहताह ।"

—"हमरा ईहो बात नहि बुझायल । तों एहि बातक एहन दृष्टिकोण किएक ल' रहलि छें ?"

"क्षमा करू राजूदा । अहाँ बुधंगे रहि गेलहुँ । हिनका संदेह बनले रहितनि जे यदि बच्चा होइत तें जे कोनो आने संयोगसँ हमरा बच्चा भेल अछि, ओ हुनकर नहि । अपने ऑपरेशनसँ निश्चिन्त रहताह जे परपुरुष लग जयबाक हमरा साहसे नहि होयत । आ एहि प्रकारेँ हमर सतीत्व अक्षुण्ण रहत हिनका भरोसे । हमर सम्पूर्ण आत्मा क्रोध आ घृणासँ धह-धह जरैत रहैए, राजूदा । प्राण जरैत रहैए । कखनो काल एहि बातपर मन तेहन कठोर भ' जाइए जे हम कखटा बड़ भारश संकल्प सभ कर' लगैत छी । हमरा अपना ऊपर अपने पतिक कयल गेल एहि अविश्वासक हेतु मनमे बड़ भयावह प्रतिशोधक भावना तंग करैत रहैए । बहुत । आ, आब तें हमरा बड़ साफ-साफ बुझाइत रहैए जे हम आइ धरि भुखायल भोजन सभ कोरक स्वादो नहि बुझने छिऐक । स्वादि-स्वादि क' खायब तें दूर, जे बिना स्वादियो क' खयने जे स्वाद भेटैत छैक, ताहूसँ हम अनभिज्ञे छी । हमरा मनमे आब एहि बातक बड़ लोभ होइत रहैए । मनमे जबर्दस्त प्रतिक्रिया चलैत रहैए । हमर मन जेना अपने चाहक कापसँ घेरायल धधकैत रहैए ।"

कहैत-कहैत सुस्मिता कने हकमि जकाँ गेलि रहए । साँस तें तीव्र भ' गेल रहैक । मुँह पर एक सर्वथा अनचिन्हार घृणा आ उत्साहक रेखा सभ देखार रहैक । हम देखिते रहलिऐक । फेर ओकरा लेल मनमे ममत्व भेल ।

एकटा असल बात ईहो छैक जे जखनेसँ सुस्मिता अपन ऑपरेशनवला प्रसंग उठौलक, तखनेसँ हमर मन आ शरीरक परिस्थिति ओ नहि रहि गेल छल जे पूर्वक चर्चाकालमे रहय—एकदम अनुत्तेजित आ उदास शान्तिसँ परिपूर्ण । हमर शरीर आब एहि चर्चाक प्रसंगे एकटा नव आशाप्रद तनावक अनुभव क' रहल छल । ओकर संग एहन बात एतेक खुलि क' हमरा कहियो

नहि होइत छल । परंच, आइ एतेक साफ-साफ ई चर्चा भेलैक तं हम बहुत यथार्थ भावसँ अपनामे ओकरा प्रति एकटा तेहन दुर्बलता अनुभव कयलहुँ जे हमरा यद्यपि बड़ अनैतिक लागल तैयो अत्यन्त प्रिय लागल, नीक बुझायल । भरल मनमे जेना जीवनक एकटा जिजीविषा उत्पन्न करयवाला उद्देश्य बुझायल सुस्मिताक, देहसँ ल' क' ओकर अपन सम्बन्धक सम्पूर्ण आधार, ई गसर्ग ! मुदा, अपनाकें एतेक प्रकारें उत्तेजित पाबियो क' मनक निन्दे करैत रहलहुँ जे छिः छिः, सुस्मिताकें ल' क' मनमे ई भाव सभ आनब केहन खराब आ निकृष्ट बात थिक ! आ हम अपन एतान औन्हुरसँ हुँटयबाक मनमे अपस्याँत भ' गेलहुँ । फेर कैक बेर सोचलिऐक—"कोना भेलैक ई बात ? मन एहन कोना बदलल ? किएक । एकर विषय ल' क' स्वप्नोमे हमरा एहन कोनो इच्छा-आकांक्षा नहि छल, तखन ई एहि क्षणमे आइ एना भ' क' मनमे लाभ किएक जगमि गेल अछि ?"

हमरा ओकरा प्रतिये एकटा जबर्दस्त मोह बुझाइ पड़ल । हम ओकरा देखलिऐक तँ ओ गुम्म रहलि ।

तावत विष्णुजी अपन शृंगार-प्रसाधन कयने, कोट-टाइ लगौने बड़ नाटकीय ढंगसँ प्रकट भेलाह हमरालोकनिक कोठलीमे । बड़ सभ्यता आ शिष्टाचारपूर्वक एकटा कुर्सीपर बैसलाह, तेहन सन कम जेना ओ अपन घरमे नहि, कतहु आन लोकक ड्राइंग रूममे शिष्टाचार निमाहि रहल होथि । हम मने मन सोचलहुँ — ई विष्णुजी बेचारे बेंहू छथि, ओहिना ! महान महत्त्वाकांक्षी आ भ्रमत-विलासक आभिजात्यक सामन्ती 'गुलाम' युवा । भीतर किछु नहि, बाहर खूब स्मार्ट, सुदर्शन आ नापि जोखि क' सभ व्यवहार कयनिहार । सभ्य प्रस्तुत अति सभ्य । अजयबोकाल ठोढ़ कोंचियबाक तेहन विन्यास जे देखिक' सहजें लागय जे बेचारेकें वचनोमे तारतम्य छनि जे बाजब उचित होयत कि नहि । ततेक सभ्य ! हमरा हँसी लागि गेल ।

—"की भेल राजूदा ? अहाँ बड़ एकाएक हँसलहुँ ?" विष्णुजी अपन शैलीमे पुछलनि ।

—"किछु नहि । ओहिना । अहाँ अपन पूरा व्यक्तित्वसँ ओहिना छी । कनियों नहि बदललहुँ ।" हुनका हमर ई बात प्रशंसा जकाँ लगलनि । ओ पुनः बड़ सभ्य कंजूसीसँ बिहुँसलाह । किंचित हँसी हमरो लागि गेल । सुस्मिता ओहिना दिस मुँह कयने बैसलि रहय अनुपस्थित भावसँ । हमरा ओकर ई अनुपस्थिति अप्रिय लागल । तावत विष्णुजी टोकलथिन ।

—"दफ्तर नहि जयबैक ? एखन धरि एहिना बैसलि छी अहाँ ?"

—"नहि, जयबाक इच्छा होइए आइ। एक टा दरखास्त लेने जाउ, द' देबैक कार्यालयमे।" बाजलि।

—"इच्छा नहि होइत अछि, ई तँ कोनो कारण नहि भेलैक दफ्तर छोड़बाक। जखने नोकरी भेलैक, तखने इच्छाक तँ प्रश्ने नहि। आ, अनेरे छुट्टी नष्ट करबाक कोन अर्थ राजूदा ?" विष्णुजी हमरा संबोधित क' देलनि। हमरा बूध-माथ दुनू बौतर। हम चुपेचाप तैयो सुस्मिताकेँ देखैत पुछलिऐक—'शरीर अस्वस्थ छौक की ? ओ ने, थोड़ेक कालमे कहिक' चल अबिहेँ। तखने छुट्टी बेरबाद कयला...'"

—"अहाँ कोना जनैत छिऐक जे छुट्टी नष्ट करब भेलैक ई ?" ओकर स्वर दबल उत्तेजनासँ भारी छलैक। हमर कहबाकेँ, 'छुट्टी बेरबाद' नहि कहलक ओ, विष्णुजीक संवादक प्रतिक्रिया कयने छलि, तेँ प्रायः छुट्टी 'नष्ट' करब बाजलि। हमरा ओकर एहि मुखमुद्रापर फेर ओहिना होइ भेल, जेना होइत रहल अछि। हमरा ई बात बूझल अछि जे कार्यालय नहि जयबाक ओकर कोनो कारण नहि छैक। तैयो ई बात हम मानैत छी जे यदि अनेरो नहियेँ जयबाक इच्छा छैक, तँ नहि जयबाक चाही। आ, विष्णुजीकेँ एहि बातपर कोनो प्रश्न वा उपदेश नहि छाड़िक' ओकर आवेदनकेँ दफ्तरमे द' अयबाक चाहियनि। से नहि कयने दुनू गोटेक बीचमे एकटा अनावश्यक विवाद ठाढ़ होइतनि, जे बेकार। दुनू गोटे फेर तनबामे एक दोसराक प्रति। अनेरे पारिवारिक वातावरण कटु होयतनि। बेकारे।

हमर आग्रहपर विष्णुजी किछु हमरा पक्षे होइत बजलाह—"राजूदा, सैह हमरो विचार। हिनकर स्वभावे आइ-काल्हि सैह भ' गेलनि अछि। जैह टा कहबनि ताहीमे आपत्ति क' देतीह, तकरे विरोध कर' लगतीह। अपना मनमे जैह रहतनि, ई सैह करतीह। एना तँ नहि चलैत छैक। आब तँ नेना नहि छथि। आदमी कोनो बात-व्यवहार करय ओकर अपन परिस्थिति, वातावरण, इज्जति, व्यक्तित्व आ सामाजिक प्रतिष्ठाकेँ ध्यानमे राखिकय करबाक चाही। जीवन तखने नीक जकाँ चलैत छैक। ओना तँ लोक........"

—"एहिमे इज्जति, सामाजिक प्रतिष्ठा वा व्यक्तित्व कतयसँ घुसिया गेलैक, हमर एक दिन नोकरीपर नहि जयबामे ?" सुस्मिता एकाएक किछु जोरसँ बाजलि। हम चौंकि क' देखलिऐक। एहि मामूलिये दाम्पत्य-कलहमे अपन उपस्थिति हमरा कोनादन लागल। हम हड़बड़ाइत जकाँ उठलहुँ—

"अरे, हमरो आब तैयार भ' जयबाक चाही।" आ धड़फड़ाइते बिदा भेलहुँ स्नान-घर दिस। ताहि काल क्षणमे ओ दुनू गोटे तामसे अपना-अपनी क' चुप रहथि। हम स्नान-घरमे पैसि गेलाक बादो कोनादन अनुभव करैत रहलहुँ। यदि नहि मन छैक कार्यालय जयबाक तँ एहिमे विष्णुजीक ई जिद्दे करब अन्याय थिकनि। मुदा, बुझायल जे ई बात हम सुस्मिताक पक्ष ल' क' सोचि गेलिऐक। ओकरे किएक नहि सोचबाक चाही जे एक दिनक छुट्टी बेकार कयलासँ कोन लाभ ? मुदा विष्णुजीक पक्षसँ ई बात सोचियो क' हमरा स्वीकार नहि भ' सकल।

किछु-किछु स्वर हुनकालोकनिक हमरा धरि अस्पष्ट जकाँ आबि रहल छल। प्रयत्नक बादो दुनू गोटेक स्वरक उत्तेजना कम नहि रहलनि, से लागल। हमरा बुझायल जे एहि वातावरणसँ अपनाकेँ अनुपस्थित रखबाक लेल भरिसक बड़ी काल धरि हमरा स्नाने-घरमे बन्द रह' पड़त। देखी। प्रतीक्षा करी हिनकालोकनिक एहि क्षण युद्ध-विरामक।

हम जखन स्नानघरसँ बहार भेलहुँ तँ सुस्मिता एकटा पुरना धर्मयुग उनटा रहलि छलि। विष्णुजीक सोझामे उजरा बड़का तश्तरीमे चारिटा परोठा आ बाटीमे तरकारी राखल छलनि। ओ खा रहल छलाह। हमर उपस्थितिसँ किछु शिष्टाचार प्रदर्शनमे बजलाह—"राजूदा, क्षमा करब। हमरा किछु हड़बड़ी छल तेँ हम अहाँक संग नहि द' सकलहुँ। भोजनक काल। ई छथिये। रहतीह।"

—"कोनो बात नहि। हम तँ एत' अपनाकेँ कोनो तरहेँ पाहुन नहि बुझैत छी। तखन अहाँलोकनि यदि हमरा पाहुने जकाँ बनाब' चाही तँ विचार' पड़त।" हम कहलियनि। हमर स्वरक व्यंग्य हुनका ओतेक नहि, सुस्मिताकेँ लगलैक। ओकर ध्यान पत्रिकापरसँ हटिक' पहिने अपना पतिक कपारपर गेलैक, फेर हमर आँखिपर। ओ आँखि गाड़ि देलक। हम अपना दिस ताक' लगलहुँ। अपनामे हमरा लागल जे महाकाल हम बड़ विचित्र, कुरूप आ असह्य छी। जल्दी-जल्दी चारि बेर केश फेरि क' एकटा कुर्सीपर आबि बैसि रहलहुँ। सुस्मिता उठलि आ भरिसक भनसा घरमे चलि गेलि। ओतयसँ आवाज आयल—"अहाँक खयनाइ लागत राजूदा, कि चाह पीयब ?"

—"नहि भेल छौक खयनाइ तँ कोनो हर्ज नहि। आधा घंटा समय अछि हमरा। चाहोक कोनो से आवश्यकता नहि एखन।" हमरा बजबाक किछु उत्तर नहि आयल। संभव छैक ओकरा किछु सुभीता बुझायल होइ।

विष्णुजी जलपाने क' क' जा रहल छथि। संभव छैक, कि तेँ दुपहरियामे 'लंच'क समय घुरिक' अथवा लेल औताह् वा साँझेमे। हमरा, गेलाक बाद घुरबाक समय निश्चित नहि अछि। यद्यपि किएक निश्चित नहि से पता नहि चलल। कारण, एखनो धरि कोनो लोक, मित्र वा परिवारसँ भेँट कर' जयबाक कोनो आग्रह् नहि अछि मनमे। तथापि, ई व्यस्तता किएक, से हम स्वयं नहि जनैत छिऐक। हम गुम्मे रहैत छी। विष्णुजी चभर-चभर खयने जा रहल छथि। निहुँरिक' खाइत रहबाक कारणेँ, टाइकेँ उनटा क' कन्हापर ध' लेने छथि, जेरे तरकारी-झाड़ीमे ने डूब देब' लगनि, तेँ। प्रायः आब खयनाइ समाप्त क' चुकल छथि। टेबुलकेँ एक रत्ती घुसका क' गिलास लेनहि उठैत छथि। कनेक मुनाइयो क' कनेक दाबियो क' एखन धरि आँत वेसिन नहि लागि सकबाक खेद प्रकट करैत छथि। हमरा मने मन हँसी लगैत अछि। ओ अछनाक मोड़ी दिस जा क' हाथ-मुँह् धोइत छथि।

हमरा आगाँ फेर एक प्याली चाह् आनि क' ध' जाइत अछि छौंड़ा। भाफ उठिते रहल छैक। हम एक घोँट पीबैत छी। पत्नि पड़ि जाइत अछि। सुस्मिता अपने बनौलक अछि। ई बात दू स्तरपर भीक लागल। फेर अपनाकेँ दण्डित कयलहुँ मने-मन। सभ बात केँ बड़ भावुकतासँ लेब' लगैत छी, नीक-अधलाह दुनू बातकेँ। तेँ होइत अछि की, तँ नीक बात सेहो अतिरंजित भ' क' नीक बुझाय लगैत अछि ओ अधलाह बात सेहो अनेक अधलाह रहैत छैक ताहिसँ कय गुना अधलाह बुझाय लगैत अछि। ई कमजोरी हमर दिन-दिन बढ़ले जाइत अछि। तावतमे अबैत अछि सुस्मिता, चेह् पुरना अन्दाजमे प्यालीमे चम्मच टुनटुनबैत। अपना चाहक चीनी मिलबैत। ओकर एहू व्यवहारमे हमरा मनोवैज्ञानिक कुण्ठाक आभास लगैत अछि। एहि अवसरपर ओकरासँ परिचयक अवधिमे कय बेर मनमे प्रश्न उठल होयत। कारण जे ओकर यैह् अभ्यास छैक। सभ चाह् एकट्ठा नहि बनाओल जा सकैत। अपन चाह् एहिना बादमे आनत, से चम्मच चलबैत चीनी मिलबैत। हमरा आश्चर्यो होइत अछि जे हम कोन आधारपर सुस्मिताक एहि व्यवहारकेँ ओकर कोनो अप्रकट यौन कुंठासँ जोड़ि रहल छिऐक? एहि विषयपर हम चाहैत छी ओकरासँ गप्प कर'। मुदा, करैत नहि छी। संभव छैक अप्रिय लागि जाइक। स्त्रीगणक ठेकान नहि। तहूमे जे सम्बन्ध भावनाक आदान-प्रदानसँ बनाओल हो से तँ बड़ संवेदनशील होइत छैक। पारिवारिक सम्बन्ध तँ चकुचा-चकुचा होइत रहत, तैयो कोनो ठाम टिकल रहत। परंच एहूमे तँ नहि। एक टा मित्रताक विकसित बोध होइछ

ई सम्बन्ध। एहिमे आपसी स्वीकृति-अस्वीकृतिक सीमा-रेखा सभ बड़ साफ-साफ रहैत छैक। धोखासँ ओकरा टपि गेने सम्बन्धमे कतहुसँ टूटि जा सकैत छैक। हम किछु चिन्तित भ' गेलहुँ।

—"राजूदा क्षमा करब। हमर समय भ' गेल। हम चलैत छी।" विष्णुजीक सूचना—"हूँ।" हम चाह् पीबैत रहलहुँ। हमरा सुस्मिताक छुट्टीक विषय मन पड़ल जे, एकरा आवेदन पठयबाक छैक। मुदा, ओकरे निश्चिन्त देखिक' भेल जे संभव छैक फेर छुट्टी नहियेँ लेबाक विचार भ' गेल होइ।

—"आय कते जयबाक छौक तोरा?" हम पुछलिऐक।

—"हमरा नहि जयबाक अछि आइ। दरखास्तो नहि पठयलैक। संसदिएँ सुपत होयब।"

—"बड़ घोर छौक मन। पहिने चाह् समाप्त क' ले।" हम हल्लुक कर' चाहलिऐक। ओ स्वाभाविके गतियेँ चाहक चुस्की लेब' लागलि। चाहो पीबैत काल ओ बड़ सुन्नरि लगैत अछि, से अनुभव आइ, एहेन तीव्रतासँ हमरा पहिले-पहिल भेल। हम ओकरा देखैत रहलिऐक। ओ आवश्यकतासँ बेसी गम्भीर रहय। गम्भीर की, तमतायलि रहय। तेँ हमरो किछु पुछबा-आछबामे तारतम्य भ' गेल।

—"अहूँकेँ सत्ये अछि एखन समय कि हमरापर कृपा क' क' सुभीता देलहुँ अछि?" सुस्मिता अकस्मात् पुछलकै।

—"सत्ये, अछि समय। कथि कोन अछि? आ कृपा तोरापर हम करबौक की? खाक्। कृपा तँ तोँ करबेँ हमरापर। तोँ तँ एखन हमर आश्रयदाता छँ सुस्मिता।" ई बात हम बड़ मधुर हास्यमे कहलिऐक तथापि भीजल दामी सितल जकाँ ओकर आँखि नोरा गेलैक। से हमरा बुझबामे आबि गेल। बड़ ग्लानि भ' आयल। अपन स्पष्टीकरणमे हम किछु कहि नहि सकैत छलिऐक। तेँ चाहे पीबैत रहलहुँ। सोचैत रहलहुँ जे प्रसंगवश कखनो बुझा देबैक अपन कहबाक अर्थ।

ओ चुपचाप मूड़ी निहुरौने छथि।

—"एहि बीचमे तोँ बड़ दुब्बरि भ' गेलेँहेँ।" हम कहलिऐक। ओ खूब खिलखिलाक' हँसय लागलि। हमरा अर्थे ने लागल। एक मिनट धरि बेड़ू लगातार हँसलाक बाद चुप भेलि। ओकर यैह् स्वभाव छैक हँसबाक। हम प्रतीक्षा कयलहुँ जे कारण कहत हँसबाक। परंच चुप।

बीच-बीचमे फेर एक लहरि हँसि लेथय। आब हम हतप्रभ जकाँ होब' लगलहुँ।

—"तों एना हँसलें किएक सुस्मिता ?"

—"अहाँक कपड़ा-लत्ता ठीक-ठीक अछि कि नहि ? एही बगय-बानिमे काल्हि भ' जयबैक विशेषज्ञलोकनिक समक्ष ?" हमर पूरा बगय बानिकें ओ हास्य-दृष्टिसँ देखलक।

—"हमर प्रश्नकें टारि देलें। एखन बगय-बानि नहि, हँसबाक कारण कह।" हम कनेक गम्भीर भ' गेलहुँ।

—"अहाँ पूरि क' कय बेर धरि आबि जायब राजूदा ? निश्चिन्त रहू।" मन हुमर अस्हायल रहत ओना। कहि देने रहब तँ मुक्त रहत।" ओ बाजलि।

—"एखन निश्चित कोना कहियौक ? ओम्हरसँ खगेन्द्रकें सेहो भेंट कर' जयबैक। घूमैत-घामैत रातियो भ' सकैत अछि। से किएक ?"

—"कहलहुँ तँ मुदा, छोड़ू। अहाँ अपने सुभीतासँ घूमू।" ओ किञ्चित् दुखी भेलि, से बुझायल।

—"साँझमे कोनो कार्यक्रम छौक तोरालोकनिक ?"

—"कोन कार्यक्रम ? ओ ओम्हरेसँ अपन कोनो मित्रक काजे एक टा एम० एल० ए०सँ भेंट कर' जयताह। हम नेना-भुटकाक कें-कों-कें-कों आ कपड़ा-लत्तीसँ माथ दर्द बेसाहब। फेर राति होयतैक। धोया-पूता सूतत। अपने पड़ि रहब एक कातमे।—फेर बेसी राति भ' जयतैक। ओ अपन उठौनाह अखबार आ धार्मिक आस्थासँ पढ़' लगताह। हम पहिने सुतबाक यत्न करब। फेर एहि यत्नमे बड़ी कालक बाद सफल होयब। तखन भोर भ' जयतैक। भोरसँ कार्यालयक तैयारी। स्त्रीगणकें तँ दुन्ना संझटि। एक टा दाहिये टा नें नहि बनब' पड़ैत छैक, कार्यालयी स्त्रीकें आर काज सभ तँ पुरुखो महोदयक ओकरे कपारपर। नहि करू तँ ताहू लेल नित्य महाभारते।"

—"एतेक महाभारत होइत छैक सुस्मिता ? तखन तँ बड़ सौभाग्यशाली छी, बियाहित नहि छी।"

—"से सत्ये। सम्भव हो तँ निबाहि लिय' एहिना। बेकार थिक ई जंजाल। निष्प्रयोजन। जे फँसि गेल छथि, तनिका तँ छुटकारा नहि छनि, मुदा जे फँसबाक मोहमे छथि तिनका बुझा देबाक चाही। अनुभवीलोकनिक ई कर्त्तव्य छियनि।"

—"एकर माने तों एक टा विकास-क्रममे गतिरोध आन' चाहैत छें ?"

—"ओह, हमरा बुतें एकरे सम्भव भ' सकैत ई महान अनिवार्य आन्दोलन !"

—"आह, अपने तँ अनुभव क' लेलें अछि। सबटा सुखक ने, तखन अनकर भविष्य अन्हार करबामे किएक ने मन लगतौक।" हम व्यंग्य कयलिऐक।

—"यदि अहाँकें अपन भविष्यक सम्बन्धमे कोनो प्रकारक आशा हो तँ मनसँ बहार क' दी, सैह सुभितगर होयत राजूदा। अहाँसँ कोनो कन्या बियाह नहि कर' चाहत। तखन बैह गर्दनिमे पैसो बान्हि क' तँ लोक धारमे कुदिये जाइत अछि। अहाँसँ जकर बियाह होयतैक से एक तरहें धारेमे कूदत सेहो पैसा बान्हि क'।"

—"से तँ एखन ने सुस्मिता, जखन हम बेकार छी। बेकारी सभ दिन थोड़े रहत ? नोकरी होयत। हमहुँ अपन कनियाँकें खूब सुखसँ रखबैक। बहुत रास बनारसी नूआ कीनि क' आनि देबैक। गहना देबैक। सिनेमा देखा अनबैक। एक दिन हमहुँ एना शरणार्थी भ' क' थोड़े बौआयल फिरब...."

—"अहाँ हँसीपरसँ एकाएक आत्मपक्षपर किएक उतरि गेलहुँ, राजूदा ? अहूँ हमरा सैह बुझैत छी ? अहाँ हमरा ओत' शरणार्थी छी ? हम अहाँक अयोग्यता, अहाँक गरीबीकें कहियो नहि मानलहुँ। आइयो नहि मानैत छी। आत्मा गवाही दैत होयत अहाँक। जे अछि अहाँक अयोग्यता, से अहाँक व्यावहारिक ज्ञानक दिशासँ लापरवाही आ लोकाचारसँ अनभिज्ञता थिक, से आइयो अछि। आ लगैत अछि जे नाम जाक' आर बढ़िये गेल अछि एहि 'योग्यता'मे। अहाँ एहि बेरोजगारीक परिस्थितिपर अपनाकें छोड़ि रहल छी राजूदा !"

—"हम लोक नहि छी सुस्मिता ? हमरा मनमे कोनो आकांक्षाक अपेक्षा नहि अछि ? ई संसार, एकर नीक अधलाह घटना, समाज आ ओकर पाबनि-तिहार एना लेल नहि अछि ? हमर सम्बन्ध-बोधक संसारपर प्रतिबन्ध नहि अछि ? हमरा एहि सभसँ कनेको प्रभावित नहि होयबाक चाही ?"

—"चाही। मुदा अहाँक यैह तँ मूल्य नहि अछि, एखनो ?"

—"मूल्य-तूल्य किछु नहि सुस्मिता। आइ मानि ले, हम व्यक्तिगत

जीवनकें निट्ठाहे छोड़ियो दी, विवाह नहि करी, नहि जानि गृहस्थीक सुख, तैयो चलि सकैत अछि। मुदा माँक की होयतैक ? ओहि माँक जे दिन-राति उकासी करैत रहैत अछि आ हमर सभ अपन कहियो दस टाका पठा दैत छथिन, कहियो पचटकही, आ, तनाक ताहि चिररोगिणी बुढ़ियाकें एखनो हमर कोनो नोकरी लगबाक आशा छैक। हमरो विवाह करा क' हमरा दुआर नहि रह' देबाक जे स्वप्न छैक तकरा हम की करबैक ? हमरा लेल ई स्वप्न ओकरा मरहु नहि ने दैत छैक।"

हमरा बुझायल जेना हम किछु उत्तेजित भ' गेलहुँ। किछु नियन्त्रित भेलहुँ। कहलिऐक—"सत्य पूछ तँ कखनो-कखनो मनमे होइत अछि जे माँ मरियो जाय सेहो ठीक। ओकरो प्राण भेटि जयतैक अपन बनमारा दम्मा खोंखी आ हमरा गृहस्थ बना देबाक अन्तिम मनोरथसँ, आ हमरो मुक्ति भेटि जाय टूटल चार, खायल कोठो आ सोहर लागल असोरासँ। हम तकरा बाद मुक्त भ' क' संसारमे कतहु तँ जा सकितहुँ निर्द्वन्द्व भ' क' मोहमुक्त। कतहु। एखन तँ बन्हायल रहैत छी माँसँ। ओ बेचारी हमर एहि विवशताकें बुझिते ने अछि। ओ हमर जननी थिक ने! तेँ। आ सत्य पूछ तँ भायलोकनिकें सेहो हम दोष नहि द' पबैत छियनि। हुनकालोकनिकें अपन-अपन परिवार छनि, जिम्मेदारी छनि। कतेक करथिन, आ की ? हमरा तँ ईहो चिन्ता भ' जाइत अछि जे विवाह कयने हमरो सँ बैह सभ ओहिना। तखन फेर एकर की होयतैक ? हमहूँ काल्हि जा क' स्वयंकें भाइये सभ जकाँ लचार नहि मान' लागब ? आ अपन ओ मानल लचारी हुनके सभ जकाँ उचित आ स्वाभाविक नहि लाग' लागत ? तखन एहि बुढ़ियाक की होयतैक ? हम तँ अपन एहि बुढ़िया माँसँ बान्हल छी। ई बन्धन कखनो क' अपन सम्पूर्ण जीवनक एक मात्र कारण लगैत अछि। कखनो होइत अछि, सभसँ पैघ मोह, जे हमरा किछु ने कर' देलक। आब तँ हम माँक शान्तिपूर्ण मृत्युक कामना करैत छिऐक। कारण, बचाइ तँ क' नहि सकैत छिऐक। मृत्यु-कामनामे तँ किछु पाइ-कौड़ी नहि लगैत अछि। सुभीतगर बैह लगैत अछि।"

हम एकाएक चुप भ' गेलहुँ। तकरा सुस्मिता अनुभव कयलक। ओ बहुत गम्भीर भ' गेलि रहय। हम ओकर गम्भीरतासँ प्रभावित भ' गेलहुँ। अफसोस भेल। ई कतेक रास अपन दुःख-गाथा की कह' लगलिऐक एकरा ? नहि कहने की बनैत नहि ?

—"तथापि हमरा लगैत अछि राजूदा, जे एहनो परिस्थितिमे अहाँक इला अहाँकें जीवनक एकटा तेहन आधार देने रहैत जे अपन संघर्षक कठिनता कम बुझाइत। ओहो बँटैत। ओ अहाँकें नैतिक बल दैत। ओ जे अहाँकें प्रेम करैत अछि।'

—"सैह तँ लगैत अछि सुस्मिता। हमरा आब कखनो क' बुझाइत अछि, जे हमरालोकनि आपसी सम्बन्धमे वस्तुतः जीबि नहि रहल छी—पोज करैत छी। प्रेम, मित्रता, ममता, एहि सभ भावक पोज करैत छी। जेना ककरो केयो प्रेम, दोस्ती, ममता किछु नहि करैत छैक। ई सभ एकटा समय-सापेक्ष नाटक थिकैक। नहि तँ, एतेक-एतेक दिन बिना ओकरा देखने कोना रहल भ' गेल हमरा सुतेँ ? एक दिन भेँट नहि होअय तँ बुझाय जेना तारीख नइ बितलैक अछि—दिन अटकि गेल छैक। आ, आब एतेक-एतेक दिन बीति जाइत अछि। कोना ? जीबिते छी। मोनो ने खराब भेल। तखन की मानी ?"

—"ई तँ एकपक्षीय भेल। आ, हमरा जनैत किछु बेशिये भावुकतापूर्ण। क्षमा करब।"

—"ओकर बल' धरि बात छैक, ओ जानय। हमरा अपन एहि दुर्दिन, एकसरुआ जीवनमे एकांत भेलापर मनमे ई अवश्ये होइत रहैत अछि, जे ओकरा नहि बेसी किछु, मात्र कहियो क' एकोटा चिट्ठी अवश्य लिखैत रहबाक चाही। मात्र चिट्ठी। अपनाकें एकदमसँ कटायलि आ एकसरि तँ नहि अनुभव करय। ई अनुभव हमरा जीवनकें बचाक' राखि ल' सकैत अछि। नहि तँ आस्ते-आस्ते अनुरक्ति-विहीन सेहो क' द' सकैत अछि, रुक्ष, जीवनहीन! तथापि आत्मा गवाही अछि, हम ओकरा एहू बातक दोष नहि देलिऐक कहियो। एकोरत्ती नहि। सभ दिन बैह मानैत रहलहुँ जे होयतैक ओकरा सङ कोनो उब्बल लाचारी। नहि तँ पाँच मील दूर कॉलेजसँ रिक्शाक पाइ नहियों रहलापर, पयरे हमरा देख' चल अबैत छलि—मात्र एहि चिन्तापर जे काल्हि हम नहि भेँट कयलिऐक, कतहु मन तँ नहि खराब अछि हमर ? से एतेक-एतेक दिन धरि हमरा शरीर-मनक कुशल द' बिना बुझने कोना जीबित रहैत ? टिकट कटा क' हमरा तकैत हमरा गाम नहि चल अबैत—चारिमे दिन...? जरूर कोनो पैघ विवशता होयतैक ओकरा।"

—"राजूदा"। ओ एतबे बाजिक' चुप्प जकाँ भ' गेलि अपन उपस्थितिमे। हम किछु नहि कहलिऐक। खिड़की दिस मुँह क' लेलहुँ। बिजलीक तारपर टुनू लोल चौड़िक' एकटा पहाड़ी मैना चिचिया रहल रहय। □

अन्हार सँ विद्रोह

ई जे गपशप भेल ताहिसँ हमरा मानसिक अशिथे भ' गेल, यद्यपि ई गपशप स्वाभाविक रहैक। आ, एकरा कोनो प्रकारेँ रोकल नहि जा सकैत छलैक। तेँ सभ अनिवार्य जकाँ होइत गेलैक। परंच, हम अपनामे एक टा नव प्रकारक चिन्ताक अनुभव कर' लगलहुँ। ओना ई चिन्ता कोनो सामयिक क्रिया सुक्तिताक सन्दर्भमे लौकिकताक अभाव, दुनियाँदारी नहि बूझि क' चलबाक नासमझाही छल। मुदा, से हमर स्वभावमे रूढ़ भ' गेल अछि। हम ओहिसँ छूटि कहाँ पबैत छी। चुपचाप रहैत छी। मनेमन हरदम तेहन-तेहन व्यवहार सोचैत आ करैत रहैत छी जकर ठेकान नहि। से व्यवहार हमरा बुते कयल नहि होयत। कयल भरिसकें ककरो बुते होयतैक। परंच, हम धनाधन करैत रहैत छी, मनमे प्रसन्न होइत रहैत छी जे ई कयलहुँ ओ कयलहुँ। आ समाजक लोक सभ, गौआँ सभ क्षुब्ध, वेदनायल जकाँ माथ-कपार हाँहि रहल अछि हमर कृत्य सभपर। हमरा खूब र'स आबि रहल अछि गामक लोक सभक एहि चंचल परिस्थितिपर। फेर ताहू बीच किछुने-किछु उकट्ठ क' दैत छिऐक। लोक फेर खौंझा-खौंझा क' हमरापर पंचैती बैसब' चाहैत अछि, हमरापर दंड लगब' चाहैत अछि आ बहुत रास धर्मवाक जरिमाना कायम कर' चाहैत अछि जाहिमे हम भरि नहि सकिऐक आ हमर अपराध बनले रहय। हम ताहूपर हँसैत छिऐक तँ ओ सभ हमरा बताह जकाँ बूझ' लगैत अछि। ई बात हमरा मनमे जखनेँ अबैत अछि जे ओ गौआँ सभ आब हमरा बताह बूझि क' हमर कृत्यपर ध्याने नहि दैत अछि तखन दुःख होइत अछि आ फेरोसँ किछु सोच' लगैत छी, जाहिसँ कि लोक बताह बूझि क' हमरा अनठाबय नहि। कारण, तखन किछुओ कयलाक र'से की ? जखन लोक स्वस्थ मनक लोक नहि बूझि बताह जकाँ बूझि क्षमा कर' लागय तखन तँ बड़-बड़ किछुओ कयलाक र'से कोन ? फेर मन कोनो नव उत्पात करबाक योजना-कल्पनामे लागि जाइत अछि। से सभ ठा मनेमन। तेहन सुभितगर प्रयोगशाला आर कतहु भेटत कत' ? जाहिमे कोनो अभूतपूर्व घटना, प्रयोग आ चमत्कार कयल जा सकय ?

मनक प्रयोगशालामे संगीतसँ ल' क' पशु मनोविज्ञान धरिक सफल प्रयोग

चलायाबो सम्भव छैक। विश्व-भूगोलक सभ रेखा एकरा छूबिक' बनैत छैक आ मनुष्य-मस्तिष्कक सभ टा माला, 'पड़ाव' आ उपलब्धि एहि मनक प्रयोगशालामे निःशब्द घटित भ' जाइत छैक। जेना हमरा पयरपर संसारक समस्त धड़का धनिकधाक—कत' धनक-अमेरिका-फ्रांसक—कि कत' धनक-लधार सभ टा सम्पत्ति वैभव—हमरा पयरपर खसल अछि। आ हमरा कोनो संवेदना नहि भ' रहल अछि। जेना मोटनगर जुत्ता पहिरने रही आ बस टा मानिक चिनगी पयरतर लगमे छिड़ियायल रहय तँ की बुझायत ? फेर, एक टा विश्व-सुन्दरी अछि से हमरा तेना भ' क' समर्पण करबा लेल व्याकुल अछि जेना कोना अर्जुनकेँ उर्वशी। हमरा मनमे एक क्षणक लेल मोह होइत अछि। कारण, स्त्री-देह थिकैक, कोनो मामूली बात नहि। सेहो एक टा अनिन्द्य अलौकिक सुन्दरीक। एकर सभ टा गुण प्राकृतिक छैक, स्नो-पाउडर आ आधुनिक शृंगार-प्रसाधनक विज्ञान नहि। तैयो हम स्थिर रहैत छी।

नहि, हम, एक टा आदिवासी गुम्मा छौंड़ीकेँ स्नेह करैत छिऐक। से हमर प्राण थिक। ओ हमरा, संसारमे जीबाक लेल ठाढ़ रखने अछि; ओ हमरा आ मात्र हमरे टा स्नेह करैत अछि। ओ हमर अप्पन थिक। हम ओकरे स्नेह करैत छिऐक—अपन ओही गुम्मा आदिवासी छौंड़ीकेँ। ओहि छौंड़ीक पाछाँ आत्मगौरव आ स्नेहक आकर्षण एहि उर्वशीक कोनो अंगमे नहि छैक। एक टा निष्प्राण सौन्दर्यक ई पुतरा हमर अपेक्षित नहि अछि। तेँ अपन बाटपर चल आबी चुपचाप।

एक टा तेहन स्वर्ग बनाओल गेल अछि हमरा चारू दिस जे पयर धरिते लोक बिसरि जाय सभ तरहेँ। अपना की ? दीन-दुनियाँ, अनुभवक सभ संसार मनसँ बिला जाय, तेहन। हमरा ओहिमे आग्रह आ आदरसँ राखल जाइत अछि। चारू भागक वातावरण किछु तेहन छैक जे प्राय घुरमि-घुरमि क' आनन्दे रखैत अछि। मुदा, बत' धरि ओ स्वर्ग छैक तकर रकबा बड़ संकीर्ण-छोट लगैत अछि। ओना ओहि क्षेत्रमे तँ बेस इजोत—रंग-बिरंगक प्रकाश, पानि आ फल फलहरी, भोजन-प्रकार, महल-अटारी आ चन्द्रमा-तारा कि फूल-पात, मधु-पराग सभ छैक। मन मानि जाय तेहन मादक सभ किछु। लोकक आँखि अलसायल होइत फेर, जबर्दस्ती खोलल जाइत पिपनी सभक तरसँ ललौन आँखिक डिम्हा, ठोर पर-थर आ सभक स्वय मुँहपर मेहायल युवावस्थाक रंगीन छाहरि ! ठोढ़ बुदबुदाइत मुदा एको टा शब्द साफ नहि, अस्पष्ट। के की कहि रहल अछि, के की सुनि रहल अछि, से सभ टा अज्ञात।

आ जेना कहलहुँ—स्वर्गक सीमा धरि तँ बड़ रुचिगर, सभ किछु बड़ गौरवशाली, मुदा ओहि स्वर्गक बेड़ जतहि खतम होइत छैक कि एक टा अत्यन्त विस्तृत, प्रत्युत अनन्त दूर धरि पसरल अन्हार। से तुच्छे अन्हार नहि। ओहि अन्हारमे हरदम आसमर्द होइत रहैछ। लोकक आसमर्दसँ वातावरण दलमलित रहैत अछि। कतहु-कतहु बरनीक दोनो डिबिया जकाँ टिमटिमाइत रहत, सैह। बाँकी खाली हल्ला-गुल्ला, झगड़ा-दन। टूटल-बहल घर सभ। सुन्न असोरा आ गुदैपट्टी आङन सभ। गिजायल-पजायल चूल्हि आ बाटपर फेकल छाउरक ढेरी सभ। भूकैत कुकूर आ रोगाह पहरुआ कोतवाल सभ। ताहि सभमे प्रमुख आर्तस्वर—नेनाक।

एकै टा नेनाक अनवरत कानब। से सभ हल्ला-गुल्लासँ ऊपर ध्यान खींचि लेबऽवाला। ओकर कनबामे भूख-पियास आ सुरक्षाक जबर्दस्त माङ छैक ···।

से हमर स्वर्ग हमरे लग अन्हार भ' जाइत अछि। हम एक गोटेकेँ पुछैत छियनि जे—'अयँ औ, एहि स्वर्गक रकबाक बाद ओहिना अन्हार आ दुःखक समुद्र किएक छैक?

—"स्वर्गक नियति आ संसारक नियतिमे ई भिन्नता सर्वदासँ छैक। एहिना। स्वर्ग आ संसारक गौरव एहिना सुरक्षित छैक, एही भिन्नतामे।' ओ बजलाह।

—'ई सभ टा इजोत जे एत' बासते बेसी छैक आ बेकार खर्च भ' रहल छैक, तकरा जहाँ धरि सम्भव हो, ओहि पसरल अन्हारमे नहि पसारल जा सकैत अछि? अथवा, एहि सभ साधनकेँ, जे एतबी टा संकीर्ण स्थानमे बहुतायत फिरैत अछि, कोनो व्यवस्था नहि छैक तकर?' हम पुछलियनि।

ओ व्यक्ति कहुना क' आँखि फाड़ि क' देखलनि। आ यद्यपि ओ पी क' धुत्त रहथि तैयो बड़ अनसोहाँत जकाँ हमरा बेसैत, हमरा आँखिक आगाँ अपना तर्जनीसँ हवाकेँ तीन बेर कटलनि—कथमपि नहि··कथमपि नहि कथ ओ अपन शरीर स्थिर कर' लगलाह।

—"किएक? एतेक कम स्थान, लोक आ अपलाह जीवनक अनावश्यक सुव्यवस्थामे एतेक रास साधन, धकित धनक फैलौअलि किएक? एकरा सभकेँ आर उपयोगी नहि बनाओल जा सकैत अछि? आर दूर धरि नहि बाँटल जा सकैत अछि? नहि बाँटल जयबाक चाही?' हम कनेक तीख भ' क' पुछलियनि। हुनक मुअंगर मोँछसँ टप-टप मद्य चूबि रहल छलनि। हमहूँ पीने रही। मुदा, हमरा एकर आत्मगौरव रहय जे हम मदिरा पीबियो क' हुनकालोकनि जकाँ आन्हर नहि भागि रहल छी। आ ने हम अनटोटल किछु क' रहल छी।' हम किछु जोरसँ बजलिऐक।

—"अहाँ नहि बुझबैक। एकर चौहद्दीकेँ जखने बढ़ब' चाहबैक, स्वाभाविक छैक जे तखने ई सभ टा सुख बँटाय लागत। लोक लुझ' लागत। तेँ ने ई एतेक ऊँच आ मजगूत देबाल। कियो तोड़ियो ने सकय। कहियो नहि। देबालक ओहि पारसँ अन्हरिया एम्हर पैसल कि सर्वनाश! आ अहाँकेँ की बुझाइत अछि जे हमरालोकनिक ई प्रकाश यदि खोलि क' बहाइयो देल जाय तैयो ओतेक दूर धरि चतरल गहीँर अन्हार समाप्त भ' सकतैक? कथमपि नहि।" आ बड़ निर्णायक ढंगसँ लटपटाइत बजलाह। से एतबा कथा संसारक घड़ीसँ लगभग पन्द्रह मिनटमे, तोड़ि-तोड़ि क'।

—"एक बेर क' क' तँ देखितीक। अनेमन सोचने रही जे एतनी इजोतसँ ओतेक अन्हार दूर भ' सकत, आ सैह मानि क' चलल रही, तखन तँ सभे नहि होयतैक। मुदा, ई बात बड़ घृणित थिक—अमानुषिक। ई देबाल तोड़, ताहिसँ एतेक ऐश्वर्य, वैभव, आनन्द जहाँ धरि सम्भव भ' सकय, ओ विस्तृत संसारमे धार जकाँ बहि जाइ। लोककेँ एको चुरुक क' तँ भेटौक।'

—"अहाँ बड़ उद्दण्ड आ मूर्ख लोक छी औ! अहाँ भागू एत'सँ। एत' रहबा योग्य अहाँ पार्थे नहि छी। अहाँ महा कुपात्र छी। पड़ाउ एत'सँ।" ओ मोछैल महोदय बड़ी जोरसँ चिचिअयलाह। परंच, सभ तँ ओंघड़ायल रहय, जेना गाम भरिक पँरिपर माल-जाल सभ। हमरा घृणासँ नाक फाट' लागल। मनमे क्रोध फनफनाय लागल। अपन हाथक पीबऽवाला सोनक पात्र हम खूब जोरसँ फेकलिऐक। से बड़ लगेमे उगल चन्द्रमाकेँ लगलनि। ओत'सँ पात्र घूरि क' नीचाँ दिस खसल आ झन द' फर्शपर बजरल। हम देखलिऐक जे जाहिपर पात्र खसि क' बजरल छलैक, सैह थिकैक नहि देखा सकबा योग्य मोटगर देबाल। आ जतबा दूर लागल रहैक ओ स्वर्ण-पात्र ततबा दूर धरि देबाल जर्जर भ' गेल रहैक, से देखबा योग्य। हम हर्षित भ' गेलहुँ। ठीक छैक। जल्दी-जल्दी उठलहुँ हम।

—"ई रकबा बढ़ब' पड़त। ई देबाल, जे धारक पानिकेँ बान्हि क' रखने अछि, तकर फाटक खोल' पड़त। ई रकबा बढ़ब' पड़त। एहि ऐश्वर्यक

इजोतकेँ बाँट' पड़त, से कहि दैत छी। एक टा कोठली मात्र स्वर्गकेँ धाम बूझि क' एतेक ऐश्वर्यमय बना क' रखने छी, से बात नहि। चारू कातसँ घर निमुन्न कयने छी। कारण तँ अहाँकेँ दस पुरखासँ बूझल अछि। अहाँकेँ बूझल अछि जे जहाँ कि दरवज्जा आ कि एको टा खिड़कियो खोललहुँ कि मनुष्यक दुःख-कातर स्वर कानमे पड़त, से स्वर अहाँक 'रस' मे 'भंग' करत : तेँ साधन-सम्पन्न चारू भागसँ निमुन्न कयने मौज करैत छी। स्वच्छ नहि बह' देत छिऐक। देवाल नहि तोड़ैत छी। बेस।" हम चिकरि-चिकरि क' ओ कोषमेँ सुना क' कहलियनि सभकेँ। आ विदा भ' गेलहुँ। हम आब अपनाकेँ चेतन बूझि रहल छलहुँ—बुझनुक।

किछुए डेगपर हमरे फेकल चाल हमरा पयरमे ठेकि गेल। से हमरा अनुभव भेल। निहुरि क' ओकरा उठौलहुँ तँ ओ दू टा बुझायल। जिज्ञासा भेल। उठौलहुँ दुनू। एक टा बेस हल्लुक छेनी आ दोसर बड़का भारी हथौड़ा। हमरा अर्थ नहि लागल। छोड़ि क' हम बढ़' लगलहुँ। हमर माथ देवालसँ लागि गेल। झन्न द' उठल। एक छन माथ ध' क' बैसि रहलहुँ ठामे। फेर किछु सुझाइ पड़ल। घुमलहुँ आ ताकि क' ओहि छेनी-हथौड़ाकेँ उठौलहुँ। फेर देवाल लग अयलहुँ। बिना कोनो तारतम्ये छेनी राखि क' देलिऐक एक टा समधानल हथौड़ा। झनाक द' उठलैक। ओहि भरिगर झनझनाहटिसँ ओ सभ लोक सटल पिपनी आ लसफस छोड़ ओहिबाला लोक सभ कठमरा गेल, जेना सभक कानमे केओ सुइ भोंकि देने होइ। फेर सभ निर्भेद भ' गेल। हम दोसर, फेर तेसर, चारिम, पाँचम''अनघा-अनघा क' छेनीक माथपर हथौड़ा बजारैत रहलहुँ, बड़ी काल धरि''''।

पाछाँ हमर मन हार' जकाँ लागल। एहन मजगूत भयावह लोहाक देवाल हमरा बुते एकसर तोड़ल होयत? कोनो जन्ममे? हम माथ ध' क' बैसि गेलहुँ। हकमैत-हकमैत हमर छाती फूलि गेल रहय। बाँहि ऐंठि गेल छल।

हम नहि कहब जे हमर भ्रम छल वा विश्वास, मुदा हमरा बुझायल, जाहि सोझे हम देवाल काटि रहल छी, ठीक तकरे ओहि पार कोनो नेना बेहिसाब कानि रहल अछि अनाथ जकाँ। बड़ करुणासँ कानि रहल अछि। हमर मन आर हार' लागल। तकर किछुए छनक बाद कोनो स्त्रीक मातृत्वसँ भरल स्वर सुनबामे आयल। हम जेना जागि क' उठलहुँ। आवाज चीन्ह'

लगलिऐक। अरे राम, ई तँ हमर बैह आदिवासी छौँड़ी थिक। हमरे'''ईहो ओहि अन्हारमे बन्द अछि। हमर मन व्याकुल कोयलेँ औनाय लागल। बस्तु, ओहि अनाथ नेनाकेँ ओ कोरामे ल' लेलथीक अछि आ चुम्मा-चुमाक' चुप क' देलकैक अछि। हमर हाथमे फेर अनायासे धरा जाइत अछि छेनी-हथौड़ा आ हम तड़ातोड़ चोट कर' लगैत छी देवालपर। हम सोचैत छी—बड़ जरूरी छैक एकर ढाहब। यावत नहि तोड़ब तावत ओहि पार ओहेन घनगर अन्हारमे सगोमे ठाढ़ लोक नहि बूझत। हम अपन आदिवासी छौँड़ीकेँ चीन्हि सकबैक? ओ अपने एहन कारी अछि। ओहि अन्हरियामे कोना चिन्हायत? ओकर आत्मामे प्रकाश छैक से हमरा बूझल अछि। मुदा, से स्पर्शक माध्यमसँ मनमे पैसैत छैक से यावत चिन्हबैक नहि, तावत अनुभव कोना क' सकबैक?

हमर हाथ गहीँर आ सम्पूर्ण तागतिसँ हथौड़ा बजार' लागल, बिना रुकने। लगातार। झनाहटिक आवाजसँ सौंसे वातावरण साकांक्ष भ' गेलैक—जागि गेलैक। खाली पहरुआ सेहिए सभ निन्न गबैत, अपन-अपन अस्त्र-शस्त्र पजियौने निन्नमे चूर।

हम भरि राति देवाल कटैत रहलहुँ। राति खतम होयबाक नामे नहि लैक। केहेन बड़ अबूह सन लागय लागल। भेल जे नहि पार लागत जीवनमे ई एहन मोट-ऊँच लोहाक देवाल काटब। हमरा बुते नहि पार कयल होयत एकहरसँ ओकरा। हम माथ ध' क' बैसि गेलहुँ। एतेक कालसँ चोट क' रहल छी आ एको धंस ने टूटल ई लोहा। तखन एकर सम्पूर्ण टुटबाक तँ कल्पनो व्यर्थ थिक। देहक पोर-पोर ठेहिया गेल रहय आ तेहन बेकाबू लागय जे होअय ओतहि पड़ि रही। सुभीता ई बुझाय ओहू झमकीमे जे बाम-धर बकाँ एत' सुतबासँ पूर्व बंधपोछासँ गर्दा-गर्दा झाड़बाक प्रयोजन नहि। हम जत' हथौड़ा चला रहल छलहुँ ओतहु हमरा पयर तरमे भरि ठेहुन गहींपर मखमली तोषक ओछाओल। हम एक चोट करबामे जतबा तागति लगबैत, छलिऐक ततबे हमर पयर ओहि तोषकमे धँसि जाइत छल। हमरा आलस आबि गेल। अवश्ये ई आलस एक टा निराशाक आलस छल। बुझायल जे एहि तोषकपर सुतबामे पाँच सेकेण्ड पर्याप्त छैक आ अचेष्ट भ' जायब। हम पड़ि रहलहुँ। तावते बुझायल जेना कोनो भूखसँ व्याकुल नेना कान' लागल। ओकर कानब बड़ मार्मिक छलैक। पृष्ठभूमिमे किछु-किछु 'आवाजो' भ' रहल छलैक। से बन्द भ' गेलैक। एक टा स्त्री-स्वर साफ साफ सुनाइ

पड़ल जे ओहि नेनाकेँ बुझा रहलि छलैक—"चुप रहू। चुप भ' जाउ सुगा हमर। 'भोर होब' दही तोरा माथ लग द' अबयौक दूध पिया देयौक।" ओ नेना भूखे व्याकुल रहैक। से तोड़ै ने लैक कनबासँ। पाछाँ बड़ी कालक बाद बुझायल जे ओ कनैत-कनैत फेर सुति रहलैक। आ कि कोरामे लेने ओ स्त्री ओकरा बुझब' लगलैक, से नहि जानि। हम ओहि स्वरकेँ चीन्ह' चाहैत रही। हमर आलस बहुत कम भ' गेल छल। एहि चिन्हार जकाँ स्वरक भ्रममे हम किछु सक्रिय भ' गेल रही। हमरा बुझायल जेना किछु आवाज उठि रहल छैक, किछु मेटा रहल छैक। ई आवाज एक क्रमसँ लगातार भ' रहल छैक, किछुए-किछुए कालपर भरिसक सेकेण्ड-सेकेण्ड पर। हमर ध्यान एहि बातपर लागि गेल जे ई कथिक स्वर थिकैक? हम अकान' लगलहुँ। बड़ी काल धरि।

एकाएक जेना हमर भक टूटय। एक बेरक आवाजक संगहि हमरा ज्ञान भ' गेल जे ई आवाज थिकैक छेनी आ हथौड़ाक। हम आश्चर्य आ चिन्तामे पड़ि क' ठाढ़ भ' गेलहुँ। ई दोसर के थिक? मात्र कुड़ियबैत-कुड़ियबैत मन पड़ल ई तँ स्वरो छलैक आदिवासिये छौंड़ीक। आ बच्चा? बच्चा के? जे हो। हमरा मनमे अकासे-बसात भरि गेल जे प्रतिकूल धार पकड़ुक नावक पाल जकाँ हमरा सेबीसँ दहुँइत बिदा भ' गेल। एहि बेर हम आर तागति आ शीघ्रतासँ हथौड़ा बजार' लगलहुँ, लगातार। पछिला बेर तँ कय बेर छेनीपरसँ हथौड़ा उछड़ियो जाय। एहि बेर सभ टा आघात नापल-तौलल छेनीक कपारपर। ओकरासँ जे पदार्थ टूटि रहल छलैक से हमरा पयर लग ढेर भ' रहल छल। हमरा अनुभव भेल आ बड़ हर्ष भेल। हम आब बेर बेर ई सोचैत जाइत रही जे भरिसक ओहू एक टा बाट छैक जाहिसँ एतेक रास बन्हायल ऐश्वर्य आ प्रकाशकेँ मुक्त कयल जा सकैत अछि आ ओहि आदिवासी छौंड़ीकेँ देखि सकैत छी, एहि देबाल केँ तोड़लेपर। हमरा मनमे खूब उत्साह भरि गेल आ थकनी ठेहीँ सभ टा जेना घाम-पसेना संगे शरीरसँ बहरा गेल। सभ आघातक बाद किछु आर स्फूर्तिक अनुभव कर' लगलहुँ। आब वातावरणमे दुन्हू ओरसँ सामाहुटिक स्वर बड़ी-बड़ी काल धरि गूँजि रहल छलैक। ई स्वर हमरा बल भरैत छल। हमरा बुझा रहल छल जेना आइयो ठीक वैह घटना होयतैक जेना भाग्यमे बाढ़ि अयलापर भेल रहैक। आन क काते काते मँसि पानी पीटल रहै बड़ी दूर धरि। माँओ सभ कोठारियो चारियो छो तँ देखकैक ओहि ऊँचका मचगुम्हा आहुपर। कतेक

पानी ओहि द' क' टपलैक। जखन ओतेक रास अमकल पानिकेँ एक रत्ती दरर भेटलैक कि बान्हकेँ तोड़ैत-फोड़ैत पानि हू-हू' बह' लगलैक। आ बान्ह करीब-करीब दुइयो लग्गासँ बेसी कटा गेलैक। आब पानि सौंसे पसरि गेलैक। ई बन्हायल सुख आ ऐश्वर्य सेहो अनमन ओहि पानिये जकाँ ओहिना पसरि जयतैक देबालक ओहि पार। एक रत्ती दरर एकरा भेटौक ने। ठेलि-ठालि क' ढाहैत-ढूहैत ई सभ टा पसरि जयतैक चारू कात। अपन देबाल कायम रखने रहयु ई लोकनि।

ठन्न् न्-न्-न्-न्। ई आवाज बड़ साफ आ आतंककारी छलैक। बड़ जबर्दस्त चोट कयल गेल रहैक। हमरा बुझायल जे एहि आवाजक डरसँ फेंक टा बेहोश लोकक आँखि खुजि गेल होयतैक आ फेर अनेरे मुना गेल होयतैक। हम कने चिन्तितो भ' गेलहुँ जे ई सभ यदि जागि गेल तँ रोकि लेत। बन्द क' देत। कारण जे हम मात्र जतेक उचित आ जरूरी बात क' रहल होइ, सेहो लोकक लाभक लेल क्रिया क' रहल होइ, मुदा ई सभ तँ एकरा उलटिये बुझत। आ हमरा ओहि पारसँ कयल गेल एहि चोटपर कने क्रोध भेल—एना हड़बड़ा क' सभ टा कयल-धयल चौपट्ट ने करय। मुदा तुरन्ते सभ टा सामान्य भ' गेलैक। हमहुँ बनायल चोट कर' लगलिऐक आ ओहू पारसँ होब' लगलैक। एहि दु-तरफा चोटसँ ऊपर हमरा बुझायल जेना कियो मेंही-मेंही हकमि रहल हो! हमरा आश्चर्य भेल। कारण, हमरा बूझल छल, एना हकमैत अछि हमर वैह आदिवासी छौंड़ी। हम आरो जल्दी-जल्दी आघात करैत गेलहुँ आ हमर पयर लगक टूटल वस्तुक ढेरी आर पैघ भ' गेल छल। हमर बाँहि आ जाँघक मांसपेशीमे कैक टा जीवैत माछ हेलैत बुझाय। हमरा बड़ सन्तोष भेल। आब हमरा पक्का विश्वास भ' रहल छल जे जे घड़ी ने गामवाला घटना भेल छैक—से घड़ी ने। एहि मुँर द' क' सभ टा इजोत एकके बेर ओम्हर रेड़तै आ एकके घंटामे एहि देबालकेँ ढाहि क' बहा देतैक। ई बेहोश लोक सभ मुइल माछ जकाँ सुतले-सुतल बहि जयतैक ओहि दिस। पतो ने चलतैक—मुइल माछ जकाँ।

एतेक रास लोक मुइल माछ जकाँ बहाय लगतैक से सोचि क' हमरा खूब जोरसँ हँसी लागि गेल। हमरा हाथक हथौड़ा बेसी जोरसँ बजर' लागल। हम आब एहि कल्पनामे व्यस्त रही जे ओ समय कखन अबैत अछि जखन कि ई सभ विलासी निष्क्रिय लोक सभ मुइल माछ जकाँ अनन्त जलक धारमे बहि-दहि जाय। एक-एक टा माछसँ हम ठाढ़ भ'

क' भेंट वार्ता (इन्टरव्यू) करितैक—"कहू, अपन जीवनक महान अनुभव" हमरा बड़े आनन्द आबि रहल छल। आनन्दक एहि लहरिमे हमर हाथ बिजलीक गतियें काज क' रहल छल आ पहिने जे ठेहुन भरिक मखमली गड्ढा हमरा असन्तुलित बनबैत छल—चोट देबामे बाधा पहुँचबैत छल, से आब हमरा पयरक लगातार ओजन आ आघातसँ धीरे-धीरे फाटि गेल छलैक आ हमर दुनू पयर माटिमे गड़ि गेल छलैक। तरबाक माध्यमे माटिक—विशुद्ध माटिक स्पर्श आ गन्ध सभने हमरा साँसे शरीरमे पैसल आ से हमरा अनुभव भेल कि हम पूर्णतः लोक भ' गेलहुँ। लगातार आघात करबामे लागल लोक।

आब हमरा विचित्र बात ई लागि रहल छल जे एहि छेनी-हथौड़ाक बीचमे किछु चूड़ी खनखनयबाक स्वर सेहो सुनि पड़ि रहल छल। ई चूड़ीक खनखनी हमर अत्यन्त चिन्हार अछि। भले, एखन हमरा भूरि क' बजौलासँ नहि बाजि रहल हो, हथौड़ाक आघात कयलाक क्रममे बाजि रहल हो। से हमरा बड़ शुभ लागल। मन औनाय लागल जे कखन एक टा छोटो-छीन भूर भ' जाय एहि देबालमे। ओहि पार अछि अन्हारमे ठाढ़ि हमर धो। हम एक छन लेल किछु दुःखी भेलहुँ। परंच ई दुःख अटकल नहि। लगातार हथौड़ा बजारिते रहलिऐक। हमरा अपन बाँहि आ गरदनिमे ततेक टटका ओज भरल रहय जेना हम ओहुन कठोर देबालपर पहिल वा दोसर चोट क' रहल होइ। आब एक बेरमे दू टा छेनी आ दू टा हथौड़ाक स्वर ध्वनि-प्रतिध्वनित जकाँ गूँजि रहल छलैक। एक क्रम आ आघातक प्रायः एकके ओजनक सङ। आब हमर ताकति, अपन विश्वास आ ताहि विश्वासक एकमात्र सङीक अभिन्न विश्वासक बल भ' गेल छल। हम आब अपन सफलताकें अग्रतासँ देख' चाहैत छी। रेसक ओहि सवार जकाँ जे रेसक अन्तिम क्षणमे जान-जीसँ अपनाकें बढ़ा देब' लेल उताहुल भ' जाइत अछि।

एके बेर बुझायल, देबालक बीचो-बीच एक लोटाक मुँह भरि भूर देने प्रकाश जेना भू-भू क' भुभुआय लगलैक ओहि पार दिस। हमरा आश्चर्यक ठेकाना नहि रहल। ई प्रकाश एक टा मनुष्यक मुँहपर भुभुआ रहल छलैक। सैह मुँह ! सैह कान, आँखि, नाक ठाकार ! हमर आदिवासी धौंडीक आकृति ताक छल। ओकर करिलीन मुँहपर बूलि पड़ैत अछि, घामक बुन्न सभ मोति जकाँ झलकि रहल छलैक आ गरदनिपरक टघार सभ चानीक तार जकाँ झलमल क' रहल छलैक। हम हर्षें अपनाकें व्याकुल अनुभव कर' लगलहुँ। एक रत्ती हम ओकरा छूबि क' अनुभव क' लेब' चाहैत रही। मुदा, विवशता ई छल जे हम ओतेक छोट भूर देने ओम्हर टपि क' जा नहि सकैत छलहुँ। तखन हाथ बढ़ा क' छूबाक प्रयासमे दू टा अनुभव भेल। पहिल तँ इजोत सभ टा छेका गेलैक भूर मुना गेलासँ आ दोसर हमर हाथ मरिसक देबालक चौड़ाइयो भोटाइ पार नहि क' सकल होयत। अतिशय मोट मजगूत आ ऊँच बनाओल गेल छैक ई देबाल। तामसे मन घोर भ' गेल। इजोत छेका गेने ओहि पार ओकरा अँदेशा भ' गेलैक। हम झटसँ हाथ घीचि लेलहुँ। अपन व्यक्ति-स्वार्थपरतापर पश्चात्ताप कर' लगलहुँ। तखन ओम्हरसँ ओ बड़ ताक कहलक—'देबालकें आर तोड़ू। बहुत दूर धरि। एखन एम्हर बड़ कम प्रकाश अबैत छैक। एतबी कयने किछु लाभ नहि। ई देबाल कमसँ कम जाबत धरि बूढ़यो लागा नहि ढाहि देबैक ताबत व्यर्थ।" ओ छेनीपर फेर हथौड़ा बजार' लागलि। बड़ मेही चूड़ी खनखना जाइ। हम एक छन तँ खिन्न आ निराश भ' क' छेनी-हथौड़ा धयलहुँ फेर आगाँ आघात-पर आघात कर' लगलहुँ समधानि-समधानि क'। किछु तामस आ किछु जकरति मानि क'। फेर इजोरिया-अन्हरिया बीच ठन्‌.....ठन्‌क ऊँच स्वर गूँज' लगलैक।

—"आखिर एना अपना दुनू गोटे कहिया धरि ई देवाल ढाहैत रहब से कहू तँ ?" हम किछु उदास भ' हकमैत पुछलिऐक। एतबेमे हमर साँस कैक ठाम टूटल।

—"जाबत धरि ई ढहि ने जाय।" ओ हकमैत मुदा निर्णायक स्वरमे बाजलि।

हम आ ओ फेर आघात कर' लगलहुँ।

—"हमरा नहि भरोस होइत अछि, एहि जीवनमे ई देवाल तोड़ल होयत अपना दुनू गोटे बुते ?" हमर चोट आब हताशल तँ अब्बल पड़ि रहल छलैक। ई बात हम अपने अनुभव क' रहल छलहुँ।

—"अपने दुनू गोटे किएक ? अनेक लोक तोड़ि रहल छैक। हमरा-लोकनि दुइये गोटे नहि छी। अहाँकें हथौड़ा-छेनी सभक आवाज नहि सुनि पड़ि रहल अछि ?" ओकर कहबासँ बुझायल जेना ओ आश्चर्यमे पड़लि हो।

—"एक-एक बेरमे कय-कय लय आदमी चोट कय रहल छैक।" ओकर एहि सूचनापर हमरा एक छन विश्वासे ने भेल। ई खबरि हमरा लेखें तेहन जरूरी आ वजनगर छल जे भरोसे ने भेल हमरा—ई बात सत्य थीक।

—"तोँ चीन्हैत छहीक कें सभ छैक ? एको गोटेकें ?" हम व्यग्रता आ सन्देहसँ पुछलिऐक। हमरा भेल—ई छौँड़ी फुसिये हमरा भरोस तँ ने दैत अछि ?

—"एहन अन्हार गुज्जमे ककरो आकृति चीन्हब सम्भव नहि छैक; खाली शरीरक गति आ हथसँ बुझाइत अछि जे कते-कते दूरधर कतेक हाथ एक बेरमे उठैत छैक आ देबालपर बजरैत छैक। एहि पार तँ एहन भयावह आवाजसँ कान फाटि रहल छैक लोकक। एहि घन अन्हरियामे वातावरण आर भयाओन बुझाइ छैक। अहाँकेँ ओहि पारमे किछु ने सुनाइत अछि ?" ओ जेना चिन्ताक भावेँ पुछलक आ बड़ी जोरसँ साँस छोड़लक।

हमरा सत्य हो वा भ्रम मुदा बुझाय लग्ये लागल—बड़ मद्धिम परंच एके सङ्ग अनगनित ठन्न्' 'होयबाक स्वर। उत्साहेँ हम फूलि गेलहुँ। करीब-करीब चिचियाइते कहलिऐक—"सुनाइत अछि। आब साफ सुनाइत अछि। भोर धरि पूरा देवाल ढहि जयतैक—पूरा। तखन सावधान रहिहें—एकदम सावधान ! ई देवाल ढहलहु सँ कत टा लोककें लेने-देने पड़ि रहतैक। एकको टा लोक नहि मरय तखन ने। ककरो खोँचो ने लाग' पबैक से देखिहें।"

एक टा बड़ मासलपूर्ण आ मीठ खिलखिलाहटि हमरा दिस वातावरणमे आबि क' पसरि गेल। गूँज' लागल। हमरा एके संगे हर्षो भेल आ संकोचो। ओ आदिवासी छौँड़ी हमर मनक भावपर हँसलि छलि। ओ हमर मन बुझि गेलि रहय जे 'ककरो खोँचो ने लगैक' कहबाक लाथे हम खास क' 'ओकरे' चिन्ता करने रहिऐक। से हमर कमजोरी ओ बुझि गेलि रहय तेँ हँसलि। हम चुप्पे हथौड़ा पटक' लगलहुँ।

—"एतेक विशाल देवाल ढहतै आ जे लोक एकरा ढाहत तकरामेसँ कियो दबि क' नहि मरतैक से छैक सम्भव ? ई देवाल तँ ढाहले आ सबैत छैक ओही लोकक प्राणक मूल्यपर। बिना से कयने तँ ढहतैक नहि। आ नहि ढहतैक तँ सभ टा सुख-प्रकाश एहिना एकके टा कोठली सन बन्न बसौक किछुए परिवारक लोकमे बन्दी भेल निमुन्न रहतैक। ओही सुख-प्रकाशकेँ स्वतंत्र करबामे लोककेँ देबालसँ भीड़' पड़ैत छैक।"

ओ लगातार हकमि रहलि छलि—अपस्याँत। तैयो ओकर हाथ कखनो चैन नहि छलैक। हमरा ओकर एहि गम्भीर स्वर आ बात कहबाक ध्वनिपर एक छन घबड़ाहटि भेल। तकरा हम बहुत बल लगाक' मनमे दबौलहुँ

आ अपना भरि पूरा ताकतिसँ माथसँ बहुत ऊँच धरि हाथ पीठ दिस उठा क' खूब दमसि क' आघात कर' लगलहुँ—ठन्नाक् । तकरा लगले बुझायल जेना असंख्य हथौड़ा आ छेनीक टकरसँ उठल ध्वनिक दुआरे सौंसे पृथ्वी दलमलित भ' गेलैक अछि। ई ध्वनि लगातार भैए रहल छैक।

बान्हकेँ काटि क' जेना हहायल-फुफुआयल पानिक धार आगाँ दिस पसरि जाइ छैक तहिना एक टा तेहन वातावरण भ' गेलैक जे आइ धरि सौंसे पृथ्वीपर कहियो नहि भेल छलैक। माटिपर पानिक बदलामे प्रकाश आ सुख पसरि रहल छैक। आ तकरा सभ लोक अपन-अपन आवश्यकताक मोताबिक छूबि सकैत अछि—ल' सकैत आ ओकर उपभोग क' सकैत अछि। जहाँ धरि आँखि जाइत अछि तहाँ धरि यैह सभ। कतहु कोनो आरि-धूर नहि। बड़ी दूरधर क्षितिज। से क्षितिज सेहो नवे अनचिन्हार !

आदमीकेँ पहिले पहिल ई परिस्थिति भेटलैक आ ओ सुखसँ; अविश्वाससँ अचेत भ' गेल। फेर बड़ी कालक बाद होश अयलैक। ओकर सिरमामे आदिवासी छौँड़ी। भरि जन्मक थाकलि-ठेहिआयलि। मुदा, अत्यन्त प्रसन्न भेलि बैसलि रहैक। ओकर केश सोहरा रहलि छलैक। आ पूछि रहलि छलैक—"की बना दिय' खेनाइ ?"

—"की बना देबें ? जेना जेँ कहियौक भात, तँ भात बना देबें तेहने सन तोहर कथ।" ओकर एहि प्रस्ताव आ सन्देहपर वैह ओहने प्राणपूर्ण हँसी ओ हँसलि।

—"हँ। कालिह धरि अनूप छल तेँ ने ई कथा बजैत छी ! आइ खायक कोनो वस्तु अलभ्य आ अनूप नहि अछि। कोनो, ककरो आश्रममे नहि छैक अलभ्य खयबाक कोनो वस्तु !" ओ कहलकैक। ओकर स्वर उत्साह आ आत्मविश्वाससँ थरथरा रहल छलैक। ओ मूड़ी उठाक' ओकरा दिस तकलक आ ओकर आँचमे मूड़ी घोँसिया क' बड़ी जोरसँ साँस छोड़लक।

—"आइ किछु नहि खायब। भरि जन्म खायक जेल सहैत रहलहुँ। आइ खेनाइ भेटि गेल। खयबाक हड़बड़ी कथीक ? आइ तोहर कोरामे एहिना निफिकिर सूतब। बड़ थाकल छी। एहिना तोरा कोरामे सूतल रहब। आब तोरा लेल लड़ब। कने सुस्ताय दे।" ओ ओकर कोरामे आँखि मूनि लेलक। वो ओहिना मातृत्वपूर्ण हँसी हँसलैक आ कपारपर हाथ ध' देलकैक।

कोना तँ, हम ओ लोक भ' गेल रही।

ई मनक प्रयोगशाला थिक हुनर। हरदम किछु-ने-किछु अन्वेषणक कड़ाही चढ़ले रहैत छैक। किन्तु असम्भव आ अनिश्चितकेँ औंटि-औंटि क' बिना सम्भव आ निश्चित बनौने ई मन रहैत नहि अछि। भरिसक तैँ मन बताहो भ' जाइत छैक। मुदा, से चिन्ता होइतो मनक प्रयोगशाला एकटा एहन औषध तैयार क' लैत अछि जे संसारमे लोक बताहे ने होअय। से कोना? बताह होयबाक सभ मूल कारणकेँ उखाड़ि क' फेंकि देबहुँ। तखन कारणेँ नहि रहत तँ बताह होयत किएक लोक? सुस्मिता हमरा तीन बेर टोकि चुकलि अछि—"राजूदा, अहाँक मस्तिष्क कतहु अनतहि रहैत अछि। यद्यपि करबाक काल अहाँक आकृतिक हाव-भावसँ बुझाइत अछि जे अहाँ एतऽ उपस्थित नहि छी। किछु आन सोचि रहल छी वा आन ठाम बौआय रहल छी।" हम पकड़ा गेलहुँ जेना। चुप।

—"सम्भव छैक। कौखन क' अपनो संदेह होइत अछि। कोनो बातसँ मन जहाँ कि कनेको प्रभावित भेल, कि ओतहिसँ फेर ओ आने दिसामे बढ़ल चल जाइत अछि। ओहिसँ मिलैत-जुलैत कोनो बीतल प्रसंग वा सुनल खिस्सा वा सोचल बातमे गथायल रहैत छैक से बड़ी काल धरि बड़ी दूर धरि। जखन चेतैत छी आ फेर सोझाक यथार्थ पर घूरैत छी तँ मन-शरीर थाकल ठेहिआयल बुझा पड़ैत अछि। जनमन ओहिना जेना सगरे कोसो पैदले चलि क' आयल हो।"

—"ई बात बुझलिऐक नहि। अहाँकेँ की लगैत अछि?"

—"किछु नहि। मन हरदम एकटा एहन काम धयने रहैत अछि जे ओहिमे घात-प्रतिघातक सिलसिला बनले रहैत छैक। हमर अंतःसंसार बनल रहैत अछि युद्धक भयावह मैदान। हम स्वयं बहादुरीसँ लड़ितो छी आ करुणासँ आर्त्तनाद सेहो करैत रहैत छी परंच ओहीमे कूदैत छी। लड़ब एकदम जरूरी छैक। लोकक विरोधी परिस्थितिकेँ नाश करबा ले लड़ाइ टारल नहि जा सकैत अछि।"

एहन-एहन ओझराहटि आ व्यस्तता ककरो कहियो ने सकैत छिऐक जखन कि ई हमर सभदिना समस्या जकाँ भ' गेल अछि। एहि चिन्ताक बोझ मनपर माथापर हरदम रहैत अछि। तकरा हल्लुक करबाक इच्छा आ जरूरतिमे जखन कोनो आत्मीय बन्धुकेँ कह' लगैत छिऐक तँ एक टा मिनटक बाद ओ हमर बात सुनबाक नाटक कर' लगैत अछि। वस्तुतः सुनैत नहि रहैत अछि, अपन सचारोसँ—अपन तरहक लोकसभक बीच बस' आन मात्र जीवनकेँ सुभीतक

देवऽवला—तुरन्त बिना किछु कयने सुख देबऽवला गप्पसप—से थाहि कोनो स्तरक सुख होयबाक तहीपर मग्न भयल आ सुनल जाइत छैक। से सुभीता ओना मूलतः आर्थिक सुभीताक सुभीता।"

—"ई तँ युगक लाचारी भ' गेलैक छिऐ—युगधर्म। जकरा जतय गु'जाइश छैक भेटि जाइत छैक। ओ सबका ठेलि-ठालि क' आगाँ ससरि जा रहल अछि। से जीवनक सभ क्षेत्रमे। तखन ई बड़ स्वाभाविक छैक जे बहुत लोक भावनाक ओहन-ओहन बहावकेँ जे आर्थिक स्तरपर लाभकारी नहि हो व्यर्थ आ बाधक बात मानैत अछि। अपनाकेँ ओहि बातक लेल कोनो तरहेँ खपब' नहि चाहैत अछि यद्यपि सेहो स्तर कोनो कजुके छैक से हमरा नहि लगैत अछि। जरूर मनुष्य-सभ्यताक शुरुहेसँ रहल होयतैक मुदा चिन्हार-देखार आइ बेसी भ' गेलैक अछि।" ओ एक छन रुकलि जेना किछु सोचैत हो!

—"ओना देखियौक राजूदा, काल्हि अहाँ अयलहुँ। अहाँक अयबाक सूचना हमरा भेटि गेल छल—अहाँक चिट्ठी। तथापि हमरालोकनि सिनेमाक टिकट मङबा लेलहुँ खाली एही कारणसँ जे आखिरी दिन रहैक ओहि फिल्मक। अहाँकेँ बहुत गेल जे मय नहि भेटल जखन कि फूलि बात रहैक। आ कोनो अपन लोक अयबाक बात रहैक तँ फिल्म जाहि अन्तिमो दिन रहैक तँ ओकरा छोड़ल जयबाक चाहैत छलैक। से ई भड़ि गेलाह। एक बेर दू बेर नैतिक स्तरपर आ अहाँक स्वभाव मन पाड़ैत हम विरोध कयलियनि जे राजूदाकेँ खराब लगतनि। मुदा ओहो अड़ि गेलाह—'अरे हुनका बुझले नहि होयतनि। हमरा हुनक चिट्ठिये नहि भेटल अछि। बस!"

—"हम बनैत छी राजूदा, एखनो एहि जनतबसँ अहाँ दुखी भ' जायब। तथापि कहि देलहुँ। कारण से आवश्यक लागल। यदि नहि कहितहुँ तँ अहाँकेँ ई मिथ्या विश्वास बनल रहैत जे फिल्म जाइयो क' हमरालोकनि अहाँक अयबाक घटनाकेँ भावात्मक रूपेँ जोड़ायल रहलहुँ। सिनेमा जायब हमरा-लोकनिक 'लाचारी' छल अहाँ सेहो मानैत रहितहुँ। एहने भावुक लोक छी अहाँ! ई बात अहाँकेँ प्रसन्न करैत किन्तु तथ्य तँ यैह छैक जे हमहूँ चल गेलहुँ सिनेमा देख'।

"हमहूँ किएक चल गेलहुँ? हमरा लगैत अछि जे संभवतः अपन फिल्म अभिरुचिक संदर्भमे हम अहाँक अयबाक घटनाकेँ कमजोर अनुभव कयने होइ वा फिल्मे बल देल होइ। कारण हम आखिर-आखिर धरि विरोध क' सकैत

छलियाऐक । से नहि कयलिऐक । मतलब जे भावनाक स्तरपर स्वयं हम फराक एकटा नितान्त मामूली मूल्यक बात लेल चलि गेलहुँ गहल मूड़कें सोझाँ राखि क'। सेहो ओहि मनुक्खक सोझाँ जकर प्रसंग कोनो दोष नहि छैक ।"

सुस्मिता चुप भ' गेलि। ओकर स्वरसँ ओकर दुःखी होयब लागल। हम अपनो एहि सूचनासँ आब प्रभावित भेल रही। आ अपनेपर खौंझा रहल रही जे किएक अयलहुँ एकर डेरा ठहर' ले। एहन बात अपमानकारी लागि जाइत अछि। से असह्य अपमान।

—"अहाँकें ई सत्य बूझिक' अपमान जकाँ लागल अछि। अहाँक ईएह नियति अछि राजदा। एहि सत्यकें जखन नुकाओल गेल तँ ई अहाँक बड़ महान भवना-बोधक आधार बनल छल आ जखन साफ-साफ कहि देल गेल अछि, तँ अपमानकारी घटना बुझा रहल अछि। नहि ?

"मुदा अहाँकें हम यदि ई बात साफ-साफ कहि सकैत छी तँ ईहो कहि सकैत छी जे हम अहाँक अपमान क' सकैत छी से अहाँकें सन्देहो नै होयबाक चाही। स्वप्नोमे नहि। कमसँ कम हम अहाँक अपमान नहि क' सकैत छी। ई बात सत्य छैक। एखन धरि सत्य छैक।"

—"एखन हम तय क' रहल छलहुँ कतहु अनतह जयबाक।" हम कहलिऐक।

—"नहि, से नहि चलत। अहाँ इंटरव्यू द' क' तहि आयब। यावत् धरि कोनो व्यवस्था नहि भ' जायत रहबाक, तावत अहाँ एतहि रहब। नहि, राम चल गेलहुँ, तखन तँ कोनो बाते नहि।" ओ कहलक आ उठि क' विदा भ' गेलि। भरिसक भनसा घर।

बड़का जखरा तश्तरीमे भात, स्टीलक बाटीमे दालि आ छोटकी तश्तरीमे तरकारी लेने सुस्मिता उपस्थित भेलि।

—"खा लिय'। अहाँक समय भ' रहल होयत।" कहलक। सभ टा छोटका तिपाइ पर सरिया क' राखि देलकैक। हम हड़बड़ा गेलहुँ।

—"आहि रे बा, तों बनाइ ल' अयलें ? हम तैयार……"

—"खाइए क' भ' लेब तैयार। हमरा बुझाइत अछि, अहाँक समय भ' गेल अछि आ ताहि दिस अहाँक ध्यान नहि अछि। चलू उठू। ऊहूँऽऽऽ।" ओ हमर बाँहि बिचलक।

विचित्र बात। □

चिन्तित आकाशमे चुनमुन्नी

सड़कपर चलैत काल मनमे दुइये टा चिन्ता छल। पहिल तँ ई जे एक टा नीक मित्र जखन संसारक चक्रमे, युगक धड़फड़ी आ जीवनक खींचा-थीरीमे छूटि जाइत छैक तँ ओकर स्थानपर एक टा नव मित्र अनायास कोना आबि क' ठाढ़ भ' जाइत छैक—ओतबे स्नेह, संरक्षण आ सङ देबाक लेल ? भरिसक ई मित्र भेटबाक प्रक्रिया सेहो, प्रकृतिक ईएह नियम छैक, जाहिमे कोनो अभावक कारणें मनुक्ख-मनक भहरैत विश्वासकें, एक टा दोसर विश्वास रोपि क' ओहि अभावसँ टूटबकें संतुलित कयल जाइत छैक। तकरो कोनो तेहने गणित आ हिसाब-किताब छैक, नहि तँ एत' आबि क' हमरा सर्वथा ई सभ नव, विश्वास करबाक योग्य एतेक टा वस्तु, लोक नहि भेटि जाइत।

हम तँ अपन कन्हापर लटका क' चलऽवाला झोरीमे ईएह दू टा जोड़ कुर्त्ता-पैजामा धयने आयल रही, जे सबुना क' माँ ध' देने रहथि। ओहिना मोड़ायल-मोचड़ायल। से पहिरि क' हम अन्तर्वीक्षामे उपस्थित होइतहुँ। महेन्द्रा तँ भेँटो ने कयलक अछि जे पहिने जकाँ अपन धोआयल धोती आ सजायल कुर्त्ता पहिरा क' विदा करितथ। आ, एहि बात ले तैयार नहि होइतिऐक तँ चारि लोकक सोझामे कनैठी दैथ' लगितथ, जाहि बेइज्जतिक डरें तत्काल ओकर बात मान' पड़ितय।

तखन आब हमरा मनमे एतेक दिनक बेकारी आ गामक जीवन जीबि लेलाक बाद ई सभ संकोच आ विचार नहि अछि—मैल वस्त्र आ फाटल-चीटल वस्तु कोना पहिरब, कोना निकलब। गाममे नव वस्त्र देहपर चढ़ैत छैक, तकरा बाद मैल चिक्कट होइत-होइत फाटि जाइत छैक तँ अनेरे उतरि जाइत छैक। साफ कपड़ा किनबाक कारण बुझाइत रहैत छैक, तेँ कुर्त्ता-पैजामा चल छल। पहिरियो क' जे आयल रही से देखि क' हुनू व्यक्तिकेँ चिन्हबे योग्य नहि भ' सकलियनि। हमर मन स्मरणसँ पछताय लागल। एत' किएक ठहर' अयलहुँ।

मुदा जखन हम कपड़ा-लत्ता धारण क' सुहिताक खोजो ठाढ़ भेलिऐक से—"कते छोरी का बोआ। चललथुन आब राज-राजेश किछु विशेषज्ञ-लोकनिकेँ बैसाक' पढ़ब'। हुनकालोकनिकेँ हमर अद्वितीय योग्यतापर एकको पाइ भरोस नहि छनि तेँ किछु छपलाहा कागज सभ चाहियनि देखबाक लेल वा देखबाक नाटक करबाक लेल। जकरा आइ-काल्हि किदन-किदन सभ—प्रमाण-पत्र तँ आचरण-प्रमाण तँ डिग्री तँ किदन सभ कहल जाइत छैक··। सभ टा ओरियाओल छैक। लेने आ छोरी। लोक जेहु चाहुथ, सेहु करी। मनःतोषार्थ।"

—"अरे सुदिनता! तोँ ठाढ़ि भ' क' एना किएक देखि रहलि छे हमरा? जल्दी कर। आन छोरी।" ओ ठाढ़िए रहलि। हमर सभ टा अपन ई हुलुक-फलुक चंचलताक नाटक बिला गेल। सुस्मिताक आँखिक कोरपर केयो सुइ सन पातर ब्रुश ल' क' मात्र पानिसँ डाँरि खिचि देने छलैक। ओकर ई रूप देखि हम स्तब्ध रहि गेलहुँ।

—"की बात छैक मीता?" हम स्वयं गम्भीर स्नेहक अनुभवक करैत पुछलिऐक।

—"अहाँकेँ हम पुछने रही। अहाँ झूठ बाज' लगलहुँ अछि आब। एही समयवालीमे गेल अयतैक इन्टरभ्यू देब'?" एना हम नहि बाय देब। ईहो कौनो तरीका थिकैक। एतबा कालमे भोरसँ खिचा जाइत, सोहो भ' सहलैक।'

ओकर ओहिपर हम बलहँसी हँसलिऐक, खूब जोरसँ। यद्यपि भीतर हम कतहु बड़ गहीँर दुःखी भ' गेल रही अपन स्थितिपर आहिपर ओकरा अनावश्यक करुणा आबि गेल रहैक। बेकार थिकैक ई सभ। हम बड़ कट्टु भ' गेलहुँ अछि, हम सोचलहुँ। ओ एक छन सोचलक आ बाजलि—"उताक पैजामा-कुर्त्ता। जल्दी करू।"

ओकर कहबाक ध्वनि जनमन तेहने रहैक जे हमरा मन पड़ि गेल ओ भौजी जे हमर परिस बनाक' हमरा ठाढ़ क' देने अछि। अपने परिवार केयैत अछि। बड़ी दूर। भेँट भेल तँ कालहु आयत। ओना मासक मास दू पाँती चिट्ठी पर्यन्त नहि लिखैत अछि। ई स्वर तँ ओकरे थिकैक। ओहने 'हुकुमी' आ भरिगर। हमरा बुझायल जे ई मानसिक परिस्थिति हम बेसी काल नहि सहि सकैत छी।

—"तमाशा करैत छेँ! एखन आब ई कुर्त्ता-पैजामा खोलबाक माने?"

—"बेकार समय खराप नहि करू। खोलू। हम लुंगी आनि दैत छी।"

—"बाह, बेस कार्यक्रम छौक। लुंगिये पहिरि क' चल जायब? ओहो सब बुझत जे कोनो 'स्कालर' आयल अछि।"

—"ठट्ठा छोड़ू। लिय' लुंगी। जल्दी उताक ओकरा।" ओ खौँझयलि।

आज्ञाकारी बालक जकाँ हम अपन वस्त्र उतारलहुँ। भेल—भरिसक लोहा क' देतै। महा विचित्र छैक ईहो छौँड़ी। बताहिये छैक। से, सेहु आज्ञा सेहु क' देलियौक। हम लुंगी धारण क' बैसि गेलहुँ कुर्सीपर। ओम्हरसँ तावत ओ एक टा फुलपेंट आ बुशशर्ट लेने उपस्थित भेलि। हमरा तँ देखिते मातर देह सिहरि गेल—"बाप रे! ई कंटोलवा पैंट बुशशर्ट कथी ले, हमरा लेल? धन्य छेँ तोँ? ई हमर···"

—"जल्दी उठू। पहिरि क' देखियौक। उठू जल्दीऽऽऽ। कय बाजि गेल, से अछि ठेकान? उठूऽऽऽ।" ओ बाहि पिचलक।

—"उठलहुँ बाबू।" भेल जे एहि कंटोल बाबाजीक इन्टरभ्यू आइ विलक्षण होयतनि। पैन्टमे पयर घुसियबैत काल एकदा बालसुलभ प्रसन्नतो भेल। मनो नहि अछि, कतेक दिनपर पैन्ट पहिरि रहल छी।

बारह बजे राति क' भवेश आ भौजी नवे पैन्ट-बुशशर्ट किनने पैकेट फर-फराबैत कोठलीमे आयल रहथ—"भोरे तोँ चल अवस्से जो इन्टरभ्यू देब' लै। पैंजामा-कुर्तामे नहि चलतौक। पहिरि क' देखहीक तँ। ऊऽऽऽ।" भौजी बाँहि ध' क' घीचि देलक।

—"फेर की सोच' लगलिऐक अहाँ? देखू तँ कतेक बढ़ियाँ फिटिंग अछि? एकदम अहाँक अपने देहक लगैत अछि। एकदम बैसल।" ओ जेना अपन कार्यक्रममे सफल भ' गेल रहथ।

—"धुत्। कंटोल तँ लगैत अछि। तोँ खा-न-खा झंझटि कयलेँ।"

—"बेकार ! एहेन सुन्नर लगैत अछि।" ओ लग आबि क' मोड़ायले रहि गेल कागतकेँ सोझ कयलक आ देखि क' तेना हुषित भेल, जेना ई सभ वैह अपने पहिरि क' तैयार भेलि हो। "आब मनुक्ख जकाँ लगैत छी। जल्दी करू। जाउ आब।"

—"एह, ई ओढ़ि क' नहि जयबौक हम। हमरा लगैत अछि—नङटे छी। किछु पहिरने नहि छी। हम नहि पहिरबौक ई।" हम किछु गम्भीरतेसँ कहलिऐक।

—"रे छौंड़ा, कने एम्हर आ तँ !" ओ प्रायः छौंड़ाकेँ सोर पारलकैक। ओ तुरन्त अयलैक।

—"देखहुन तँ, ई पैन्ट खूब सुन्नर लगैत छनि ने ! ढील-ढाल नहि ने लगैत छनि ?" छौंड़ा बिहुँसैत देखैत बाजल—"हँ, खूब सुन्नर लगैत छनि।"

—"तोहूँ अद्भुते छेँ। गवाही ठाढ़ क' देलें। हमरा अपना मिसफिट बुझाइत अछि। अनकर देहक वस्त्र अनका कतबो ठीक होयतैक तैयो मिसफिट लगबे करतैक।" ओकर आकृतिसँ बुझायल जे उदास भ' गेलि अछि। हम समर्पण क' देलहुँ। वैह पहिरि क' जायब।

—"एहिमे हम फाइ आ कागज सभ कत' राखब ? कहु तँ" हम गम्भीर हास्य कयलिऐक अपना जनैत।

—"आह, ओहिमे कि पाकिट सभ छैक ?" ओ खौँझा गेलि, मुदा मोलायम व्यंग्य कयलक। आ खूब जोरसँ हँस' लागलि, जेना जेबीवला चिन्ताक बात ओकरा बुझायल होइक। ओ हँसैत-हँसैत बताहि भ' गेलि—"नेना-भुटका जकाँ जेबी ले चिन्ता''टाफी राखब की ?"

ओकर एहि नेनपनपर स्वयं हमरो बड़ हँसी लागि गेल। हम ओकर हँसब देखैत विदा होब' लगलहुँ। बरंडा धरि ओ आयलि। जखन हम गलीमे उतरि गेलहुँ तैयो ओ ठाढ़ि छलि। ओकर ई अनुभव हमरा अपन सन्दर्भमे नवे नहि, विचित्रो छल। हम झटकारि क' चल' लगलहुँ। आब हमरा माथसँ सब बात छँटि गेल रहय। माथ पैसि गेल रहय इन्टरव्यू।

हम अखबारमे लपटल कागज-पत्रकेँ ओरिया क' कखमे देने झटकि क' चलैत गेलहुँ। हमरा पयरमे एतबा दूर धरि चलबाक कारणेँ धूरे-धूरा भ' गेल रहय। पैन्टक कारणेँ चलबामे भारी असौकर्य बुझा रहल छल आ हम अपन एहि मनोवैज्ञानिक भ्रमसँ मुक्त नहि भ' पाबि रहल छलहुँ जे हम नङटे

छी ! हमरा माथमे ई दू टा बात प्रधान छल जे हमरा कैक बेर तेज होइत डेगकेँ छानि रखैत छल। हम स्वयंकेँ मग्न चलैत अनुभव क' रहल रही आ 'सेवा आयोग कार्यालय'क लग-पासमे कोनो कलक मानसिक अन्वेषणमे लागल रही जे पहुँचैत देरी पहिने पयर धोअब छायासँ नीचाँ नीक जकाँ। केहन असहज लगैत अछि ? बाबू एहने पयरकेँ देखि क' स्नेहपूर्ण क्रोधसँ कहथि—'पयर जे लगैत अछि हिनक मुसहर जकाँ।' हमरा बाबू मन पड़ि गेलाह। ई अनुभव भेल जे बाबू बड़ कुसमय मन पड़लाह। हम हुनक ममत्वोकेँ दू क्षण मन नहि पाड़ि सकैत छियनि। हम एखन इन्टरभ्यूक हड़बड़ीमे छी आ अपन मुसहर सन लगैत पयर धोबाक चिन्तामे छी। हमरा सभ भावकेँ ई बूझल रहैत अछि जे पिता कुशल-क्षेम छथि कि मरि-खपि गेलाह। ब्याहल-पीबैत छथि कि उपास पड़ैत छथि।

सेवा-आयोग कार्यालयक सोझाँमे एक टा छोट-मोट भीड़ जकाँ रहैक। ओना हम घबड़ा जइतहुँ देखिक'। परंच, एहि ठाम हमर कय बेरक अपन अयलाक अनुभव काज देलक। हमरा बूझल रहय जे ई सभ टा प्रत्याशी एके विषयक लेल नहि आयल होयताह। अनेक विषयक अध्यापकीय प्रत्याशी छथि। तेँ हम बहुत नहि घबड़यलहुँ।

पहिने ओकर सीढ़ी लगक फूल पटबउवला पाइपसँ निशोच दुनू पयर धोलहुँ। अखबा पानि रुमालकेँ भीजल पयरक सोखल भेलैक से ओ सोखलक; पाछाँ एकदम भीजि गेल। गारलिऐक ओकरा। फेर पोछलहुँ। फेर गारि क' जेबीमे ठूसि लेलहुँ।

हमरा बूझल अछि एहि कार्यालयक पछिला सीढ़ी (पछिला दरबज्जा नहि !)। दोसर कय टा प्रत्याशी चढ़ल जाइत रहथि। अपन एखबारी लपेट लेने हमहूँ चढ़' लगलहुँ। एको मिनटसँ कमे।

बड़का हॉलमे कैक पतिआनी गजबज भरल कुर्सीक बीचमे एत'सँ ओत' धरिक बड़का पतरका टेबुल। सभ खोल-पायकका मशीने। कतोक आकृतिपर अनेरक आत्मविश्वास, कतोक आकृतिपर 'मनहूसी'। कतोक निराश, कतोक उत्साहमे फचर-फचर बजैत। की पूछल जयतैक, ताही विषयक अटकर लगबमे अपन तत्कालीक प्रतिभाकेँ पिजा रहल। एहि प्रत्याशी समूहमे हमरो परिचय कोनो कराकसँ नहि कयल जा सकैत छल। एक तँ हम फेबाड़े लग ठाढ़ ई सभ किछु देखैत रहि गेलहुँ। ककरो ले ककरो किछु चिन्ता वा जिज्ञासा ? हम जा क' चुपचाप एक टा कुर्सीपर बैसि गेलहुँ। एहन चेष्टासँ,

जे हमरा कोनो चिन्हार नीन्सुब ने । हम अपनाकें एतेक अनचिन्हार किएक राख' चाहैत छी, से हम अपनो ने जानि पबैत छी । आब जेना एखने, कतेक उमेदवार होयत जे हमरे सँचक होयत । ओकरो एहि 'विशाल बेकारीक देशमे नोकरी नहि भेटल होयतैक । ओहो कय ठाम किरानियो बन' के कोशिश कयने होयत । तथापि, एखन धरि बेरोजगारीक ठाम गुड़ैत होयत । तकरा समक्ष अपनाकें मुकबधाक आशय की भ' सकैत छैक ? एहिमे संकोचक कारणे की ?

तावत हमर कानमे किछु अतिरिक्त उत्साहक एक टा स्वर पड़ल । एकटा पनखौक, जिनक दंत-पंक्तियुक्त मुँहवला छौंकी ल' क' लपकल हमरा दिस । हम संकोचमे पड़ि गेलहुँ ओकर एहि व्यवहारसँ । ओ धकफकायले ठीक हमरा कातमे पहुँचि गेल । बैसल रहथि एक टा भाइ साहेब, तनिका निवेदन कयलकनि जे—'कने ओम्हर घसकू ।' हमरा ठोढ़पर दुपैयाही बिहुँसी अवस्से आबि गेल होयत ।

—"उमेद नहि छल जे तोहूँ भेटबें एहि महासभामे ।" ओ ठहक्का मारलक । हम किछु कुंठित जकाँ भ' गेलहुँ । एहि ठहक्कासँ एक टा आर विपत्ति आबि गेल हमर चारू भाग । सभक आँखि ठहक्का-केन्द्र दिस घुसलैक आ गोट पाँचेक युवक सभ चोट्टे घूमि क' 'हमरा दिस बिदा भ' गेल—'अरे रजुआ' ।"

ई मान' पड़त जे आश्चर्यक सङ्गे सङ्ग सभक स्वरमे प्राचीन, मुदा सहपाठीक एक टा जीवित स्नेहो छलैक । हम अपना प्रति कयल गेल ओकरा-लोकनिक एहि स्नेहसँ भरि गेलहुँ । दू छन तँ चारो सभकें देखिते रहि गेलिऐक । सभ कतेक लगक दोस्त रहय ! एक सङ्ग कैन्टीनसँ सड़क धरि बौआय-छड़ुआयबला । मस्तमौला सभ । बेसीक तँ स्वास्थ्य नीक आ कपड़ा-लत्ता बेस चिक्कन-चुनमुन-दुरुस्त । ओ सभ हमरा घेरि जकाँ लेलक ।

हमरा बुझायल जे एहि घटनासँ सम्पूर्ण अपरिचित समूहमे हमर अपरिचितत्व सेहन्-सन अभाव होयतैक ओकरा सभकें जे 'चेहरे' बदलि गेलैक सभक । हम अपना प्रति अपने महत्त्वक एहि बातकें सोचि क' मने मन ग्लानिसँ भरि गेलहुँ । तथापि, सभनिक चारो हमरा मस्तिष्कमे ई बात बैसले रहल जे भरिसक आइयो हमर उपस्थितिमे ओ बात बाँचल अछि जे लोक आग्रहसँ आगाँ बढ़ि क' आबि जाइत अछि । हम आब अपनामे प्रसन्न रही । इन्टरभ्यू कोनो चिन्ता नहि रहय ।

तप छाड़ भ' गेलहुँ । कुर्सी कम रहैक । ओ सभ हमर सहपाठी एतेक रास उत्सुकता आ स्नेह प्रदर्शित कयलाक बाद प्रायः एक टा बड़ पैघ यथार्थक अनुभव आ चिन्तासँ शिथिल भ' गेल छल । हमरा बुझने ई परिस्थिति लक्ष्य स्थल भ' गेल । । हमरा एहि बातसँ दोहरा कष्ट भेल जे ई स्नेही लोकसभ जाहि कल्पित आशंकासँ दुःखी आ छुब्ध भ' गेल छथि, से निराधार छैक । ताहूमे एहि कष्टक कारण हम छिऐक । हमरा किंचित् हँसी लागि गेल । एक बेर हम एकरा सभपर, फेर पूरा हॉलमे सभतरि नजरि दौड़ौलिऐक । कयटा चिन्हार लोक मुड़ी गाड़ि लेलक । हमरा कोनो तरहेँ भोन पड़ल जे ओहो सभ सङ्गे पढ़ैत रहय । ई हमर अनुभव एक टा दोसर महत्त्वपूर्ण पक्ष छल जे हमर उपस्थितिकें नकारि रहल अछि । उपेक्षित क' पहल अछि । हमरा ताहू बातपर हँसी लागि गेल ।

—"एहन इंटरभ्यूमे आर तँ किछु लाभ नहि, एखन एतेक रास पुरना दोस्त सभस भेंट-घाँट भ' जाइत छैक, से धरि बड़का बात । सम्बन्धक नवीकरणक हेतु ई कार्यालय बड़ महान अछि, हमरा सभ-सङ लोकक लेल । ई बात हम जानि-बूझि क' कहलहुँ, दू कारणे । एक टा तँ ई साफ कर' लेल जे 'भाइसभ, यदि हमरा अबलासँ कनियो घबड़ाहटि भ' गेल होइक जे आब तोरा सभकें नहि होयतौक, हमरे भ' जायत, तँ से भय मनसँ बहार क' दे । अनेरे अपन भरोस कम नहि कर । हमरा कोनो पैरवी नहि अछि, कोनो आधारो ने । योग्यताकें अबहुआ पूछैत छै केयो । आ से योग्यता तोरालोकनिकें छौके । दोसर, तोंसभ मनक हिसाब कायम रखैत जो । हम ओहिना एक टा आर प्रयोगेपर आयल छी ।"

ओकर सभक चेहरापर धूरा बहुत किछु झरि गेलैक, से अनुभव भेल ।

—"खगेन्द्रा भेटलहु अछि कतहु ?" हम पनखौक दन्तनिपोड़ मित्रकें पुछलिऐक । ओ हँसल ।

—"प्रचण्ड छें तों । रे, ओकरा तँ भ' गेलैक कहिया ने ! आब ओ हमरालोकनिक बेकार समितिक सदस्य नहि अछि ।"

—"ओहिना । इन्टरभ्यू देब' नहि ।" हम स्पष्ट कयलिऐक । आ एम्हर ओम्हुर देखलिऐक । मनेमन हमरा ई भरोस छल जे खगेन्द्रा आओत अवश्ये । किछु-ने-किछु तिकड़म लगौनहि होयत । से एक बेर हम आँखि बचाक' देखलिऐक केबाड़ दिस । ई बात लक्ष्य क' गेल ओ हमर पनखौक मित्र ।

—"सुझा। एहि महासभाक रङ्ग नहि बिगाड़। तों एहिमे कोना सन्हि-याय आबि गेलें से आश्चर्य होइत अछि। सुनलहुँ, खेती-गृहस्थीमे जुमि गेल छें। एक दा—'फुल फ्लेजेड' गृहस्थ भ' गेले अछि। ईश्वर, ई की'' सम दा।" ओकर बात पूरो ने भेलैक, हमरा असाधारण रूपसँ खूब जोर हँसी लागि गेल। से सभ लक्ष्य कयलक। कय गोटेकेँ विरक्ति भेलैक। कय गोटे घृणासँ मुँह बिजुका लेलक—स्त्रीगण जकाँ। हम अपन एहि व्यवहार पर अपने अकबकाइ अनुभव कयलहुँ। हमर हँसी तँ रुकि गेल, मुदा हमर मित्र अपन टहटहाक ठीक देब' लागल। तोँइ मे रुकैक। हमरा बड़ विचित्र लागल।

—"एना हँसैत छिही? लोकके अकचकाइ' 'आखिर 'दफ्तर' छैक'' ।" हम कह' चाहलिऐक।

—"अकचकाइ आ 'दफ्तर'? हाय रे प्रचण्ड! रे ई तँ घर-आङन भ' गेल अछि हमरासभक। एहिमे उपस्थित देखानमे प्रतिशत कर्मचारीकेँ एत'क सभ स्टाफ सङ्ग चाह-पान आ कुशल-क्षेमक सम्बन्ध भ' गेल छैक। बादमे कतहु भेटलापर हमरालोकनि एतुक्का स्टाफकेँ कुशल-क्षेम पुछैत छिऐक, ओहोलोकनि पुछैत अछि। चाहो पिअबैत अछि। आ, चपरासी अछि तँ सलाम करैत अछि। कयगोटे आब हमरालोकनिकेँ नामसँ जनैत अछि। आब एहीसँ बूझि ले जे मासमे दू बेर तँ अबैत करैत छिऐक। नहि दू बेर तँ एक बेर अवश्यमे कोनो बाउठे नहि। सभ चीन्हैत अछि। आर तँ आर किरानीलोकनि आब हमरालोकनिसँ कियो किछु नहि मङैत छथि देख' ले। भरिसक बुझाइत छनि जे बेरो देखबैक आ फाटि-चीटि जयतैक तँ अनेरे झंझटि होयतैक बेचाराकेँ। ओहो लोकनि उपाधिक संग जनैत छथि।

पुकार भेलापर जखन कोठलीमे प्रवेश करैत छिऐक तँ हँसैत-हँसैत बेचारे-लोकनि पुछैत छथि —"कहिये, कुशलपूर्वक तो हैं!"

—"आपलोगों के आशीर्वाद से अब तक तो है। देखें कब तक और देना पड़ता है आप महानुभावों को कुशल-समाचार पूछने का कष्ट!" ताहिपर सभ लज्जित भ' जाइत अछि चोहार जकाँ। तोहर सप्पत! हम कुर्सीपर बैसबो नहि करैत छिऐक। बैसलहुँ तँ एक मिनट।"

—"आपका अभी तक कहीं नहीं हुआ न?" अध्यक्ष कि आने ई नाटक देखबैत अछि मिथ्या सहानुभूतिक।

हम हँसि दैत छिऐक आ ठोंड़-पटाइ कहैत छिऐक—"इस प्रश्न का उत्तर भी पहले प्रश्नोत्तर में देखें।"

ओकरासभक आकृति फक्क भ' जाइत छैक। बेसी सदस्यकेँ तँ अपडेबार छैक। हमरा तखन कहल जे "शिष्टाचार बरतिये।"

हम कहैत छिऐक—"मैंने कोई अभद्रता नहीं बरती। आप ही लोग एक अनुभवी प्राध्यापक के नाम से मोटे-मोटे नोट्स छपवाते हैं। मैंने उसीमें व्यवहृत भाषा का प्रयोग किया है। आप नहीं लिखते 'दूसरे प्रश्न का उत्तर भी प्रश्नोत्तर संख्या एक में ही खोजें?" से कि कहलिऐक कि खौंखिया जाइत अछि सभ।

—"आप जा सकते हैं।" एके बेर सभ ठोंठ-ठोंठ क' उठैत अछि। हम हँसिते घूरि अबैत छिऐक। आ, फेर अगिला आवेदनक प्रपत्र लेबे आबैत छी किरानीसँ माङिक'।

"पहिने एकर दाम नहि लैत छलैक। मंगनी दैक। आब देखनकैक' बाप रे, एकरो बिक्री बेस छैक। बस, एक टाका बान्हि देलक। पाँच टाका पोस्टल ऑर्डर, एक टाका की फॉर्म, रजिस्ट्रीक डाक-खर्च आ अवश्ये से सभ फराक। तुहि जे आब तँ पराभव छैक। मुदा सारकेँ छोड़बनि कहाँ? हम तँ मरि जयबौक, बिया सप्पत, मुदा किरानी नहि बनबौ। बनबौक तँ पैंइ प्रोफेसर फल्लाँ'' से देखी, कहिया धरि ई सभ मिनिस्टर-फीक मिनिस्टरक नहर-जहरकेँ उपयोग अछि आ हमरा छँटैत रहैत अछि।"

ओकर ई उत्साहपूर्ण भाषण बहुत गोटे सुनि रहल छलैक। आ सभक आँखिमे प्रशंसाक भाव छलैक जे "ई। ई तेहन लोक अछि बहादुर जे विशेषज्ञ आ सदस्यलोकनिकेँ एहेन जवाब द' देलकनि अछि, से अनेक बेर।"

—"चल नीचाँ। कतहु चाह पीबी एक गिलास क'। पहिने पँचटकहीक पोस्टल ऑर्डरमे एक प्याली चाहो दैत छलैक एत'। पाँच रुपैये प्याली। आब सेहो कटलक दैवनमासभ। हमरा तोँ ओही अनुभवी पाकल लोकनेसँ बुझ जे सरकारी अमलाक सुख-भोग सेहो कयने अछि आ महगियो भोगि रहल अछि आइकाल्हि। जेना अङरेजी बहादुरक राज देखने हो आ कांगरेसी बहादुरक सोराज! भर्ये रौ, सत्तमसत्त कह तँ, तोहर ओहि नहि कनकनाइत छौक किछु कर' लेल? माथ नहि धधकैत रहैत छौक ई सभ देखिक'? ओ हमरा हाथ स्नेह, आग्रह आ आक्रोशसँ ध' लेलक। हमरा तेहन सप्पत लागल जे बुझायल जेना ओकर देहमे पाँच डिग्री बोखार होइक। से बोखार सब द' हमरो देहमे पैसि गेल हो। दुनू गोटे एक रङ्ग चल' लगलहुँ। □

घरमुहाँ

ई एक विचित्र बात भेल रहय हमरासँ। अइतिये से सुभीता मतलब आराममे जयबाक चाहैत छल, रस्ता कि ट्रेनपर। से गेलहुँ भरि बाट लोकक मोटापर आ अबैयो काल, जेँ कि निराश-हताश घुरल रही, तकलीफोमे अबितहुँ। से उनटे परिस्थिति भेल। बेस फैलसँ जगह भेटि गेल। भरि राति पयर पसारि क' तेसर बर्थाक ऊपरका बर्थपर आँखिपर सहज अन्हारमे पड़ल रहि सकैत छलहुँ। रहबो कयलहुँ। कय बेर एक-एक रत्ती निन्नो भेल, फेर टूटि गेल। आ बुझायल जे हम जहिना गामसँ जयबाक काल पलायन कयने रही, तहिना गामो अयलहुँ अछि पलायन क' क'। ई बात कोनादन लागल।

गाड़ी भोरहरियामे मधुबनी स्टेशनपर पहुँचल रहय। हमरा जाग' नहि पड़ल। हम लहेरियासरायसँ जागल रही। मोनमे उहिम्मताक कछमछी पैसल रहय। बड़ इच्छा होअय एक प्याली चाहक। भोरहु समयमे छटपटी?

मधुबनी स्टेशनपर उतरि क' जेबीक पाइ सभ सोरलहुँ तँ कुल-कुदरति एगारहटा पाइ। चाह आब सभ ठाम पन्द्रह पाइये बेच' लगलैक अछि। यद्यपि दोकानवला सभ नवका लहलहाइत कोइलाक उठैत एक सहस्र साँपक जिह्वासमूह जकाँ लपलपाइत आँचपर बड़का टाक' केतली राखिक' बेंच-कुर्सी पोछि रहल छल, हमरा एक बेर भेल जे हम एतबे पाइ ल' क' कोनो दोकानवला लग प्रयास करी। मुदा, से यो नहि तैयार भेल। चाहक इच्छा घरि बड़ रहय। काल्हिये जे पीने रही चारि कि पाँच बजे सेहो पीने रही। ई सोचि क' जे चौबीस घंटासँ ऊपर भ' गेल चाह पीना, मन आर व्यग्र भ' गेल। चाहक आर जरूरति होब' लागल।

हम बगय मोरी लेलहुँ आ गाम दिस टहलि गेलहुँ। रेलवे दिस बहुत काल धरि पहिल लोक हमरा मोन पड़ल। से एक टा विचित्र बात। मोन पड़ल आ हठात् बड़ चिन्ता भ' गेल? फेर गुनधुन कर' लगलहुँ—एना विचार किएक आयल मोक विषयमे? हम अनेरे डेग सटकारि देलहुँ। चारू दिस झलफल छलैक। कतहु-कतहु लोक, एक-आध टा पंडितजी सनहक लोक, आरिपर कि खेतमे, गालपर हाथ धयने आगाँमे लोटा रखने, मुड़ी लटकौने बैसल रहथि। शेष किछु चिड़ै-चुनमुनीक निनाद। बस एतबे। डेग अनेरे सटकारल बढ़ि रहल छल। भोरका हवाक मिसरी जकाँ लागय। तेँ हमरा गाम पहुँचबमे बुझायल जेना किछु देरी नहि लागल अछि आ ने कोनो सेहन्ता थकान-ठेही। सम्भव छैक जे सुभीता-आरामसँ आयल रही, तेँ नहि बुझायल हो। मनमे साकांस रही, कियो गौआँ ने घुरैत देखि लेअय। कियो भेटि ने जाय···।

दरबज्जापर पहुँचलहुँ तँ भोर भ' चुकल रहैक। लोकक बड़दसभ लगातार गर्दनि डोला-डोला नार-पुआर खा रहल छलैक। नार-पुआर आगाँमे धरबाक खरखराहटि कानमे पड़ैत छल। टालसँ पुरना नार-पुआर घिचबाक आ तकरा बड़रिपर रखबाक फराक-फराक अपन ध्वनि होइत छैक—अपन संगीत, से नवकाक बोलरे रङ। कानमे स्पष्ट होइत रहय मालजालक उत्साह-

पूर्वक मुट्ठी ढोला-ढोला खयबाक आभास। सभ मास-जाल भरिसक मालक घरसँ बरियर बान्हि देल गेल छलैक। संगहि एक आध दुन-दुन शहरसँ जेना एक टा नवे अनुभव पसर' लागल। अनेरे उत्साह कमो भ' गेल। फेर ताबाले उत्साह मिझा सेहो गेल। बड़िना काल अपन ड्योढ़ी टाट लग बेल एतबी टा गाछ देखलिऐक। पीयर-पीयर पतरल सोझल। कहत? पेड़? आ बामा कोन मार ककाक खरिहान छनि। रखबी पेड़ सेतल राखने छनि।

ड्योढ़ी टाट जकरो दुरुस्त देखि क' गेल रही सेहो नहि रहय। केयो ओहूमेसँ बुझि पड़ैत अछि छाड़ी-बत्ती घीचि क' ल' गेल छलैक कि कोनो माल जाल गीरसँ तोड़ि-फाड़ि क' धुर क' देने छलैक। एक टा खुट्टा फराकसँ ठाढ़ रहैक। ओकर खुट्टा आ ओहि खुट्टामे बान्हल दू जोड़ा पुरान बसीक सांगड़। छड़-छड़ही सभ लापता। आङन बेलगाम बुझाइत। छप्पन क' गेल।

लगभग ठीक ओही कालमे माँ सेहो पहुँचलि ड्योढ़ी टाट लग ... पाछाँसँ दतमनि करैत। बुझायल जेना हमर अयबाक भो धुसि गेलि हो। चुप। जेँ कि देखबाक लेल ओकर हाथ स्थिर भ' गेलैक। हम गोड़ लगलिऐक। ओ किछु ने बजलि।

--"तोँ कोना बुझलही जे हम आबि रहलहुँ?"

—"आहिले इष्ट देवताकेँ गोड़ लगने आबह।" ओ कहलक।

ई लागि अयबनि। मने बुझाय दे।" हम आङनमे बढ़ि गेलहुँ। माँक बिछान पसरले रहैक। ओही एक कात राखि ओलरि गेलहुँ।

चारू भाग उदासी आ विरक्तिक वातावरण छलैक। चैन-चैनचौपरसँ ओघड़ायल, जेना चारिपर कोनो मनुक्ख। केयो पुछनिहार ने। उनटा छप्परपर दू-दू टा कौआ कुचरैत, नृत्य करैत। असोरापर माझे ठाम भरि मुट्ठी खाधि, भरिसक कय दिनसँ नीपल नहि गेल छलैक। कारण, गोबरसँ नीपल गेलाहुँ जे एक प्रकारक चक्कानाचिक जकाँ तैयार होइत छैक माटिपर सेहो नहि रहैक कतहु। हमरा एहि सभ बातक बड़ आश्चर्य लागल। माँमे ईसभ उदासीनताक भाव कहियो नहि छलैक। सफैयति आ सभ वस्तु ठीक-ठाक रहओ, ताहि प्रति माँकेँ बड़ चिन्ता रहैत छलैक। से एना किएक भ' गेल अछि ई? बुढ़बारि ने कातरि भ' गेलि अछि। हम्मू। ईसभ चिन्ता क' जयबा-जोग मुदा, पुछबाक कहाँ भेल किछु साहस?

आँखि मूनिक' सभ टा परिस्थितिसँ अलग होब' लगलहुँ। बसातक सिहकी कने एक रत्ती आरामदेह बुझाय लागल आ ओहि बाद सभमे हमर मन अपन निराश बुझबातें ओहि आपसौसँ एको मिसिया भारी वा खिन्न नहि छल, अपितु हमर मनमे एकटा टटका फुलायल ओइहुना पुरनि-पुरनि क' सभ उद्देश्य आ जीवंत कार्यक्रम सभ टुह-टुह रंग पसारि रहल छल। आ, हमर मनःस्थिति अनमन ओहने छल जेहन कोनो पंथ, फूल आ पातसँ भरल हरियर गाछक होइत होयतैक। (यदि होइत होयतैक तँ) सभटा उमेद आ कार्यक्रम ओहूले जकाँ हमर मनमे झूमि रहल छल। हम तकर प्रत्यक्ष अनुभव क' रहल छलहुँ। हमहूँ जेना नहुँ-धो क' टटका बनि गेल रही। तेँ सँ, मनसँ थकनी आ खिन्नता छड़ि गेल रहय। तैयो आँखि मुनने पड़ल रही।

भरिसक अगमे माँ आबि क' ठाढ़ि भ' गेलि। आँखि खोललहुँ। आँचरसँ मुँह-हाथ पोछैत रहय। से ओकर तेहेन बड़ रहैक जे चारि-चारिटा आङुर एकबेर धुर बाटे बहरा जाइक। देखल नहि गेल तँ फेर आँखि मूनि लेलहुँ। कने भरिसक किछु पुछबाक इच्छा छलैक। मुदा, से नहि सकलि, हम प्रतीक्षा करैत रहलहुँ जे माँ किछु पुछत।

—"माँ एना किएक छौक सभ टा हनमनायल-हुनमुनायल? मन बेसी खराप छौक की?" हम आँखि खोलि क' नहि पूछि सकलिऐक ई बात।

—"की होयतैक सेति-मोतिक'। ओहूँ नहि छलह। तेँ आरो ने ध्यान देलिऐक। तोहर (ओँखी) एकनी. एक रत्ती कहल छेल पोआ मिल्ने पियौक आ खेराइ-बरदी मिल्न। के देखत? तेँ कमरा मात्रकेँ एखन खोया देलिऐक। अपने. से आइ कय दिनसँ जडर भ' जाइत अछि (ओँखी) तेँ नहि क' भेल।"

तक् ब' हमर आँखि खुजि गेल। बिना देखनहुँ माँक ई स्वर जेना हमरा सभटा परिस्थितिसँ अवगत करा देलक। एकदम नढ़लि-बुढ़बारि माँ। आँखी भ' रहल छलैक माँकेँ।

हमरा अवस्थापर तामस आ खेद भेल। एहि बातपर जे हम माँक ई चिरसंगिनी लकायीकेँ सेहो बिसरि गेल रहिऐक, कोनो औषधक इन्तिजाम कहाँ करैतिऐक? ओकर आँखि धँसल रहैक आ पीयर, डाबुस। आँखिक नीचाँ लालड़िया दूगड़ो आ बुढ़ापा समस्त हड्डी। एतेक लगसँ ओकरा एना देखि क' देह सिहरि गेल। भय भ' गेल। ओ तेना भ' क' हमरा देखलक जे हम ओकरासँ निराशे जकाँ भ' गेलहुँ।

ई परिस्थिति कतव हमरा हेतु कतेक यातना रहल होयत से हमरे गंभीरतामे ओहि सब बन्धुकेँ बुझा सकैत छनि जे युवा लोक होयब आ बेरोजगार होयब आ भरि संसारमे एकटा माय होयब, सेहो माय कोनो घड़ी मरि जायवाली होयब''' ।

बुझि पड़ैत अछि, माँ ससरि क' कोनो दिस गेलि । हम ओकर विषयमे ध्यानस्थ आँखि मुनने पड़ल रही । हमर माथ धीरे-धीरे खाली भेल जा रहल छल । हमरा नीक बुझायल ।

यद्यपि हमरा ई बात गड़ैत रहय जे माँ हमरा इन्टरभ्यूक विषयमे किएक ने किछु पुछि रहलि अछि । हम ई बात बुझैत रहिऐक—एहि बातकेँ माँ सेहो जनैत छैक, हमहूँ जनैत छिऐक । आ प्रायः तेँ माँ चुप्पो अछि ।

हमरा चाहक इच्छा मोन पड़ि गेल । चाहक उत्कट इच्छा भेल । मुदा, माँकेँ कहि नहि होइत अछि । भरिसक, जे कतहु माँकेँ चाहक पत्ती नहि होइक तँ अनेरे ओकरा भोरे-भोरे अछने-अछने बौआय पड़तैक । नहि । मुदा शरीर अनेरे असोथकित लागय । अपनाकेँ माँ लग, गामपर बुझितो अपना जेना असहाय आ उदास लागय । की करी ? हम की करी ?

पड़ले-पड़ल हम, सब संसारमे एकटा स्थान ताक' लगलहुँ । एकटा एहन स्थान जे हमरा लेल, हमरा सन असोथकित आ असुरक्षित युवा लोकक हेतु अप्पन हो; जत' मन स्थिर आ निश्चिन्त भ' क' सुस्ता सकय ।

बड़ अलसगर बसात सिहकलैक । बन्द आँखिक पपनी'''जेना कतेक मय किछु अनुभव भेल । तावत बुझि पड़ल जे माँ आयलि । आँखि लागि गेल होयत ।

—"हे येह, चाह लेह ।" माँक बैह स्वर । माँ बैह । ओहिना भाफ उठैत गिलसिया गिलास । हमर देहमे स्फूर्ति पैसि गेल । माँ चाह दैत चौकीक कोरपर बैसि रहलि । हम चाह पीब' लगलहुँ । भरिसक अपन बहिनपाक बाडनसँ माङि क' आनि देलक अछि ई चाह । ई माङि क' अनबाक विषय पर हमर मन फेर खिन्न भ' गेल । पहिन्ने ने पड़ैत अछि एखनो धरि । एत' धरि जे चाहो माङि क' पीबाक बात । तैयो पीबैत रहलहुँ । माँ चुप्पे रहलि । हमरा असह्य भ' गेल । हम माँकेँ देखलिऐक । पता नहि किएक, बुझायल जेना माँ बैसले बैसल कतहु दबि ने जाय । हमरा मने-मन घबड़ाहटि होब लागल । तकर कारण छलैक । माँ बहुत बेसी दुःखताहि भ' गेलि

छलि । ओकरा खोँखी उठलैक । वैह करेज फाड़ि देब'बला खोँखी । आँखिक डिम्हा निकालि क' ध' देब' बला उकासी—चेहराक, गर्दनिक सभटा नस-नसकेँ जोड़ जकाँ बाँटि क' ध' देबयबला खोँखी''''''' । हमर चाह पीयब बन्द छल । माँ अपस्याँत छलि । बड़ी कालपर खोँखी तोड़ लेललैक । हमरा इच्छा भेल जे कोनो दबाइक विषयमे पुछिऐक, मुदा व्यर्थ लागल । हम की पुछि सकैत छलिऐक ? कथीपर ? एहि बेर, ओहि बेर अपनाकेँ अपन गामक अपन घरमे अपने माँक खोखी पर्यन्त—बेसी अनटोटा अनुभव कर' पड़ि रहल छल । विचित्र बात । माँक उकासी तँ बन्द भेलैक । माँ किछु बजैत अछि किएक नहि ? माँ किछु किएक नहि पुछि रहलि अछि ? माँ किछु नहि पुछत । भरिसक एहिना आब चुप्पे रहि जायत ।

—"कोनो चिट्ठियो आयल रहैक ?' हम जेना बलधकेल पुछलिऐक माँकेँ ।

—"कहाँ कोनो ?" ओ निस्पृह भावेँ उत्तर द' क' अपन कोरामे हाथ धयने बैसलि रहलि खूब उदास ।

—"तोहर सँ उकासी बढ़िये गेलौक माँ !" हम कहलिऐक । (बेकारे मे कहलिऐक !) एतबा कहब सँ कोनो औषध नहियेँ भ' गेलैक ।

—'कहनाक बरक चिट्ठी अयलैक अछि । कहनाक माय ताक' आयलि रहथुन ।" माँ कहलक । हम क्षण भरि ठेकान' लगलिऐक, के कहना ? मन पड़ल ।

—"की लिखलकैक अछि ? हमरा किएक तकैत रहथि ?" हम पुछलिऐक ।

—"नहि जानि । भरिसक किछु कतारा ई सभ लिखयबाक छनि । छौड़ीक बड़ अभाग छैक ।" माँक सहानुभूतिक स्वरमे जेना अपनो पराजयक कोनो ध्वनि मिज्झर छलैक । हमरा बुझायल । आब एहिना सभक दुःखसँ सभक दुःख मिज्झर भ' गेल छैक । सभक । ककरो दुःख कहाँ छैक फराक । तैयो जानि नहि किएक सभकेँ एकजुट नहि होब' दैत छैक परिस्थिति । सभ लोक किएक अपना-अपनी क' मात्र ओहिना अपने सीमामे सुरक्षित रह' चाहैत अछि । हमरा बुझायल, हम एकटा असमय आवर्तमे ओझरायल जा रहल छी । चाह शेष भ' गेल छल । एकेँ घोँटमे कंठस्थ करैत गिलास नीचाँमे राखि क' पुछलिऐक—'एहू बेर दुरागमन नहि करौतैक कहनाक सासुरवला ?" माँ मूड़ी डोलौलक—' नहि ।"

—"धरफड़ सभ छैक । बेचारी मसोमातकेँ जे लिखल छलनि से तँ

भोगहि पड़तनि। चिट्ठी पढ़बाक छलनि। से तँ आबनि रहथुन।" माँ बाजलि।

—"हम नहि रही तँ आन केओ नहि पढ़ि सकितैक? ककरोसँ पढ़बा लितथि।"

—"ककरासँ? जे दू गोटे छथि कृष्णकान्त आ भोगेन्द्र से तँ बैह कलकत्ता कमाइत छथि। गाममे के पढ़त? गाछीमे रहैत खुरपेन-कदाली सभ ठीक ओ सभ तँ अंगरेजिए-फारसीमे चिट्ठी लिखि क' पठा दैत छैक। तेना सभ दू-चारि टा जे स्कूलिया छैको तकरा पढ़लो नहि होइत छैक। की उपाय? बेचारी बड़ चिन्तित छलीह। संदेशन करेक भेंट क' अबिहीह।"

दुनरो मन कहलक—हे ई बात जरूरी छैक। मुदा बेहद अविश्वसनीय लगैत छैक? केओ सुनत तँ हँसत। आइ एहू युगमे एकटा गाम अछि जतं कय-कय दिन धरि एकटा चिट्ठी नहि पढ़ल जा सकैत अछि, चिट्ठी पढ़निहार कोनो पढ़ल-लिखल लोकक अभावमे। आश्चर्य! करि गाममे कुल कुदरति तीन टा पढ़ल! आ सहम चलन कि स्वतंत्रता भेटलाक बाद शिक्षितक संख्या बड़ बढ़ल अछि। लोक अशिक्षित नहि रहि गेल अछि आब। मुदा एहि विकट परिस्थितिक प्रति हमर एहि व्यंग्यसँ कोनहु ठीक संतुलना भेल जेना कोनो बड़का चोरसँ अपन कोनो अदृश्य शत्रुकेँ फुसफुसा क' लागि पड़ब। एको टा शुद्ध मनःतोष अपने हमरा बेशार बुझ पड़ल।

लोक अशिक्षित अछि। एखनो अशिक्षित अछि। सत्यता सैह छैक, कारण स्वतंत्रता आ प्रजातंत्र लोककेँ खाली सुनाइ पड़'बला शब्द भरि लगैत छैक। छुच्छ किछु कहइ किछु सुनय जकाँ। माने केओ ने बुझैत छैक। ओहुना बहुत लोक ले आइओ छैक वैह चालीवला गुद्ध खैंचा आ अगरेज बहादुर—माय बाप। नबका पाइ मजगुत आ नबका बीस-पचीस वर्षक बहुनोंपिवन माय-बापक लेल ओकरा नजरिमे किछु कोनो मतलब नहि छैक। साधारण जनताकेँ महुअरीमा विरक्ति छैक। ई विरक्ति बढ़ले गेलैक अछि। साधारण जनताकेँ कोनहुन कोन नबका 'पथपुजारी' लेभी सँ किरदा तकरा सबक थोड़ छैक। तेँ जे टेढ़का हड्डी सभ पीठपर लादल बाँचल छैक से सभ सोझे खरे-खरे क' रहल छैक। आर किछु नहि सुझल छैक। जाहि भाषामे ओकरा नबका ज्ञानक बखान सुनाओल जा रहलैक अछि से भाषा-बोली ओकरा अनचिन्हार छैक। ओ टुकुर-टुकुर तकैत रहि जाइत अछि। भाषा सुनि क' अपन गमछाक मुरेठा चौड़िक' माथपर बन्हैत अछि आ ठेंका उठा क' टोल

दिस विदा होइत अछि। दुर्गास्थानक तिनकोनमा परती कि महुरानी पोखरिक पछबरिया भीड़ खाली भ' जाइत छैक।

महुरानी पोखरिक भीड़पर कतेक बेर आ से तेहन-तेहन आडंबरसँ एकसँ एक महापुरुष लोकनिक झाली भाषण सभ भेल अछि—एही बीस-पचीस वर्षमे जे लोकहि पोखरिक माछ-काछु आ डोका-बेङकेँ पर्यन्त स्वतन्त्रताक अधिकार आ प्रजातंत्रक आदर्श अर्थ घोखा गेल होयतैक। आओ सभ पर्यन्त देशक आदर्श नागरिकक हैसियतसँ रहुओ, सभ कर्त्तव्य करओ सोहि भाषण-महापुरुषलोकनिक दे कहथ छथि। तेहन-तेहन भाषण। डोका काँकोड़ोकेँ नागरिकताक पाठ!

हमरा हँसी लागि गेल। ई बात हम बिसरि गेल रहिऐक जे माँ लगेमे अछि बैसलि। तखने ओकरा खौंखी उठि गेलैक। नहि तँ ओ पुछितय जे किए हँसी लगलह? तथापि ओकर उकासी-विकृत मुखाकृतिपर हमर हँसीक पुछारीबला भाव छलैक। ओ पुछिये नहि सकैत छलि। तेँ हम जबाब सोचैत रहलहुँ। माँक खौंखी चलिते रहल छलैक। तखन हम आश्वस्त भ' गेलहुँ। आब माँकेँ मोनो ने रहतैक हमर हँसीक कारण आ मतलब पुछब। मने नहि मन रहैत छैक। एहि समयमे ओ बिसराहि नहि रहैत तँ आरो तकलीफ उठबैत। हमरा ओहिना मुना गेल किछु काल। तकरा बाद एहुन-सन बुलाय लागल जेना केओ उकासी करैत-करैत दूर भेल जा रहल अछि—दूर भेल चल जा रहल अछि। उकासीक स्वर मद्धिम होइत चल गेलैक। फेर लुप्त।

माँ हमर बाँहि ध' क' उठौलक तखन हमरा सोझामे ठाढ़ि रहथ बहना। ओ बड़ उदास रहय। हाथमे एकटा अन्तर्देशीय पत्र। हम बुझि गेलिऐक।

'माँ हमरा कहने रहय कार्त्तिक समाद। हम आबिये रहल छलियौक तोहर आङन। देखियौक चिट्ठी···।" एतहि माँ बाँहि ध' क' उठा देलक। हम आँखि मिड़लहुँ। आङन दिस आँखि गेल। राँति रौद-पसरल। किछु कड़कल रौद। हाथी छुटि गेल। माँ खाय ले उठौने होयत। ठीके छैक। भूखो बुझायल। मङ्गवाक मन नहि भेल। के आय दुआर पर एलन। आलस। माँ हैहो मने क' देलक।

मोन नहि की रहलहुँ आ कतबा। खाली एतबा मोन अछि जे घरलाक अक्समे नहि जानि कए सुतल, कोना पुछि बैसलिऐक—"माँ, किछु होइबो करत?" माँक आकृति बिजली जकाँ दोसर अकला दिस घुमि गेलैक। माँक

आकृति अनमन तेहने रहैक जेना साफ मेघक तेरदार मेघक विशाल टुकड़ी कटिछोड़ बना देत छैक। खपत्तापर अवकठ। ताड़िपरसँ किछु हुअबो करत ? अथवा दूध कि दही ? हमरा हँसबाक मन भेल। माँ जेना बगलि रहलि जेना ओ हमर प्रश्ने ने सुनने हो। थारी उठौलक आ चलि गेलि। हम मुँह धो फेर ओछाओन पर। तकर बाद चाह कालक दुपहरिया, साँझ धरि हमरा अगली छौँड़ाक पिहकारी अकाँ सुनाइत रहल कानमे। हम मुँह झँपने पड़ल। निन्न होअय नहि।

हमरा आँखिमे खाली सुस्मिता ठाढ़ि रहय। अर्बत काल हम कृत्रिम क' ओकरासँ भेंट नहि कयलिऐक। हम भेवारि क' ओकरा लोकों अपनाकेँ दोषी बनाक' आब' चाहलहुँ। से, ताहिमे सफल भेलहुँ। हमर सम्पूर्ण देहमे ओकर देहक सुगंधि ससर' लागल। हम एकटा उदासीमे मातल गेलहुँ। तेँ हमर बन्द पपनीमे खाली रहय—सुस्मिता।

ठाढ़े थयल साइकिलक ट्यूबसँ बहरा गेल हवा जकाँ, कखन इजोत अन्हरा गेलैक, नहि बुझलिऐक। आँखि खोलि क' बरेंडी परक चुप्प बगड़ाकेँ देखैत रही कि लगेमे माँक उकासी उठलैक। बगड़ा उड़ि गेलैक फड़फड़ाय लगलैक।

—"निन्न नहि भेलहु अछि तोरा ?" माँ दम लैत पुछलक।

हम चुप्पे रहलिऐक।

—"किएक मन्हुआयल छह ? मुँह हाथ धोअह। चाह पीबह, बना दियहु ?"

—"मन नहि लगैत अछि माँ।" हम तत्काल अपन एहि तरहेँ एहन गप कहि देलासँ लाजा गेलहुँ। मुदा, ई सत्य जे हमर स्वर ओतबे विकल रहल होयत जतबा अपन माय लग एकटा असहाय बच्चाक रहैत होयतैक।

—"किएक मन नहि लगैत छहु ? मन लगौने लगैत छैक। भाकसी छह आइ।" हम चुप्पे रहि गेलहुँ। हमरा मन नहि लगैत अछि, कतहु नहि लगैत अछि।

—"कतहु घुलि-टहलि आबह।" माँ कहलक। हम अलसायले उठि क' चेलचीसँ पानि ढारि कुरड़ कयलहुँ। दू मिनट बैसलहुँ। फेर उठि क' विदा भ' गेलहुँ। विदा होयबाक काल निर्णय किछु नहि छल। माँ तखन ओतहु नहि छलि। हम आङनसँ बहरा गेलहुँ।

कनय'-गाय काकी ढेकी उठबैत रहथि। दुटा स्त्रीगण चोट द' रहलि छलथि। आब हालफल नकाँ भ' रहल छलैक। पछबरिया असोरापर, रङल मेहीँ सिक्की राभक मुठड़ा धयने, कक्ना किछु बूनि रहलि छलि। ओ अवस्थात छलि। कानमे ओंगि गड़ौने। बड़ उदास चित्त रहैक।

पहिने देखलनि काकिये। हुलिस भ' गेलीह। हमरा नाम ध' क' प्रकट भेलीह तँ कक्नाक आँखि उठलैक। ओ उठलि, पीढ़ी उठौलक आ गड़बेक कोरपर राखिक' हमरा गोड़ लगलक। फेर बसबि क' अपन कारखाना लग चलि गेलि—सिक्की टाकु लग।

कुशली-क्षेम पुछैत काल काकी अपन बात कहबा ले चंचल छलीह। उठलीह आ चिट्ठी उठा अनलनि। ढेकी तावत बन्द रहैक। दुनू स्त्री फाटल आँचरतँ निस्संकोच छाती उघारने बसात क' रहलि छलि घाम भरल देहपर।

पत्र पढ़लिऐक। भ्रष्ट अंगरेजीमे लिखल ओहि पत्रक मुख्य कथन छलैक जे यावत धरि हमरा मोटर साइकिल नहि भेटत तावत धरि हम दुरागमन नहि करायब। एखन तँ पाँचे वर्ष भेल अछि, फरि जन्म नहि करायब। आ, एक मासक प्रतीक्षाक बाद आब पत्र पर्यन्त लिखब असंभव।

पढ़ैत काल हमरा सामसो उठय जे फाड़ि क' फेकि दिऐक पत्रकेँ। मुदा, कहलियैं नहि। कुमायल जेना बड़ सूक्ष्मतासँ कक्नाक हाथक संचालन एक क्षण बन्द भ' गेलक, फेर अनेरे चल' लगलैक जेना लाइन कटि गेलापर बिजली-पंखा-तथा क्षणेमे बंद भ' अनेरे चल' लगैत छैक।

—"सैह, ई होइक बौआ ? भरना-केबाला क' व्यवस्था मनलहुँ, विवाह करौलहुँ। छौँड़ी सुखसँ रहत। हमरा कोन, कुआरी खेपि लेब कोनहुना क'। आब ई एना छोड़पनी देखलहुँ अछि कतहु ? हम कहाँसँ देबैक मटुर साइकिल ? ईहो तँ सोनिते बोकरायब भेल ने ?"

ओ हुवाक भायेँ चुप रहि गेलीह। हमहूँ काकीकेँ आ खन कक्नाकेँ देखैत रहलिऐक। कक्ना शान्त भावसँ मूड़ी निहुरौने अपन दुनियामे व्यस्त रहय।

—"तेँ एहिमे चिन्ताक कोन बात काकी ? ई सरासर, ओकरेओक अन्याय थिकनि। हुनक एहि धमकी देखायबकेँ मोजर ने दियौन। ई कोनो बाते नहि छैक मान'बला। जे मन होइनि, करथु।" हम हुनक चिन्ता कम करबा' ले बजलहुँ।

—"नहि बौआ, सुनैत छी, ओकर बाप दोसर बियाह करा रहल छैक।"
—"कर' दिऔक। भोगतैक अपने।"

—"से कोना ? हमर बेटी ? एकर की होयतैक ? एकर सीथमे जे सिन्दुर देने छैक ?" ओ विस्मय आ चिन्तासँ बजलीह।

—"काकी, कलनाकेँ अपने खूब योग्य बना दियौक। तहिया योग्य बना दियौक जे आर्थिक स्तरपर ओकरा ककरो भरोस नहि कर' पड़ैक। अपन पयरपर ठाढ़ि रहय। स्वावलम्बी। एहन क्षुद्र लोकक तर्हें ओकरा जीवन बितब' पड़तैक, ताहिसँ तँ बेह नीक—एकसरिये रहय—अपन भरोसपर स्वतंत्र आ नीक जकाँ, शांतिसँ। ई जेहन गुनी अछि, एकरा तँ सासुर गेलो उत्तर उला पका क' खा जाइ जयतैक। बड़ा नीच कुसाइत अछि ओ सभ।"

काकीकेँ जेना हमरा कहबापर ठकमुड़ी लागि गेलनि। एहन-सन जेना, हम ई की बाजि रहल छी ! ओ बाजइ लगलीह—"कह' नँ, ईहो भेलैक अछि बौआ ? बेटी कतहु एकसरि रहैक नैहर ? आ' कमौआ बनि क' ?"

तामससँ हमरा हँसी लागि गेल।

—"जरूरति होयतैक तँ किएक ने रहतैक ? मानि लिय', यदि ओ बिना मोटर साइकिल लेने वर्त्त दुरागमन नहि करबय तखन ?"

—"एहिना द' अयबैक" काकी कहलनि।

—"यदि टप' नहि दैक बरमे ? तँ गाममे छोड़िक' पड़ा जयबैक ?"

काकी चुप भ' गेलीह। कलनाक मुड़ी झुकल रहैक। मुदा, हाथ चलब बन्द रहैक। ओ सुनि रहलि छलि।

—"आब निरुपाय भ' क' बेटीक विषयमे सोच' पड़त काकी। हम कहैत छी, केहन बढ़ियाँ तँ सिकिया-बुनिया करैत अछि कलना। एहिमे आरो सहयोग द' क' एकटा सियाइ मिशीन द' दियौक कीनि क', नीक रहत। केहन सुन्दर बुनिया करैत अछि ? रंग-बिरंगक उपयोगी वस्तु सभ बनाओत आ बेचबा क' सुखसँ रहत। जकरा अपना एहन लूरि-भास रहतैक, से किएक ककरो मुँहतक्कीमे रहत ? गाम-घरक आनो छौंड़ी सभकेँ ई सिलब, बुन सिखौतैक। जैह इ अक्षर अबैत छैक अपना, तकर ज्ञान करौतैक। ओरो छौंड़ी सभकेँ भविष्यक रस्ता बनि जयतैक।"

—"ई कि कोनो शहर छैक बौआ ?" काकी निरुपाय भावेँ बाजि उठलीह। "गाममे ई सभ चलत ? दोसर, ई बात भरि जिनगी निबहत कतहु ? दैव की लिखलथिन कपारमे, नहि जानि।" तकर बाद कलनाक सासुरवलाकेँ दस हजार श्राप, गारि-मंजन।

कलना उठि क' घरमे पैसि गेलि।

—"काकी, आब कोनो रास्ता अछि तँ सैह करबाक चाही।" हम कहलियनि, "मुदा जखन विवाह-दान आइ एना भ' क' खरीद-बिक्रीक वस्तु रहि गेलए अपन समाजमे तँ आन की करब ? हमरा यदि बेटी रहितय तँ हम नहि ब्याह दितिऐक, बल्कि हम तँ उनटे नीक वर-घर ताकि क' बेटीक फेरसँ बियाह करा दितिऐक…।"

—"छि: छि: बौआ। एहनो कैयो बाजय। एहनो हँसी कैयो करय ? बेटीक दोसर विवाह ? तकौमे कोनो स्थान रहत ?" ओ व्याकुल भ' गेलीह।

—"काकी, अपना बेटीक हम कंठ मोकि देबैक, से तँ पार नहि लागत। किएक मोकबैक ? ओकरा पढ़ा-लिखा क' अपन पयरपर ठाढ़ किएक नहि क' देबैक ? अपन समय आ परिस्थितिसँ लड़त। नीक वाल आ नीक परिस्थिति अनबा लेल अधलाह परिस्थितिसँ लड़त। बाप भ' क' हम ओकर रक्षा लेल ठाढ़ रहबैक, यावत जीवैत रहब। मरि जायब, तावत ओ अपने एकसरे योग्य भ' जायत लड़बाक लेल। बस।" हम बिहुँसैत कहैत रहियनि, तथापि गंभीर रही। बेटीक मतलब बेटा होयब छैक। बेटा बेटियोकेँ समाने अवसर भेटओ। ई की जे कथ ठ माय-बापकेँ विभव छैको तँ बेटा-बेटीकेँ फराक-फराक व्यवहार ? बेटी पौष्टिक वस्तु नहि खाय, दूध कि दही कि घी नहि खाय, कि जँ जल्दी समर्थि भ' जायत ! बियाहक माथ दर्द होयत ! वाह रे लोकक ?"

हमरा बराबरि ई चिन्ता रहय जे हम जे बात काकीकेँ कहि रहल छियनि से तेहन भाषामे कहि रहल छियनि कि नहि जे ओ हमर बातकेँ बुझथि। कतहु पढ़ुआ लोकक भाषा तँ नहि भ' रहल अछि जे उनटा गिलासमे पानि भरब जकाँ भ' रहल हो ?

काकी चुप। ठेंकी बस्त्र। ओहू दुनू स्त्रीक हाथ अपना-अपना ठोढ़ीपर। आँखि हमरा दिस चिरालठ।

हम उठलहुँ एकाएक। एकदम साँझ पड़ि गेल रहैक। आगाँ छोटकी गुहलाहा पितरिया सराइमे पाँच खण्ड सुपारी ल' क' कलना ठाढ़ि छलि।

ओकर आकृति अन्हारोमे बड़ प्रगल्भ बुझायल। हमरो संतोष भेल। बुआरी छड़बैत अ छनसँ बहरा गेलहुँ। अन्हार आंकामे बढ़ैत जखन अपन दलान दिस अयलहुँ तँ सुन्न रहय। केओ कतहु नहि। आङन गेलहुँ तँ माँक तुलसी-पीड़ा पर दिवारी लेसि क' राखल मिझाय-मिझायपर रहैक। हमरा देखलक। चुपे रहलि। फेर जेना किछु कहब मन पड़लैक। तावत उकासी उठि गेलैक।

हमर ध्यान गेल एहि बातपर जे माँक ई उकासी दोसरे प्रकारक उकासीक स्वर छैक। विचित्रताक अनुभव भेल। जेना बूढ़ा साँसनकेँ केयो मजगूत हाथसँ बजा रहल होअय, लगातार! हमरा किछु भय भ' गेल। एखन विशेष क' भय बुझायल। ई केहन खोंखी छैक माँक?"

कैक मिनटपर माँक खोंखी तोड़ देलकैक। एक क्षण मुस्कायत आँचरसँ लाल आँखि पोछैत कहलक: "राशिमे रान्ह क' क' रोटी बना दिय' ?"

हम मूड़ी हिला देलिऐक। हम जनैत छी, माँ हमर मौनक अवसादकेँ, निराशाकेँ एकटा ममत्वपूर्ण आश्वासनमे बदल' चाहैत छलि, हमरा खुशी कर' चाहैत छलि, हमरा रान्ह कयल रोटी नीक लगैत अछि, तेँ आन कोनो साधन ओकरा ठीक नहि। जेना ओकर मनमे एकर तकलीफ होयतैक जे ओ हमरा एक बाटी बकेन दूध गाड़ क' क' नहि द' सकत। से ओकर आकृति-पर छैक। हमरा मौन विचित्र रहय, तेँ चाही जे खयनाइए बचा जाइ। माँकेँ अनेरे पकय' पड़तैक। मुदा, कोनो उपयुक्त कारण कहाँ रहय? माँ ओत'सँ चल गेलि। घरमे एकटा डिबियाक कारी पातर जीह लह-लह करैत रहैक। हम फेर ओलड़ि गेलहुँ। भेल जे एकटा बेस मोटगर तुराइ ओढ़ि मुँह झाँपि क' पड़ि रही आ से तुराइ क्षण-क्षण हमर देहपर गुरुक पहाड़ भेल चल जाय आ ओकरा हम भेदबे नहि करिऐक। ओ त्तोरी! लाकि दिय'। पता नहि की भेल से। डिबिया जरिते रहल। अपन बहिनदाक आङनमे जखन मानस भ' गेलनि तँ ओहो चुल्हा पर माँ रोटी पका अनलक। ओतबा काल आँघाइल बैसलि रहलि होयत।

हमरा खाय पड़ल। माँसँ किछु गप्प करबाक मोनो भेल तँ क' नहि भेल। अनठिया क' पड़ि रहलहुँ। हमरा बुझाइ पड़ैत अछि जे घटनासँ धुरलाक बाद पहिल राति जे ओछाओनपर पड़लहुँ से कय दिनक बाद जगलहुँ। ताही बीच जेना कतेक मासक समय चुपचाप बहि गेल होइक।

हमरा अजगुत लगैत अछि। कोना माँक उकासी साँसनक बाजबसँ बदलि क' मरनीक उकासी बनि धीरे-धीरे निःशब्द होब' लगलैक आ आकृतिपरसँ मांसु आ त्वचा भाक जकाँ उड़ि गेलैक, सेहो जेना जीवित अनुभवसँ नहि बूझि सकलियैक। ओ बड़ निस्पृह जकाँ भ' क' चिन्हहु नहि लागलि पाछाँ हमरा। आ, बकार एक तँ फूटय नहि। फुटबाक कथो बुझाय तँ खाली बौआकेँ देखबाक पियासक तड़तड़ी बुझाय ओकर टक लागल आँखिमे। बौआ ओकर एक मात्र पौत्र, जे जमशेदपुरमे वर्णमाला पढ़ि रहल होयताह अथवा आङुरपर अंक जोड़ि रहल होयताह। हमरा बूझल नहि भेल जेना हमरा सूतलमे ई सभ टा घटना घटि गेल होइक। हम माथपर हाथ ध' क' मन पाड़ैत छी। हमरा याद काल किछु नहि अछि। चुपचाप माटि लेबल खरही आ साँसनक मीत। टटका छछारल देबाल-घर असोराक बीच हम एकसरे बौंसैत छी। गाम भरिक लेल मात्र एक टा घटना भेल छैक, हमर माँ स्वर्ग-वासी भ' गेलीह। सोझामे, लगमे माँक हमहीँ। बेटा पुतहु सभ केयो कतहु, केयो कतहु। बूढ़ी बड़ निस्पृह भ' क' मरलीह। कहियो कोनो तीर्थ नहि गेलीह मुदा हाय रे पुण्य! दिव्य मृत्यु!

ई एकटा घटना, हमर एकमात्र सभ किछु माँक मृत्यु छल। हम एकसर एहि घर-असोराक नाबालिग अधिकारी जकाँ एकटा कोठलीमे पड़ल बिना कननै-खिजने सोचैत रहैत छी।

'मनकेँ मारि क' नहि रही' दुःख सम्वेदना नहि रहैत छैक' 'भगवान वाम नहि गेलथिन्ह हैं' 'आब ओहर तकलीफक दिन बीति रहल छहु' 'एतेक मन नहि थोर करी'... 'बड़ दिन तँ माटि धयलहु अछि। भगवती करथुन तँ नीके-ना सुखसँ रहबह'....

माँक एहि स्मःसंवादक व्यूहमे हम बौआइत-बौआइत कखनो काल मनेमन भोकासी पाड़ि क' कान' लगैत छी। आब हम कत' जाउ? तोँ कह, आब हम की करू? कत' जाउ?

हमरा तुरत छछारल घर असोरामे नहि रहल होइत अछि। हमरा सूतल-जागल निःशब्द नचार उकासी सुनाइ पड़ैत अछि। हमर हृदय फाट' लगैत अछि।

हमरा एहि अचोक्क छछारल घर असोराक अपन रहब बड़ व्यर्थ, असमोहित लगैत अछि। हम माथपर हाथ धयने, कैक हँसोथैत बड़ी काल बैसल रहैत छी। □

माटि, पानि, आकाश

कालिह साँझुका गाड़ीसँ लाल भाइ सपरिवार जमशेदपुर गेलाह। बड़का भाइ चारिमे दिन गेलाह। आन सभ सम्बन्धीलोकनि चल गेलाह आर पहिने। माँक श्राद्ध भ' गेलनि। माँक कालमे सभ कियो जुमल छलहुँ। किछु दिन आङन-दरबज्जा तिसरिया घटक भेना भयो रहलैक। फेर जेना ओ हटबद आ तंबू सभ उखड़ि गेलैक। हम सभ घटनामे रही।

घरमे कोनो वस्तु नहि बहरयलनि। भाय सभ लौअयलाह। उपाय ? हम सहजें कोनो जोगरक नहि। की दितियनि पाइ-कौड़ी ? बोनिहार जकाँ एक डाक्टर ठाढ़ रहलियनि। से लगातार चौदह दिन।

जयबाक काल लाल भाइ कहयो कयलनि—"आब तों की सोचलह ? नहि हो तँ चलह जमशेदपुर।"

हम गुम्मी लाधि लेलहुँ। मन भेल फुर्तीसँ आङन जा क' माँकेँ पुछि अबिऐक ! फेर चकोर लागि गेल। आब हम ई कोनो विचार माँसँ कहियो नहि पुछि सकबैक। हमर मूड़ी गड़ि गेल। ई गप्प चलानेपर ठोढ़ल रहैक। काका सभ चुपे रहथि बैसल।

— की सोचलह ?' फेर पुछलनि लाल भाइ। नौआ हमरा कानमे ठाढ़ भ' क' आङुर तीर' लगलाह। अर्थात् 'हँ' कहिऔक। चलू यहूँ। हम चुप रही।

—'होइतनि तँ बड़ नीक।' बड़का काका कहलथिन। 'एत' आब एकसर की करताह ? रहतो कोना करताह ? भोजनोक प्रबन्ध तँ अपने कर' पड़तनि। बनाउ तखन खाउ। नीक तँ होइतनि।'

मुदा, हमरा मनकेँ एक टा दोसर प्रश्न घेरि क' छानि देने रहय। 'ई बात माँओ किएक नहि कहलनि एको बेर ? बस, हमर निर्णय एतहि भ' गेल। हम मूड़ी लुकओने कहलियनि—"एखन किछु दिन गाममे रहब। घर-आङन तुरन्ते भक पड़' लागत। माँकेँ घर-आङन बड़ प्रिय छलैक। हम एखन गामे रहब।"

हमरा बुझायल, हमर एहि निर्णयसँ भाइकेँ गुम्हैते लगलनि। आगाँ कोनो बात नहि भेलैक। सभ चुप्पे रहल। हम टहलि क' आङन चल गेलहुँ। तकरा बाद फेर हुनकालोकनिक जयबाक तैयारी भ' गेलनि। बैलगाड़ीपर लदा क' सभ कियो जाइत गेलाह।

बाट लेल भौजी किछु बनओने छथीह, अरिसा खजौली-लड्डी, से एक टा अखबारक टुकड़ीमे लपेटि क' हमरो लेल राखि गेलीह जे हम स्टेशनसँ घूरब तँ खायब।

हम, स्टेशनसँ गाड़ी खुजलाक बाद, जीवनमे एतेक ठोस आधारपर प्रायः प्रथमे बेर एहन निरुद्देश्य मनःअनुभव क' रहल छलहुँ।

प्लेटफार्मसँ बाहर आबि क' हमरा किछु फुराय नहि जे हम कत' आ किएक जाइ ? अन्हेरे जेम्हर पयर जाय लागल, हम जाइत गेलहुँ। सहरक सड़कपर बहुत दिनक बाद एना चलैत रही। चललहुँ।

मनमे कोनो प्रकारक इच्छा नहि रहय। मात्र एकेटा अनुभवक भारसँ बोझल रही— अपन निरुद्देश्यताक भारसँ। हमरा, जयबाक लेल कोनो स्थान नहि रहय, आ करबाक लेल कोनो काज नहि।

बड़ भयावह मुखाकृत तेँ टहलैत मधुबनीक गंगासागर पोखरिपर बैसि गेलहुँ। एक समयमे, साँझुक पहर क' कपारपर विभूति लगाय' आ कालीकेँ गोड़ लाग' आबी, शहरक हजारो सफलताकामी विद्यार्थी सभ जकाँ।

भीड़ आइयो छलैक। हम ओहि सबद समकेँ घर' चाहैत छलहुँ जे पोखरिक पानिमे लोक सभक पयर धोलासँ उत्पन्न होइत छलैक। कतोक बीचाक पसरल पनिसाखपर शान्तिपूर्ण इजोरिया छलैक। साँझ मरलाक बाद पहिल इजोरिया।

हम उठि क' फेर विदा भ' गेलहुँ। एहि बेर गाम दिस। भरि बाट, अनेक लोकक जिज्ञासाक जवाब दैत, गुम-सुम। गाम पहुँचबामे देरी भेल कि जहिबये पहुँचि गेलहुँ, मन तकर किछु पुछारी नहि कयलक। आङन अन्हार जकाँ रहय। फेर ध्यान आयल, छैक तँ इजोरिया। तखन आङन किछु इजोत लागल।

तीनू कोठली बन्द रहय। उत्तरबरिया कोठलीक जिंजिर खोलि क' अन्हारमे डिबिया ताक' लगलहुँ ताखपर। ओतहि दियासलाइयो खड़खड़ा उठल। लेसलहुँ। एक टा देह भूलका देख'बला भ्रम भेल। अन्हारमे तेसी टोइया-टापर नहि देब' पड़य से सोचि क' जेना माँ अपने ओरिया क' सलाइ राखि गेलि हो ताखपर। कारण, हमरा मन छल जे सलाइ ओल' हम अपने तँ नहियेँ टा रखने छलहुँ। माँ बड़ जोर मन पड़ि गेलि।

हम चौकीपर ओँघरा गेलहुँ। चारमे बरेड़ी लग अन्हार रहैक। आ किछु-किछु लरखर करैत रहैक। अनठा क' सूत' लगलहुँ। हमर घरमे अथवाक खबरि, लग-पासक कोनो घरक एको व्यक्तिकेँ नहि भेलनि।

लागल जे हमरे टा ल' क' ई संसार छैक। हमहीँ टा शेष छी।

हमरा कोनो कार्यक्रम स्थिर करबाक व्यग्रता होब' लागल। से भ' नहि पाबय। कानमे मौक उकासी बाज' लागय। आ हम सककम्म भेल किछु किछु बातक—एकदम नहि बुझलहुँ जे कोन बातक—प्रतीक्षा करैत रही। किछु होअय नहि।

हमरा भूख-पियास किछु नहि छल। पते नहि चलय जे भूख-पियास किए नहि लागल अछि? साँझ मृत्युसँ हम अनाथ भ' गेल रही, से सत्य, मुदा एखन हम एकोरत्ती ओकर दुःखसँ कातर नहि रही। से यदि किछु रही तँ अपन कार्यक्रमहीन आ निरुद्देश्य जीवनक आशंकासँ भरल रही। कालिह भोर हम की करब आ कत' रहब, से हमरा नहि देखाय। आ, मन सेहो देखबाक लेल व्याकुल रहय जे कालिह भोर हम की करब? भोरक हेतु हमरा कोनो कार्यक्रम नहि रहय। किछु भैयो नहि सकैत रहय। दुबिसीसँ देखी बाध जा क' चीन्हल कोला सभकेँ फेर एक बेर देखि आयब, तकर दूभि-घासक पम्हो छूबि आयब, आरिपर टहलि आयब। एहिसँ फाजुल किछु नहि।

देह हमर, पयरे चलबाक कारणेँ थाकल रहय। से बोध भेल जे मन सक्रिय रहय मुदा शरीर असोथकित जकाँ मोचड़ाय लागल, हाथ-पयर अनेरे पसर' लागल।

पुबारि टोल दिससँ एक टा करुण मीठ गीतक भास बसातपर उधियाइत आबि क' सिरमामे घुरियाय लागल: "नव घर बान्हि गेलै, सेहो पुरान भेलै हे सखिया" "समयक एहि एतेक टा अन्तरालमे बाटपरक दूभि खिलुगन भ' गेलै" "नोन-तेल पैंच भ' गेलै" "देहक वस्तर रत्ती-रत्ती फाटि गेलै ..." हमरा मन नहि जे कखन, विचारक कोन लहरिपर आँखिक पाल पर देहक नाव बहय लागल।

कोनो एक टा मनहूस तारीखमे किछु बात डायरी लिखने रही। बड़ भावुकतापूर्ण। आ अपन आभ्यन्तर तीव्र यथार्थक कटुता सहने रही। ओहिना दुपहरिया क', ठीक दुपहरिया क' पटना आकाशवाणीसँ सरोवरपर वैरागी या अहीर भैरव बजैत छैक। पीच धह-धह करैत रहैत छैक। रिक्शाक पहिया सड़कमे सटि जाइत छैक—चिप्-प्-प्-प्-प् बजैत रहैत छैक, सून जकाँ ई स्वर पातर भेल चल जाइत छैक जे मनक अन्हार उमससमे छेपटाय लगैत छैक, सभ टाकेँ ओसरा दैत छैक। ओहिना सरोवरपर किछु-ने किछु बाजि उठै छै—लगातार। एहि ध्वनिमे किछु नहि रहि जाइत अछि। अपन अस्तित्व नितान्त संगीतहीन पदार्थ जकाँ गीतमे ओँघड़ा जाइत अछि। जेना कोनो लोक अँइठ-कुइठ बचबैत, कात भ' क' डेग राखय, तहिना अपन सम लोक 'गुजरि' जाइत अछि। पड़ल-पड़ल सभ टा अनुभव करैत छी। आँखि मूनि क' पड़ल रहैत छी। मूनल रिक्शीपर कोनो रिक्शो शादिक चलैत

छाया पड़ि जाइत अछि तँ बुझाइत अछि, जेना मेघेक छाहरि पड़ि गेल हो। बड़ी काल एहिना फुसि मेघक—मेघक सभक प्रतीक्षा करैत रहैत छी। हमर चारू कात सरोवरक टूटल तार सभपर मनकल मोति जकाँ ओकर स्वर सभ छिड़िआयल रहैत अछि। ककरो आकृति साफ नहि छैक। एकदम अनचिन्हार। ओकर मनकल मोति सन स्वर आ टूटल तार सभक मध्य कोनो स्थिति नहि छैक जत' हम अपन मनक कोनो व्यक्ति, स्थिति आ प्रसंग बैसा क' जोड़' लागी। किछु नहि। सभ टा फराक-फराक भेल ओहिना रौदमे टटाइत रहैत छैक। हमहूँ पिपनी मुनने मेघक शीतल छाहरिक बाट तकैत रहि जाइत छी। सम्पूर्ण दुपहरिया, तथापि, नहि बीतल पर्यंत अछि। सड़कपर एत' तँ ओत' धरि रौद तानल रहैत छैक।

भरि दुपहरिया पटना आकाशवाणीसँ सरोवरपर किछु-ने-किछु प्रस्तुत करैत रहैत अछि। आ, शान्ति नहि, केहन असचढ़ लोक अछि ई पड़ोसी। हरदम रेडियो लगौने रहैत छैक, आ से बेस ऊँच स्वरपर। हमरा तँ कहलो गेल पार लगैत अछि। कय बेर उबिया-अगुता क' ओकरा मना कर' चाहलियैक, मुदा से क' नहि भेल। तकरो अफसोच अछि। मुदा, बेसी अफसोच एहि बातक अछि जे आब हमर सभ पड़ोसी एहि प्रकारक अनचिन्हार आ हृदय-हीन भ' गेल अछि। भावना तँ लोक आब जेना बेसाहैत अछि। सैह। संसारक गति किछु एहन भ' गेलैक अछि—तेहन दिशामे—जे सभ किछु कठिन। आजुक समयमे सभ टा सजग मिरजहर भ' गेल अछि। एकरा एखन घनश्याम मानू—सब भरोस करबाक योग्य एक टा मित्र, से अगिले क्षण नरनाथ भ' जायत। नितान्त अविश्वसनीय, अयोग्य, अहाँकेँ हानि कर'बला।

विचार आब तकरो नहि छैक। सबहक चिन्ह ई भीषण। दुहन्त छैक तेँ ओतबे दूर धरि जाइत छैक जतबा दूर धरि ओ अछि, आ टूटल-बहल छैक तेँ ओतबे दूर धरि जाइत छैक, जहाँ धरि ओ अछि।

सम्बन्धमे ई बात एहन सपाट वा ओस-माल नहि छैक। से धुसमे अधैत अछि। सम्बन्ध तमक पारस्परिक घात-प्रतिघातकेँ बड़ यथार्थवादी भ' क' देख' पड़त आब। खूजल मन, माथ आ खूजल आँखिसँ। ओ रूमानियतिपूर्ण नजरि आब एको डेग काज नहि देत। आइ धरि छूच्छ आदर्शक रोमैंटिक हवाइमहल बड़ भव्य बनैत रहल। जतबा दिन ओहि महलमे मौज कयलहुँ, बहुत भेल। आब नहि। आब सम्हरू। नहि तँ फेर

ओहि उन्मादमे ओहिना, जीवनक बहुत वर्ष बालु परक घी जकाँ हेड़ाइत रहत। से सहबाक आब ने तँ सामर्थ्य अछि, ने अवकाश। तेँ सोचि-बूझि लिय'।

हम मनक ई बात मानलिऐक। आइ तीन वर्ष पहिने जे हम मनकेँ अपन शत्रु मानैत रही से आइ मनकेँ मित्र क' बुझलहुँ। तय कयलहुँ जे हमर ई मन बड़ समयपर चेतओलक अछि। आब हम घोर यथार्थवादी थिकहुँ। जे छैक आ जेना छैक सैह देखि लेनिहार। जेना छैक से संसार अछि—उपयोगिताक। उपयोगितापर केन्द्रित संसार बहुआयामी थान आ स्थल अछि। से जखन दृष्टि नहि रहल अछि केयो एहि घरमे, तँ हमरो कोन क्षति ? आ मात्र एहू बातपर, जे लोक भेँड़ी-बकरी जकाँ दहाइत जा रहल अछि, एक टा खूब सुगीन सुभीता आ संभावनाकेँ ठोकरबैत रहब कोन अक्लिमन्दी थिक ? ई सभ टा बेकार थिक—फूसि। गुंजाइश आ संभावने थिकैक सभ किछु। आदमी एहि खेल सभ टा करैत अछि। जे चतुर-चलाक रहैत अछि से एकबगलसँ आगाँ बढ़ि जाइत अछि। मीन-मेषवला आदर्शवादी लोक अपन कायरताकेँ अपन वीरताक भारेँ सेंथने पड़ल रहैत छथि। अपन सिद्धान्तक पटाढोपकेँ ओ दुपहरियाक छाहरि बूझि क' सन्तुष्ट रहैत छथि। से सभ आब बेशक। नहि तँ कहिओ भोरसँ एक टा नवलाह, निष्फल आ पाखण्डी लोक बुझल जयताह। से सभ कहथिन। एत' धरि जे बेटा-पुतहु, बेटी, स्त्री। सभ कहतनि जे ओ चरित्रहीन छथि। पाखण्ड करैत छथि। दब्बू आ अहन्ती लोक छथि। किछु कयल पार नहि लगैत छनि अपना बुतेँ, तँ युगधर्मकेँ युगक खराबी आ 'धांधली' कहि क' अपन दायित्व छोड़ा लैत छथि। रहैत छथि एहि शताब्दीमे, बुझैत छथि जे महाभारतयुगक थिकहुँ।

ई सभ टा हम की लिखैत छी अरे-दर्र। होइत अछि जे फाड़ि-चीड़ि क' फेकि दिऐक सभ किछु। सेहो कहाँ होइत अछि कयल।

अपन लिखनाहा शब्द-समूहसँ अतिरिक्त मोह स्वयं अपनोसँ ओतबे मोह रखबाक लक्षण थिक। आ, अपनासँ एतेक मोह रखबाक माने थिक आरो तकलीफ, आरो संघर्ष। कारण जे, समय तँ नहि बुझत हमर मन, मनक मोह। ओ अपन दिशामे बढ़ैत चल जायत। अहाँ अपन मोह आ मत्सर्य ल' क' लीकपर पड़ल रहब। ऊपरसँ सभ टा गाड़ी बढ़ैत चल आयत। अहाँ मन मसोसि क' पड़ल रहब। याबत होश रहत अहाँ मन मसोसि क' सोचैत रहब अपन गलती, पिछड़लपन आ असफलता, तकर 'खोखलापन'। अहाँ की करब ? अहाँ अपन आकुलितरसँ घूरा पर्यंत नहि लाड़ि सकब,

किएक तँ अहाँकेँ हरदम बुझायत जे आब ई जरल मुहँ झँपने पायी। से जहाँ एकसर बीच बाटपर पड़ल रहब आ ऊपर द' क' पूरा समय आ गाड़ी धुगधेल करैत बढ़ैत रहत। बढ़ैत रहत।

हम पछले-पड़ल बूड़ भ' जायब झुरकुट्ट !

आकाशवाणीसँ 'युववाणी'क लेल एक टा अनुबन्ध-पत्र अछि। 'तरुणाई के बोल' ओकर शीर्षक छैक। परसूसँ लागल छी, एक टा पाँच-सात मिनटक कोनो वस्तु बनय, जकरा हम 'तरुणाईक बोल' कहि सकिऐक। तकर दू टा आवश्यकता। पहिल तँ, तत्काल किछु टाका चाही, दोसर सौख थिक ई। दोसर जे एहिमे जे किछु बाँचि जायत से होयत एत'सँ मधुबनी धरिक रेलक मासुल।

ओना जरूरति अट्ठारह टा आरो टाकाक मानैत छी, जकरा ल' जा क' माँक स्वतहीन तरहत्थीपर ध' दिऐक—"ले माँ ! जनिकासँ हथपैंच छलौक पुरा बढ़ुन। मुदा, से अत्यन्त कठिने नहि, असम्भव अछि। तेँ असम्भवकेँ अपना लग घीचि अनबाक चेष्टा नेनपने होयत ने !

हम तथापि बड़ कठिनतासँ, बड़े प्राणायाम क' क' दू पृष्ठमे मात्र किछु पाँती वा वाक्य उतारने छी :—

'हम बहुत रास कविता पढ़ने छी,
निरालासँ यात्री धरिक बहुत रास कविता।
जाहिमे, पुरान, जर्जर बेकार सभ जाओ।
नव प्रभविष्णु आ मेधावी संकल्पक बाढ़ि-पात
फड़कड़ाओ, नव बात, नव लोक आबओ
—रहैक लिखल।

से सभ किछु कतहु नहि अछि,
बैह बूढ़ पाकड़ि चतरल अछि राजियेसँ
सब सबा सब थाकल बटोही, बहुलमान माल लदल
गाड़ीक सभ टा रखवार

पुरने लोक—पाकल मोछ
सभ ठामक अध्यक्ष थिकाह
सदस्य अकादमिएक वा अकादमी पुरस्कृत कैयो वयोवृद्ध
जनिक सेहन्ता आब कविता नहि छनि

कवितापर सम्मतिक प्रकाश छनि।
हुनक चिन्ता-क्षेत्रमे कोनो नव क्षितिजक
संवेदनाक जीवन्त टटका रंग नहि,
मिझायल लालटेन।

नव स्वरपर बम-विस्फोटसँ चौंकल जकाँ
आकृति बेस चोहार सन लगैत छनि
से मुदा ओ कखनो पाग, कखनो तौनी आ कखनो
पानसँ झाँपि लैत छथि
कखनो मोट बतहपोलसँ।

समीक्षामे छपैत छथि : 'नव कविता विधाक प्रतिनिधि,
विद्रोही कवि श्री कोनदन झा सिंह मिश्र 'आक्रान्त'।
(वयस पचपनसँ साठिक मध्ये)

कोष्ठमे अपन सर-सम्बन्धी
वा कात-करोटमे इष्ट-अपेक्षितक चर्चा
शेष सभ संस्कारहीन भ्रष्ट।
तेँ, ने कवि, ने समालोचक छथि।
अरे के पूछैत, आइ तँ सभ कियो समालोचक छथि
(जेना स्वयं ओ)

चनकल चश्माक दरारिसँ सौंसे साहित्यक विस्तृत पृष्ठ
बीचोबीच फाटल लगैत छनि।
से मुदा हुनक दृष्टिदोष नहि छनि !
किएक तँ, सेवा आयोगसँ ल' क'
नियोजनालय धरिक अधिकांश कुर्सी खाली छनि हुनके लेल।
बैह ओहिपर कथ पुश्तसँ विराजमान छथि
यावत धरि हुनक सन्तान बालिग नहि भ' जयतनि
तावत धरि कयल जायत राजकीय प्रतीक्षा—
नव प्रभात पुरुषक।

लक्षक लक्ष 'बेरोजगार' आँखि, हाथ, बुद्धि-माथ, पेट टूटैत रहताह
एहिना अन्हार।

ग्राम पंचाइतसँ दिल्ली सरकार धरि
हुनके संबल चलाए छनि।
हुनका ओत' कोनो बतिया नहि सड़ैत छनि।
सभ ठा निश्चिन्त भ' क' उपयुक्त रौद, पानि, बसात
पाबि रहैत छनि — पसैत छनि।

शासन संरक्षित हुनक परिवार बेस सुव्यवस्त पसैत छनि।
छोट-छोट खिस्सा गामक सुखायल 'दोचा'
एक दोसरपर ओंघड़ायल ओलरायल अछि।
सभ जे सुखाक' खसि पड़ल,
तकर सभक बेह एकके टा कथा अछि
दुस्सह रोटीक बिहाड़ि।
यद्यपि तकरा सरकारी-गैरसरकारी अध्यक्षीकनि,
कहैत छथिन—
मात्र समय, समयकेँ नहि सहि सकबाक लोकक
अपने निर्बलता।

खास ओ जन-साधारणपर ई अभियोग लगा क'
अपनाकेँ दायित्वमुक्त करबाक चेष्टामे लागल रहैत छथि
ताहू अण हुनका सुदृढ़ चड़माल सभकमँ
झुर बजबाक, आरोपक बिहाड़िसँ
सोँसे समाज विक्षिप्त होइत अछि।
एहि विक्षिप्त होयबाक अपने देस भावकेँ ओ
नव पीढ़ीक असहनशीलता कहैत छथि।
रोटी आ घरक लेल भरि-भरि गामक बूढ़ लोकक
लड़ब आ बेर-बेर हारि जयबाकेँ ओ

मात्र नव लोकक अधीरता आ आक्रामकता कहि-कहि
क' छुट्टी ल' लैत छथि।
फेर पाठन करैत रहैत छथि तावत धरि
यावत धरि आकमिन कोनो गामक विद्यापति-स्मृति-पर्वक

मुख्य अतिथि आ विशेष वक्ता होयबाक
रजिस्ट्री नोत नहि धरा जाइत छनि।

आब फेरसँ ओ पुरान जाओ,
नव आबओ फेर अर्क तैयार कर' लगैत छथि,
जे विद्यापति कि कबीर सनक
महाकविक वास्तविक श्रद्धांजलि होयतनि।
मंच पर भाषण बोकड़लाह!

एकटा कोनो घर-आङन कोना नितान्त अनचिन्हार आ तेहुलता लाग' लगैत छैक, से तकर अनुभव हमरा बहुत लगसँ होब' लागल। पहिने तँ बड़ी काल धरि ई स्वीकारे नहि कयल होअय, मुदा एहि यथार्थकेँ बहुत काल धरि टारलो नहि जा सकैत छल। तेँ हम अपन मनकेँ ई मानि लेबा लेल बाध्य कर' लगलिऐक जे ओहीमे जे किछु छैक ताहिमे कोनो नवजीवन नहि आबि सकैत छैक, भाइ अपन मनक विश्वासक मकरध्वजो घोरि-घोरि पियबियौक। ई चेष्टे थिक मात्र मनकेँ मनायबाक। आन कोनो अर्थ नहि होयतैक। एक टा फेर मने। अपन एहि यथार्थकेँ बुझितो कतहुसँ किछु पाइत छल, से बेस नहीँ'र। तेँ ने हमरा दोसरो बेर ओही मोहल्ला आ मकान दिस धकेलसक, जे हमरो हेतु बहुत अनचिन्हार भ' चुकल होयत! ई बात हम जानी। अहाँकेँ आश्चर्य होइत होयत। मुदा, ई थिकैक धरि सत्य।

साँझमे ओकरा घर दिस विदा भेल रही। बेहु परिचित चौबट्टीपरसँ निचलाँ गुड़कीमे मर्दा ऊभर-खाभर अन्हार सड़कपर, बड़ अभ्यास भ' गेल रहय चलबाक। अनेरे हेम ओही दिस विदा भ' जाय तँ बड़ी दूर आगाँ जा क' बुझिऐक, जे आब तँ ओहू आगाँ बढ़िक' ओ घर छैक ओकर। कहियो-कहियो तँ एकदमसँ जखन भीतर पैसि जाइ आ कुर्सी वा पलंगपर बैसि जाइ, तखन पता चलय जे हम आबि गेल छी, सेहो सही-सलामत। अहाँकेँ हमर एहू बातपर विस्मय होयत। भ' सकैत अछि, अविश्वासो होअय, मुदा हम एतबे कहब जे हमरा द्वारा भेल ई घटना कोनो असाधारण घटना नहि छल जे केओ प्रेम कयने होयत तनिका अनेरे अपन-अपन संदर्भमे एहि अनुभवक सत्यता बुझा जायत। तेँ एहि विषयपर विशेष नहि कहब हम।

हँ, ओहि साँझ ओहि चौबट्टीपरसँ जखने गुड़क' लगलहुँ कि बुझायल जे किछु तेहन बात कर' जा रहल छी जे रोगाक पयरकेँ, देहकेँ अनुभव होइत छैक, दू-चारि दिन धरि। हम अपन एहू अनुभवपर चुपचाप बताह जकाँ हँसलहुँ।

तुरत-तुरत एम्हरसँ एकटा छोट-छीन थाकल भीड़ ओम्हर बाढ़ि जाय। कखनो ओकरे प्रतिच्छवि जकाँ एकटा आर ठेहिआयल भीड़ ओम्हर चलि जाय। सभ अनचिन्हार लोक। अनायास हमरा अपना द' बुझायल जे हम ओहि भीड़सँ छूटि गेल छी। से एकसरे छूटि गेल छी। तकर चिन्ता नहि रहय। अपना छुटबाक कोनो अभावो नहि बुझाय। कारण जेना हम एखने कहलहुँ, गुड़क' लगलहुँ। से सैह। गुड़कैत गेलहुँ। आ, अन्तिम ढलानपर जेना गुड़कैत वस्तु मन्द होइत चल जाइत छैक—समतलपर, तहिना हमहूँ अपनाकेँ अनुभव कयलहुँ। तुरन्ते आबि गेल पंच-पंच छड़सँ घेरल बुद्धक कारी महामूर्त्ति। पद्मासन। बन्द मुख्य द्वारपर मोटका सिक्कड़ आ ताला। लोहाक एहि गोल घेरल मूर्तिक ऊपरसँ बीचोबीच दू दिसासँ जाइत एक टा पातर तार लटकल। ताहिपर भरिसक २०-२५ पावरक बल्ब। तकरे रोशनी कुहासमे हेड़ा गेल दूध जकाँ टघरल रहैक। हम सोझे-सोझ बन्द लौह द्वारपर जाक' ठाढ़ भ' गेलहुँ।

जानि नहि किएक, हमरा बुझायल जेना हम एतहि अयबा लेल एतेक व्यग्र रही। हम एतहि आब' चाहैत रही। आब हमरा एत'सँ कतहु जयबाक नहि अछि। हम एकटा भावुक उच्छ्वासक सङ, अपन दुनू हाथक दसो आङुरसँ दूटा स्वतंत्र मोट-मोट लोहाक छड़केँ धरैत बन्द बुद्धकेँ देख' लगलहुँ। आ ई सोचैत साकांक्ष रहलहुँ जे हमर ई उच्छ्वास आ ई चेष्टा कियो देखि तँ नहि लेलक अछि ?

हम दुनू कात देखलिऐक। फेर एक बेर बड़ अपनत्वसँ ताला-बन्द बुद्धकेँ देखलियनि। आब हमरा बुझायल जे हम बुद्ध भ' गेल छी। हम बन्द छी। आ बहुत दिनसँ एके ठाम बन्द छी—स्थावर। अपनाकेँ हम बड़ बेबस अनुभव करैत छी। अपन एही विवशतामे माथ टेकि लैत छी लोहाक बन्द फाटक पर। मुदा, तुरन्त उठा लैत छी। हमरा सन्देह होब' लगैत अछि जे लोक देखि रहल होयत, से 'देवदास' तरहक लोक बूझि क' हँसत। हम सोझ-साझ भ' क' ठाढ़ भ' जाइत छी। यद्यपि हमर दुनू हाथमे एखनो लोहाक दूटा छड़ पकड़ायल रहैत अछि। सोझामे मोटका झुलैत-सिक्कड़ि आ ताला……।

हम सोचैत छी—ई सभ की भ' रहल अछि हमरा द्वारेँ ! हम की क' रहल छी ? हम एहन हल्लुक-फल्लुक व्यवहार क' क' एकटा चंचल चित्त कालेजिया 'हीरो'सँ बेसी किछु लगैत होयब ? कतहुसँ हम कनेको गंभीर बुझाइत होयब जे कि हमरा बुझायक चाही ! ई बाट परहक नाटक हमरा

अपना असह्य बुझायल। तँ चाहलहुँ जे पड़ाइ एत'सँ। मुदा, एहि निर्णयक बादो हमर पंजाकेँ छड़ दुनू छोड़ल नहि भेलैक, हम ठाढ़े-ठाढ़ जेना अपने विवशतापर चढ़ि गेलहुँ……।

ओहि साँझ क' ठीकम ठीक पाछाँसँ आबि क' भौजी हमर निराश कान्ह-पर अपन तरहत्थी राखि देने रहथि।

—"की भ' रहल छैक एत' एकसरे ?"

—"अरे, तों भौजी ?" हम घोट्टे घूमि क' देखलिऐक। ओकर आँखि सिलमिल रहैक।

—"चल। आ।" भवेश आदेश जकाँ दैत, घीचि लेलक। तखन हम तीनू गोटे गेल रही मिताइ काफेमे चाह पीब'।

ओहि सन्ध्या हम कराल रहिऐक। ओकरेलोकनिसँ कसल रहिऐक।

हमर स्थानपर जहाँ रहितहुँ तँ अहूँ लंक लागि क' पड़ैतहुँ—अपन एहन कोनो दुस्सह अतीतसँ पड़ैतहुँ। मन अनचोकमे कम्हापर चढ़ि गेल मोलायम खढ़िया जकाँ, ओकरा झमारि क' फेकि दितिऐक। यद्यपि अहूँकेँ बूझल रहैत जे खढ़िया कोनो तरहेँ अहाँक अनिष्ट नहि करत। एत' धरि जे नोछरबो नहि करत। तथापि, अहाँ ओकरा झमारि क' फेकि देतिऐक।

चाह पीबाक काल केओ बेसी नहि बाजल। भवेशो अपन स्वभाव मोताबिके एक-दू टा वक्रोक्तिक चमत्कार देखाक' गुम-सुम छल। हमरा एहि चुप्पीसँ कोनाकेन बुझा रहल छल। कारण रहैक। हमरालोकनिक उपस्थितिमे एहि प्रकारक चुप्पी नवे बात रहैक। तेँ कही तँ अनसोहाँत जकाँ लगैत रहय। अस्तु, भवेश उचारलक।

—"तोरा सनेँ अकिलक छुतियो नहि छौक। कहु तँ मरैत छें कि जीबैत छें से पर्यन्त नहि कहि गेलें। एम्हर हमरालोकनि व्याकुल रही। भारी मूर्ख छें। हारि क' आइ निश्चय कयलहुँ दुनू व्यक्ति जे अवश्ये ई छौंड़ा कतहु मरि-खपि गेलैक। चली पता क' क' एखबार-तेखबारमे छपा दिऐक। आइ भोरे अलबम ताकि तोहर फोटो तकलहुँ अछि। मजमून तैयार करबामे से फराकसँ समय दिया गेल। "खोये हुए बालक की सूचना। गत कई दिनों से मेरा भाई, जो बाईस वर्ष का बालक है, खो गया है।"

हमरा बड़ जोर हँसी लागि गेल 'बाईस वर्ष का बालक' सुनि क'। भौजी मरम बरक एहि उक्तिपर हँसलि नहि, एक रत्ती बिहुँसलि। बरकेँ

छौंडाकें देखलयि आ बाजलि—"अहाँ सभ बाबूकें कट्ठामे उड़ा देल छिऐक। आब ई दुधपीबा बच्चा छथि जे रूसल छथि ! कहू तँ, एतेक-एतेक दिन बिना कोनो खबरि-सूचनाक लापता रहि जायब नीक बात छैक ? आ कथीक तामस ?"

हम भौजीकें देखबाक साहस कयलहुँ। ओकर आँखिमे वैह सूक्ष्म झिलमिली। एहन मार्मिक क्षणमे हम अपन स्वभावपर पश्चात्ताप करैत छी, से बड़ गहींर। मनकें धिक्कारलहुँ। एके क्षणमे एहन अपन परिवारक लेल भरि जन्म वास्ते कृतज्ञ होइत सङ्कल्प कयलहुँ—आब नहि ई आचरण। भरि जन्म नहि।

—"आ चलाकी छिनका। हरदम कोठलीमे ताला बन्द क' गायब। की तँ केओ आबि नहि जाय। तामसे तँ होइत छल जे भरि जन्म छिनक मुहँ नहि देखी। मुइह। चारि बेर घुरलहुँ। हारि क' सपनें जाक' घुरलहुँ। आ सेहो कोनो हमरे सभ सङ्गे ? एको रत्ती मनमे विचारो छनि बाचल मुहँकें ?" भौजी क्रोधित छलि।

भौजी एक क्षण जेना तारतम्यमे पड़िक' चुप रहलि। फेर बजनाइ शुरू कयलक।

—"ओ छौंड़ी नहि भेटलि रहितय घुरतीमे तँ हम सत्ते छिनकासँ भरि जन्म यदि बजितियनि तँ एक बापक बेटी……। छकासाँद-पियासलि ओहि छौंडीकें देखिक' आश्चर्य भ' गेल। कहू तँ ओकरा हरान-हरान क' देजथिनहि।"

'छौंड़ी' पर भवेश चौंकल—"ओ, आब छौड़ियोक चक्कर शुरू भेलैक अछि ? बेस। तँ एहि भरोसे जे होइ जे कोतवाली जा क' ई लोक जमानति लेत व' से बिसरि जाउ।" फेर अपन कनियाँकें पुछलकैक—"कोन छौंड़ी ?"

—"अनेरे फेर ठट्ठा नहि करू। जकरे अभावमे हुनि सेह किने—यैह इला……।"

भवेश तुरन्त बदलि गेल। इलाकें ओ अपन सहोदर बहीन तीरासँ कम नहि मानैत छैक। ई बात ओकरा बूझल छैक जे ओकर बहीनक ई सखी बड़ अभागलि अछि जे हमरा सन लोकक स्नेहमे बेहाल अछि। एहि सम्बन्ध पर ओ गंभीर अछि। हम मूड़ो निहुरौने नाह चौंढैत रहलहुँ। मन भार भरियाय गेल रहय। ओ कैक बेर आबि क' घूरि गेलि रहय। हम जनैत

रहिऐक ई बात, मुदा उदास घूरलि रहय, से पता नहि। किएक हम सोचि नहि सकलिऐक जे एहन घूरब उदासे घूरब होइत छैक ? हमरा बड़ अफसोच होब' लागल।

—"अनेरे आयलि। हम कोनो बजौने रहियै जे घुरलि तँ हमरे दोष ?" हमर एतबा वाक्य खतमो ने भेल छल कि मुँह दूसैत भौजी बाजलि—"हम कि कोनो बजौने रहिऐक ? हाय रे मनुक्ख ! ओ हरान होइत रहलनि आ छिनका एतबा विवेक नहि ? छि: छि: ?" भौजी बड़ क्रुद्ध छलि।

—"से तँ ठीके। एक दिन तँ हम घुरैत सेहो देखलिऐक ताकि क'। ओहि दोगीबला दोकानमे चाह पीबैत रही बैसि क'।" हम जेना खीसिऐलिऐक।

—"लाज तँ होइत नहि अछि। चाह पीबैत रहथि। अहाँक जे हालत होयत से अहीं भोगब। कनी छिनक बदली तँ होब' दियौन एत' सँ। सभटा नबाबी घोसइत। छिनका लेल जे ततेक प्राण हुसतनि तकरा लेल छिनकर वैह किरदानी। केहन मनुक्ख भेलहुँ, नहि जाइत।'

भवेश गंभीर भ' गेल छल। चुपचाप। भौजी सेहो चुप्पे छलि आब। हम मनेमन इलाक सङ्ग भ' गेल रही। सत्ये, ओकरापर अन्याय भेल रहैक। हम यद्यपि जनैत रही जे ई प्रसंग एतहि खतम नहि छैक। भौजी, एकासरमे हमरा आरो भाषण देत। उचितो छैक। हमर इलाक सम्बन्धपर ओ कैक बेर बुझा चुकलि अछि—किछु अन्यथा वा निराशावादी नहि, अपितु किछु विचारपूर्वक आ सोचि-बूझिक' एकर निबाहमे रही, ताही हेतु ओकरो हमर विचार स्वाभाविक छलैक। हम ओकरा प्रतियें फेर आभारसँ भरि गेलहुँ जे हम मानैत रहलहुँ जे भौजिये छथि ओ घन गाछ जकर छाहरिमे हमर-इलाक सम्बन्ध परिस्थितिक प्रचण्ड रौदमे सुस्ताइत अछि, एहन लू-तापमे अपन अस्तित्व बचा पबैत अछि। ओ ह' ओ सत्तें क छाहरि अछि जकर तरमे हमरा लोकनिक छकासल-पियासल स्नेह सुस्ताइत बाँचल अछि—मुरझायल नहि अछि। इला कने जिद्दी टा नहि रहितय तँ जीवन आर सुभितगर रहितय। सेहटा बड़ भारी दुर्गुण छैक। ओना हमरा अपनेमे ई दुर्गुण कम कहाँ अछि ? तें ने ई स्थान आ दिनक दिन मनक तनाव सहइ……।

एक क्षण हमरा अपन दोष बड़ पहाड़-तन बुझाय लागल। इलाकें जे हरान कयलिऐक से कचोट भेल। ओ एखो रत्ती उदास होइत अछि तँ

अधलाह लगैत अछि। मुदा, अपन एहि मनःस्थितिसँ उबरि सकबाक कोनो रास्ता नहि छल।

"कत' जयबै"—चाह भरिसक खतम करैत भवेश बाजल। हम एहि प्रश्नसँ हड़बड़ा गेलहुँ।

"जयबाक अछि एक ठाम। किछु काज अछि····।" हम झठ बजलिऐक से हमर कहबे कहि देलकैक ओकरा दुनू व्यक्तिकेँ। फेर बाजलि भौजी। "जयबाक अछि जमाय जकाँ बुद्धमूर्त्तिक सोझाँमे एकसर ठाढ़ होब', बड़का काज। अहाँ ने तँ अपने खुशी रहि सकैत छी, ने लोककेँ खुशी रह' द' सकैत छिऐक। अलच्छ नहितन।" ओकरा एहिसँ आगाँ किछु नहि फुरलैक। चुप भ' गेलि।

—"अनका हम किएक नहि खुशी रह' देबैक? कोनो हम अनकर खुशी लूझ' जाइत छिऐक की? आ कि कियो हमरा वास्ते सिनेमा जायब छोड़ि देने अछि? पिकनिकमे राजगीर-नालन्दा नहि जाइत अछि? कि हँसैत-गबैत नहि अछि···?"

इएह आब मनक विष बहराइत अछि ने। हाय रे बुद्धि!

ओ बड़ क्षुब्ध भेलि। जेना, की बाजबो, फुरा नहि रहल छलैक। भवेश दिस देखि क' जेना हमर भर्त्सना करबाक समर्थन प्राप्त क' रहलि हो तहिना एक क्षण चुप रहलि, फेर बाजलि, "सभ जाइत छलैक। पूरा कॉलेजक बैच। लोक घीचि क' ल' गेलैक बेचारीकेँ। ओ तैयो कहने रहैक नीराकेँ जे हमरा पिकनिकपर जयबाक बातसँ बड़ तामस होयतनि। से तँ हमरा सोझाँक गप्प थिकैक। ताहिपर नीरे कहलकैक, चल ने। भौजी कहि देथिन।' ओ बेचारी ताहूपर कहलकैक जे ओ एहिना कसल छथि, ओरो तमसा जयताह। ओकर एहि चिन्तापर हमरे तामस उठि गेल। हमहुँ जबर्दस्ती जाय कहलिऐक जेना हिनक बहु रहलि जे सभ बात हिनकासँ पुछिये क', आने स' क' करथि? आ तेहो पिकनिकसँ घुरलि तँ कहलक ने नीरा जे एकरा दुबारे बोर भ' गेलहुँ छौड़िया कखनो खुलि सकलि ओत'क कोनो कार्यक्रममे? गेल मुँह लटकौने, आयलि मुँह लटकौने। नोर।" हमर आँखि अनायास आकाश दिस गेल। दू-चारि टुकड़ी मेघ छलैक से कतहु ससरि क' चल गेल छलैक। आकाश स्वच्छ रहैक।

"तोरालोकनि कत' चललेँ हेँ?" हम प्रसंग बदलबाक उद्देश्यें पुछलिऐक भवेशकेँ।

'फिल्म देख', नलब?' भौजी व्यंग्यकेँ यथासाध्य आर कटु करैत बाजलि। ओकर तामसपर हमरा हँसी लागल।

ओ बर दिस तकैत बजलीह—"ओहि दिन जे हमरालोकनि सिनेमा गेलि रही ने, सिहुजी जे आयलि रहथि, जबर्दस्ती घीचि-घाचि ल' गेलाह। तकर बड़ अधलाह लगलनि बाबू साहेबकेँ·····।"

"बेकार। हमरा किएक अधलाह लागत? अहाँलोकनि सिनेमा गेलहुँ ताहिमे हमरा अधलाह लगबाक आधार?" हम कहलिऐक।

—"आउ-जाउ। अधलाह लगबाक आधार? बताहो लोकक व्यवहारक लेल आधारेक जरूरति होइक छैक? जाउ तँ सप्पत। अहाँ किएक कसल रही?" ई एक टा तेहन स्थिति होइत छैक कोनो नीक सम्बन्धक, जत' आदमी बहुत इमानदारीसँ संवेदित होइत अछि। हम उदास भ' गेलहुँ। कने तँ चुप रहलहुँ। फेर किछु जबाब देब आवश्यक बुझायल।

—"एक तँ कसल नहि छी। जँ छीहो तकर कारण ई नहि छैक।"

—"की छैक तखन?" भौजी पुछलक।

—"कहियो कहब। एखन उपयुक्त नहि होयत।"

—"कहू ने, तावत गड़ब कारण। हम नहि बुझैत छी की अहाँक पेट?" भौजी बाजलि।

हम बहुतमे नहि पड़ि क' चुप्पे रहब उचित बुझलहुँ।

—"उठ। चल आब।" भवेशक प्रस्तावपर सभ गोटे उठलहुँ। आ, हम सोच' लगलहुँ जे आइ हमरा की फुरायल जे बुद्धमूर्तिये लग ठाढ़ भ' गेलहुँ जा क'? हमरा अपन एहि व्यवहारपर अपन अवचेतन मनक षड्यन्त्र लागल। भीतरमे जखन फुटपाथपर आबि क' हमरालोकनि ठाढ़ भेलहुँ तँ फेर एक बेर भाविकप तय करबाक आवश्यकता उठलैक। हम चुपचाप ठाढ़ रही। भवेश घिहुँसि क' हमरा दिस देखलक आ अपन आँखि घुमा क', गाल फुला क' संकेत कयलक जे भौजी हमरापर बहुत तमसायलि अछि। हमरा हँसी लागि गेल ओकर अभिनयपर। भौजीकेँ बुझा गेलैक जे हम दुनू गोटे नयनसँ किछु गप्प क' लेलहुँ अछि ओकरा ई बात बुझल छैक जे हमरालोकनि कय बेर एना गप्प क' लैत छिऐक, आ से ओकरा रिहढ। एखन ओकरा मुँहपर खौंझा जयबाक चेन्ह रहक छलैक।

—"हमरा एक टा बात फुराइल अछि। एतं धरि अयलहुँ, कने मिस्टर मिश्राकें भेंट कयने चली। की विचार ?" मवेश प्रस्ताव रखलक। हमरा दिस तकलक।

—"हम की करब ओकरा ओतं जाक ?" हम चिन्तित रही जे बेरेक जिद् ने ठानय।

—"हुँ, तरवामे मेंहदी लागल छनि हिनका।" भौजी बाजलि।

फेर एक क्षण चुप रहि कं हमरा दिस तकलक। एहि बेर ओ हमर चेहरा पढ़बाक विचारसँ देखलक अछि, से हमरा बुझायल। हम कने-मने मन सिहरैत सतर्क भं गेलहुँ।

—"आ वस्तु-जात नहि कीनब अयलैक ? अहूँक विमल अद्भुते अछि ! डेरासँ चलल गेलैक अछि बजार करबाक लेल, आ, एतं आबिमे मिश्राजैं फिलाक ओहि ठाम ...।" भौजी खौंझायलि रहय।

—"मिश्रा तँ पाठी, पहिने तँ हएह छथि नकुल-बुद्ध। से अहाँ बोधे नहि देबैक। हएह फिदक चेटल। दु दिन आर कथल रहितय तँ किछु चढ़ि जइतैक एखन ?"

—"भेल। अहाँकें तँ बात भेटल लाकय। आ अपन बोधकें अनकर लेखुस लगा कं म ाक दं चला देलहुँ।"

एहि वार्तासँ हम आब निश्चिन्त भं गेल रही। भौजीक स्वर आब हमर संरक्षकक भार उठा लेने छल। आब ओ हमरा पक्षें बरेकें गंजन कं धं देतैक, ई बात हम जनैत छिऐक।

—"एकटा करैत छी। नहि तँ अहाँ जाउ मिश्रा ओतं। हम हिनका सङ्गें बजारसँ वस्तु-जात लं कं डेरा घुरि जायब। आ अपनो कने 'फ्रीज' लेलाय नहि बैसि जायब, सकाले घरि आयब डेरा।"

मवेश ई प्रस्ताव तुरत्त मानि लेलकैक। ओकर मुद्रासँ बुझायल, ओकरा एक टा विलक्षण मनोरंजन भेटैक अछि। दोसर दिस हम कने-मने अवरुद्ध जकाँ अनुभव कयलहुँ।

—"दस मिनटक लेल कने हुनीक ओतं जयबाक अछि। ओता भं का ओकर साथ बजयओते रहय। की बुझलि ? नहि होयत तँ हिनके लं कं..."

—"हम नहि जायब आइ।" हम हड़बड़ा कं आपत्ति कयलिऐक। ओ बिगड़ि गेलि।

—"नहि जायब तँ कहबो नहि करब। हमरा कि कोनो देखल नहि अछि वा कि अहाँलोकनिक सङ्गें नहि आइ तँ हमर सभ टा काज पड़ले रहि जायत ? अहाँ जाउ।"

मवेश कनखियाकं हमरा देखलक आ व्यंग्यसँ बिहुँसल। फेर भौजीक ओहि वचवैत, दुनू हाथ जोड़िकं भरिसक भगवानकें गोड़ लगलक हमरा सहानुभूतिमे जे आद भेलहु तोहुर दुर्गत...। हमरा बड़ी जोर हँसी लागि गेल। भौजी हुनरालोकनिक ईश्वी संकेत-वार्ता बुझलक। मुदा मुदा ओतेक कड़ा नहि रहैक एहि बेर। ओशायम रहैक।

—"रिक्शा रोकय एक टा से नहि !" ओ कृत्रिम तामसें बाजलि।

एक टा रिक्शावलाकें बजओलिऐक। बैसि कं विदा भेलहुँ। मरि बाट केयो नहि बाजल किछु। सड़कपर ओतो बेस रमनगर भीड़-भाड़ आ-जाहि रहल छलैक। खूब व्यस्त। हल्लो-गुल्ला पर्याप्त। तथापि रिक्शापर गप्प नहि कयल जा सकैत छलैक, से बात नहि। तैयो हमरालोकनि चुपचाप चल जाइत रही।

हमर मन जे' कि आइ स्वच्छ छल, मनक विषाद समाप्त भं गेल छल आ दुलाक प्रसंग मनमे पसरि गेल छल से', मने हम किछु उन्मुक्त अनुभव कं रहल छलहुँ। हम हजार बेर परतिया कं देखलिऐक अछि जे अपन एहन मानसिक स्थितिमे हम सामान्य स्वभावक विपरीत बड़ मुखर आ दुष्टतापूर्ण भं जाइत छी। मुदा, से समय सङ्गें नहि। अपने निकटक लोकक सङ्गें। हमरा शैतानी फुरायल।

—"सङ्गें चलैत छी से बड़ दिब। मुदा, हम दोकानमे नहि जायब से जानि लियं।" हम ओकरा खौंझओलियैक।

—"बुझल अछि। लगक दोकानसँ चूड़ी कीनिकं अहाँकें पहिरा देब। रिक्शापर बैसल रहब होयत कि केयो उठा कं पड़ा जायत ?" ओ कहलक।

हमर दुष्टता निष्फल गेल। कारण जे हमर जतेक अनुमान छल ओकर बिगड़बाक, ततेक ओ नहि बिगड़लि।

हमरा दोकान धरि नहि जायब ओकरा कोनो अधलाह नहि लगैत छैक। एहिना हमरा बैसा दैत रिक्शापर—'दु मिनटमे अबैत छी।' ई नव बात नहि छैक। तँ हमर बोलता नहि लपबापर ओकरा वास्तविक क्रोध नहि, कृत्रिमे क्रोध होइत छैक।

भौजीकें दोकानमे प्रवेश कयलाक बाद रिक्शापर हम खाली दुलाक विषयमे सोचैत रहलहुँ। मात्र ओकरे प्रसंगहीन प्रसंग सभ। पूरा शरीर आ मनपर पसरल सर्दी जेना धोआ गेल रहय। हम स्वयंकें बेस स्वच्छन्द अनुभव

करैत देखल रही रिक्शापर। आ मिलिन्द जे केओ मिन्हार ने भेटि जाय। अनेरे आब ओकरासँ मेलमिलाप करहि पड़त—छुच्छ औपचारिकता। ई बात कम परिश्रम, से'। तावते साँझो लिफाफक बंडिल सभ हमरे भौजीकेँ घुरैत देखलिऐक। बेस। ओ सत्ते जल्दिये घुरि आयलि। रिक्शापर बैसि गेलि। हमरालोकनि डेरा दिस बिदा भेलहुँ।

एक बेर भेल जे पुछियैक—की सभ लेलक अछि, मुदा नहि पुछलिऐक। ओहो बड़ी काल चुप्पे रहलि। मुदा, ओकर हाव-भावसँ बुझायल जे कोनो एक टा बात ओकरा मनमे अढ़ैठिया काटि रहल छैक।

—"अहाँकेँ की भ' जाइत अछि? भरि संसारमे अहाँक लेल केओ विश्वसनीय लोक नहि? लोकक स्नेहपर अहाँकेँ एना सन्देह किएक होइत रहैत अछि?" भौजी एकाएक फुटल रहथि। ओकर स्वरमे साफ-साफ अभियोग छलैक। मन भारी भ' गेल। हम अपनो ई बात बुझैत छिऐक, ई कमजोरी अछि हमरामे। मुदा, हम लचार छी। एको रत्ती उपेक्षाक आशंको भ' जाइत अछि तँ हम बड़ दुःखी होब' लगैत छी। अपन स्वभाव।

—"आब गेना नहि छी। अहाँकेँ बूझल अछि? एहि एक हफ्तामे की-की घटना घटि गेलैक अछि? इला द' किछु अछि बूझल?"

—"कीऽऽ?" हमर करेज धक् द' उठल। की भेलैक अछि? इलाकेँ की भेलैक अछि? हमर मन एहि प्रश्नपर चकभाउर देब' लागल। यद्यपि हमरा बूझल अछि जे होयतैक किछु एहने, मुदा एखने, हमर अज्ञानेमे घटित भ' जयतैक तकर आशंका नहि छल। हम कातर भ' क' भौजीकेँ देख' लगलिऐक। ओ क्षण भरि दोसर दिस ताक' लागलि—पलायनमे। फेर हमरा दिस घूमलि—'एक ठाम करीब-करीब ठीक भ' चुकल छैक। भरिसक देखबाक लेल अबितैक आइ।" एक सेकेण्ड जेना अपनाकेँ संतुलित क'मे चुप रहलि। "ओकरो अभागे छैक कि! छटपटायलि फिरैत रहय। अहाँक कतहु पता नहि। अहाँ अपने स्वभावक कारणेँ खत्ता खायब, बल्कि खत्ता खा गेलहुँ।" भौजी चुप भ' गेलि।

हमर मनक धधकर एके ठाम छिन्न-भिन्न भ' क' पसरि गेल। मनपर धक्का लगबाक बादक वातावरण कतेक अवसन्न शुन्न रहैत छैक! लोक अपनाकेँ खाली ठाढ़ अनुभव करैत रहैत अछि—ठाढ़। शुन्न ठाढ़। कोनो प्रकारक आन विकार किछु नहि। मात्र गतिहीनता, जड़ता।

भरि बाट प्रायः हम आ भौजी एके टा चिन्तामे रही। सेहो चिन्ता तेहन अमूर्त जकाँ रहय, जकर विषयमे बहुत साफ-साफ कहल-सुनल नहि जा सकय। यद्यपि दुनू गोटे मने-मने एक दोसराकेँ किछु कहबा लेल तैयार होइ, मुदा से क्षण जेना बाटेमे बिला जाय। होअय जे की बात होयतैक? ओएह ने किछु गप्प जे ई हमरा कय बेर बुझा चुकल अछि? संभव, भौजी सेहो एएह सोचि क' चुप रहलि हो जे की गप्प? इएह। तँ से अपन ई कहिए चुकल अछि कैक बेर। आगाँ कोनो परिवर्तन तँ भेलैक नहि परिस्थितिमे।

मुदा, ई केहन परिवर्तन छलैक परिस्थितिक, जे तत्काल नहि देखल जा सकितैक, से भरि रस्ते।

एहि प्रसंगपर मन ततेक गह्वरित भ' रहल अछि आइ जे मन होइत अछि बहुत रास लिखैत चल जाइ। ततेक दूर धरि, जकर कोनो ओर-अन्त नहि होइक। कारण, आइ हमर पूरा जीवनो तँ ओहनहे-सन अछि ने! ओर-अन्त नहि छैक जकर। कारण देखियौक, परिस्थिति जीवनमे सभ रंग अबैत छैक तँ मनुष्यपर ओकर प्रभावो सभ रंग पड़ैत छैक। से प्रभाव तेहन अवश्य होइत छैक जे मनुक्ख मनपर पहाड़ जकाँ ठाढ़ो भ' जाइत छैक कौखन-कौखन कोनो बातक तेहन पहाड़ मन पर ठाढ़ भ' जाइत छैक जे ओकर ऊँचाइ आ विस्तारमे आँखिक सोझाँक सभ वस्तु नुका जाइत छैक—अज्ञात बनि जाइत छैक। हमर मनपर एक टा भारी पहाड़ छलि सैह—इला। ओकर चरित्र। हम ओकर बदलामे संसारक कोनो वस्तु नहि चाहैत रही। एहि संसारक कोनो लोक हमरा हेतु ओकर बाद किछुओ महत्त्वक रहय। ओना, कखनो काल मनमे ईहो प्रश्न उठय जे जीवनमे रुपैया-पैसा, आरामक आवश्यकता होइत छैक लोककेँ, ताहि रुपैया, धन आ वस्तुक लेल लोककेँ जान-जी उपछि क' उद्योग कर' पड़ैत छैक आ से उद्यम तखने संभव होइत छैक जखन कि समय भेटय, समय रहय। तखन जँ सभ टा समयकेँ इलेक लेल झोंकने चल जा रहल छी तँ कत' ठाढ़ रहब आ कोना? कतहु ठाढ़ होयबा ले दू हाथ भूमि चाही आ माथ नुकेबाक लेल एक टा एकचारी, से कत'सँ आ कोना?

अहाँकेँ विश्वास नहि होयत भाइ, मनक एहि जिज्ञासापर मन घृणासँ विष भ' जाय—धिक्कार! हम ओही सभ लेल जन्म लेने छी? रुपैया-धनक लेल? हम जन्म लेने छी मात्र इलाकेँ प्रेम करबाक लेल। बस्स। आ, लिख'-पढ़' लेल। सौंसे संसारक लोकतँ एही हेतु जन्मे लेने अछि, ककरो

प्रेम कर' लेल आ लिख'-पढ़' लेल। जीब' लेल प्रेम आ प्रेमकेँ जीबाक लेल क्रिया। सेहो क्रिया लिखब-पढ़ब, कि खेती-बारी, कि चित्रकारी। एकर अतिरिक्त आर की ? जेना अनिवार्य विषय होइत छैक, पढ़हि पड़त, तहिना प्रेम। प्रेम करहि पड़त। बिना एकरे एको डेग कहाँ ससरत ? तखन किछु आन व त, एहन' घरि जे भात-रोटी। तेँ कहलहुँ जे प्रेमकेँ जीबाक हेतु आन कर्म।

कखन डेरा पहुँचलैक रिक्शा, से बुझलिऐक उतर' काल। हमरा एहि बातक बड़ संतोष भेल। खैर, अपन जीवनक ई घटना कमसँ कम एतबा काल तँ टकमूड़ी लगबओलक। नहि तँ कहाँ कोनो घटना आब मनपर असरि करैत अछि ?

पहिले कोठलीमे नीरा चुपचाप बैसलि रहय। आराम कुर्सीपर। उठबाक यत्न कयलथि। भौजी मना क' देलकैक।

—'रह' दियौक। एहन हृदयहीन लोक से ई भावना ! पाँच दिनसँ ज्वर लागल छल से एको बेर अहाँकेँ पुछहु भेलाह जे—'हे हय नीरा, केहन मन छौक ?' भौजी बड़बड़ाइत भीतर चलि गेलि। नीरा हमरा प्रणाम कयलक। मात्र एक क्षण देखि आँखि दोसर दिस फिरा लेलक। हमहूँ कोठलीकेँ तेना देख' लगलहुँ जेना बहुत दिनपर आयल रही, बल्कि पहिले पहिल आयल होइ।

—"आर की हालचाल नीक ?" हम जेना ठेलि-ठालि क' ई प्रश्न मुहक भीतरसँ बहार कयलहुँ। नीरा खाली एक बेर देखलक हमरा दिस। हम स्पष्ट देखलिऐक—ओकरो आँखिमे ओएह अभियोग भीजि रहल छैक। हमरा ओकरा आँखि दिस देखबाक साहस नहि भेल। हम एम्हर-ओम्हर देख' लगलहुँ। पाँच मिनटसँ ऊपरे ई चुप्पी रहल होयतैक।

ओम्हरसँ भौजी दुनू हाथमे दू पियाली चाह लेने आयलि। नीक लागल। एखन छल इच्छा चाहक। हमरा आ नीराकेँ दैत, एक कातमे दुनू पयर ऊपर क' पलथी मारि क' एक टा कुर्सीपर बैसि गेलि। हमरा हुनक नकों लागल ओतय एहि बेरिओगर।

—"जल्दीसँ पीबू चाह।" हमरा कहलक। "की करबैक ? अहाँ नहि आउ। ठकबल छी।" नीराकेँ कहलकैक।

हमरा ई बुझायल जे ल' जायल अवश्ये ई वा हम नहि सोचि पाबी जे

स्वयं हम की सोचैत छी ? की बूझि रहल छी ? हमर मन ने भारी छल, ने हल्लुक।

—"हमरा नहि जयबाक इच्छा होइत अछि भौजी।" हम एक बेर टारबाक यत्न कयलिऐक फेर।

ओकरा दुनू गोटेक आँखिक क्रुद्ध आ विवशताक छाप जीवनमे पहिले-पहिल देखल छल। रोइयाँ सिहरि गेल। ओहि चारू आत्मीय आँखिक छायाक गम्भीरतासँ चेतना भेल रहय जे ई घटना सबसँ बड़ दारुण घटना थिकैक। नहि तँ एहन व्याकुलता किएक होइतैक। ई एतेक-एतेक रास अभियोगमे स्नेह कोना चू-चू करैत रहितैक ! हम मूड़ी निहुँरा क' फेर एक बेर सोच' लगलहुँ। भौजी उठि क' चलि गेलि। हमहुँ उठलहुँ आ बरण्डासँ सटले ठाढ़ीक कातमे उतरि क' किछु छन ठाढ़ रहलहुँ। पयर लग दू-चारि-टा बेलाक ओंस निहुरि-निहुरि क' छुबि रहल छल। नाकमे सुगन्धि पैसि गेल। अनायास झुकि क' तोड़' लगलिऐक। दू टा फूल आयल हाथमे। बाबा कहलक जेबीमे धरैत फेर ठहर' लगलहुँ। हम जनैत रही, हमर एहि व्यवहारक अर्थ भौजी आ नीरा ओएह लेत जे छैक। ओना हम सेहो जनैत रही जे ओ दुनू की दीनू गोटे हमर परिस्थिति जनैत अछि। तब कियो की सकैत छिऐक ? बहुतो स्थितिमे कियो की क' सकैत छी ? तथापि, ओकरा सभक तामसो वाजिबे छैक। तेँ, ओहि तामसमे अपने प्रति रहितो, हमहुँ शामिल छी। तखन ओएह, खाली तामसे क' सकैत छी, सेहो जखन कि क्रियाहीन तामस तँ कोनो समाधान नहि थिक। बल्कि किछु नहि। हम निराश्रित मनसँ घुरि-फिरि क' फेर ओही कोठलीमे आबि क' बैसि गेलहुँ। बैसलाक बाद पता लागल जे दोसर कुर्सीपर बैसि रहल छी। एहि बेर नीराक दुनियाह आकृति सोझेमे पड़ैत रहय। ओ माथ झुकओने रहय। एकाएक ओकरा प्रति बड़ आवेश भेल। ओकरासँ गप्प करब आवश्यक बुझायल। एक बेर देखलिऐक।

—"नीरा, तोंहो कि इएह सोचैत छौक जे एहिमे हमरे टा दोष अछि ?"

नीरा चुपचाप रहलि। भरिसक ओकरा कमबाक स्थिति भ' गेल रहैक। ओ दाँतसँ ठोर जैलबाक यत्न क' रहलि छलि। हमरा ओकर अत्यन्त मिनेह्री सर्वी। ई प्रश्न ओकरे जीवनसँ लागल रहैक—सुख-दुःखक निर्णयक प्रश्न छलैक। ओकर दुःख उचित रहैक। हँ, ओकर एहि व्यवहारक असरि हमरो पर गहींर पड़ल, से सत्य। कारण, दोसर पक्ष हमरे छल। परंच हम एकसर

रही। हमरा प्रतिक सहानुभूति बड़ बँटायल रहय जेना भौजीक, भवेशक, वा स्वयं नीराक। ई बात सोचि क' हम्हूँ उदास भेलहुँ। नीराकेँ हम फेर देखलिऐक। एहि बेर ओकर आँखिसँ आँखि मिलि गेल।

—"तोँ ओकर अभिन्न सखी छहीक, नीरू। तेँ तोरासँ बूझ' चाहैत छियौक जे सभटा दोष हमरे ?"

—"तेँ ककर ? ओ कुमारि-बारि अहाँक पाछाँ बौआइत रहलि आखिर ओ करैत की ?" नीराक स्वर आक्रोशेँ व्याकुल छलैक।

—"मानलियौक। मुदा, हमहीँ की क' सकैत छिऐक ?" हम कत' रखबैक ओकरा ? की खोअयबैक ? सभसँ पहिल आ भयावह प्रश्न तँ ई अछि हमरा आगाँ।"

—"की खोअयबैक ! अहाँलोकनिक यैह चिन्ता अद्भुत होइत अछि। एतेक लोक खोअबैत छैक, रखैत छैक कि नहि ?"

—"ताहिमे अंतर छैक ने। खाली भावुकतामे सोचि लेलासँ समस्याक समाधान नहि ने छैक नीरू ! तोँ ई समस्या एखन नहि बुझबहीक। आ ने, तोहर इलो बुझैत छैक। हमर सभ किछु मोचलह-कपसाक बादो, समयक एहि सीमामे इलाक परिणाम बदलल नहि जा सकैत छलैक। हम तँ तँ अपनाकेँ रुष्ट रहैत छी। ओकरो दिससँ अपना पर अपने क्षुब्ध रहैत छी—घृणा करैत छी। मुदा, ई क्रोध आ घृणा तँ कोनो समाधान नहि ने थिकैक ! हमरा द' तोँ अनेत छेँ। हमर ई बेकारी कहिया धरि रहत, किछुओ निश्चित नहि अछि। एहनामे हम ओकरा कोना बुमयबैक ? ई कथा एहि दुआरे कहि रहल छिऐक जे जरूरति पड़ौक त कहियो ओकरा कहिहैक। ओकर मनक विष हमर एहि स्पष्टीकरणसँ कम होइक तँ हमरो किछु सुभीता होयत जीवनमे।

—"तुच्छ भावना किछु नहि छैक नीरू। कारण, कैकटा महान महान भावना पर्यन्त शुद्ध लौकिक स्तरक भौतिक अभिव्यक्तिक बिना व्यर्थ होइत छैक झूठ। आ लौकिकता कि कोनो प्रकारक भौतिक अभिव्यक्तिक आधार छैक—अर्थ, रुपैया। तेँ आइ मात्र यैह छैक पूरा जीवनकेँ निर्धारित कयनिहार कारण। से सम्पूर्ण पक्षक प्रेमसँ ल' क' मात्सर्य धरि।"

हमरा ई बोध रहय जे नीरूकेँ हमर ई बात सभ अरुचिकर लागि रहल छैक। तैयो हमरा कहबैक रहय—"की करबैक ! इएह तँ विवशता छैक।

हमरा लोकनिक जीवनक सभसँ बेसी महान् चिन्ता आइयो धरि अन्न आ घरे बनल अछि। उपाय ? अपन मन आ सुभीताक खेल ककरो गरामे ढोल बान्हब उचित नहि ने ! हमरा मजबूरी सँह सोच' पड़ल। निर्णय लेबामे, अपना जनैत हम कोनो पक्षपात नहि कयलहुँ अछि, नीरू। से आत्मा साक्षी अछि।" हम चुप भ' गेलहुँ। फेर सोचलहुँ जे आत्माक गवाही हम किएक देलिऐक ? हमर मनक कोन अन्हरिया अछि जे आब साक्षी सभ जुमा-जुमाक' अपन निर्णयक समर्थन करा रहल अछि ?

ओना सत्य बात तँ ई जे कोनो निर्णय छलैके की ! इलाक सेहो निर्णय होइतैक, सेहो ओकर परिवारक लोक द्वारा, सेहो हमरा भेटि जाइत। एकरामे अन्तर तँ किछुओ आनल नहि जा सकैत छलैक। तँ मूड़ी निहुरा क' प्रतीक्षा करू—सैह साध्य। आ इहो जे ओकर हित होउक। सुखी रहओ, जे कि सभ चाहैत अछि। अपन इष्टजनक हेतु भावनासँ सभ चाहैत अछि।

भौजी आयलि। एक क्षण हमरा दुनू गोटेक बीच ठाढ़ि भेलि। फेर आदेश दैत जकाँ बाजलि—"उठ'।" हम नीरूकेँ देखलिऐक। ओकर आँखि बुझायल जेना हमरा धकेलि रहल हो। उठलहुँ, आ चुपचाप भौजीक सङ लागि गेलहुँ। खाली एक बेर मन धक् द' अवश्य रहल जे एहि बेरक इलाक ओहि ठाम जायब आन बेर जकाँ नहि अछि।

ओहि दिन इलाक ओहि ठाम जयबाक घटना एतबे मोन अछि। भरि बाट हम दुनू गोटे चुप रही। किछु गप्प नहि कयल होअय। कंठ लग आबि-आबिक' बात घूमि जाय।

ओकरा ओत' जखन पहुँचल रही तँ परिवारमे, हमरा दुनू गोटेक पहुँचबाक प्रसन्नता रहैक। इलाक माय भौजीपर स्नेहसँ उलहन दैत रहलैक जे "एना तँ उचित नहि। कय-कय बेर अहाँकेँ कहा पठओलहुँ, तखन पर्यन्त नहि अयलहुँ।"

हमरा दिस देखि क' बाजलि—"बहुत दिनपर ! कतहु बाहर रही की ?" हम ओकर प्रश्नपर कनेक बनौआ बिहुँसी दैत ठाढ़ रहलहुँ।

—"इला कहाँ अछि ?" भौजी पुछलक।

—"आर कत' होयति ? अपन काल-कोठलीमे।" माय किंचित खौंझाइत बजलैक। तथापि, ओकर स्वरमे एक टा दबल प्रसन्नता रहैक से बुझा गेल। "एकर अर्थ, बात पक्का भ' गेलैक अछि।"

—"चलू, बैसै ने जाउ ! भवेश बाबू नहि अयलाह ?"

—"एक टा जरूरी काजे बाहर गेलाह अछि।" भौजी संक्षिप्त-सन उत्तर दैत, हमरा "आबय" कहैत हुनक कोठली दिस ल' गेलि।

कोठलीमे मात्र ओतबे प्रकाश रहैक जे बाहरसँ खिड़की बाटे आबि रहल रहैक। जखन हमरालोकनि पहुँचलहुँ तँ ओ ओछाओनपर चट पड़लि रहथ कुहिया-कुहिया क'। अंदाज लागल जे ओकर जबर्दस्त 'मेक-अप' कयल गेल छैक — भव्य! ओतेक कममो प्रकाशमे से बात देखा गेल। हमरालोकनिक आहटिसँ ओ हड़बड़ा क' उठि बैसलि। भौजीक दोसर कोनपर भौजीकेँ बैस' ले संकेत कयलकैक। हमरा बैस' कहलक भौजी कोनमे राखल खजिया कुर्सीपर।

—"एना अन्हार कयने अलच्छ जकाँ की पड़लि छलीह?" भौजी कहलकैक। "रोशनी बारि दहीक।"

—"की होयतैं भाभीजी। ठीक तँ छैक। रह' दियौ ने।" ओ विरोध कयलकैक। ओकर शब्द बहुत दिनपर सुनने रहिऐक से मनमे औंटल दूध जकाँ तेना उतरि गेल, जे असह्य भ' गेल। बड्ड उदासी रहैक ओकर बोलमे।

—"किएक? कतेक देखबौ भरि आँखि तोरा। केहन लगैत छें?" हम हलुक वर्तन कहलिऐक, तत्काल दू टा अर्थसँ। एक तँ ई जे हम एहि घटनाकेँ गंभीर नहि छी, दोसर ओहो हमर गंभीर नहि होयबाक बातक प्रतिक्रियामे अपन उदासी त्यागि लेअय। कम उदास वा दुःखी रहय।

हमर कहब खतमो टा भेल छल कि ओ उठलि। जाक' पुट द' बिजली बारिक' ठीक हमरा सोझाँ ठाढ़ि भ' गेलि। हम छनेक स्तब्ध रहि गेलहुँ। फेर सहज। रोशनीमे ठाढ़ि हुनकेँ बड़ी काल देखल जा सकैत छलैक। मुदा, कौन कारणेँ हमर आँखि नहि ठहरि सकल। एतबा मन अछि जे ओकरा आँखिमे कतहु कोनो ताप नहि छलैक, एकरा संयत अभियोग भरि छलैक हमरा प्रति। से जीवन भरि रहलैक, ई अनुमान हम ओहि बेलिऐक। तँ ओकरा बेसी नहि देखल भेल।

हँ, पता नहि किएक, तकर तुरन्त बाद जे पहिल चिन्ता भेल से छलहु— "आब जीवन भरि हम एकरा छूबि क' स्नेह नहि क' सकब।" हम हताश, मूड़ी निहुरा लेलहुँ। होअय जे तुरन्त पड़ाइ। हुनक गुलाबी साड़ीक जड़ीक फूलसभ हमरा आँखि-ठोहकेँ नोछड़' लागल। ओकर समस्त शृंगार हमरा उद्विग्न क' देलक। आ हम अहाँकेँ कहैत छी जे, जखन दशकाक साड़ी कीनि क' हम एहि जन्ममे कहियो द' सकितिऐक, सेहो सन्देह। सत्ये। आ, हमरा

ईहो स्मरण अछि जे जीवनक वास्तविक ओहन गम्भीर क्षणमे हम ओकरा देह परक साड़ीक दामक अंदाज कर' लागल रही। मन कहने रहय, बड़ दामी छैक, तेँ अपन अक्षमतापर उदास भ' क' टूटल रही। चुप।

हुनका सेहो चुपे रहय। जाक' अपन जगहपर बैसि गेलि। भौजी सेहो चुपचाप। जेना किछु फुरा नहि रहल होइक। हमरा ई बात कोंचादय लागल। ओ किछु कहैत अछि ने किएक? हम चाहे भाग अपेरे देख' लगलहुँ। एही देखबामे एक बेर हुनकर आँखिसँ मिलि गेल। क्षणो। हम तुरन्त पकड़लहुँ ओकर नजरिसँ। ओहो मूड़ी गोंतने बैसलि रहलि।

—"देखि जाइ गेलहुँ?" भौजी पुछलकैक।

हुनका कान' लगलैक। ओकर कानब देखल जा सकैत छलैक। हिचुकि-हिचुकि' ओकर कननाइ सुनल जा सकैत छलैक। भाइक पुछलासँ पछताबा भ' रहल छलैक आ हमर हुनलासँ क्लेश।

ई बड़ विचित्र बात जे एक दिन ओकर 'नहि कनबासँ हमरा कुशायल रहय जे एकरा अपन एहि परिणामपर तकलीफ नहि छैक आ दोसर दिस कान' लागबसँ कुशायल जेना हुनकेँ बड़ क्लेश छैक। जखन कि सत्यता तँ ई होयतैक जे जँ तकलीफ होयतैक तँ दुनू हालतिमे एक रंग। नहि तँ एखनो नहि। मात्र नाटक जकाँ एक आर दृश्य!

तखन ओकर माथ अपलेक आ हलुके स्वरे गंजन कर' लगलैक ओकरा।

—"इएह बाल ठीक कैल दिनसँ। नहु तँ, एहन शुभ-शुभ क' ई परिस्थिति भेल अछि आ से अलच्छि सन कानब की थिकैक? एकरा कनबाक चाहिऐक एहि बातपर? ओकेो सुनय से की कहय!"

(बिचबेमे देखैत कतेना किछमक कित्ता टूटि गेलैक। साँसे पसरि कारी शून्यता। नि.शब्द।)

हमरा एखनो आँखि नहि खुजैत। दू टा बगड़ा फड़ैत-फड़ैत छातिएपर खसि पड़ल। आँखि भक् द' खुजि गेल। तखने एकाएक भोरका सभ टा ध्वनि कानमे अबेरे दड़' लागल। आँखि मीड़ैत देखलिऐक जे राति भरिसक बिनु केबाड़ बन्ने कयने सूति रहल छलहुँ। कोनो क्षति नहि। केयो लैयो जाइत, तँ एहि घरसँ की ल' जाइत? आब यदि कोहो-घैल ल' जायत तँ छुच्छे। आ रहय तँ कोनो कोहेमे कि आने ठाम दू-टा चारि टा पाइ-कैंचा राखि दैक। आब तँ सेहो खतम।

मनमे एकाएक पैघसन आशा जागल। कतहु माँ कोनो कोढ़ा-तोसामे लय दू सय राखि ने गेलि होअय हमरा ले। तकबाक चाही। फेर हँसी लागि गेल। फेर घृणा भ' गेल।

छाती तर नेहुआ गयलहुँ आ की करी आब से स्थिर कर' चाहलहुँ। किछु नहि क' सकलहुँ। खौंझा गेल मन। प्राय: भूख सेहो लागल रहय। मोजर नहि दियैक ककरा। मुदा, किछु बेचैनी तँ लगातार बुझाय। तखन अपन दुगर होयब गड़' लागल। मनमे क्लेश भेल। की करी? कत' जाइ? ककरा लग?

एक पियाली चाह चाही। एके पियाली चाह चाही। के देत? माँ? इला, भाभी, सुस्मिता, बौआ, के? छातीमे नेहुआ गड़' लागल। दुनू हाथमे मुह नुकाक' पड़ल रहलहुँ। ई कहुन विचित्र बात छल जे हमरा आखिर एक पियाली चाहुक अभाव एना भ' क' तोड़ि देलक···

तखने हमरा बुझायल जे चौकठि लग आबि क' केयो ठाढ़ भेल अछि। से अनेरे बुझायल। तैयो भ्रम मानि क' पड़ले रहलहुँ। तखन जे टुनटुना क' घटल किछु, से ताहिसँ सोर-फोड़ उठि गेलहुँ। चौकठि लग कहना ठाढ़ि रहय। शान्त। ओ हमरा सोर कयने रहय। हाथमे एकटा मोटरी रहैक। हम हड़बड़ा क' बैसि गेलहुँ। विश्वासे नहि भेल।

—"की बात छैक···कहना?"

ओ कोठलीमे आबि, चौकीपर एक कात मोटरी राखि देलक आ दुनू हाथ आगाँ लटका अपन पंजा बनाक' ठाढ़ि भ' गेलि। ओकर आकृतिपर कतहु कोनो घबड़ाहटि वा व्यस्तता नहि छलैक। मात्र एक टा निर्णयक स्थिर विश्वास जमल रहैक। हम काँपि गेलहुँ ओकरा देखि क'। आँखि नहि ठहरल।

—"की बात क···कहना?" हम फेरो तोतरा जकाँ गेलहुँ।

—"कहाँ किछु? अहाँ एखन धरि सुतले रहब, राजा भाइ। उठबैक नहि?" ओ अतेक निरुद्विग्न भ' क' बाजलि तनेक आर हमर हृदयकी किछु बढ़िये गेल।

"—नहि बुझलियहु। तोँ भोरे-भोर अयलह अछि। काकी पठओलखुन अछि?"

—"हम अपने अयलहुँ अछि। अपने काजे। हम एत' रह' अयलहुँ अछि।"

हमर तँ माथे सन्न द' ल' लेलक। अनर्थ करैत अछि छौड़ी। हमरा किछु फुरबे ने कयल। की कहियैक, की नहि?

—"एना जे तोँ अयलेँ अछि, लोक की कहतौक? ई बड़ अनुचित काज कयलेँ कहना।" हमरा स्वरमे किछु भर्त्सना छल।

—ओ निचैन छलि। बाजलि—"लोके दुआरे तँ दिनमे अयलहुँ अछि। भरि राति अहुँछिया कटलहुँ अछि। अहाँ रातिसँ भुखले होयब, हमरा बूझल छल। तैयो एही लोकक दुआरे हम दिन-देखार अयलहुँ अछि। हम अहाँक ओत' चोरा-नुकाक' नहि, देखाक' अयलहुँ अछि, राजा भाइ।"

कहनाक स्वरक दृढ़तासँ हमरा भय जकाँ भ' गेल।

—"छि: छि:; ई कोना फुरयलौक तोरा? समाज की बुझतौक तोरो, हमरो? एना भेलैक अछि कहियो कतहु? दोसर, हम तँ सोचनो नहि रही जे तोँ एना भ' क'··

ओकर आकृति पहिल बेर मिला गेलैक, उदास भ' क' झुकि गेलैक। हमर प्राण अधरहिमे, जे केयो अयलैं आ देखलकैक तँ भरि गाम थड़ा-भठोअलि पर्यन्त भ' सकैत छैक। थूक फेकत लोक, से तँ फराक। हमर हृदय काँपि रहल छल। किछु ने फूरय।

—"हम तँ किछु सोचियेक', विश्वासे क' क' अयलहुँ, राजा भाइ। हमर आर कोन बाट अछि?" एक पल ओ चेना किछु सोचलक। "दोसर, वैह बाट तँ अहीँक देखाओल। हम कहिया धरि ओ अन्याय आ कष्ट सहैत रहब? हम अपन जीवनक विषयमे निर्णय अपने किएक नहि ल' सकैत छी? अहीँ तँ मायकेँ कहने रहियैक। आइ अहीँ अनचिन्हार जकाँ······"

—"कहने रहियन्हि कहना। मुदा, से व्यक्ति हमहीँ नहि ने होइ। तोँ तँ बताहि भ' गेलेँहेँ। तोरा ई बुझल छौक जे अपना दुनू गोटेमे सम्बन्धो अछि······। तोँ तँ एकदम बताहि भ' गेलेँहेँ। छि:। जो, तोँ घुरि जो।"

—"हम नहि मानैत छी। लोक कहयो फुनटा। हम नहि मानैत छी। अहाँसँ सेसी एहि बातकेँ आर के जनैत अछि राजा भाइ जे हम अहाँक भरोसापर एतेक भयावह विचार ल' क' पहिल बेर, आ भरिसक आखिरीये बुझू जे अहाँक घरमे आयलि छी—हम अहाँ लग रह' आयलि छी। अहाँकेँ आब के मानस क' क' देत? अहाँ कोना खायब? कथम खायब? एहि घर-असोराकेँ के बहारत-सोहारत? असोरापर बैसि क'··"

हम ओकर बातकें बड़ अर्का सहैत रहलहुँ काग कपारपर। कहलिऐक, "करुना, तेना जर्का नहि कर। भरि गामक लोक हुनू गोटेकें कोठलीमे बन्न क' क' आगि लगा देतौक। हुनू गोटेकें।"

ओ निर्भीक, भभा क' हँस' लागलि। हम डेरा गेलहुँ। एहि बतहीक स्वच्छन्द हँसी सभ सुनतैक आ दौड़त एहि आङन। हम संकोचें गड़ल जाइत रही।

—"राजा भाइ, परवाहि की ?" ओ बाजलि 'अहाँक गोटेक संङ सीमि सकब, मोनि देवैक सतुक। जखन नहि सकब, ओ सभ डाहि देत। ठीक छैक। जँ हम अहाँपर भरोस नहि करी, अहाँ हमरा एकपरि पुरा दी, ई कोन बुधियारी ?" ओ झुकलि अर्का नेनि। एक छन चुप रहिक' देखलक। बाजलि—"ओना राजा भाइ, अहाँ कहब तँ केरो हम घुरि जायब। फेरो ओही अन्यायक वातावरणमे घुरिक' डूबि जायब। व्यर्थ जखन कोनो बात अन्याय बुझना जाइत छैक, ओकर छुटकाराक बाट खुजल भ' जाइत छैक, मनुष्यकें से रहता अपनाक' अपनाकें सुखी अपनाक अधिकार बुझल भ' जाइत छैक, तँ फेरसँ पुरना अन्याय आर बेसी भयावह बुझाय लगैत छैक, नहि सहल होइत छैक। नहि जानि आब कैक दिन हमरा बुतें होयत सहल ओ वातावरण''''''।"

ओ फेर एक छन चुप भेलि। जेना मुस्ता क' सोचलक।

—"एत' अयलहुँ अवश्ये। मुदा, जखन अहाँ नहि मानलहुँ एकरा त' कोन पुछापर संख बाजत ?" ओ चुप भ' गेलि। चेष्टासँ बुझायल जे ओकर हाथ आब मोटरी दिस बढ़तैक। हमरा मनमे बड़ी जोरसँ किछु बाजल।

आब हम निर्भय रही। हम एक टा निश्चयपर पहुँचल रही।

—"करुना, सह' सभ टा सोरे पड़तौक। सभ अपमान आ दुर्गजन। हम, तथापि, पुरुष छी। बेसीसँ बेसी मर' पड़त। सोचि लेलहुँ ?"

ओ हमरा देखलक। खिहुँसलि। आ, लग आबिक' ठाढ़ि भ' गेलि। आब हमर मनक सभ उत्तेजित बन्हन खुजि गेल। एहि समुद्र हिलबमे हाथ महक दलाक मुहल पर्यन्त गलि गेल ? पता नहि कोना गलि गेल—कोन स्थानपर'''''? चानिक कोन ओआरिपर'''''?

बुझाय लागल जे हम एत'सँ जीवन दिस जा रहल छी। मृत्युक वातावरणकें हम बिता क' आगाँ बढ़ि गेल छी।

आब एकर प्रतीक्षामे रही जे कोनो क्षण दस गोटे लाठी-भाला गड़ाँस लेने, कि ओहिना चिकरैत ड्योढ़ी टाट लग आबि क' ठाढ़ भ' जायत आ हल्ला कर' लागत, फज्झति कर' लागत। तखन झगड़ा। फेर किछु आर, किछु आर'''। मुदा हमरा हँसी लागि गेल। हम उत्साहसँ अँगेठी-मोड़ कयलहुँ। हमर सम्पूर्ण देहपर करुनाक आँखि घूमि रहल छलैक। हमरा नीक लागल। बड़ थाकल आ हताश रही। ओकर आँखिसँ अपन देह सोहरायल जायब बड़ आरामदेह लागल।

ओकर गोर-नार हाथपर मोट-मोट मेहदी लागल रहैक। कपारपर सिन्दुरक लाल ठोप। हाथमे खूब चक्-चक् करैत एनेक-एनेक क' चूड़ी। हम ओकर हाथ घीचिक' अपन आँखिपर ध' लेलहुँ। हु क्षण !

ओ आवेशसँ अपन हाथ छोड़बैत हमर पयर पर राखिक' गोड़ लागलक। 'सभ चूड़ी पहिरलहुँ अछि आइए''''।"

हम ओकरा देख' लगलिऐक। तावत आङनमे दोलक कँकटा स्त्रीगण टाकु-नन आँखि भ' कि रहल छलीह। ओही गरोहमे हमर काकी छलीह। हमरा हुनक आकृति सड़ल गोबरसँ नीपल आङन जकाँ बुझायल। हम क्षण भरिक लेल बताइराइयो क' स्थिर खिहुँसय लगलहुँ।

ओहि राति करुना-सभ काकी अयलीह आ जे गारि-श्राप देबाक छलनि द' गेलीह। पंचैती बैसयबाक धमकी द' गेलीह। करुना निर्विकार चूल्हि फूकैत रहलि आ आँचरसँ धुआँक नोर पोछैत रहलि। हमहूँ चुप्पे रही। ई घटना हम अपन सम्पूर्ण विश्वास आ उद्देश्यसँ स्वीकारि चुकल रही। एकरासँ फीरि जायब हमर जीवनक सभसँ पैघ मर्खता होइत। एकरा अस्वीकार कयलाक बाद हमरा हेतु मात्र आत्महत्ये टा बचैत। हम जीब' चाहैत रही। आ सेहो, हमरे मनक आदर्श करुनाक रूपमे यथार्थ भ' क' खोआँमे आबि क' ठाढ़ि भ' गेली तँ ओकर अस्वीकार हमरा हेतु लज्जाजनक छल। हम करुनाकें घुरा नहि सकैत छलिऐक।

गाम भरिक अनादि कालसँ चल आबि रहल तथाकथित प्रतिष्ठापर ई घटना भारी बड़ा लगओलकैक। लगओक, परवाहि नहि। करुना आ हम कतेक दिनसँ सङ्गे रहैत छी। क्रोध आ प्रतिशोधमे करुना, बिना हमरा कहने अपन सासुर हमरा एहि विषयक पत्र लिखि देलकैक। हमरा सभसँ सभ घृणा करैत अछि। सभ चाहैत अछि जे ई दुनू मरि जाय। मारहु चाहैत अछि।

पंचैती बैसल। डेराओल-घबड़ाओल गेल। किछु नहि। भरि गाममे एकसर भेल दुनू गोटे रहैत अपनहुँ अछि। मुदा ई गीत कहिया धरि चलतैक ? जेना-तेना जोड़ि-जाड़ि क' एखनधरि तँ चलल अछि, एक संजी-कुसंजी, मुदा भविष्य !

राति बड़ी राति धरि हम आ करुणा गप्प करैत रहलहुँ जे आब आगाँ की होअय ? गाम छोड़ि क' चली की ?

करुणाकेँ ई प्रस्ताव सम्पूर्णतः अस्वीकार छैक। ओ हमरा हमर बाँक बात मन पाड़ि दैत अछि बेर-बेर "माटि धयल'हु-ए, ठीक छै। इष्टदेवता करथुन तँ सुखसँ ...!"

एहि दबावमे करुणा हमरा दोड़ब' चाहैत अछि। की हो, कोना हो ? खेती-पथारी तँ हो, मुदा कोना ? कत'सँ ई समटा सरंजाम जुमय ?

एक टा बड़दसँ खेती होअय ? सकठैती करने रही ओहि बेर। मुदा से तँ एहि घटनाक बाद सभ समाप्त अछि। आब कोनो बाट नहि। हमरा दुनू गोटे कोना सुतैत छी, कोना जगैत छी, से हमरा सभसँ बेसी टोलबैये-लोकनिकेँ बुझल छनि।

निराधार छी। भविष्यहीन छी। एहि गुनि-धुनिमे, जानि ने, कोम्हर बाटे हमरा लम्बोदरक हँसी मोन पड़ल। चारि-छ' दिन से तँ ओहो मुह फुलओने रहल। मुदा, आब ओ सहमत अछि। आब तँ ओ चिक्कस-चाउर पर्यन्त पहुँचा जाइत अछि, मुदा नुकाक'। लम्बोदरक अतिरिक्त कोनो बाट नहि। ई बात हम बाजिक' कहलिऐक करुणाकेँ। ओकरा हँसी लागि गेलैक, "पहिने तँ हुनक एक सय गंजन सुनू तखने कोनो बात। बेस गप्प करू।"

कोठलीमे आयब पहिने तँ गछबे ने कयलक। फेर कहुना क' आयल। कहाँ तँ पहिने अयबो नहि गछय। "दोस्ती कमी नहि करबौक। मुदा समाजोकेँ तँ देख' पड़त। जीब' तँ एतहि पड़त भरि जन्म। खाहे जेहन भारी काज तों बुझैत होइहीक एकरा, समाजक नजरिमे तँ अनर्थ क' देनहीं ने ! तेँ की करू ? तोरो नहि छोड़ल जाइत अछि आ लोकोकेँ नहि।"

लम्बोदर कहलक, "हम हरवाहोक इन्तिजाम क' देबौक। सभ टा कोना एखन धरि अकाड़े पड़ल छौक तोहर ? बड़ाइयो जकरा देल गेल छैक सेहो तेहन कोढ़ि सभ अछि जे एको रत्ती बेगर्ता लगैत छैक जे खतम चासबो करीक ? की कहियौ, जमाना बड़ जुलुम बीति रहल छौक।"

साँझमे ओ चोर जकाँ नुका क' आयल। उदास आ फ्रस्ति करबाक मुद्रामे चौकीपर अँगपोछा बजारैत बैसल। जेना फुफकारैत बाजल—"तोहर रहब कठिन छौक। हरवाहु पर्यन्त एको टा तैयार नहि होइत छौक तोरा नामे। आ, बटैदारो समपर सेह दबाव छैक। तेँ छोड़ने छौक परता। कोन उपाय होउक, किछु ने फुराइत अछि। आ, आब समय एकदम नहि छैक। खेतकेँ तैयार नहि रखने तँ फेंटो-फाटमे पड़ि जयबेँ। पछता से होयतौक। आ, खेत आबाद नहि होयतौक तँ खयबेँ की ?"

करुणा हमरासँ बेसी चिन्तित छलि। हमहूँ चिन्तित रही। सभ तरहेँ अपनाकेँ घेरायल बुझि क' जे हताश-भाव रहैत छैक मनपर, रहय। तखन करुणेपर मन खौंझाय।

—"तखन ?"

—"कहू ने तोंही ?" लम्बोदर देह पटकि देलक। ओकर सामर्थ्यो की रहैक बेचाराक ? हम सोचमे पड़ि गेलहुँ।

—"कियो हमरा नामे तैयार नहि भेलौक ?"

—"कियो ने।" ओ खौंझाइत कहलक।

—"हम ककरा विरुद्ध कोन काज क' देलिऐक जाहिसँ ककरो किछु क्षति भ' गेलैक, लम्बोदर ? तों सोचि सकैत छेँ जे बिना कोनो अपन हानि पओने समाजक ई लोक हमरा किएक शत्रु मानि लेलक अछि आ किएक तबाह कर' चाहैत अछि ? ककरो कोनो हानि भेलैक अछि हमरा बुतेँ ?"

लम्बोदर निरुत्तर मूड़ी गोंतने बैसल रहल। हम बड़ गम्भीर अन्तर्द्वन्द्वमे घेरायल रही।

—"हर जोतब बड़ कठिन काज छैक ?" हम अनचोके पुछलिऐक "देखबामे तँ नहि बुझाइत छैक।"

—"अनठये की ? सभ बुते नहि ने होअय !" ओ ठोढ़मे तमाकुल ठुसलक।

—"तैयो अभ्याससँ आबि जाइत हेतैक ने रौ ?" हम पुछलिऐक तँ ओकर तमाकुल सरि करबा कालक ठोह-ठोढ़क चलब बन्द भ' गेलैक। हमरा तौलबाक नजरिसँ देखलक।

—"मतलब की छौक तोहर रौ ?" ओ पुछलक।

—"हमरा मोन होइत अछि जे हम अपने एक बेर हर जोति क' देखिऐक।" हम एक क्षण चुप रहि क' जेना अपन विचारकेँ आर गम्भीर आ विश्वसनीय बनबैत कहलिऐक, "हँ, कारण जे भरि जन्म हमरा गामबला

सकू नहि देत तँ भरि जन्म हम परती रखने बैसल रहब ? किछु तँ हमरा अपने कर' पड़त ।"

हमर गम्भीरतासँ लम्बोदर घबड़ा उठल । "तोँ," बूझि पड़ैत अछि, सनकि गेलेँ । बाकू नहिंतन । रे ब्राह्मण भ' क' तोँ हर जोतबेँ ? एक टा तँ ई काण्ड कयने अछि । दोसर, ई हर जोत' जयबेँ । एहि बेर गोआँ भकसी झोंका क' मारि देतौक । ईह, अनर्थ करैत अछि ई गहुदुआ बाबू साहेब । बुझाइत छैक जे ई आगि मूतत आ समाज सहि लेतैक ! मगरिथर कर, नहि तँ लाहेब भ' जयबेँ । कहि देल छियौक ।" ओ कुद्धो छल आ आशंकितो । हम ओकर कोनो बातकेँ गम्भीरतासँ नहि लेलिऐक ।

करुणाकेँ देखलियैक । फेर लम्बोदरकेँ कहलियैक—"भाई, सुन । ओहुनो तँ मरिये रहल छी । ब्राह्मण छी तँ कोन ऐश करैत छी ? असल बात तँ ई छैक जे एक टा बेकार बोनिहार छी । बोनि कयने बिना जोवि नहि सकैत छी । तखन ई विचार कोन जे ई बोनि नीक, ई बोनि अधलाह वा किछु ? बोनि बोनि छैक । हम बोनिहार छी । ई हमर अस्तित्वक प्रश्न अछि । तोँ हमर मदति कर ।"

—"अहुआ मदति कर । तोँ तँ हमरो नाश करबेँ जे लक्षण छौक तोहर । लोक से बुझतौक जे परशां बाबूक महान कुल-शीलक बेटा फरुआ आ कान्हपर हऽर लदलनि आ खेतमे हऽर जोत' गेलाह से बड़ आदर्श कयलनि । लोक तँ थू-थू करतौक । हमरा खा जायत सभ ।"

—तोँ चुप रहिहेँ । खाली तोँ एतबे सहयोग क' दे लम्बोदर । तोँ सभ टा सरंजाम दलाने पर राखि क' काल्हि भोरे कतहु बाध दिस टहलि जैहेँ । दू दिन लोँ हमरा खातिर कान्हि पर हऽर । हम जयबौक आ बरबधि क' काल्हि अपने खेतकेँ जोतबौक । चाहे जे भ' जाय ।"

—"राजू, तोँ तँ सत्ते सनकि गेलेँ । एतेक टा जुलुम ? बाबू, तो हऽर जोतबेँ तँ ई संसार रहतैक ? अनर्थ करबेँ । तोँ बनबेँ रोधी । कहू तँ ब्राह्मण कतहु महादेवकेँ जोतय ?"

हम आ करुणा बड़ जोर द' क' कहलिऐक जे एतबा मदति तोँ क' दे, भरि जन्म हम उपकार मानबौक । एहि बात पर ओ रुष्ट भ' गेल । "बूबि क' मरि जो दछिनबारि बाधक पोखरिमे । ई बात सोचलेँ तोँ जे हम उपकार करबौक, उपकार ? जेँ एतेक बदनामी लेँ ईहो । जेँ चालीस तँ पचचालीस । मुदा, तेहन सुसकेँ नहि छैक हरबाही बौआ । दोसर, जेँ बड़दकेँ फाड़-ताड़

लगा देबही । ताहो कयने छुट्टी । मुदा जोः । सैह तँ सैह । भ' गैहेँ । आब जाइत छियौक बुढ़िया गंजन क' क' ध' देत । बहु सुनैत रहैत अछि आ बुढ़िया मारैए टा नहि, सभ दशा क' दैत अछि । मातारामा । हुनके राज छनि । मुदा, बुढ़िया केँ हमरा विषयमे पुतहुओपर विश्वास नहि छैक । सुकैत रहतौक भनसामे, मुदा जावत हम नहि खा लेबैक कथीलै' खयतौक अपने ! चललियौक । जय भोलाबाबा ।"

स्वभावतः माँ मन पड़ि गेलि । करुणाकेँ बुझ'मे आबि गेलैक । ओ हमर पीठ लग आबि क' ठाढ़ि भ' गेलि । ओकर आँचर हमर गर्दनिकेँ छूब' लागल । —'चलू, खा लिय' ग' ।' ओ कहलक ।

भरि राति हमरा निन्न नहि भेल । कछमछ करैत रहलहुँ । असाध्य गर्मी बुझाय । कतबो कोशिश करी, तैयो निन्न नहि । बेचैनी लागय । हो, जे कखन भोर होयतैक । मुदा, भोर जेना कतहु बाटमे सूतल रहल छलैक, होयबे नहि करैक । कय बेर भेल जे कुजरटोलीमे बजलैक मुर्गा कतहु । मुदा भ्रम । भोर एखनो बहुत दूर ।

एकाएक करुणा खूब झकझोरि क' उठा देलक । हम चिहुकि क' उठलहुँ । फरिच्छ जेकाँ होइत रहैक । करुणा लोटामे पानि देलक आनि क' । जल्दी-जल्दी खाली कुरुड़ टा कयलहुँ । आ, बिना किछु कहने, धड़फड़ायल विदा भ' गेलहु । ड्योढ़ी टाट धरि करुणा आयलि । पाछाँ हम देखबे नहि कयलिएक । हम झटकारि क' बढ़ल चल जाइत रही लम्बोदरक दरबज्जा दिस । ओकर अनुसार सभ वस्तु मोखेमे बेहिसाब राखल । बड़दक मोड़-मूड़ा द' देल गेल छलैक । नाक आ थुथुनमे एखनो लागल छलैक । हम अतिरिक्त उत्साहसँ थर-थर करैत रही । ओलतीक कोड़ोसँ, पहिने हरलधहा उतारलहुँ । पहिने लटपट ह'र लधलहुँ । पालो स्थिरे नहि रहय, ढील बन्हा जाय । दू-बेरे बात किछु जमल । फेर हुनू बड़दकेँ पाबी देलिऐक । खुट्टासँ खोलि दुनूकेँ जोड़लहुँ । चारक बतीसँ पेना घिचलहुँ आ कन्हापर ह'र ध' क' विदा भेलहुँ बाध दिस । बेस भारी होइत छैक ह'र ।

हम जाइत रही तँ पुरहित ककासँ निरसू मुखिया धरिक आँखि फटले रहि गलैक । सभ आश्चर्य व्याकुल । कैक गोटे तँ छौड़ा जकाँ हमर पाछा-पाछाँ लागि गेल । एकटा बेस मनलग्गू घटना रहैक ई । हमरा बुझाय जे एखन हम एकटा बानरक तमाशा देखब'बला लगैत होयब कि बताह ।

हम खूब दृढ़ भावें अमिला टोल टपैत बड़द हँकने चल जा रहल रही। तकरा तुरत बाद तें बाध छैक। हम बाधमे प्रवेश कयलहुँ। अपन कोला धरि, चीन्हैत-चीन्हैत चीन्हल भेल। उतारलहुँ ह'र आ दुनू बड़दकें स्वतंत्र करैत, एक बेर सम्पूर्ण बाधकें देखलिऐक। एको टा खेतमे एखन धरि कोनो हरवाह नहि आयल छलैक। लोको नहि क्यो। हम एक क्षण विचारमे पड़ि गेलहुँ। हमर हाथ-पयर, देह थरथरा रहल छल। जानि नहि कोना हमरा द्योढ़ीटाड़ लग आबि क' ठमकि गेलि कल्याक आकृति मोन पड़ि गेल। हमरा लगपासमे कत मोटे विस्मयक मुद्रामे ठाड़ रहय।

हम धोतीक मोंचीकें ठेका जकाँ खोंसैत, पैना उठाक', पता नहि ककरा स्मरण कयलिऐक मनेमन। फेर दुनू बड़दकें जुआ क' थर-थर हाथे लागनिक मुठ्ठी कसिक' जेहने, बड़दकें नवसिखुआ टिटकारी देलिऐक। दुनू बड़द नाङ्गड़ि लड़ैत चलि पड़ल। पाछाँ पाछाँ हम असंतुलित, बेसम्हार भेल घिसियाय जकाँ लगलहुँ। मन साकांक्ष रहय, कतहु फाड़-ताड़मे लगैक बड़दकें। किछुए क्षण ई बेसम्हार हालति। लागनिपर अपन पूरा देहक दबाव देने हम बड़द हँकैत रहलहुँ। हमर दहिन छाती, अकाड़ खेतक माटि कोड़ैत ह'रसँ खूब जोरसँ दलक' लागल। सिराउरपर दुनू बड़द बढ़ैत रहल आ हमर कान्ह, छाती, बाँह आँखि एक भावसँ माटि कोड़ैत रहल। बल माटिकें कोड़याक 'रोमांस' हमरा पहिले बेरि बूझल भेल। हमरा सद्यः बुझायल जे हम आब जीवन जीबा दिस बढ़ि गेल छी।

हमर मुट्ठी सक्कत भ' गेल आ शरीरक भार पचगुना बेसी। नीचा देखलिऐक, माटिक पँच-पँच भेद ओदड़ि-ओदड़ि क' सिराउरक दुनू कात पसरि रहल अछि।

अगल-बगलक दू-चारि कोलाक आरिपर एक टा दू-टा क' लोक आबि-आबि क' ठाढ़ भ' रहल अछि, अनमन तहिना स्थिर अछि, जेना कोनो कठमस्त मुसहरक कोदारिपर कटा-कटा क' माटिक टटका बड़का दलसभ आरिपर ठाम-ठाम राखल जा रहल हो।

हमर हाथ लागनिपर गसिया क' धयल छल। तरहत्थी घमा गेल रहय। ह'र चोँचिया रहल छलैक लगातार।

तखने हमर देहपर दू-चारि टा शीतल बुन्न पड़ल। बड़ नीक बुझायल। आँखि उठाक' देखलिऐक तँ बड़ जोर मेघ लधने रहैक। सौंसे आकाश छनने रहैक। □